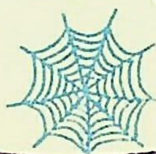
बृहत्-इन्द्रजाल



खेमराज श्रीकृष्णदास प्रकाशन बम्बई

श्रीः

बृहत् इन्द्रजाल

अर्थात्

कौतुकरत्न भाण्डागार



पं० देवचरणजी अवस्थी द्वारा संगृहीत



खेमराज श्रीकृष्णदास प्रकाशन बम्बई

संस्करण : जनवरी २०१६, सवंत् २०७२

मूल्य : २०० रुपये मात्र

मुद्रक एवं प्रकाशक:
खेमराज श्रीकृष्णदास,™
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
मुंबई - ४०० ००४.

Printers & Publishers :
Khemraj Shrikrishnadass,
Prop: Shri Venkateshwar Press,
Khemraj Shrikrishnadass Marg, 7th Khetwadi,
Mumbai - 400 004.

Web Site : http://www.Khe-shri.com
Email : khemraj@vsnl.com

Printed by Sanjay Bajaj For M/s. Khemraj Shrikrishnadass Proprietors Shri Venkateshwar Press, Mumbai - 400 004, at their Shri Venkateshwar Press, 66 Hadapsar Industrial Estate, Pune 411 013.

प्रस्तावना

अभीतक प्रायः जितने इन्द्रजाल छपे हैं उनमें एक न एक त्रुटि पायी जाती है, इसी लिये हमने दत्तात्रेयकृत संस्कृत इन्द्रजालके श्लोक टीकासहित तथा अनेक उपयोगी सिद्धि देनेवाले मन्त्र, यन्त्र, तन्त्र, मोहन, उच्चाटन, वशीकरणादि विधिसमेत तथा नाना प्रकारके कौतुक व रंगादि प्रयोजनीय वस्तुओंके आश्चर्यरूप खेल, तमाशे, बहुतसे अच्छे २ अनुभूत फलित प्रयोजनीय मंत्र, यंत्र, तंत्र, तथा वैद्यकसम्बन्धी औषधियां रसायनादि और कई एक शिवोक्त कल्प भी सम्मिलित किये हैं। इससे एक अपूर्व ग्रन्थ बन गया है। आशा है पाठकगण अवलोकन कर हमारे परिश्रमको सफल करेंगे।

मुद्रक एवं प्रकाशक:

खेमराज श्रीकृष्णदास,™

अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,

खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग, मुंबई - ४०० ००४.

श्रीः

बृहत् इन्द्रजालकी-विषयानुक्रमणिका



विषय.	पृष्ठ
अथ प्रथमपटलः	
बंदना ...	१
दत्तात्रेय ईश्वरसंवाद ...	,,
प्रकारके कर्म ...	४
ओं कर्मोंके लक्षण ...	,,
छः ओं कर्मोंकीदेवता ...	५
छः ओं कर्मोंकी दिशा ...	,,
छः ओं कर्मोंका ऋतुविचार ...	,,
प्रत्येक ऋतुमें कर्तव्य कर्म ...	,,
छः ओं कर्मोंके कालविशेष ...	,,
छः ओं कर्मोंके वर्णभेद ...	,,
षट्कर्मचक्र ...	६
दिशाशूलविचार ...	,,
दिक्शूलचक्र ...	,,
राशिदेखनेकी विधि ...	७
राशि देखनेका चक्र ...	,,
तिथिविचार ...	९
सिद्धियोगचक्र ...	,,
मृत्युयोगचक्र ...	,,
योगिनीविचार ...	१०
आसनपर बैठनेकी विधि ...	,,
कूर्मचक्र ...	११
चन्द्रदिशाचक्र ...	,,
चन्द्रस्थिति ...	१२
ऋणी धनीका विचार ...	,,
वर्गोंके स्वामी ...	,,
वर्गस्वामिनामचक्रादि ...	,,
कर्मविशेषमें हुं फट् ...	१३
मन्त्रोंका लिंगनिर्देश ...	,,

विषय.	पृष्ठ.
शुभ कार्यका चक्र ...	१४
रविवारके दिन बैठनेका चक्र ...	,,
योगिनीचक्र ...	१५
मन्त्रकी प्रकृति ...	,,
शनिचक्र ...	१६
तिथिशुभाशुभस्वामि-संज्ञापालन ...	,,
तिथिवर्णन ...	१७
तिथिचक्र ...	,,
चन्द्रफलम् ...	,,
दिनका चौघड़िया ...	१८
रात्रिका चौघड़िया ...	,,
ग्रहदशादृष्टि तथा वर्षसंख्या ...	,,
कुम्भस्थापन विधि ...	,,
मालानिर्णय ...	१९
मालाके डोरेका निर्णय ...	,,
मालासंख्या ...	,,
जप करनेमें अंगुलियोंका नियम ...	,,
जपकी दिशाओंका नियम ...	२०
मंत्रभेद ...	,,
होम करनेका द्रव्य ...	,,
होममुद्रा ...	२१
यन्त्रसिद्धिके पूर्व कर्म ...	,,
अथ द्वितियपटलः	
मारणतन्त्रमंत्राः ...	२२
मारणनाटिक ...	२३
शत्रुमारणनाटिक ...	,,
दूसरा मारण नाटिक ...	,,

विषय. पृष्ठ.

अथ तृतीयपटलः

मोहनतंत्रमंत्राः ... २४
सभामोहिनी ... २६
मोहिनीमन्त्र ... ,,
स्त्रीमोहिनी ... २७
राजाप्रजामोहिनी ... ,,
मोहिनी ... ,,
स्त्रीमोहिनीतिलक ... ,,
सभामोहिनीतिलक ... ,,
मोहिनीभस्म ... ,,
राजकुलमोहन ... २८
मोहन ... ,,
दूसरीविधि ... ,,

अथ चतुर्थपटलः

अग्निस्तम्भन तंत्र मंत्र ... २८
अग्नि थांवनेका मन्त्र ... २९
आसनस्तम्भनम् तंत्रमंत्राः ... ३०
आसन वंद करनेका उपाय ... ,,
बुद्धिस्तम्भनतंत्रमन्त्रश्च ... ३१
बुद्धिस्तम्भनतिलक ... ,,
शस्त्रास्त्रम्भनम् तंत्र मंत्रश्च ... ,,
पहला उपाय ... ३२
दूसरा उपाय ... ,,
तीसरा उपाय ... ,,
चौथा उपाय ... ३३
पांचवां उपाय ... ,,
मन्त्र ढाल रोपनेका ... ,,
मंत्र तलवार की धार धरनेका ... ,,
शस्त्रलेप ... ,,
तोप बांधनेका मन्त्र ... ३४
सेनानीस्तम्भनतन्त्र मन्त्रश्च ... ,,
सेनापलायनम् ... ३५
गोमहिषीस्तम्भनम् ... ,,
शत्रुस्तम्भनम् ... ३६
नरनारीस्तम्भनम् ... ,,
मेघस्तम्भनम् ... ,,
निद्रास्तम्भनम् ... ,,
तीसरीविधि ... ,,
जलस्तम्भनम् ... ,,
कच्चे घडेमें पानी भरना ... ३८
नौकास्तम्भनम् ... ,,
दूसरीविधि ... ,,
गर्भस्तम्भनम् ... ,,
गर्भ स्थिर रहे ... ,,

अथ पञ्चमपटलः

विद्वेषणम् ... ,,
द्वितीय विधि ... ४२
तृतीय विधि ... ,,
चतुर्थ विधि ... ,,

अथ षष्ठपटलः

उच्चाटनम् ... ४२
शत्रु उखडे ... ४८

अथ सप्तमपटलः

सर्वजीववरणम्कशी ... ४४
सर्वजनवशीकरण तिलक ... ४६
सर्वजनवशीकरण धूप ... ४७
वशीकरणकी बुरकी ... ,,
वशीकरण ... ४८
शत्रुवशीकरण ... ,,
वशीकरण तिलक ... ,,
वशीकरण बुरकी ... ,,
वशीकरण अंजन ... ,,

अथाष्टमपटलः

स्त्रीवशीकरणम् ... ४८

विषय.	पृष्ठ.
मन्त्र वशीकरण सुपारी ...	५०
भैरवकी चौकीका मंत्र ...	५१
वशीकरण तंत्र ...	,,
वशीकरण विधि ...	,,
वशीकरण नाटिक ...	५२
वशीकरण चेटक	
अथ नवमपटलः	
पुरुषवशीकरणम् ...	५३
पुरुषवशीकरण तंत्र ...	,,
राजवशीकरण ...	५४
राजवशीकरण तंत्र ...	,,
अथ दशमपटलः	
आकर्षणम् ...	५५
आकर्षण नाटिक ...	५६
वशीकरण आकर्षण तन्त्र ...	,,
अथैकादशपटलः	
वशीकरणतिलकम् ...	५७
इन्द्रजालकौतुक, रक्षामन्त्र ...	,,
अपनी देहरक्षाका मन्त्र ...	५८
दृष्टिबन्धनादिनानाकौतुकम् ...	,,
तन्त्रविद्या ...	६१
रोगदोष मिटजाय ...	,,
सर्व दोष दूर होनेके तन्त्र ...	,,
ऊतपितृ दूर होय ...	६२
ऊतपितृका दोष मिटे ...	,,
रोग दोष मिटजाय ...	,,
बुद्धिपराक्रम होय ...	,,
चरित्र दीखे ...	६३
जो मांगे सो देवे ...	,,
बुरकी ...	,,
सर्प दीखनेका तन्त्र ...	,,
सर्प होनेकी विधि ...	६४
नाचका तन्त्र खेल ...	,,

विषय.	पृष्ठ
सर्वदोष वायुगोला जाय ...	६५
झक मारता डोले ...	,,
शिला उडानेका मंत्र ...	,,
मन इच्छा फल पानेका मन्त्र ...	६६
मूत्रबन्धनका तन्त्र ...	,,
मूवा मेंढक बोले ...	,,
नाटिक भेद ...	,,
दो योजनतक दीखनेका अंजन ...	६७
सौ योजन तक दृष्टि होय ...	,,
योजनकी वातश्रवण करे ...	,,
वावला होय ...	६८
सोलह योजन चले ...	,,
मन इच्छा फल पावे ...	,,
लोपांजन ...	,,
दिनमें विमान दीखे ...	६९
रथसमेत सूर्यको देखना ...	,,
एक योजनकी बात सुने ...	,,
ऋद्धिसिद्धिका नटिक ...	,,
सर्वकार्यसिद्धि ...	७०
घोडा हाथी ग्राममें दौड़ें ...	,,
गांवकी आफत दूर हो ...	,,
भैरवसिद्धि ...	७१
भूतादिकसिद्धि ...	,,
सौ कोस उड़जानेका नाटिक ...	७२
दरियाके बढनेका नाटिक ...	,,
सर्पका जहर दूर हो ...	,,
स्वरूपका बदलना ...	७३
नारीरूप दीखना ...	,,
स्वप्नकी बात सच्ची हो ...	,,
चेटकभेद प्रारम्भ ...	७४
दीठ मूठ टले ...	,,
ऋद्धि सिद्धि बढ़े ...	,,

विषय.	पृष्ठ.
क्लेश होय ...	७५
सर्प दीखै ...	,,
घरमें नौका दीखे ...	,,
बीस योजन चले ...	,,
पचास कोस चलनेकी विधि ...	७६
मार्ग चलनेका गुटका ...	,,
वशीकरण ...	,,
प्रीति उत्पन्न करनेकी विधि ...	,,
भूत प्रेत बोले ...	,,
स्त्री रजस्वला होय ...	७७
विल्ली होनेकी विधि ...	,,
सियार होनेकी विधि ...	,,
कार्य विगडे ...	,,
बीछू पैदा करना ...	७८
मरी मछली जलमें तिरे ...	,,
मरी हुई मछली जिंदी हो ...	,,
दिनमें नक्षत्र दीखें ...	,,
षण्ढीकरण ...	,,
शत्रुकी देह गले ...	७९
वस्त्र गलनेका चेटक ...	,,
अथ द्वादशपटलः	
यक्षिणीसाधनम् ...	७९
कामरत्नोक्तयक्षिणीसाधनमंत्र ...	८३
साधनेवालोंके नियम ...	,,
विभ्रमा यक्षिणी ...	,,
रतिप्रिया यक्षिणी ...	,,
सुरसुन्दरीयक्षिणी ...	,,
अनुरागिणी यक्षिणी ...	८४
जलवासिनी यक्षिणी ...	,,
वटवासिनी यक्षिणी ...	,,
चण्डवेगा यक्षिणी ...	,,
विशाला यक्षिणी ...	,,

विषय.	पृष्ठ.
महाभया यक्षिणी ...	८५
चंद्रिका यक्षिणी ...	,,
रक्तकम्वला यक्षिणी ...	,,
विद्युज्जिह्वा यक्षिणी ...	,,
कर्णपिशाचिनी यक्षिणी ...	,,
चामुण्डा यक्षिणी ...	,,
चिंचिपिशाचिनी यक्षिणी ...	८७
विचित्रा यक्षिणी ...	,,
हंसी यक्षिणी ...	,,
मदना यक्षिणी ...	८८
कालकर्णिका यक्षिणी ...	,,
लक्ष्मी यक्षिणी ...	,,
शोभना यक्षिणी ...	,,
नटी यक्षिणी ...	,,
पद्मिनी यक्षिणी ...	८९
द्वितीयमन्त्रभेदः	
मथवायका मन्त्र ...	९०
आधाशीशीका मन्त्र ...	,,
नेत्र दूखते अच्छे होनेका मन्त्र ...	,,
दूसरा तीसरा मन्त्र ...	९१
कण्ठबेलका मन्त्र ...	,,
कखलाईका मन्त्र ...	,,
पीडाकलवन्य मन्त्र ...	९२
डवकाका मन्त्र ...	,,
आधाशीशीका मन्त्र ...	,,
धरन ठिकाणे आनेका मन्त्र ...	९३
अदीठका मन्त्र ...	,,
पोलियाका मन्त्र ...	,,
वालाका मंत्र	
बावले कुत्तेका मंत्र ...	९४
बिच्छूके विष उतारनेका मन्त्र ...	,,
बीच्छूके विष दूर करनेका मन्त्र ...	९५

विषय.	पृष्ठ.
हांडी बांधनेका मन्त्र ...	९५
कडाही बांधनेका मन्त्र ...	,,
कागजकी कडाहीमें पुवा उतारनेका मन्त्र ...	९६
सुई काढनेका मन्त्र ...	,,
सीयाका मन्त्र ...	,,
बीजासनका मन्त्र ...	,,
नजर दूर करनेका मन्त्र ...	९७
ढोरके रोग जानेका मन्त्र ...	,,
पशुका कीडा झाडनेका मन्त्र ...	,,
स्त्रीके पैर थांबनेका मन्त्र ...	९८
पैर चलानेका मन्त्र ...	९९
रोधन वायुका मन्त्र ...	,,
डाढकी पीडाका मन्त्र ...	,,
डाढके कीडोंका मन्त्र ...	१००
निनाईका मन्त्र ...	,,
टीडीका मन्त्र ...	१०१
तृतीय मध्यम भेद आरम्भ (कनिष्ठ भेद)	
पूंगी बांधनेका मन्त्र ...	१०१
पैसा रोपनेका मन्त्र ...	१०२
पैसा उठानेका मन्त्र ...	,,
मूठिका मंत्र ...	,,
मूठिका दूसरा मन्त्र ...	१०३
सांप कीलनेका मंत्र ...	,,
सर्प खोलनेका मंत्र ...	१०४
ऋद्धिका मंत्र ...	,,
वीरविधिका मंत्र ...	१०५
अगियाबैतालका मन्त्र ...	१०६
पानीके ऊपर चलनेका मन्त्र ...	,,
जरबन्दका मन्त्र ...	१०७
चोरी काढनेका मन्त्र ...	
डाकिनीके मूडनेका मन्त्र ...	१०८

विषय.	पृष्ठ.
मसान जगानेका मन्त्र ...	१०९
नाजकी राशि उडानेका मन्त्र	
चढावका मन्त्र ...	११०
जञ्जीराका मन्त्र ...	१११
मूठ चलानेका मन्त्र ...	११३
अथ त्रयोदशपटलः	
रसायनम् ...	११३
अथ रसायनविधि	
सुवर्ण बनाना	११४
चांदी बनाना	११६
अथ चतुर्दशपटलः	
कालज्ञानम्	११६
अथ पञ्चदशपटलः	
अनाहारः	११८
क्षुधा तृषा न लागे ...	११०
अथ षोडशपटलः	
आहारकरणम् ...	१२०
आहार बहुत करे	
अथ सप्तदशपटलः	
निधिदर्शनम्	१२१
पृथ्वीका धन दीखे ...	
अथाष्टादशपटलः	
वन्ध्यागर्भकरणम् ...	१२२
बांझकी चिकित्सा ...	१२४
बांझके गर्भ रहे ...	
प्रथम महीनेमें गर्भ रक्षा ...	१२५
दूसरे महीनेमें गर्भरक्षा ...	
तीसरे महीनेमें गर्भरक्षा ...	,,
चौथे महीनेमें गर्भरक्षा ...	,,
पांचवे महीनेमें गर्भरक्षा ...	,,
छठे महीनेमें गर्भरक्षा ...	१२६
सातवें महीनेमें गर्भरक्षा ...	,,
आठवें महीनेमें गर्भरक्षा ...	,,

विषय.	पृष्ठ.
नववें महीनेमें गर्भरक्षा ...	१२६
दशवें महीनेमें गर्भरक्षा ...	,,
सुखसे बालका होय ...	,,
लड़का या लड़की होनेकी पहचान ...	,,
पसली और डबकी ओषधि ...	१२७
अथोनर्विशतितमः पटलः	
मृतवत्सावत्सजीवनोपायः ...	१२७
बालकके जीनेका उपाय ...	१२८
अथ विंशः पटलः	
काकवन्ध्या ...	१२९
बांझपन दूर होय	,,
अथैकविंशः पटलः	
जय संवाद ...	१३०
युद्धमें जीते	१३१
अथ द्वाविंशः पटलः	
वाजीकरणम्	,,
वाजीकरण औषध	१३२
अथ त्रयोविंशः पटलः	
द्रावणम्	१३३
वीर्यस्तम्भनम्	१३४
लिङ्गवर्द्धनम्	१३५
केशपातनम्	१३७
वाल उड़ानेकी विधि ...	,,
अथ चतुर्विंशः पटलः	
भूतग्रहनिवारणम्	१३८
भूतप्रेत दूर हो	,,
ग्रहनिवारणम्	१३९
सिंह व्याघ्र सर्प वृश्चिक-भयनाशनम्	,,
सर्पविषनिवारणम्	१४०
व्याघ्रनिवारणम्	,,
वृश्चिकनिवारणम् ...	,,
अग्निभयनिवारणम ...	,,

विषय.	पृष्ठ.
जन्मभेदः	१४०
हंसगतिछन्द तांबेश्वर ...	,,
नागरस	१४१
हरताल	,,
रूपरस	,,
मृगांक	,,
लोहसार	,,
अभ्रक	१४२
अञ्जन	,,
सोनेकी खाक	,,
हरतालके गुण	,,
पारदके गुण	,,
गंधक विधि	१४३
लोहवान विधि	,,
सम्बलखार	,,
अभ्रक विधि	,,
मूंगेके गुण	१४४
फूलप्रश्न	,,
१ केवडा	१४५
२ कंवल	,,
३ केतकी	,,
४ परास	,,
५ पांडरा	,,
६ कनइल	,,
७ बली	१४६
८ दुपहरिया	,,
९ दहवर्गा	,,
१० चम्पा	,,
११ सेवती	,,
१२ हरसिंगार	,,
१३ कनेर	,,
१४ चमेली	,,
१५ जुहीं	१४७

विषय.	पृष्ठ.
१६ मालती ...	१४७
१७ अडहुल ...	,,
१८ इश्कपेच ...	,,
१९ गुलाबदादी ...	,,
२० सूर्यमुखी ...	,,
२१ नागेश्वर ...	,,
२२ जटाधारी ...	,,
२३ कोई ...	१४८
२४ कुसुम ...	,,
२५ अकवन ...	,,
२६ गुलाबबास ...	,,
२७ सेमर ...	,,
२८ रूखा ...	,,
२९ गुलाब ...	,,
३० हथकन्दर ...	१४९
हरा रंग बनाना ...	,,
नीला रंग बनाना ...	,,
लाजवर्दी रंग बनाना ...	,,
सुर्ख रंग बनाना ...	,,
काजल बनानेकी विधि ...	,,
कई प्रकार के रंग बदलना ...	,,
एक रंगसे कई प्रकारके कपडे रंगना ...	१५०
कपडा रंगनेकी विधि	
गेरुआ कपड़ा रंगना ...	१५०
किरमिजी रंग रंगना ...	,,
खाकी रंग रंगना ...	,,
जोगिया कपड़ा रंगना ...	१५१
जमुरदी रंगना ...	,,
सरदई रंगना ...	,,
चन्दनी रंग रंगना ...	,,
आसमानी रंग रंगना ...	,,
ऊदा रंग रंगना ...	१५१
उन्नावी रंग कच्चा ...	,,
उन्नावी रंग पक्का ...	,,
अन्नीआ सेमती रंग रंगना ...	१५२
हुलासी रंग ...	,,
जावी रंग ...	,,
सुरमाई रंग ...	,,
अब्बासी रंग ...	,,
सिंगरफी रंग ...	,,
शरबती रंग रंगना ...	,,
पक्का शरबती रंग रंगना ...	,,
सुनहरा रंग ...	१५३
मजीठका रंग ...	,,
सब्जकाई ...	,,
लाजवर्दी ...	,,
हिनाई रंग ...	,,
बैंजनी रंग ...	,,
मूंगिया रंग ...	,,
लाल रंग ...	१५४
वसन्ती रंग ...	,,
फीरोजई रंग ...	,,
नारंगी रंग ...	,,
धानी रंग ...	,,
जाफरमानी रंग ...	,,
फाकताई रंग ...	,,
बदामी रंग ...	,,
फालसाई रंग रंगना ...	,,
फूल गुलाबी ...	१५५
चम्पई रंग रंगना ...	,,
गुले अनार रंग ...	,,
कत्थई रंग रंगना ...	,,
कपूरी रंग ...	,,
कासनी रंग ...	,,

विषय.	पृष्ठ.	विषय.	पृष्ठ.
कपासी रंग ...	१५५	अफीम बनानेकी विधि ...	१६४
गुलाबी रंग ...	१५६	पारेका कटोरा बनानेकी विधि ...	,,
कोकई रंग ...	,,	पारेका गिलास ...	,,
काकरेजी रंग ...	,,	कपूरका गिलास ...	१६५
खसखसी रंग ...	,,	गन्धकका कटोरा ...	,,
जाफरानी रंग ...	,,	नोनका कटोरा बनानेकी विधि ...	,,
तूसी रंग ...	,,	शंखदरियाव विधि ...	,,
तोतई रंग ...	,,	विधिसंयुक्त नाडीभेद ...	१६६
पिसतई रंग ...	१५७	विविधि नाडी लक्षण ...	१६७
पियाजी रंग ...	,,	वायु नाडी लक्षण वर्णन ...	१६९
अंगूरी रंग रंगना ...	,,	कफ नाडी लक्षण	,,
अमोआ सुर्ख ...	,,	त्रिदोष नाडी लक्षण ...	१७०
अर्गवानी ...	,,	वैद्यभेद प्रारंभ	
नील रंग रंगना ...	,,	शिरका गंज दूर करनेका यत्न ...	१७२
काही रंग रंगना ...	१५८	दूसरा यत्न ...	,,
हाथी दांतको लाल रंगना ...	,,	देहकी दुर्गंधि दूर हो ...	,,
हाथी दांतको स्याह रंगना ...	,,	शिर वायुका उपाय ...	,,
विधानभेद प्रारंभ		रूलाका उपाय ...	,,
सिन्दूर बनाना ...	१५८	आधा शीशीका उपाय ...	,,
हिंगूल विधि ...	१५९	कान दुखनेका उपाय ...	,,
रूमी सिंगरफ बनाना ...	,,	मुख छायाका उपाय ...	१७३
कपूर बनावन विधि ...	,,	मस्सा दूर होय ...	,,
साजी बनावन विधि ...	१६०	कील जानेका उपाय ...	,,
जंगाल विधि ...	,,	नेत्र दुखनेका उपाय ...	,,
जवाखार विधि ...	,,	कंठवेलका उपाय ...	,,
पीपल बनाना ...	१६१	हूक जानेका उपाय ...	,,
मूंगा विधि ...	,,	डाढ दुखनेका उपाय ...	,,
चन्दरस विधि ...	,,	विभूति का उपाय ...	१७४
कपूरकी माला बनावनविधि ...	,,	बवासीरका का उपाय ...	,,
फिटकरी ...	१६२	दांत हिलता दृढ़ होय ...	,,
सेंधानोंनका कटोरा बनावन विधि	,,	ब्योंचीका उपाय ...	,,
कस्तूरी बनानेकी विधि ...	१६३	नाहरूका उपाय ...	,,
केशर बनानेकी विधि ...	,,	मरहम विवईकी	,,

विषय.	पृष्ठ.
विना घावकी विवाई ...	१७४
दूसरी विधि ...	१७५
तीसरी विधि ...	,,
नकसीर वेद होय ...	,,
पसीना रोकना ...	,,
वमन करना ...	,,
जीर्णज्वरका उपाय ...	,,
श्वासका उपाय ...	,,
दांतके कीडे दूर करना ...	१७६
बाल उगानेकी औषधि ...	,,
धातुबन्धका उपाय ...	,,
गरमी घावकी दारू ...	,,
सूजाक खोनेकी विधि ...	,,
कानके बहरेकी औषधि ...	,,
बहरापन करना ...	,,
दूसरी विधि ...	,,
कानकी लार बढ़ाना ...	,,
दूसरी विधि ...	,,
धुन्धका उपाय ...	,,
आंखका जल बन्द होय ...	१७७
दृष्टि बढ़ानेका उपाय ...	१७८
पथरीका इलाज ...	,,
बन्धुकुशार्द नामर्दका इलाज ...	,,
नामर्दका उपाय ...	,,
वाणी सुधारना ...	,,
दूसरी विधि ...	,,
तीसरी विधि ...	१७९
पथ्या घृत ...	,,
पुत्र होनेका उपाय ...	,,
गर्भ गिरानेका उपाय ...	,,
स्त्रीके फूल आनेका उपाय ...	,,
शुद्ध रजोधर्म आनेका उपाय ...	१८०
बांझ करनेकी विधि ...	,,
स्त्री का बहता लोहू रुके ...	१८०
पैर थामनेका उपाय ...	,,
वधायपाकी औषधि ...	,,
मृगीका उपाय ...	,,
गलत कोढ़का उपाय ...	१८१
अग्निसे जले हुएकी दवा ...	,,
हिचकी दूर करना ...	,,
हरतालकी भस्म ...	,,
मृगाङ्क बनाना ...	,,
पारेकी भस्म करना ...	१८२
हरताल बनानेकी विधि ...	,,
रसकपूर बनानेकी विधि ...	१८३
रसकपूरकी डली बनाना ...	,,
पारेका तेल बनाना ...	,,
गंधकका तेल ...	१८४
हरतालका तेल ...	,,
नाहरूपर लेपन ...	१८५
मंत्र विधि ...	,,
डाकनीके मूंडनेका मन्त्र ...	१८७
रक्तगुञ्जाकल्प ...	,,
अथेन्द्रजालयंत्रखंडम्	
सर्वोपरि यन्त्र ...	१९१
कान न दुखनेका यन्त्र ...	,,
सिंह भाग जानेका यंत्र ...	,,
वशीकरण यंत्र ...	,,
वशीकरण यंत्र २ ...	१९२
नाव चलनेका यंत्र ...	,,
कष्ट छूटनेका यंत्र ...	,,
आधाशीशीका यंत्र ...	,,
प्रयोग यंत्र ...	,,
शत्रुमारण यंत्र ...	,,
राजसभामें मान होनेका यन्त्र ...	,,

विषय.	पृष्ठ.
वशीकरण यंत्र ...	१९३
अधाशीशी यन्त्र ...	,,
राजसभामें मान होनेका यंत्र ...	,,
शत्रुमुख सूजनेका यंत्र ...	,,
सर्वसभामें मान होनेका यंत्र ...	,,
सर्व कार्यसिद्ध प्रयोग ...	,,
शूल चलनेका यंत्र ...	,,
भट्टी फूटनेका यंत्र ...	,,
कुत्ता भूकनेका यंत्र ...	१९४
शत्रुसरीरसूजनेका यंत्र ...	,,
ढोल फूटनेका यंत्र ...	,,
चाकपरसे वासन न उतरनेका यंत्र ...	,,
डाकिनी आनेका यंत्र ...	,,
गया मनुष्य आनेका यंत्र ...	,,
व्यवहारघनाहोनेकायंत्र २ ...	,,
हाट ऊजाड़ होनेका यंत्र ...	१९५
कलह होनेका यंत्र ...	,,
विरोध होनेका यंत्र ...	,,
सर्पभूतप्रेतभय नाशक यंत्र ...	,,
सुख होने का यंत्र ...	,,
गया मनुष्य घर आनेका यंत्र ...	,,
जूआ जीतनेका यंत्र ...	,,
सर्व जानवर आनेका यंत्र ...	१९६
धनंजय वायुका यंत्र ...	,,
वशीकरण यंत्र ...	,,
दिनकी रात देखनेका यंत्र ...	,,
व्यवहार होनेका यंत्र ...	,,
शत्रुमुख सूजनेका यंत्र ...	,,
शरीर फटनेका यंत्र ...	,,
पीडा दूर करनेका यंत्र ...	,,
रोग न आनेका यंत्र ...	१९७
नाड सडनेका यंत्र ...	,,
बुद्धि नष्ट होनेका यंत्र ...	१९७
कांसे पीतलको ताव न आनेका यंत्र ...	,,
नाड़ा टूननेका यंत्र (२) ...	,,
भूतही भूत दीखनेका यंत्र ...	,,
घाबरा आनेका यंत्र ...	१९८
सर्वकार्यसिद्धि यन्त्र ...	,,
स्वप्नमें ऊंट दीखनेका यन्त्र ...	,,
स्वप्नमें भूतही भूत देख पड़ने का यंत्र ...	,,
स्वप्नमें बानर दीखनेका यंत्र ...	,,
आंचल न पकनेका यन्त्र ...	,,
सर्वकार्यसिद्धि यन्त्र ...	,,
घाबरा रोग नाशक यन्त्र ...	१९९
स्वप्नमें ऊंट ही ऊंट देखने का यन्त्र	,,
शत्रुके भ्रमनेका यन्त्र ...	,,
गया पशु आनेका यन्त्र ...	,,
कमानका गोसा न चढ़ानेका यन्त्र	,,
शत्रुकी छाती फटनेका यन्त्र ...	,,
गधा मारनेका यन्त्र ...	,,
गर्भ अधूरा जानेका यन्त्र ...	२००
सर्प न आनेका (२) यन्त्र ...	,,
शूल होनेका यंत्र ...	,,
भयनाशक यन्त्र ...	,,
पुरुषवशीकरण यन्त्र ...	,,
मूसोंसे कपड़ोंकी रक्षाका यन्त्र ...	,,
भूतप्रेत भयनाशक यन्त्र ...	,,
देवताके प्रसन्न करनेका यन्त्र ...	२०१
स्त्रीदुग्धनाशक यन्त्र ...	,,
सर्वकार्यसिद्धि होने का यन्त्र ...	,,

विषय.	पृष्ठ.
शत्रुविनाशन यन्त्र ...	२०१
वशीकरण यन्त्र ...	,,
नाव चलानेका यन्त्र ...	२०२
कूख बन्द होनेका यन्त्र ...	,,
अथाईके मनुष्योंके लड़ानेका यन्त्र	,,
अश्वमारण यन्त्र ...	,,
मस्तहोनेका यन्त्र ...	,,
विघ्ननाशक यन्त्र ...	,,
मोहिनी यन्त्र ...	,,
वशीकरण यन्त्र ...	२०३
फूल सूखनेका यन्त्र ...	,,
पराक्रमका यन्त्र ...	,,
नामर्द करनेवाला यन्त्र ...	,,
फुलवाडीमें फूल वहुत आनेका यन्त्र	,,
बिछुआ छुडानेका यन्त्र ...	,,
वहुत भोजन करनेका यन्त्र ...	,,
मसान जगानेका यन्त्र ...	,,
मारण यन्त्र ...	२०४
सर्वसिद्धप्रयोग यन्त्र ...	,,
शत्रुके शरीर गलनेका यन्त्र ...	,,
वडकवाय नाशक यन्त्र ...	,,
वचन सिद्धि यन्त्र ...	,,
घने फल आनेका यन्त्र ...	,,
वशीकरण यन्त्र ...	,,
आमके फल घने आनेका यन्त्र ...	२०५
बुद्धि होनेका यन्त्र ...	,,
भूत न लगनेका यन्त्र ...	,,
मनचीता कार्य्य होने का यन्त्र ...	,,
कामना न जागनेका यन्त्र ...	,,
सर्व सिद्धि प्रयोग ...	,,
बोध होनेका यन्त्र ...	,,

विषय.	पृष्ठ.
देईपई भयनाशक यन्त्र ...	२०५
कांच न निकलनेका यन्त्र ...	२०६
मनचेताकार्य होनेका यन्त्र ...	,,
सर्वजन वशीकरण यन्त्र ...	,,
आम फल घने आनेका यन्त्र ...	,,
बुद्धि होने का यन्त्र ...	,,
मनचेता कार्य होने का यन्त्र ...	,,
बालभयनाशक यन्त्र ...	,,
प्रयोगयन्त्र ...	२०७
सुखसे बालक होने का यन्त्र ...	,,
बोध होनेका यन्त्र ...	,,
देईपईनाशके यन्त्र ...	,,
मनचेता कार्य होने का यन्त्र ...	,,
नजर न लगनेका यन्त्र ...	,,
शत्रुवल नष्ट होने का यन्त्र ...	,,
अकाल मृत्यु न होने का यन्त्र ...	२०८
भूत-देवी-यक्षके प्रसन्न होने का यन्त्र	,,
अम्बिका देवीका प्रसन्न होने का यन्त्र	,,
शत्रु उच्चाटन यन्त्र ...	,,
अलिगवा यक्षिणीके प्रसन्न होनेका यन्त्र ...	,,
देशाटन करने का यन्त्र ...	,,
हनुमानके प्रसन्न होने का यन्त्र...	,,
गई वस्तु आने का यन्त्र ...	,,
कालिका देवीके प्रसन्न होने का यन्त्र	२०९
चक्रवर्ती बशीकरण यन्त्र ...	,,
असिद्धयर्थ यन्त्र ...	,,
नजर न लगनेका यन्त्र ...	,,
विद्या और बुद्धि होनेका यन्त्र ...	,,
शीतज्वरनाशक यन्त्र ...	

विषय.	पृष्ठ.
क्लेश होने का यन्त्र ...	२०९
राजवशीकरण ...	२१०
राजाके कोप शांत करनेका यन्त्र...	,,
भवबन्ध बिनाशन यन्त्र ...	२११
जुएमें जीतनेका यन्त्र ...	,,
एकांतर ज्वरनाशन यन्त्र ...	२१२
आकर्षण यन्त्र ...	,,
सेना भगानेका यन्त्र ...	२१३
ज्वरनाशक यन्त्र ...	,,
सर्पविनाश यन्त्र ...	२१४
चिलफवाई दूर करनेका यन्त्र ...	,,
वाणिज्यार्थ वशीकरण यन्त्र ...	,,
जगत् वशीकरण यन्त्र ...	,,
वशीकरण यन्त्र ...	२१५
पलीताका यन्त्र ...	,,
जुएमें जीतनेका यन्त्र ...	,,
दिव्यस्तम्भन यन्त्र ...	२१६
यात्रास्तम्भन यन्त्र ...	,,
मुखस्तम्भन यन्त्र ...	,,
अग्नि स्तम्भन यन्त्र ...	२१७
शत्रुनाशक यन्त्र २ ...	,,
सास ससुर वशीकरण यन्त्र ...	२१८
डाकिनी वकुरानेका यन्त्र ...	,,
प्रेम दूर करनेका यन्त्र ...	,,
तिजारीका यन्त्र ...	,,
पानी बन्द करने का यन्त्र ...	,,
वासन को भेका यन्त्र ...	२१९
आधाशीशी दूर करने का यन्त्र ...	,,
राजोंमें सन्मान होनेका यन्त्र ...	,,
पन्द्रहके यन्त्रोंकी विधि ...	,,
मन्त्र विधि वर्णन ...	२२०
सर्वकार्यसिद्धिका उपाय ...	,,
कार्यके संकल्पकी गिनती ..	,,

विषय.	पृष्ठ.
रविवारकी प्रयोगविधि ...	२२१
सोमवारकी प्रयोगविधि ...	२२२
मङ्गलवारकी प्रयोगविधि ...	,,
बुधवारकी प्रयोगविधि ...	२२३
गुरुवारकी प्रयोगविधि ...	,,
भृगुवारकी प्रयोगविधि ...	,,
शनिवारकी प्रयोगविधि ...	२२४
यन्त्र लिखनेकी विधि ...	,,
पन्द्रहके यन्त्रकी अन्य विधि ...	,,
पन्द्रहके यन्त्रका मन्त्र ...	२२५
यन्त्र लिखनेकी कलम ...	,,
पतिवशीकरण यन्त्र ...	२२६
कालानलस्वामी वशीकरण यन्त्र...	,,
मन्त्र ...	२२७
अग्निनिवारण यन्त्र ...	,,
यात्रास्तम्भन यन्त्र ...	२२८
आकर्षण यन्त्र ...	,,
तापन यन्त्र ...	,,
मित्र दर्शन यन्त्र ...	२२९
शत्रुओंके स्तम्भनका यन्त्र ...	,,
मन्त्र ...	२३०
सर्वरक्षा यंत्र ...	,,
डाकिनी त्रासन यंत्र ...	,,
बालरक्षाका यंत्र ...	२३१
नजरपर २० का यन्त्र ...	,,
एकांतरा रामबाण यन्त्र ...	२३२
नित्यज्वरका यन्त्र ...	,,
बुरे स्वप्नका यन्त्र ...	,,
मसान दूर करनेका यन्त्र ...	,,
प्रीति उत्पन्न करनेका यन्त्र ...	,,
प्रीतिनाशक यन्त्र ...	,,
प्रीतिनाशका दूसरा यन्त्र ...	२३३

विषय.	पृष्ठ.	विषय.	पृष्ठ.
छाया भस्म करने का यन्त्र ...	२३३	सब्ज और स्याही रोशनाई ..	२४४
बलायदूर करनेका यन्त्र ...	,,	सब्ज रोशनाई ...	,,
नरनारीविद्वेषण यन्त्र ...	,,	दूसरी विधि ...	,,
शत्रुवशीकरण यन्त्र ...	२३४	लालस्याही बनानेकी विधि ...	,,
उच्चाटन् यन्त्र ...	,,	अंग्रेजी नीली स्याही ...	,,
शांतिक पौष्टिक यन्त्र ...	२३५	देशी स्याही ...	२४५
दूरदेशज मारण यन्त्र ...	२३६	मुहर लगानेकी स्याही ...	,,
मानिनी आकर्षणका यन्त्र ...	,,	दूसरी विधि, तीसरी विधि ...	,,
विघ्ननाशक यन्त्र ...	,,	कपडेपर निशानी करनेकी स्याही	२४६
अन्य उच्चाटन ...	२३७	मुहरकी लाल स्याही ...	,,
व्याघ्रादिसे बचनेका यन्त्र ...	,,	सुनहरी रोशनाई ...	,,
सुगंधित तेल की विधि ...	,,	दूसरी विधि ...	,,
इत्र बनावकी सहज विधि ...	२३८	छापनेकी स्याही बनाना ...	२४७
नीलम बनानेकी विधि ...	,,	छापनेके वास्ते हाथसे लिखकर पत्थरपर उतारनेकी स्याही...	२४९
पन्ना बनानेकी विधि ...	,,		
हीरा बनानेकी विधि ...	,,	कापी लिखनेका कागज बनाना ...	२५०
फिरोज बनानेकी विधि ...	२३९	दूसरी विधि ...	,,
		कागजको एक तरफसे रङ्गना ...	,,
पुखराज बनानेकी विधि ...	,,	उन्नावी रङ्गका कागज रंगना...	,,
लाल बनानेकी विधि ...	,,	फिरोजी रंगका कागज रंगना ...	,,
हीरेकी परीक्षा ...	,,	किताबके किनारेपर सुनहरी छींटे	,,
मोतीको जिलादेनेकी विधि ...	,,	रातमें दिनके समान चांदनी होय	२५१
सोनेकी चीजको जिलादेनेका उपाय	२४०	तरकीव फुलझडीकी ...	,,
मूंगेको साफ करना ...	,,	तरकीब दूसरी फुलझडीकी ...	,,
अर्क कपूर ...	,,	गुलरेज गुलझडी ...	२५२
कलाबत्तू बनानेका सहज उपाय...	२४१	तरकीब महताबकी ...	,,
सोनेका वर्क बनाना ...	,,	नकटी महताब ...	,,
कलाबत्तू मेंसे सोना और चांदी दूर करना ...	२४२	अनेक रङ्गकी महताब ...	,,
		गुल अकसोंका पेड ...	,,
सोनेका हरा रङ्गकरना ...	२४३	बाण बनानेका बारूद ...	२५३
पारेको कामके लायक बनाना ...	,,	सुनहरी रङ्गके जरद ...	,,
दूसरी विधि ...	,,	सुर्ख बारूद ...	,,

विषय.	पृष्ठ.	विषय.	पृष्ठ.
नीली वारूद ...	२५३	बादामके शकरपारे ...	२६०
जरद वारूद ...	२५४	होठोंका सफेद करना ...	,,
नारंगी वारूद ...	,,	चित्रलोप करना ...	२६१
सुनहरी गुलदारवान ...	,,	दीपकमें जवाहीर दीखे ...	,,
नीला मीना बनानेकी विधि ...	,,	नावकी तबाही ...	,,
सब्ज मोम बनाना ...	,,	लकड़ीके छेद भरनेका मसाला ...	,,
नीली लाख मुहरके वास्ते ...	२५५	तांबेकी रेताल पत्थरपर जमानेका मसाला ...	२६२
काली लाख बनानेकी विधि ...	,,	फटसीमेंट ...	,,
सुनहरी लाख बनानेकी विधि ...	,,	भोजन पकानेके बर्तनोंका जोडना ...	,,
मुहरके वास्ते नरम लाख ...	,,	कोकस सीमेंट ...	,,
चांदीके जेवरमेंसे काले दाग दूर करना ...	,,	कुठारी या घरिया जोड़नेका मसाला	
जर्मनसिलवर बनानेकी विधि ...	,,	अन्डासे बना हुआ मसाला ...	२६३
सोनेको सफेद करना ...	२५६	हाथीदांत या सीप जोड़नेका सीमेंट	
तरवारका जौहरदार करना ...	,,	लकड़ी जोडनेकी लेई ...	,,
पत्थरपर सुनहरी मुलम्मा ...	,,	संगमरमर जोड़नेकी लेई ...	,,
विना कल चांदीका मुलम्मा ...	२५७	मिट्टी मीठी लगे ...	,,
मुलम्मा करना ...	,,	अदृश्य होना ...	२६४
तांबेका पानी बनाना ...	,,	अदृश्यकरण तावीज ...	,,
मैन मुद्रा ...	२५८	दो कडी चीजोंका पानी करना...	,,
तांबे पीतलको जलदी गलाना ...	,,	करेलाका कडुआपन दूर करना ...	,,
लोहेको जलदी गलाना ...	,,	नीमक पत्तोंका मीठा होना ...	२६५
गुलदस्तेको कई दिनतक हरा रखना ...	,,	दीमकके दूर करनेका उपाय ...	,,
कपडेसे चरवीका दाग दूर करना ...	२५९	मक्खी दूर करनेका उपाय ...	,,
रेशमी वस्त्रसे चिकनाई दूर करना		पिस्सुओंका मरना ...	२६६
बालक कवि होवे ...	,,	खटमल दूर करनेका उपाय ...	
लोहेको तांबा करना ...	,,	जुआं दूर करनेका उपाय ...	२६७
तांबेकी रूपा करना ...	,,	दूसरा उपाय ...	,,
अफीम बनानेकी विधि ...	२६०	घरमेंसे चूहे भाग जायं ...	,,
अफीमका सार ...	,,	मच्छर दूर करनेका उपाय ...	,,
		हजार आंख दीखने लगे ...	२६८
		सभा कानी दीखे ...	,,
		शीशी अग्निसे भरी दीखे ...	,,

विषय.	पृष्ठ.
शिर अग्निसमान चमके ...	२६८
विघ्न दूर करना ...	,,
मुरदेको जिन्दा करना ...	२६९
मुरदा न सड़े ...	,,
बेडी कटे ...	,,
हाथकी वस्तु अदृश्य होय ...	,,
घोडेका खेल ...	२७०
अश्वमारण ...	,,
मछली मारण ...	,,
शाक नष्ट करनेकी विधि ...	
दूध नाशक ...	२७१
तेल रोकना ...	,,
आगसे उँगली न जले ...	,,
जलमें हाथ डाले और सूखा निकले ...	,,
एक हंड़िया और तीन पेट ...	,,
टूटा हुआ फूल बहुत दिन तक हरा रखना ...	,,
सेजपर अग्निक्रीड़ा ...	२७२
बबूलके कांटे चबाना ...	,,
आपही आप अग्नि पैदा होना ...	,,
पावरोटीका नाच ...	,,
आज्ञाकारी अन्डे ...	,,
घण्टे भरमें पेड लगाना ...	२७३
दीवारमें आग लगाना ...	,,
आगका खुद जलना ...	,,
शराबका दूध करना ...	,,
अन्डेका दर्पणपर खड़ा होना ...	,,
फौवारेके जलमें अन्डेका उछलना	,,
बिगडा घी सुधारना ...	२७४
हराखेत सूखनेका उपाय ...	,,
कढाई गरम न होय ...	,,
दूसरी विधि ...	,,
दिनमें तारे दीखनेका उपाय ...	,,
जादूका साबुन ...	२७४
तोपके समान शब्द करना ...	,,
गधा न रेंकै ...	२७५
मुर्गा बांग न दे ...	,,
दूसरी विधि ...	,,
अदृश्य अक्षर ...	,,
तसलेका पानी गायब ...	,,
बिना आग पानीका उबालना ...	,,
बोतलकी चिकनाई दूर करना ...	२७६
स्याहीकी बोतल साफ करना ...	,,
लेम्पपर चिमनी न चटकै ...	,,
कपडेकी चिकनाई दूर करना ...	,,
शिरके बाल काले करना ...	,,
बाल सफेद करना ...	,,
पतंगकी डोरका मांजा ...	२७७
चलता कोल्हू रुके ...	,,
शिरपर बत्ती जलाना ...	,,
बच्चेके दांत सुखसे निकलें ...	,,
शिरपर अग्नि चमके ...	,,
निजदेह अग्निके समान दीखै ...	,,
ग्रहण दिखाना ...	२७८
जलमें न डूबे ...	,,
मनुष्यके मनकी बात जानना ...	,,
चावल न सीजैं ...	,,
नगारा न फूटै ...	,,
हथियारोंको काई न लगै ...	,,
जुएमें जीतना ...	२७९
शत्रुके मन्दाग्नि करना ...	,,
स्त्रीकी छाती जाती रहै ...	,,
बन्दूककी चलती हुई गोली को मुंहसे पकड़ना ...	,,
मुखसे प्याजकी दुर्गन्ध दूर करना	२८०
चिमनी धुयेंसे काली न हो ...	

विषय.	पृष्ठ.
वृक्षसे पत्ते झड़ना ...	२८०
शब्दयुक्त गिल्ला बनाना ...	२८१
गुलाबके फूलकी चिड़िया बनाके उड़ाना ...	,,
कटेरी खाना ...	२८२
बोतलमें अक्षर लिखना ...	,,
बोतलमें दर्पण उतरना ...	,,
बोलतमें पृथ्वी, समुद्र, हवा और आकाश ...	
वृक्षके पत्तों पर दीपदान ...	२८३
ताशके पत्तेका मेजपरसे तमाशा करनेवाली तरफ दौड़ना ...	,,
जलते हुए रूमालको शिरपर धरना ...	२८४
चित्रके रोनेकी विधि ...	,,
चोरभय दूर करना ...	,,
गजनिवारण ...	,,
तमाशा देखने वालोंके जले हुए रूमालोंका साबित होकर छाती पर लटक जाना ...	२८५
बिना गिलाफ चढे छांतेकी तानेपर कपडेको लपेटना और बन्दूककी फैर होतेही गिलाफका चढ़ जाना ...	२८६
हाजरात ...	,,
छाती गई ठिकाने आवे ...	,,
फूलोंका रंग बदलना ...	२८७
एक वृक्षकी शाखासे तरह तरहके फूलको निकालना ...	,,
पीतलको सफेद करना ...	२८८
सफेद फूलके कनेरके दरख्तको देखते ही देखते सुर्ख फूलके करने का दरख्त बनाना ...	,,
पांच प्रकारके रंग बदलना ...	,,
दोकडवी चीजोंको मीठी करना	२८९
दृश्य और अदृश्य ...	,,
हाथसे प्याजकी दुर्गन्ध जाय ...	२९०
कुएंकी डाली हुई अंगूठीका एक कबूतरके पैर या गलेसे जो बोतलसे पैदा हुआ निकलना	,,
फलोंके बीज बनाना ...	,,
एक गोली दो आवाज ...	२९१
जला हुआ रूमाल बन्दूकके फैर होते ही साबित होकर सफेद बोतलके अन्दरसे निकलना ...	,,
रूमालका अन्डा बनाना ...	२९२
कांचके पोले गोलेमें चुरटकी धुआं फूलनेसे घूमता रहै ...	२९३
पत्थर तिरनेका तन्त्र ...	,,
बिना आगके ज्वारका भूनना ...	,,
हथेलीपर सरसो जमाना ...	,,
बालोंके सफेद करनेकी विधि ...	२९४
दूसरी विधि ...	,,
कोयलेका रूप हरा करना ...	,,
देखते देखते एक पांसेका दिखाना ...	,,
पानीसे भरा हुआ गलास पानीके भीतर खाली करना ...	,,
बिना रंगतके दो जलोंका नीला करना ...	२९५
बिना रंगतके दो जलोंका काला करना ...	,,
जादूका लाल रंग रंगना ...	,,
दीपकके उजालेसे सफेदको काला करना ...	२९६
मछलीके कांटे गलानेका उपाय ...	,,
मछली ताजी रखना ...	,,

विषय.	पृष्ठ.	विषय.	पृष्ठ.
सेवका न सडना ...	२९६	हाथसे शहदका छत्त तोड़नेका ...	३०४
लाल चीटियोंका इलाज ...	२९७	अण्डा उडे ...	३०५
विना दीपक उजाला ...	,,	रूखकी डारी झुक जाय ...	,,
एक अंगूठी और जला हुआ रूमाल		सभाके लोग कूकर दीखें ...	,,
साबित होकर एक डबल		खेतकी रक्षा ...	,,
रोटीसे निकलना ...	२९८	रोगीका रोग बुद्धि करके खोवे...	,,
घडी आदिका गायब होकर		ताम्रपत्रपर अक्षर बनैं ...	३०६
डबल रोटीसे निकलना ...	,,	धातुके पत्रोंपर अक्षर लिखना ...	,,
गरम जञ्जीरका हाथ से सूतना ...	,,	तलवारपर नाम लिखना ...	,,
जले हुए गंजीफेका साबित होकर		धनके खजानेसे सांप हटाना ...	३०७
बोतलसे निकलना ...	,,	उशवाका सार ...	,,
कपडेपर हवन करना ...	,,	हुक्का अपने आप गुडगुडाय ...	,,
बैंगन कूदे उछले ...	२९९	दो वासन आपसमें लड़ें ...	३०८
नींबू उछालनेका उपाय, पुरुष		तोपके समान शब्द करना ...	,,
नृत्य करे ...	,,	बिच्छूका जहर हटे ...	,,
खेती नष्ट होय ...	३००	बिच्छू भय दूर करना ...	३०९
अक्षर रंग विरंगे होंय ...	,,	सर्पका जहर हटे ...	,,
काले अक्षर सफेद हों ...	३०१	मूषके विष निवारण ...	,,
मायारूपी पीछे अक्षर लिखना ...	,,	वावले कुत्तेका विष दूर होवे ...	,,
मायारूपी हरे अक्षर लिखना ...	,,	मेंढक विषहरण ...	,,
मायारूपीगुलाबीअक्षरलिखना ...	,,	व्यांघ्रनखका विष दूर करना ...	,,
अंधेरेमें बिना दीपक उजाला ...	३०२	मकडीका विष दूर करना ...	३१०
कपडेकी ओटमें निशाना लगे ...	,,	भिलावेका विष दूर करना ...	,,
बुझा दीपक जले, मेहसे दीपक नबुझे		संखियाका दर्प नाशक ...	,,
शीशा चवाना ...	,,	जल निर्मल करना ...	,,
जलसे घर भरा दीखे ...	३०३	दीपकमें पतंग न आवें ...	,,
समुद्र दीखे ...	,,	ताना बिगाड़ना ...	,,
गरे सर्प दीखे ...	,,	शीशीका रस उड़े ...	३११
चलनीमें जल न छने ...	,,	वस्त्र अग्निमें न जले ...	,,
तमाशा अनोखा ...	,,	कूपमेंसे दूध काढे-दूसरी विधि ...	,,
कागजके लिखे अक्षर उड़ें ...	,,	जादूका दूध होना ...	,,
जलका फालूद होय ...	,,	पानीका दीपक जरे ...	३१२
अण्डेका नाच और जलमें तैरना ...	३०४	स्त्री कपडे होय ...	,,

विषय.	पृष्ठ.
अग्निसे मुख न जरे ...	३१२
वासन सुनहरा रंगका होय ...	,,
शीशा तरासके फूल बनाना ...	३१३
आंखमें पानी आनेका इलाज ...	,,
शीतज्वर दूर होय ...	,,
चौथे दिनको ताप जाय ...	,,
इकतारा ताप जाय ...	,,
नजर दूर करना ...	,,
तत्काल दही बनाना ...	३१४
दुग्ध जमे ...	,,
भोजन करतां हँसे	,,
रात्रिमें कहीं जाय भय न लगे ...	,,
दो मुर्गा लड़ते न हारें ...	,,
अफीमका नशा उतारना ...	,,
शराबका नशा जाय ...	३१५
टूटी चीनीका जोडना ...	,,
दर्पणमें निज सूरत कूकरकीसी दीखे	,,
अग्निसे हाथ न जरे ...	,,
शीशेमें अण्डा डालें ...	३१६
अण्डा कूदै फांदे ...	,,
जलमें सूखा चलनेका उपाय ...	,,
विना खूटीका खड़ाऊंपै चले ...	,,
हाथ में धरी वस्तु न दीखे ...	,,
आवेंके वासन न फूटें ...	३१७
शत्रु भ्रमण करे ...	,,
लड़ाई करना ...	,,
आंच जले और अन्न न सीजे ...	,,
टीडी दूर करना ...	,,
अग्निपर चलना ...	३१८
तप्त तेलसे न जलना ...	,,
विना मौसम फल फूल लगना ...	,,
वृक्ष सूखे फले नहीं ...	,,
आम लगनेका उपाय ...	,,
कमल उगाना ...	३१८
काग चिडी आदिका पकड़ना	,,
काग पकड़नेकी विधि ...	,,
नेत्र रोग दूर होय ...	,,
दांतोंका दर्द दूर होय ...	,,
मन्त्र-ववासीर जाय ...	,,
शराबका पीना छूटे ...	,,
पसलीका उपाय ...	३२०
पनहारीका घड़ा खाली हो भरि जाय ...	,,
पनहारीका घड़ा फूटे ...	,,
राक्षस दीखे ...	३२१
भूत दीखे ...	,,
कुपितको प्रसन्न करनेका उपाय ...	,,
शत्रुका मुख बन्द करना ...	,,
पुत्र और पुत्रियोंकी संख्या बताना	३२२
बादलकी दूरी जानना ...	,,
पन्थाप्रश्न ...	,,
प्रश्नचक्र ...	,,
फल ...	३२३
तत्पुरुषकल्प ..	,,
झारा रामरक्षाका ...	३२४
हनुमानजीका झारा मन्त्र ...	३२५
शतधारण सरस्वती स्तोत्र ...	३२६
एकमुखी हनुमानकवच ...	३२७
दशरोगके झारनेका मन्त्र ...	३२८
भैरवासिद्धि प्रयोग ...	३२९
ज्वालामुखी प्रयोग ...	३३०
रक्षामन्त्र ...	,,
वशीकरण सुपारी मन्त्र ...	,,
वशीकरण पान मन्त्र ...	,,
वशीकरण २ मन्त्र ...	३३१
सेचन मन्त्र ...	,,
उत्पाटन मन्त्र ...	३३२

विषय.	पृष्ठ.	विषय.	पृष्ठ.
पुतलीवशीकरण ...	३३३	वायुबलि मन्त्र ...	३४५
राजवशीकरणतिलक ...	३३४	कुबेरपूजा-बलि मन्त्र ...	३४६
वेश्यावशीकरणमन्त्र ...	,,	ईशानपूजा बलिमन्त्र ...	,,
शत्रुवशीकरणमन्त्र ...	३३५	ब्रह्मपूजा बलि मन्त्र ...	,,
वशीकरण सावर मंत्र ...	,,	अनंत पूजा मन्त्र ...	,,
सर्वजनवशीकरण मंत्र ...	,,	अनंत बलि मन्त्र ...	३४७
वशीकरण मन्त्र ...	३३६	बन्धनमन्त्र ...	३४८
वशीकरण पुष्प मन्त्र ...	,,	आंखफुलीमाडाझारेका मन्त्र ...	३४९
त्रिभुवनवशीकरण मन्त्र ...	,,	आंखकी फुली काटनेका मन्त्र ...	,,
त्रैलोक्यवशीकरण भूतनाथ मन्त्र	३३७	उठी आंख झारेका मन्त्र ...	,,
प्रेतवशीकरण ...	,,	नेत्रपीड़ाहारक मन्त्र ...	,,
मोहिनी मन्त्र ...	,,	रतौंध झारनेका मन्त्र ...	३५०
लौंग मोहिनी मन्त्र ...	३३८	शूलरोग नाश करनेका मन्त्र ...	,,
शत्रु मोहनेका मन्त्र ...	,,	रस्सा झारनेका मन्त्र ...	,,
सभामोहिनी सिन्दूर ...	,,	डमरू पहली वायुका मन्त्र ...	,,
अघोरकल्प ...	३३९	दांतकी व्यथा झारनेका मन्त्र	३५१
मुरदेको सिद्ध करनेका उ० ...	३४१	सम्पूर्ण शिरोव्यथाका मन्त्र ...	,,
अघोर सुदर्शन मन्त्र ...	३४२	हूक झारनेका मन्त्र २ ...	,,
उदक प्रोक्षणका मन्त्र ...	३४३	कर्णमूल मन्त्र ...	३५२
पुष्पाञ्जलिका मंत्र ...	,,	घिनहीका मन्त्र ...	,,
प्रणामका मन्त्र ...	,,	थनैलीझारनेका मन्त्र ...	,,
पीठका मंत्र ...	३४४	मृगीका मन्त्र ...	,,
इन्द्रपूजा विधान ...	,,	खेतमें बहुत उपजे और रक्षा० ...	,,
इन्द्रके बलिदानका मंत्र ...	,,	हुकाबागीका मन्त्र ...	,,
अग्निपूजाका मन्त्र ...	,,	ममरषी झारनेका मन्त्र ...	३५३
अग्निके बलिदानका मन्त्र ...	,,	अण्डवृद्धिका मन्त्र ...	,,
यमपूजाका मन्त्र ...	,,	पोतरहांडी व हूक और घेट मोर झारनेका मन्त्र ...	३५४
यमके बलिदानका मन्त्र ...	३४५	दाद झारनेका मन्त्र ...	,,
नैर्ऋताधिपतिकी पूजाका मन्त्र		कूकुर काटे तो झारनेका मन्त्र ...	,,
नैर्ऋताधिपतिके बलिका मन्त्र ...	,,	शिंगी मछरीका मन्त्र ...	३५५
वरुण पूजाका मन्त्र ...	,,	कठबेगुचीका मन्त्र ...	,,
वरुण बलिदानका मन्त्र ...	,,	बीछी झारनेका मन्त्र ...	,,
वायुपूजा मन्त्र ...	,,		

विषय.	पृष्ठ.
बीछीका विष चढ़ानेका मन्त्र ...	३५६
सांप झारनेका मन्त्र ...	,,
ज्वरबन्धन झारनेका मन्त्र	३५७
अनावृष्टि नाशक मन्त्र ...	,,
तिल्ली दूर करनेका मन्त्र ...	,,
लहरी जगानेका मन्त्र ...	,,
पाषाण बरानेका मन्त्र ...	३५८
सर्प बरानेका मन्त्र तालत्रयेण ...	,,
सर्पोंके भगानेका मन्त्र ...	,,
सूकर मूस बरानेका मन्त्र ...	,,
केवल मूस बरानेका मन्त्र ...	,,
शस्त्रास्त्र बरानेका मन्त्र ...	,,
शस्त्रस्तम्भन मन्त्र ...	,,
अग्निस्तम्भन करनेका मन्त्र ...	,,
अग्निशीतल करनेका मन्त्र ...	३६०
अग्निभय निवारण मन्त्र ...	३६१
टोना झारनेका और दूर करनेका मन्त्र ...	,,
टोना झारनेके प्रत्यक्ष करनेका मन्त्र ...	३६२
ज्वर झारनेका मन्त्र ...	,,
ज्वरहरण मन्त्र ...	३६३
तिजारी झारनेका मन्त्र ...	,,
वामदेव कल्प,, ...	३६४
सद्योजात कल्प ...	३६५
प्रयोग ...	३६६
त्र्यंबक प्रयोग ...	३६७
न्यासविधि ...	३६८
मंत्रवर्णन्यास ...	,,
ध्यानम् ...	३६९
मृतसंजीवनी ...	३७०
शुक्रोपासित मृतसज्जवनी विद्यामन्त्र मृतसंजीवनी मन्त्रका ध्यान ...	३७१
मृत्युञ्जयप्रयोग ध्यानम् ...	,,
गौ भैंसी दुग्धवर्द्धन मन्त्र ...	३७२
गर्भरक्षागण्डाबन्धन मन्त्र ...	,,
सर्वशूल निवारण मन्त्र ...	,,
विषमज्वरहरण मन्त्र ...	,,
गर्भस्तम्भन मन्त्र ...	,,
शिरकादर्द झारनेका मन्त्र ...	३७३
भूतनाशक मन्त्र ...	,,
प्रसूतिका मन्त्र ...	,,
सुखसे बालक होनेका मन्त्र ...	,,
ग्रहदोषपीडा निवारणमंत्र विधि ...	३७४
भूतग्रहनिवारण मन्त्र-विधि ...	,,
मृतवत्साके पुत्र जिलानेका मन्त्र...	३७५
मित्रोंमें लडाई करानेका मन्त्र ...	,,
व्याघ्रनिवारण मन्त्र-विधि ...	,,
दूसरा मन्त्र ...	३७६
ग्रन्थकर्तृपरिचय ...	,,

इति विषयानुक्रमणिका समाप्त

श्री :

अथ बृहत् इन्द्रजाल

अर्थात्

कौतुकरत्न भाण्डागार



अथ प्रथम पटल

वन्दना

दोहा—गुरु गोसाइँ गोविंद पद, बार बार शिर नाय ।
मंत्र यंत्र वर्णन करूं, करत सिद्धि है जाय ॥१॥

कैलासशिखरारूढं देवदेवं महेश्वरम् ।
दत्तात्रेयस्तु पप्रच्छ शंकरं लोकशंकरम् ॥ १ ॥
कृतांजलिपुटो भूत्वा पृच्छते भक्तवत्सलः ॥
भक्तानां च हितार्थाय तंत्रकल्पश्च कथ्यताम् ॥ २ ॥
कलौ सिद्धं महाकृत्यं तंत्रविद्याविधानकम् ।
कथयस्व महादेव देवदेव महेश्वर ॥ ३ ॥
सन्ति नानाविधा लोके यंत्रमन्त्राभिचारकाः ।
आगमोक्ताः पुराणोक्ता वेदोक्ता डामरे तथा ॥ ४ ॥
उड्डीशे डामरे तंत्रे कालचण्डीश्वरे मते ।
राधातंत्रे च उच्छिष्टे धारातंत्रे मृतेश्वरे ॥ ५ ॥
तत्सर्वं कीलनं कृत्वा कला वीर्यविवर्जिताः ।
ब्राह्मणाः कामक्रोधाढ्यास्तस्य कारणहेतवे ॥ ६ ॥
विना कीलकमंत्रांश्च तंत्रविद्या कथं शिव ।
तंत्रविद्यां क्षणात्सिद्धां कृपां कृत्वा दयानिधे ॥ ७ ॥

शृणु सिद्धिं महायोगिन् सर्वयोगविशारद ।
तंत्रविद्या महागुह्या देवानामपि दुर्लभा ॥ ८ ॥
तवाग्रे कथिता देव तंत्रविद्याशिरोमणिः ।
गुह्याद्‌गुह्यं महागुह्यं गुह्यं गुह्यं पुनः पुनः ॥ ९ ॥
गुरुभक्ताय दातव्यं नाभक्ताय कदाचन ।
शिवभक्त्येकमनसे दृढचित्त सुशालिने ॥ १० ॥
शिरो दद्यात्सुतं दद्यान्न दद्यात्तंत्रकल्पकम् ।
यस्मै कस्मै न दातव्यं नान्यथा शंकरोदितम् ॥११॥
अथातः संप्रवक्ष्यामि दत्तात्रेय तथाशृणु ।
कला सिद्धं महामन्त्रं विना कीलेन कथ्यते ॥ १२ ॥
न तिथिर्न च नक्षत्रं नियमो नास्ति वासरः ।
न व्रतं नियमो होमः कालवेलाविवर्जितम् ॥ १३ ॥
केवलं तंत्रमन्त्रेण औषधिं सिद्धिरूपिणीम् ॥
यस्य साधनमात्रेण क्षणे सिद्धिश्च जायते ॥ १४ ॥
मारणं मोहनं स्तम्भं विद्वेषोच्चाटनं वशी ।
आकर्षणं चेन्द्रजालं यक्षिणीं च रसायनम् ॥ १५ ॥
कालज्ञानमनाहारं साहारनिधिदर्शनम् ।
वन्ध्यापुत्रवतीयोगे मृतवत्सा सुजीविता ॥ १६ ॥
जये वा वाजिकरणे भूतग्रहनिवारणे ।
सिंहव्याघ्रभयं सर्पवृश्चिकानां तथैव च ॥ १७ ॥
दधिमन्थोद्धृतं चान्यान्नान्यथा शंकरोदितम् ।
गोप्यं गोप्यं महागोप्यं गोप्यं गोप्यं पुनः पुनः ॥१८॥

(अथ सर्वोपरिमन्त्रः) ॐ परब्रह्मपरमात्मनेनमः ॥ उत्पत्ति-स्थितिप्रलयकारणाय ब्रह्महरिहराय त्रिगुणात्मने सर्वकौतुकानि दर्शय २ दत्तात्रेयाय तंत्राणि सिद्धिं कुरु २ स्वाहा॥१०८॥ जपात्सिद्धिः ॥ १

इति श्रीदत्तात्रेयतंत्रे दत्तात्रेयेश्वरसंवादे प्रथमः पटलः ॥ १ ॥

चौपाई

एक समय गिरिवर कैलासा । गौरी पति जहँ करै निवासा॥
दत्तात्रेय तहाँ चलि गयऊ । हाथ जोरि यह पूँछत भयऊ॥
भक्तनके हित कहौ बुझाई । तंत्र कल्प वृक्षहि चित लाई॥
कलिमें सिधि हो तंत्र विधाना। कहो कृपा करि कृपानिधाना॥
बहुत विधान हवैं यहि लोका । पै नाहिं चलैं मोहि यह शोका॥
वे सब कीलि गये थल मांहीं। ताते वीर्य रहा है नाहीं ॥
ब्राह्मण काम क्रोध वश रहेऊ ।त्यहिकारण सब कीलित भयऊ॥
कहौ नाथ विन कीलमंत्रा । औरहु सिद्धि होय जिमितंत्रा॥

ईश्वर उवाच

सुनहु सिद्धि मैं कहौं बुझाई । तुममें सकल योग चतुराई ॥
तंत्र सुविद्या महा गुप्त है । देवनको भी अति दुर्लभ है॥
सो मैं तुमसों कहौं स्वतंत्र । सर्व शिरोमणि है यह तंत्र ॥
गुप्त गुप्त अतिही है गुप्त । ताते राखै याको लुप्त ॥
त्यहि दीजै जो शिव गुरु भक्त। दीजै कबहूँ नाहिं अभक्त ॥
शिर अरु सुत दोनों दैडारै । तंत्र कल्प नहिं देन विचारै॥
शंकर भाषा निज मुख पाहीं। ताते मिथ्या है यह नाहीं ॥

अब मैं ताको करौं बखाना । दत्तात्रेय सुनहु धरि ध्याना ॥
कलियुग महामंत्र जो सिद्धि । विन कीले मैं करों प्रसिद्धि ॥

दोहा—व्रत तिथिवासर नियम नहिं, हवन नक्षत्तर नाहिं ॥
तंत्र मंत्र साधन करै, शीघ्र सिद्धि हैजाहिं ॥

चौपाई

स्तम्भन औ मोहन मारन । वशीकरण विद्वेष उचाटन ॥
इन्द्रजाल यक्षिणि आकर्षन । काल जान साहार रसायन ॥
वंध्या पुत्रवतीको योग । मृतवत्सा जीवित संयोग ॥
वाजीकरण अपूरव मान । बुड्ढा करै तुरतही ज्वान ॥
भूत ग्रहको होय निवारन । सिंह व्याघ्र वृश्चिक भयटारन ॥
यह सब कार्यसिद्धि हैजाहीं । सत्य सत्य कछु संशय नाहीं ॥
दधि विलोप घृत यदपि न पावै । पर यह शंकर वचन न जावै ॥
महा गुप्त यह भेद बतावा । दत्तात्रेय सुनत सुख पावा ॥

दोहा—जे जग कीले मंत्र हैं, तिनके साधन हेत ।
व्रत तिथि वासर नियम सब, गिरजा बरनों चेत ॥

छः प्रकारके कर्म

कर्म छः प्रकारके होते हैं—शांतिकरण, वशीकरण, स्तम्भन, विद्वेष, उच्चाटन, और मारण ॥

छहों कर्मोंके लक्षण

रोग, कृत्य और ग्रहादिकोंका निवारण शांतिकरण है संपूर्ण मनुष्योंको वश कर लेना वशीकरण है । चलते हुएको रोकना स्तम्भन है। जिसकी परस्पर अत्यन्त मित्रता है उनमें वैर उत्पन्न करना विद्वेष है । स्वदेशसे निकल कर दूसरे देशमें चला जाना उच्चाटन है । और जीवधारियोंके प्राण लेना मारण कहाता है ॥

शांतिकर्मकी अधिष्ठात्री देवी रति है, वशीकरणकी सरस्वती, स्तंभनकी लक्ष्मी विद्वेषकी ज्येष्ठा, उच्चाटनकी दुर्गा और मारणकी भद्रकाली है । जौनसा कर्म करना हो उसके आदिमें उसीका पूजन करे ।

छःओं कर्मोंके दिशा

शांतिकर्म ईशानदिशामें, वशीकरण उत्तरमें, स्तम्भन पूर्वमें-विद्वेष नैर्ऋत्यमें, उच्चाटन वायव्यमें और मारण अग्निदिशामें, इसका तात्पर्य यह है कि जौनसा कर्म करना हो उसी दिशामें मुख करके बैठे ॥

छःओं कर्मोंके ऋतुविचार

सूर्योदयसे लेकर प्रत्येक रातिदिनमें दश दश घडीमें, वसन्त ग्रीष्म, वर्षा, शरद्, हेमन्तशिशिर सब ऋतु, भोग जाया करती हैं कोई २ यह भी कहते हैं, कि दुपहरसे पहिले वसन्तऋतु मध्याह्नमें ग्रीष्म, दुपहर पीछे वर्षा, संध्याके समय शिशिर, आधीरातमें शरद और प्रातःकालमें हेमन्तऋतु भोगती हैं ।

प्रत्येक ऋतुमें कर्तव्य कर्म

हेमन्तऋतुमें शांतिकर्म, वसन्तमें वशीकरण, शिशिरमें स्तम्भन, ग्रीष्ममें विद्वेष, वर्षामें उच्चाटन और शरदृतुमें मारण कर्म करना उचित है ॥

छःओं कर्मोंके कालविशेष

दुपहर पहिले वशीकरण, मध्याह्नमें विद्वेषण और उच्चाटन, तीसरे पहर शांतिकर्म, स्तम्भन और सायंकालमें मारण कर्म करे ।

छःओं कर्मोंके वर्गभेद

वशीकरण, आकर्षण और क्षोभमें लालरंगका चिन्त जहरके उतारनेमें शान्ति करनेमें और पुष्टिमें श्वेतरंगकाध्यान कर, स्तंभनमें पीला रंग, उच्चाटनमें धूम्रवर्ण उन्मादमें वीरबहूटीकासा लालरंग और मारणकर्ममें कृष्णवर्णका ध्यान करे।

षट्कर्म चक्र

षट्कर्म	शांतिक	वशीकर.	स्तंभन	विद्वेषण	उच्चाटन	मारण
देवी	रति	सरस्वती	लक्ष्मी	ज्येष्ठा	दुर्गा	भद्रकाली
दिशा	ईशान	उत्तर	पूर्व	नैर्ऋत्य	वायव्य	अग्नि
ऋतु	हेमन्त	वसन्त	शिशिर	ग्रीष्म	वर्षा	शरद्
रंग	श्वेत	लाल	पीला	लाल	धूम्र	काला

इसी रीतिसे वार, नक्षत्र तिथि आदिका निर्णय करके जैसा कर्म करना हो उसीके अनुसार करे, जैसे शांतिकर्म करना है तो बृहस्पतिको करे, विद्वेषण क्रूर वार शनिश्चर आदिमें करे, इसी प्रकारसे सब तिथि और नक्षत्रोंका भी विचार कर लेना चाहिये ॥

अथ दिशाशूलविचार

सोम शनिश्चर पूरववासा । रवि शुक्कर पश्चिमके पासा।
बुध मंगल उत्तरमें रहै । सुरगुरुमें दक्षिण दिशि कहै ॥

	पूर्व सोमवार. शनैश्चर.	
उत्तर मंगल बुध	दिशाशूल ले जाओ वामे राहु योगिनी पीठ । सन्मुख लेवै चन्द्रमा लावे लक्ष्मी लूट ॥	दक्षिण. बृहस्पति.
	शुक्रवार. रविवार. पश्चिम	

राशि देखनेकी विधि

एक चन्द्रमामें सवा दो नक्षत्र भोग करते हैं और हरएक नक्षत्रमें चार चरण होते हैं इस हिसाबसे हर एकको चन्द्रमा ९ चरणोंतक भोग करता है और प्रत्येक चरणका एक एक अक्षर नियत है जिस मनुष्यकी राशि देखनी हो उसके नाम का पहिला अक्षर इन नक्षत्रोंमें देखे, जिस चन्द्रमाके भोग-कालमें यह नक्षत्र हो वही उसकी राशि होती है। यह नीचे लिखे अच्छी तरह विदित हो जायगा ॥

राशि.	अक्षरोंका स्वामिनक्षत्र.		
मेष.	अश्विनीके चार चरण चू. चे. चो. ला.	भरणीके ४ चरण ली. लू. ल. लो.	कृत्तिकाक एक चरण आ.
वृष.	कृत्तिकाके पिछले ३ चरण ई. ऊ. ए.	रोहिणीके चार चरण ओ. वा. वी. वू	मृगशिरके प्रथम २ चरण वे. वो.
मिथुन	मृगशिरके पि० २ चरण का. कि.	आर्द्राके ४ चरण कू. घ ङ. छ.	पुनर्वसुके ३ चरण के. को. हा.
कर्क.	पुनर्वसुका १ चरण ही.	पुष्यके ४ चरण हु. हे हो. डा	आश्लेषाके ४ चरण डी. डू. डे. डो.
सिंह.	मघाके ४ चरण मा. मी. मू. मे.	पूर्वाफाल्गुनीके ४ चरण मो. टा. टी. टू.	उत्तराफाल्गुनीका १ चरण टे.
कन्या.	उत्तराफाल्गुनीके पि. ३ चरण टो. पा. पी.	हस्तके ४ चरण पू. पा. णा. ठा.	चित्राके २ चरण पे. पो.

तुला.	चित्राके २ चरण रा. री.	स्वातीके ४ चरण रू. रे. रो. ता.	विशाखाके ३ चरण ती. तू. ते.
वृश्चिक	विशाखाका १ चरण तो.	अनुराधाके ४ चरण ना. नी. नू. ने.	ज्येष्ठाके ४ चरण नो. या. यी. यू.
धन.	मूलके ४ चरण ये. यो. भा. भी	पूर्वाषाढाके ४ चरण भू. धा. फा. ढा.	उत्तराषाढाका १ चरण भे.
मकर	उत्तराषाढाके ३ चरण भो. ज. जि.	श्रवणके ४ चरण खी. खू. खे. खो.	धनिष्ठाके २ चरण गा. गी.
कुंभ.	धनिष्ठाके २ चरण गू. गे.	शतभिषाके ४ चरण गो. सा. सी. सू.	पूर्वाभाद्रपदाके ३ चरण से. सो. दा.
मीन.	पूर्वाभाद्रपदाका १ चरण दी.	उत्तराभाद्रपदाके ४ चरण दू. थ. झ. ञ.	रेवतीके ४ चरण दे. दो. चा. ची.

इनमेंसे अभिजित् नक्षत्रके जो चार चरणोंके (जूजे जोखा) चार अक्षर हैं इनकी भी गणना मकरराशिमें होती है । यदि हमें गोविंदकी राशि देखना हैं तो इसका पहिला अक्षर (गो) शतभिषा नक्षत्रका पहिला चरण है, इस नक्षत्रका स्वामी कुम्भ है तो गोविंदकी कुम्भराशि हुई इसी तरह सब की देख लो, अब हम एक चक्र नीचे लिखते हैं जिसमें अभिजित भी संयुक्त है और ऊपरके चक्रसे बहुत सहज भी है॥

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	राशि
चू	इ	का	ही	मा	टो	रा	तो	ये	भो	गु	दी	१
चे	ऊ	की	हू	मी	पा	री	ना	यो	ज	गे	दू	२
चो	ए	कू	हे	मू	पी	रू	नी	भा	जि	गो	थ	३
ला	ओ	घ	हो	मे	पू	रे	नु	भी	जू	सा	झ	४
ली	वा	ङ	डा	मो	षो	रो	ने	भू	जे	सि	ञ	५
लू	वी	ङ	डी	टा	ठ	ता	नो	धा	जो	सू	दे	६
ले	वु	के	डू	टी	ण	ती	या	फा	खा	से	दो	७
लो	वे	को	डे	टू	पे	तु	यी	ढा	खी ख	सो	चा	८
अ	श	हा	डो	टे	पो	ते	यु	भे	खो गा गी	दा	ची	९
मेष	वृषम	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृ.	धन	मकर	कुंभ	मीन	रा
चर	स्थिर	द्विस्व	चर	स्थिर	द्विस्व	चर	स्थिर	द्विस्व.	चर	स्थिर	द्विस्व	सज्ञा

तिथि विचार

तिथि पाँच प्रकारकी होती है जैसे—नन्दा, भद्रा, जया, रिक्ता और पूर्णा । यदि शुक्रवारमें नन्दा बुधमें भद्रा, मंगलमें जया; शनैश्चरमें रिक्ता गुरुवारमें पूर्णा तिथि हो तो सिद्धि-योग है । इससे अन्यथा मृत्यु योग कहते हैं ॥

सिद्धियोग चक्र

नन्दा	१।६।११	शुक्र
भद्रा	२।७।१२	बुध
जया	३।८।१३	भौम
रिक्ता	४।९।१४	शनि
पूर्णा	५।१०।१५	गुरु

मृत्युयोगचक्र

नन्दा	१।६।११	र. कु.
भद्रा	२।७।१२	च शु
जया	३।८।१३	बुध
रिक्ता	४।९।१४	गुरु
पूर्णा	५।१०।१५	शनि

सिद्धियोगमें काम करनेसे सिद्धि होती है. मृत्युयोगमें करनेसे दुःखदायी होता है ॥

अथ योगिनी विचार

योगिनीका वास पडवाको पूर्वमें, दूजको उत्तरमें तीजको अग्निकोणमें, चौथको नैऋत्यमें, पंचमीको दक्षिणमें, छठको पश्चिममें, सप्तमीको वायव्यमें, अष्टमीको ईशानमें होता है। योगिनी पीठ और बांई ओरकी शुभफलदायक और दक्षिण और सम्मुखकी शुभ नहीं होती ॥

आसन पर बैठनेकी विधि

मन्त्र जपनेके कितने ही प्रकारके आसन होते हैं जैसे कामकी सिद्धिके लिये यत्न करना चाहिये. वैसेही आसनसे बैठना उचित है. जैसे पुष्टिकर्ममें पद्मासनसे बैठे, शांतिकर्ममें स्वस्तिकासनसे, विद्वेषमें कुक्कुटासनसे, उच्चाटनमें अर्धस्वस्तिक आसनसे बैठे, मारण और स्तम्भन करनेको विकटासनसे और वशीकरण करनेको भद्रासनसे बैठे ॥

वशीकरण करनेको मेढाके चर्मपर, आकर्षण करनेको बाघम्बरपर उच्चाटन करनेको ऊँटके चर्मके आसनपर, विद्वेष करनेको घोडेके चर्मपर, मारणमें भैंसेके चर्मपर और छुडानेमें गजचर्मपर बैठे ॥

बैठनेके पहिले अपना आसन कूर्मचक्रकी रीतिसे बिछवावे

कूर्म चक्र

ईशान दक्षिण हस्त			पूर्व मुख			आग्नेय वामहस्त
	कखगघङ				चछजझञ	
	श	अ आ		अं अः	ट	
उत्तर	ष स	इ ई	लृ लॄ	ओ औ	ठ ड	दक्षिण
	ह	उ ऊ	ऋ ॠ	ए ऐ	ढ ण	
	यरलव		पफबभम		तथदधन	
दक्षिण पाद वायव्य			पश्चिम पुच्छ			वामपाद नैर्ऋत्य

इस चक्रके अनुसार बैठनेसे कर्मकी सिद्धि शीघ्र होती है ॥

चन्द्र दिशाचक्र

चन्द्रमा एक राशिपर सवादो दिन रहता है जिसकी १३५ घडी होती हैं इन एक सौ पैंतीस घडियोंमें चन्द्रमा आठों दिशाओंको भोगता है परन्तु चन्द्रमाकी स्थिति जिस दिशामें हो उसीसे गिनना प्रारम्भ करे ।

ईशान	पूर्व	आग्नेय
१४	१७	१५
उत्तर १५	सब घडी १३५	दक्षिण २१
१९	१८	१६
वायव्य	पश्चिम	नैर्ऋत्य

पूर्वदिशा	.... १७ घ.
आग्नेयकोण	.... १५ ,,
दक्षिण	.... २१ ,,
नैर्ऋत्य	.... १६ ,,
पश्चिम	.... १८ ,,
वायव्य	.... १९ ,,
उत्तर	.... १५ ,,
ईशान	.... १४ ,,
	१३५

चन्द्रस्थिति।

मेष । सिंह । धन	पूर्वदिशा
मिथुन । कुम्भ । तुला	पश्चिम
कर्क । मीन । वृश्चिक	उत्तर
वृषभ । कन्या । मकर	दक्षिण

ऋणी धनी विचार

वर्गोंके स्वामी नीचे लिखे कोष्ठकसे वर्गों और उनकी शत्रुता मित्रता का ज्ञान हो जायगा.

संख्या	वर्गके स्वामीका नाम	वर्गके अक्षर	शत्रु	मित्र	उदासीन
१	गरुड	अ इ उ ए	सर्प	श्वान	सिंह
२	बिलाव	क ख ग घ ङ	मूषक	सर्प	श्वान
३	सिंह	च छ ज झ ञ	मृग	मूषक	सर्प
४	श्वान	ट ठ ड ढ ण	मेष	मृग	मूषक
५	सर्प	त थ द ध न	गरुड	मेष	मृग
६	मूषक	प फ ब भ म	बिलाव	गरुड	मेष
७	मृग	य र ल व	सिंह	बिलाव	गरुड
८	मेष	श ष स ह	श्वान	सिंह	बिलाव

इस कोष्ठकसे ऋणी धनी रीतिसे देखा जाता है कि, दोनोंके वर्गकी संख्याको पृथक् पृथक् दोसे गुणा करके उसकी वर्गसंख्या उसमें और उसकी इसमें जोड दे और दोनोंमें आठका भाग दे. जिसका अंश शेषमें अधिक हो वह ऋणी और जिसका न्यून हो वह धनी । मतलब यह है कि अधिक अंकवाला न्यून अंकवालेको धन दे देगा । जैसे सेठ भगवान्‌दासके पास नन्दकिशोर नौकरी चाहता है तो उसको मिलेगी या नहीं ? अब देखो भगवान्‌दासकी वर्गसंख्या ६ और नन्दकिशोरकी पांच है दोनोंको दोसे गुना किया तो–

६+२ = १२ और ५×२ = १०. १२+५, (नं० वर्गसंख्या) = १७÷८ = १ शेष.

१०+६ (भ. वर्गसंख्या) = १६÷ = ० शेष

अब देखना चाहिये शून्यसे एक अधिक है तो भगवान्‌दास नन्दकिशोरको अवश्य नौकर रख लेगा ॥

कर्मविशेषमें हुं फटका प्रयोग

बन्धन, उच्चाटन, द्वेष और संकीर्ण कर्मकी सिद्धिके लिये 'हुं' पदका जप करै । छेदनमें 'फट' पदका जप करे । आरिष्ट और ग्रहनिवारण करनेको हुंफट्' पुष्टि आयन और बोधमें 'वौषट्' अग्निकर्ममें 'स्वाहा' और सब प्रकारके पूजनमें 'नमः' शब्द प्रयोग करे ॥

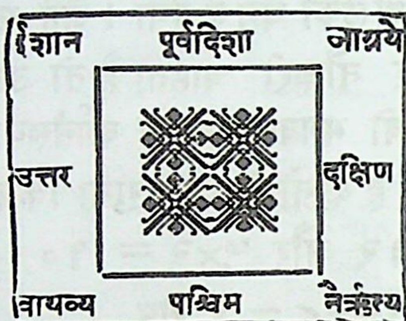
मन्त्रका लिंगनिर्देश

मन्त्र तीनप्रकारके होते हैं । स्त्रीलिंग, पुल्लिंग और नपुंसक वह्निजायान्त (स्वाहान्त) मन्त्र स्त्री हैं, 'नमः' अन्तवाले

नपुंसक और 'हुं फट्' वाले पुँल्लिग जातिके हैं। वशीकरण शांतिकरणमें पुंल्लिग, क्षुद्र क्रियाओंमें स्त्रीजाति और इनसे अन्यत्र नपुंसक जातिके मन्त्रोंका प्रयोग करे।

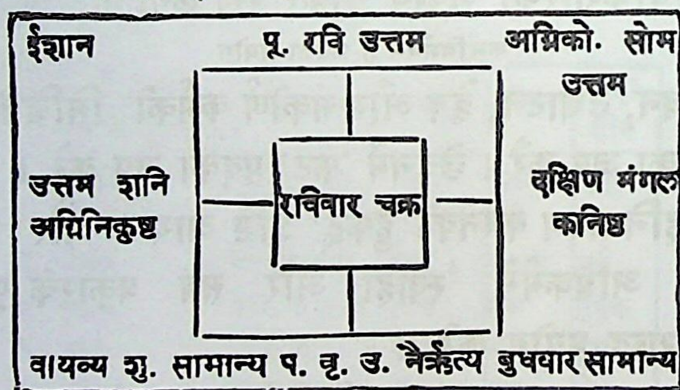
शुभकार्यका चक्र

जो कोई किसी शुभकार्यकी सिद्धिके लिये मन्त्रको जपे तो नीचे लिखे चक्रके अनुसार बैठे ॥



रविवारके बैठनेका चक्र

जो रविवारसे प्रारंभ करे तो नीचेके अनुसार बैठनेसे कार्य शीघ्र सिद्ध होता है ॥



इसी रीतिसे जैसे कार्यके लिये बैठना चाहे उसी ओर मुख करके बैठे ॥

योगिनी चक्र

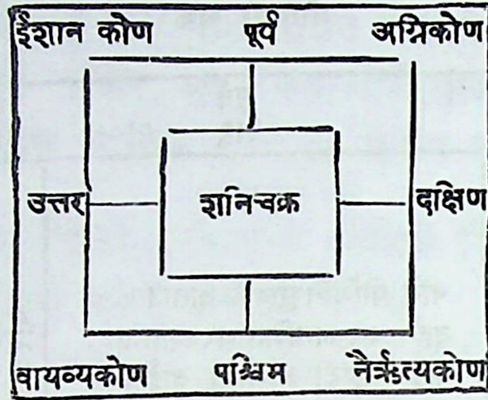
ईशान ३०।८	पूर्व १।९	आग्नि ३।११
उत्तर २।१०	बांये योगिनि सुखकी दाता । दहने धन अगणित भर लाता ॥ पीठ पिछाडी अभिमत दाई । सन्मुख मृत्यू देय दरसाई ॥	दक्षिण ५।१३
वायव्य ७।१५	पश्चिम ६।१४	नैऋत्य ४।१२

हुं मंत्रकी प्रकृति

मंत्रकी सिद्धि चार प्रकारकी होती है और जैसी प्रकृति होती है वैसा ही उसका फल भी होता है ॥

शत्रुता	साध्यता	सिद्धि	सुसिद्धि
यदि मंत्रकी प्रकृति शत्रु भावमें हो तो काम न बने	यदि साध्यता प्रकृति हो तो बने कामको बिगाड देवे	यदि सिद्धि प्रकृति हो तो अवसर आनेपर कार्य सिद्ध होय	और सुसिद्धि प्रकृतिमें तौ कार्य बहुतही शीघ्र सिद्ध होय

जो कार्यको अत्यन्त शीघ्र सिद्ध करनेकी इच्छा हो तो मंत्रका जप शनैश्चर वारसे करे और पश्चिमको मुख करके बैठे जैसे नीचे चक्रमें ज्ञात होगा



अथ तिथिशुभाशुभस्वामिसंज्ञापालन ।

तिथि	नाम	फल	स्वामी	संज्ञा	शुक्ल	कृष्ण	पालन
१	प्रतिप.	सिद्धि	अग्नि	नंद	अशुभ	शुभ	काशीफल
२	द्वितीया	कार्य	ब्रह्मा	भद्रा	अशुभ	शुभ	बाबोल
३	तृतीया	आरो.	गौरी	जया	अशुभ	शुभ	लवण
४	चतुर्थी	हानि	गणेश	रिक्ता	अशुभ	शुभ	तिल
५	पंचमी	शुभ	सर्प	पूर्णा	अशुभ	शुभ	राई
६	षष्ठी	अशुभ	स्कन्द	नंदा	मध्य	मध्य	तेल
७	सप्तमी	शुभ	सूर्य	भद्रा	मध्य	मध्य	आंवला
८	अष्टमी	व्या.ना	शिव	जया	मध्य	मध्य	नारियल
९	नवमी	मृत्यु	दुर्गा	रिक्ता	मध्य	मध्य	भोपला
१०	दशमी	धन	यम	पूर्णा	शुभ	मध्य	परवर
११	एकाद.	शुभ	विश्वे	नंदा	शुभ	अशुभ	पावटे
१२	द्वादशी	सर्वसि.	हरि	भद्रा	शुभ	अशुभ	मसूर
१३	त्रयोद.	सर्व.	मदन	जया	शुभ	अशुभ	बैंगन
१४	चतर्द०	उग्र	शिव	रिक्ता	शुभ	अशुभ	मधु
१५	पूर्णिमा	पुष्टि	चंद्र	पूर्णा	शुभ	०	घृत
३०	अमा०	अशुभ	पितर	०	०	अशुभ	स्त्रीसंग

तिथिवर्णन

कृष्णपक्षकी नौ तिथियोंमें सूर्यका और शुक्लपक्षकी तिथिमें चन्द्रमाका अधिकार रहता है ऐसी रीतिसे कृष्णपक्षकी शेष छः तिथियोंमें चन्द्रमाका और शुक्लपक्षकी छः में सूर्यका अधिकार रहता है। इसीलिये सूर्यके अधिकारमें चर और चन्द्रमाके अधिकारमें स्थिर कार्य करना उचित है। चर-कार्य कहते हैं जो थोडी देरतक रहता है और स्थिर उसे कहते हैं जो बहुत कालपर्यंत उसी दशामें रहता है।

तिथिचक्र

चन्द्रतिथि		सूर्यतिथि	
शुक्ल पक्ष	कृष्ण पक्ष	शुक्ल पक्ष	कृष्ण पक्ष
१. २. ३.	४. ५. ६.	४. ५. ६.	१. २. ३.
७. ८. ९.	१०. ११. १२.	१०. ११. १२.	७. ८. ९.
१३. १४. १५.			१३. १४. ३०.

चन्द्रफलम्

आद्ये चंद्रः श्रियं कुर्यान्मनस्तोषं द्वितीयके। तृतीये धनसंपत्तिं चतुर्थे कलहं सदा॥ पञ्चमे ज्ञानवृद्धिं च षष्ठे सम्पत्तिमुत्तमाम्। सप्तमे राजसम्मानं मरणं चाष्टमे भवेत्॥ नवमे धर्मलाभं च दशमे मानसेप्सितम्। एकादशे सर्वलाभं द्वादशे हानिमेव च॥

१ जन्मका चंद्रमा कल्याण करता है.	५ ज्ञानकी वृद्धि करै	९ धर्म और लाभदायक
२ मन संतुष्ट करता है.	६ लाभकारी	१० अभिलाषपूरक
३ धन संपत्ति देता है.	७ राज्यमें सन्मान करावै.	११ लाभदायक
४ कलहकारी है	८ मारक होता है.	१२ हानिकारी

दिनका चौघडिया.							रात्रिका चौघडिया.						
र	चं	मं	बु	गु	शु	श	र	चं	मं	बु	गु	शु	श
उ	अ	रो	ला	शु	चं	का	शु	चं	का	उ	अ	रो	ला.
चं	का	उ	अ	रो	ला	शु	अ	रो	ला	शु	चं	का	उ
ला	शु	चं	का	उ	अ	रो	च	का	उ	अ	रो	ला	शु
अ	रो	ला	शु	चं	का	उ	रो	ला	शु	चं	का	उ	अ
का	उ	अ	रो	ला	शु	चं	का	उ	अ	रो	ला	शु	चं
शु	चं	का	उ	अ	रो	ला	ला	शु	च	का	उ	अ	रो
रो	ला	शु	चं	का	उ	अ	उ	अ	रो	ला	शु	चं	का
उ	अ	रो	ला	शु	चं	का	शु	चं	का	उ	अ	रो	ला.

नवग्रह	रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
विंशोत्तरीदशा	६	१०	७	१७	१६	२०	१९	१८	७
अष्टोत्तरीदशा	६	१५	८	१७	१९	२१	१०	१२	८
योगिनीदशा	पिं २	मं १	भ्रा. ४	म. ५	धा. ३	सिं. ७	उ. ६	सं ८	०
ग्रहैकपादद्दृष्टि	३।१०	३।१०	७	३।१०	४।८	३।१०	९।५	४	०
द्विपादद्दृष्टि	५।९	५।९	३।१०	४।८	३।१०	५।९	४।८	०	०
त्रिपादद्दृष्टि	४।८	४।८	५।९	४।८	३।१०	४।८	७	०	०
सम्पूर्णद्दृष्टि	७	७	४।८	७	९ ५	७	३।१०	०	०
ग्रहोंकी वर्ष	२२	२४	२८	३२	१६	२५	१६	४२	४२
एकराशिभ्र	मास १	दिन २।	मास १॥	मास १	मास १३	मास १	मास ३०	मास १८	मास १८

कुम्भस्थापनविधिः

शान्तिकर्ममें नौ रत्नोंसे अलंकृत करके सुवर्णका कलश स्थापन करे; यदि सुवर्णका न हो तो चांदी अथवा तांबेहीको काममें लावे । अभिचारकर्ममें लोहेका कलश, उत्सादनमें

काचका, मोहनमें रूपेका, उच्चाटनमें मिट्टीका कलश स्थापन करे, यदि इनमेंसे कोई कलश न मिले तो तांबेहीका काममें लावे. क्योंकि; तांबा सब कामोंमें उत्तम फलदायक है ॥

मालाका निर्णय

वशीकरण मंत्रोंको मोती अथवा हीरेकी मालासे जपे, आकर्षण मंत्रोंको गजमुक्ताकी मालासे, विद्वेषण और उच्चाटन मंत्रोंको बहेडेकी मालासे, मारणमें अपने आप मरे हुए गधेके दांतोंकी मालासे, धर्मकामार्थकी सिद्धिके लिये शंखमणिसे, सर्वकामार्थ सिद्धिके लिये पद्माक्षकी मालासे जपे, रुद्राक्षकी मालासे मन्त्रोंका जपना सम्पूर्ण कामनाओंका देनेवाला है ॥

मालाकी डोरका निर्णय

शांति और पुष्टिकर्ममें कमलके तन्तुकी डोर बनाकर दाने पोहे, आकर्षण और उच्चाटनमें घोडेकी पूंछके बालोंमें पोहे, मारणमें मनुष्यकी नसोंकी रस्सीमें पोहे और बहेडे आदिकी माला रुईकी डोरमें पोहे ॥

मालासख्या

मोतीकी मालामें २७ मोती, बहेडेकी माला १५, रुद्राक्षकी माला १०८ दानेकी बनावे, यह सब कामोंमें श्रेयस्कर है ॥

जप करनेमें अँगुलियोंका नियम

शांति कर्म, स्तम्भन और वशीकरणमें अँगूठे और बीचकी अँगुलीसे मालाको फेरे, आकर्षणमें अँगूठे और अनामिकासे विद्वेषण और उच्चाटनमें अँगूठे और तर्जनीसे और मारणमें, कनिष्ठा और अँगूठेसे दाने फेरे ॥

जपकी दिशाओंका नियम

वशीकरण मन्त्रको पूर्वकी ओर मुख करके, अभिचारकर्मको दक्षिणकी ओर, धनप्राप्तिकी इच्छासे पश्चिमकी ओर मुख करके और शांतिकर्मको उत्तरकी दिशामें मुख करके जपे। उत्तरकी ओर मुख करके जपनेसे आयुकी शांति और पुष्टि भी होती है ॥

मन्त्रभेद

मन्त्र तीन प्रकारके होते हैं-१ वाचिक, उपांशु और ३ मानस। जिस मन्त्रके उच्चारणको और लोग सुनते रहें वह वाचिक होता है, जिसको कोई दूसरा न सुने और होठ हिलते रहें उसे उपांशु कहते हैं और जिसके उच्चारणमें दांत होठ कुछ न हिलें उसे मानस कहते हैं। अभिचारमें मन्त्रको वाचिक रीतिसे जपना चाहिये। शांति और पुष्टिमें उपांशु और मानस मन्त्रका जप मोक्षके लिये करना चाहिये ॥

होम करनेका द्रव्य

अब हम यहांसे उस सामग्रीका अलग अलग वर्णन करते हैं जो अपना २ अभीष्ट कार्य साधनेके लिये हवन की जाती है। शांतिकर्ममें दूध, घी, तिल, गूलर और पीपलकी लकड़ीका हवन करे; अथवा अमरवेल और खीरका होम करे; पुष्टिकर्ममें घी और बेलपत्रका अथवा, चमेलीके फूलोंका हवन करे, कन्याकी इच्छा करनेवाला खीरका हवन करे, लक्ष्मीकी इच्छा करनेवाला कमलगट्टा, दही अथवा घृतप्लुत अन्नका हवन करे; समृद्धिके लिये घी, बिल्वफल और तिलका हवन करे, आकर्षण

करनेको चिरौंजी और बिल्वफलका हवन करे, वशीकरणमें राई और लवणका होम करे, उच्चाटनमें कौएके पंखका; मोहनमें धतूरेके बीजोंका और मारणमें रुधिर विषका हवन करे॥

यद्यपि हवन करनेकी और भी अनेक विधि हैं परन्तु वे प्रत्येक मंत्र यंत्रके जुदे २ लिखे जायँगे ॥

होममुद्रा

मुद्राहीन आहुतिको देवता अंगीकार नहीं किया करते इसलिये मुद्रायुक्त ही होम करना उचित है और जो दुर्बुद्धि अज्ञानसे मुद्राहीन होम करते हैं वे स्वयं भ्रष्ट हो जाते हैं। होममें मुद्रा तीन प्रकारकी होती हैं, यथा–१ शूकरी। २ हंसी और ३ मृगी। जो हाथको सकोड कर आहुति डाली जाती है उसे शूकरी मुद्रा कहते हैं, जो कनिष्ठिकाको छोडकर डाली जाती है उसे हंसी और जो कनिष्ठा तथा तर्जनीके योगसे डाली जाती है उसे मृगी मुद्रा कहते हैं ॥

यन्त्रसिद्धिके पूर्वकर्म

जो मनुष्य नित्यप्रति इन यन्त्रोंको लिखता रहता है उसके घरमें मृत्युभय, चोरभय, भूत, प्रेत, पिशाचादि भय कदापि प्रवेश नहीं कर सकते और यन्त्रोंमें कभी अविश्वास न करे, क्योंकि अविश्वास करनेसे उसका फल विपरीत होता है। प्रथम स्नानादि आह्निक कर्मोंसे निवृत्त होकर एकान्त स्थान्में यन्त्रोंको लिखे, तीन दिनतक विधिपूर्वक पूजा करता रहे

तीन राततक पृथ्वीमें शयन करे । ब्रह्मचर्यसे रहे, तीसरे दिन मंत्रका अधिष्ठाता देवता स्वप्नमें कह जायगा कि, मंत्र साध्य, सुसिद्ध अथवा ध्रुव है । यदि स्वप्न होवे तो समझ लो कि ये तत्काल यथावत् फल देने लगते हैं ॥

इति श्रीदत्तात्रयतंत्रे दत्तात्रेयेश्वरसंवादे प्रथमः पटलः ॥ १ ॥

अथ द्वितीय पटल

अथ मारणतंत्रमंत्राः

ईश्वर उवाच

विषयुक्तं चिताभस्म धत्तूरचूर्णसंयुतम् ।
यस्याङ्गे निक्षिपेद्भौमे सद्यो याति यमालयम् ॥ १ ॥
भल्लातकोद्भवं तैलं कृष्णसर्पस्य दन्तकम् ।
विषधत्तूरसंयुक्तं यस्याङ्गे निक्षिपेन्मृतिः ॥ २ ॥
नरास्थिचूर्णं तांबूलं भुंक्ते मृत्युकरं ध्रुवम् ।
सर्पास्थिचूर्णं यस्यांगे क्षिपेन्मृत्युमवाप्नुयात् ॥ ३ ॥
चिताकाष्ठं गृहीत्वा तु भौमे च भरणीयुते ।
निखनेच्च गृहद्वारे मासे मृत्युर्भविष्यति ॥ ४ ॥
कृष्णसर्पवसा ग्राह्या तद्वर्तिं ज्वालयेन्निशि ।
धत्तूरबीजतैलेन कज्जलं नृकपालके ॥ ५ ॥
चिताभस्मसमायुक्तं लवणैः पञ्चभिर्युतम् ।
यस्याङ्गे निक्षिपेच्चूर्णं सद्यो याति यमालयम् ॥६॥
गृहीत्वा वृश्चिकं मांसं कंटकं चूर्णसंयुतम् ।
यस्यांगे निक्षिपेच्चूर्णं नरो मृत्युमवाप्नुयात् ॥ ७ ॥

उल्लूविष्ठा च संग्राह्या विषचूर्णसमन्विता ।
यस्यांगे निक्षिपेच्चूर्णं सद्यो याति यमालयम् ॥ ८ ॥
खरविष्ठां गृहीत्वा तु विषचूर्णं समन्विताम् ।
यस्यांगे निक्षिपेच्चूर्णं सद्यो याति यमालयम् ॥ ९ ॥
पंचदश्यां लिखेद्यंत्रं चिताभस्मविलोमतः ।
श्मशानाग्नौ क्षिपेद्यंत्रं भौमे च म्रियते रिपुः ॥ १० ॥
रिपुविष्ठां गृहीत्वा तु नृकपाले तु धारयेत् ।
उद्याने निखनेद् भूमौ लिखते यस्य नामनि ॥ ११ ॥
यावच्छुष्यति सा विष्ठा तावच्छत्रुर्मृतो भवेत् ।
यस्मै कस्मै न दातव्यं नान्यथा शंकरोदितम् ॥ १२ ॥
कृकलासवसातैलं यस्यांगे बिन्दुमात्रतः ।
निःक्षिपेन्म्रियते शत्रुर्यदि रक्षति ईश्वरः ॥ १३ ॥
गृहदीपं तु निक्षिप्य लवणं विजयायुतम् ।
यस्य नाम्ना मृतः सत्यं मासमेकं न संशयः ॥ १४ ॥
अथ मन्त्रः-ॐ नमः कालरूपाय अमुकं भस्म कुरु कुरु
स्वाहा ॥ १००८ ॥ सिद्धिः ।

मारण नाटिक

उल्लूकेरी जीभमें, केसर देय मिलाय ।
पुष्य नक्षत्र रविवारमें, वाको दूध जो पाय ॥
वह होवे उल्लू सरिस, सूझै ताको नाहिं ।
शत्रु मरण होवे सही, यामे संशय नाहिं ॥

शत्रुमारण नाटिक

तीतर बटेर लवा जो भाई । तिनहिं ढूँढिये बनमें जाई ॥

उनके बीटसो नाटिक करना । शत्रु देखि बायें शिर धरना ॥
निश्चय मरण तासुकर होई । जीवन यत्न न देखे कोई ॥

दूसरा नाटिक

साबर सींग ढूँढिये भाई । वाको चूरण करिये लाई ॥
निंबुकी छाल मालकांगनी लीजै । पारो ले टंक शीशा वामें दीजै ॥
चारों चीज एक सम करो । सूक्ष्म आंच करि तामें धरो ॥
आंच लगेपर होय तयार । तब नाटिकका करे विचार ॥
शत्रुके माथे वाको धरे । फटै डील जब लोहू झरै ॥
औषधि करै न लागे कोई । निश्चय वाको मरना होई ॥

इति श्रीदत्तात्रेयतन्त्रे दत्तात्रेयेश्वरसंवादे मारणं नाम द्वितीयः पटलः ॥ २ ॥

अथ तृतीयः पटलः

अथ मोहनतन्त्रमंत्राः

तुलसीबीजचूर्णं तु सहदेवीरसे पेषयेत् ।
तिलकं च रवौ वारे मोहनं सर्वतो जगत् ॥ १ ॥
हरितालमश्वगन्धं कदली रसे पेषयेत् ।
गोरोचनसमायुक्तं तिलकं लोकमोहनम् ॥ २ ॥
शृङ्गिचन्दनसंयुक्तं वचाकुष्ठसमन्वितम् ।
धूपं देहे तथा वस्त्रे मुखे चैव विशेषतः ॥ ३ ॥
राजप्रजापशुपक्षिदर्शनान्मोहकारकम् ।
गृहीत्वा मलतांबूलं तिलकं लोकमोहनम् ॥ ४ ॥
सिन्दूरं कुंकुमं चैव गोरोचनसमन्वितम् ।
धात्रीरसेन संयुक्तं तिलकं लोकमोहनम् ॥ ५ ॥

मनःशिलां च कर्पूरं पेषयेत् कदलीरसे ।
अनेनैव तु मंत्रेण तिलकं लोकमोहनम् ॥ ६ ॥
भृंगराजमपामार्गं लाजां च सहदेविकाम् ।
एभिस्तु तिलकं कृत्वा त्रयलोकय मोहयेन्नरः॥ ७ ॥
गृहीत्वौदुम्बरं पुष्पं वर्तिं कृत्वा विचक्षणः ।
नवनीतेन प्रज्वाल्य कज्जलं पातयेन्निशि ॥ ८ ॥
कज्जलेनाञ्जयेन्नेत्रे मोहयेत्सर्वतो जगत् ।
यस्मै कस्मै न दातव्यं देवानामपि दुर्लभम् ॥ ९ ॥
श्वेतदूर्वां गृहीत्वा तु हरितालं च पेषयेत् ।
एभिस्तु तिलकं कृत्वा त्रैलोक्यं मोहयेन्नरः ॥ १० ॥
श्वेतगुञ्जारसं पेष्यं ब्रह्मदण्डीसमूलकम् ।
शरीरलेपमात्रेण मोहनं सर्वतो जगत् ॥ ११ ॥
बिल्वपत्रं गृहीत्वा तु छायाशुष्कं तु कारयेत् ।
कपिलापयसा युक्तं वटीं कृत्वा तु गोलिकाम् ॥ १२ ॥
एभिस्तु तिलकं कृत्वा मोहयेत्सर्वतो जगत् ।
क्षणेन मोहनं याति प्राणैरपि धनैरपि ॥ १३ ॥
श्वेतार्कमूलमादाय श्वेतचन्दनसंयुतम् ।
अनेन तिलकं कृत्वा मोहयेत्सर्वतो जगत् ॥ १४ ॥
विजयापत्रमादाय श्वेतसर्षपसंयुतम् ।
अनेन लेपयेद्देहं मोहनं सर्वतो जगत् ॥ १५ ॥
गृहीत्वा तुलसीपत्रं छायाशुष्कं तु कारयेत् ।
अश्वगंधसमायुक्तं विजयाबीजसंयुतम् ॥ १६ ॥

कपिलादुग्धसार्द्धं हि वटी टंकप्रमाणतः ।
भक्षिता प्रातरुत्थाय मोहनं सर्वतो जगत् ॥ १७ ॥
कटुतुम्बीबीजतैले ज्वालयेत्पटवर्तिकाम् ।
कज्जलेनाञ्जयेन्नेत्रं मोहनं सर्वतो जगत् ॥ १८ ॥
पंचांगदाडिमं पिष्ट्वा श्वेतगुञ्जासमन्वितम् ।
एभिस्तु तिलकं कुर्यान्मोहयेत्सर्वतो जगत् ॥ १९ ॥

अथ मोहनमन्त्र

ॐ नमो भगवते कामदेवाय यस्य यस्य दृश्यो भवामि यश्च यश्च मम मुखं पश्यति तं तं मोहयतु स्वाहा ॥ सहस्र-जपात् सिद्धिः ।

अथ सभामोहिनी

राई शिरसिम शंखाहूली, धौली दूध मँगावै रे ।
बाँटि कूटि अँग मर्दन कीजै, ताते पानी न्हावै रे ॥
मस्तक तिलक कर केसरिको, राजदुवारे जावै रे ।
देखि सभा सबको मन मोहै, वैरी मोहि बिगोवै रे ॥

अथ मोहिनीमन्त्र

तेलसों मैं तेल राजा परिजा पाव मेलि अछक पानी मसक ल्याय छसै योनि मेरे पाय नगाय हाथ खड्ग फूलोंकी माला जानि बिजानै गोरख जानै मेरी गतिको कहै न कोय हाथ पछानो मुख धोऊ सुमिरो निरंजन देव हनुमन्त यती हमारी पति राखे मोहिनी दोहनी दोनों बहिन आव मोहिनी रावल चालै मुख बोलै तो जिह्वामें हूँ, आस मोहूँ पास मोहूँ

सब संसारमें निसरूँ टीका देय लिलाट। शब्द सांचा फुरो मन्त्र ईश्वर उवाच छु ॥

विधि—दिवालीकी रात तिल लाके उलटी घानी तेल कढाके २१ बार मंत्रित कर माथे बिन्दु लगावे तो सर्वजन वश हों ॥

अथ स्त्रीमोहिनी

काछिक नख पूँछ गरगल लावे। मुआ पंख सिंगरफ मिलावे॥
चारिउ मेलि एक सम कीजे। ता पाछे कर अपने लीजे ॥
देखहु कहुँ अति सुन्दरि नारी। शिर डारौं होय अपनी प्यारी॥

राजाप्रजामोहिनी

उल्लू पंखको लायके, लेखनि करिये ताहि।
बकरा केरो खून ले, लिखै मंत्रको याहि ॥

मंत्र—ॐ नमो अरुँठनी असव स्थनी महाराज छनी फट् स्वाहा राजाप्रजाके लोग सारे मोहें।

मोहिनी

चैत्र जो चित्रा लीजिये, शोधि सबनको न्योत।
कृष्णपक्षकी अष्टमी, ता दिनकर अनहोत ॥
नौमीके दिन लाइये, धूप दीप दे ताहि।
कनै तु राखै आपके, जग मोहे चितचाहि ॥

स्त्रीमोहिनीतिलक

जीरा, कुटकी, सफेद आककी जड और मोथा इन चारोंको रुधिरमें पीसके मिलावे तत्पश्चात् तिलक लगावे तो जो स्त्री उस तिलकको देखे वह मोहि जाय परंतु करनेवाला विधिवत् करे चूके नहीं ॥

सभामोहिनीतिलक

केसरि, मैनशिल, गोरोचन और पत्रज इन्हें जलमें पीस तिलक लगावे फिर जिसके सामने मुख करे सो वश होय और बडे प्यारसे बोले इस प्रकार सभामें भी यही मोहिनी सम्पूर्ण सभाको मोह लेवे ॥

मोहिनी भस्म

खंजनकी बीट सुवा खद्योत जो पावै । दोनोंको बाँटि इनकी टिकरी बनावै ॥ भूमिमें राखि उनको फूंकै भाई । काढै जो राखै निज अंगमें लाई ॥ चढै जो रूपको नृप मोहै भाई । यामें संशय कछू नाहिं पाई ॥

राजकुल मोहन

नील कमल गूगल और उतनाही अगर मँगाकर अपने सब अंगोंमें धूनी देकर जाय तो देखते ही राजकुल वश होजाय ॥

मोहन

तुलसीके बीज सहदेवीके रसमें पीसके रविवारके दिन तिलक करे तो नारी वश हो इसमें सन्देह नहीं ॥

दूसरी विधि

पांच अंग बदामके और सफेद चिरमिटी (रत्ती) एकमें पीस माथेपर तिलक करे तो स्त्री, पुरुष सब वश हों ॥

इति श्रीदत्तात्रेयतंत्रे दत्तात्रेयेश्वरसंवादे मोहन नाम तृतीयः पटलः ॥ ३ ॥

अथ चतुर्थः पटलः

अथाग्निस्तंभनतंत्रमंत्राः

ईश्वर उवाच

अथातःसंप्रवक्ष्यामि अग्निस्तंभनमुत्तमम् ।
यस्मै कस्मै न दातव्यं नान्यथा शंकरोदितम् ॥ १ ॥

वसां गृहीत्वा माण्डूकीं कौमारीरसे पेषयेत् ।
लेपमात्रे शरीराणामग्निस्तम्भः प्रजायते ॥ २ ॥
अर्कदुग्धं गृहीत्वा तु कौमारीरसे पेषयेत् ।
लेपमात्रे शरीराणामग्निस्तम्भः प्रजायते ॥ ३ ॥
कदलीरसमादाय कौमारीरसे पेषयेत् ।
लेपमात्रे शरीराणामग्निस्तम्भः प्रजायते ॥ ४ ॥
मण्डूकस्य वसा ग्राह्या कर्पूरेण समन्विता ।
लेपमात्रे शरीरे तु अग्निस्तम्भः प्रजायते ॥ ५ ॥
कुमारीकन्दमादाय कदलीकन्दसंयुतम् ।
लेपमात्रे शरीरे तु अग्निस्तम्भो हि निश्चितम्॥ ६ ॥
पिप्पलीं मरिचं शुण्ठीं चर्वयित्वा पुनः पुनः ।
दीप्ताङ्गारं नरो भुंक्ते वक्त्रं न दहते क्वचित् ॥ ७ ॥
कौमारी चूर्णसंयुक्तलिप्तदेहो न दह्यते ।
आज्यं शर्करया पीत्वा बर्बरं नागरं तथा ॥ ८ ॥
तप्तलोहं लिहेत्पश्चाद्वक्त्रं न दह्यते क्वचित् ।
अग्निस्तम्भनयोगोऽयं नान्यथा शंकरोदितम्॥ ९ ॥

अथ मंत्रः–ॐ नमो अग्निरूपाय मम शरीरस्तम्भनं कुरु कुरु स्वाहा ॥ १०८ ॥ जपात् सिद्धिः ।

अग्नि थांबनेका मंत्र

ॐ नमो कोरा करवा जलसों भरिया ले गौराके शिरपर

---

१ ग्वारपाठा ।

धरिया ईश्वर ढोले गौरा न्हाय जलती अग्नि शीतल हो जाय शब्द० । विधि-कोरा करवा लेकर जलसों ७ बार भरिये उस जलका जितना दूर छींटा लागे उतनी दूर लाय (अग्नि) न लागे ॥

अग्निके मध्यमें अश्वका खुर और बेंतकी जड डारे तो अग्नि न जरे और उससे कपडा तथा रुई नहीं जलेगी ॥

चर्मकारस्य कुंडात्तु मलो ग्राह्यस्तथा रजः ।
चाण्डालरुधिरं युक्तं यस्यांगे तं विनिक्षिपेत् ॥ १ ॥
तस्मिन्स्थाने भवेत्स्तंभः सिद्धियोग उदाहृतः ।
यस्मै कस्मै न दातव्यं नान्यथा शंकरोदितम् ॥ २ ॥
श्वेतगुञ्जाफलं क्षिप्ते नृकपाले तु मृत्तिकाम् ।
बलिं दत्त्वा तु दुग्धस्य तस्य वृक्षो भवेत्तथा ॥ ३ ॥
तस्याः शाखा लता ग्राह्या यस्यांगे तां विनिक्षिपेत् ।
तस्मिन्स्थाने भवेत्स्तम्भःसिद्धियोगउदाहृतः ॥ ४ ॥
श्मशानाग्निं गृहीत्वा तु लवणैर्होमं कारयेत् ।
तस्य नाम भवेत्स्तम्भः सिद्धियोग उदाहृतः ॥ ५ ॥

मंत्रः-ॐ नमो दिगम्बराय अमुकं आसनं स्तम्भं कुरु कुरु स्वाहा ॥ १००८ ॥ जपात् सिद्धिः ॥

जहांपर नदी और समुद्रका संगम हो वहाँ जाकर अपने हाथसे दोनों किनारोंकी माटी लावे, उसमें कुत्तेके पूंछके

बाल मिलाकर गोली बनावे और वह गोली अंकोलके तेलमें डालके जिस मनुष्यको दिखावे तो वह मनुष्य तबतक उठ नहीं सकेगा जबतक तेलसे निकाल न ले ॥

स्तम्भनतन्त्रो मन्त्रश्च

उल्लूकविष्ठां चादाय छायाशुष्कां तु कारयेत् ।
ताम्बूले रिपवे देयं बुद्धिस्तम्भनमुत्तमम् ॥ १ ॥
भृङ्गराजरसैर्भाव्यं सिद्धार्थं श्वेतनामकम् ।
एभिस्तु तिलकं कृत्वा बुद्धिस्तम्भनमुत्तमम् ॥२॥
सहदेवीमपामार्गं लोहपात्रे विनिक्षिपेत् ।
तिलकः सर्वभूतानां बुद्धिस्तम्भकरो भवेत् ॥३॥

मन्त्रः-ॐ नमो भगवते शत्रूणां बुद्धिस्तम्भनं कुरु कुरु स्वाहा ॥ १००८ जपात्सिद्धिः ॥

बुद्धिस्तम्भन तिलक

ओंगा, भाङ्गरा, श्वेत सरसो, सहदेई, जमीकन्द, बच और सफेद आक इन सबको लोहपात्रमें रक्खे फिर पीसके उसका तिलक लगाकर जहाँ कहीं जाय, देखते ही बुद्धि नष्ट होजाय।

अथ शस्त्रस्तम्भनम्-तन्त्रो मन्त्रश्च

पुष्यार्के तु समुद्धृत्य विष्णुक्रान्तां च मूलकम् ।
वक्त्रे शिरसि धार्येत शस्त्रसंहारणं नृणाम् ॥ १ ॥
ब्रह्माण्ड व्याघ्रभूपालचौरशत्रुभयं जयेत् ।
जातीमूलं मुखे क्षिप्त्वा शस्त्रस्तम्भनमुत्तमम् ॥२॥
करे सौदर्शनं मूलं बद्ध्वास्तम्भनमुत्तमम् ।
केतकी मस्तके नेत्रे ताडमूलं मुखे स्थितम् ॥ ३ ॥

खर्जूरं चरणे हस्ते खड्गस्तम्भः प्रजायते ।
एतानि त्रीणि मूलानि चूर्णितानि घृतं पिबन् ॥ ४ ॥
अहोरात्रं ततः शस्त्रैर्यावज्जीवं न बाधते ।
आयातोऽनेकशस्त्राणां समूहः स निवारयेत् ॥ ५ ॥
गृहीत्वा पुष्यनक्षत्रे ह्यपामार्गस्य मूलकम् ।
लेपमात्रं शरीराणां सर्वशस्त्रनिवारणम् ॥ ६ ॥
खजरी मुखमध्यस्था कटौ बद्ध्वा च केतकी ।
भुजदण्डस्थितं चार्कं सर्वशस्त्रनिवारणम् ॥ ७ ॥
पुष्यार्के श्वेतगुञ्जाया मूलमुद्धृत्य धारयेत् ।
हस्ते शस्त्रभयं नास्ति संग्रामेषु कदाचन ॥ ८ ॥
गृहीत्वा रविवारे च बिल्वपत्रं सुकोमलम् ।
पिष्ट्वा विषं समं सार्द्धं शस्त्रस्तम्भनलेपनम् ॥ ९ ॥

मन्त्रः—ॐ अहो कुम्भकर्ण महाराक्षस नैकषागर्भसंभूत परसैन्यस्तंभन महाबलवान् रुद्र आज्ञापयति स्वाहा ॥१०८॥ जपात्सिद्धिः ।

पहिला उपाय

चमेलीकी जड मुखमें डाल ले तो शस्त्रसे घाव न हो । सरफोंकाकी जड अथवा पाढरमूल मँगाकर युद्धके समय मुखमें डाल ले तो शस्त्रकी धार तनक भी न लगे ।

दूसरा उपाय

जब कृत्तिका नक्षत्र हो तब कैथका बांदा लावे और उसको मुहमें रखे तो शस्त्र न लगे ॥

चौथा उपाय

सुदर्शनकी जड जो कोई हाथमें बांध ले उनको शस्त्र न लगे ।

पांचवां उपाय

शुभ नक्षत्रमें ओंगाकी जड काट मँगावै उसको पीस शरीरपर लेप लगावे तो चोट उसको न लगे ।

मन्त्र ढाल रोपनेका

ॐ नमो चौंसठ योगिनी बावन वीर छप्पन भैरों सत्तर पीर आय बैठा ढालके तीर हाली हलै न चाली चल बाद शत्रुसों भिलैं यह ढाल हल चलै तौ जाहिर पीरकी दुहाई फिरै शब्द० ॥

विधि—ढालको मंत्रिके पैसा ऊपर मेलिये तो ढाल हलै नहीं॥

मन्त्र तलवारकी धार बांधनेका

ॐ नमो धार धार अधर धार बांधो सात बार आनि बाँधो तीन बार कटै रूम न भीजे चीर खांडाकी धारको लेगया यती हनुमन्त वीर शब्द० ॥

विधि—रस्ताकी रेत लेकर तलवारकी धार ऊपर डारिये तो बन्ध होई ॥ इति ॥

अथ शस्त्रलेपः

विष्णुकांतानि बीजानि मन्त्रभावेन ग्राहयेत् ।
तत्तैलं ग्राहयेत्पात्रे विष चैव समन्वितम् ॥ १ ॥
भल्लाततैलसंयुक्तमहिफेनं च मेलयेत् ।
खरमूत्रं पुनर्युक्तं धत्तूरबीजचूर्णकम् ॥ २ ॥
तालकं चैव संयुक्तं सम्यक्सर्वं समाहरेत् ।
रणे दारुणशस्त्रौघः खण्डखण्डः प्रजायते ॥ ३ ॥

शस्त्रं दृष्ट्वा पलायन्ते यथा युद्धेषु कातराः ।
वर्षा भवति शस्त्राणां न भयं विद्यते क्वचित् ॥ ४ ॥

मन्त्रः—ॐ नमो भगवते विकरालरूपाय महाबलपराक्रमायामुकस्य भुजबलं बन्धय २ दृष्टिं स्तम्भय २ महीतले हुं फट् स्वाहा ॥ १०८ ॥ जपात्सिद्धिः ॥

तोप बांधनेका मन्त्र

ॐ नमो आदेश गुरुको जल बांधू जलवाइ बाँधू बाँधू खातीताई सवालाख अहेढी बांधू गोली चलै तो हनुमंत यतीकी दुहाई शब्द सांचा पिण्ड काचा फुरो मन्त्र ईश्वर उवाच ॥

विधि-एकवर्णी गायके दूधको मन्त्रिके बन्दूकके मुँहपर मारे तो गोली न चले ॥ इति ॥

अथ सेनानीस्तम्भने तन्त्रो मन्त्रश्च

मन्त्रभावेनगृह्णीयाच्छ्वेतगुञ्जाविधानकम् ।
निखनित्वा श्मशाने च पाषाणं तत्र दापयेत् ॥ १ ॥
योगिन्योऽष्टौ च संपूज्य ऐन्द्री माहेश्वरी तथा ।
वाराही नारसिंही च वैष्णवी च कुमारिका ॥ २ ॥
लक्ष्मीर्ब्राह्मी च संपूज्य गणेशं बटुकं तथा ।
क्षेत्रपालं च संपूज्य सेनास्तंभः प्रजायते ॥ ३ ॥
पृथक्पृथग्बलिं दत्त्वा दिशानामभिभागतः ।
मांसं मद्यं तथा पुष्पं धूपं दीपं बलिक्रियाम् ।
यस्मै कस्मै न दातव्यं नान्यथा शंकरोदितम् ॥ ४ ॥
श्मशानभस्मनालिप्य मृत्तिकापात्रमध्यतः ।

रिपुनामसमायुक्तं नीलसूत्रेण वेष्टयेत् ॥ ५ ॥
गर्त्तकुण्डे विनिक्षिप्य पाषाणोपरि दीयते ।
स्तम्भनं कुरुते सैन्यं सिद्धयोग उदाहृतः ॥

मन्त्रः–ॐ नमः कालरात्रि त्रिशूलधारिणि मम शत्रुसैन्य-स्तम्भनं कुरु कुरु स्वाहा ॥ १०८ ॥ जपात् सिद्धिः ॥

मिट्टीके एक बर्तनके बीचमें मरघटकी राख लीपकर उसके मध्य शत्रुका नाम लिखे, फिर उसको नीला सूत लपेट कर एक गढा खोद उसके बीच वह बर्तन रख दे और ऊपरसे पत्थरसे मूँद दे तो शत्रुसैन्य रुक जाय ॥

अथ सेनापलायनम्

भौमवारे गृहीत्वा तु काकोलूकस्य पक्षयोः
भूर्जत्वचि लिखेन्मन्त्रं यस्य नामसमन्वितम् ॥ १ ॥
गोरोचनं गले बद्ध्वा काकोलूकस्य पक्षयोः ।
सेनानीसम्मुखं गच्छेन्नान्यथा शङ्करोदितम् ॥ २ ॥
शब्दमन्त्रैः सैन्यमध्ये पलायन्ते सुनिश्चितम् ।
राजा प्रजा गजादिश्च नान्यथा शंकरोदितम् ॥ ३ ॥

मंत्रः–ॐ नमो भयंकराय खड्गधारिणे मम शत्रुसैन्यस्य पलायनं कुरु २ स्वाहा ॥ १०८ ॥ जपात्सिद्धिः ॥

अथ गोमहिषीस्तंभनम्

उष्ट्रस्यास्थि चतुर्दिक्षु निखनेद् भूतले ध्रुवम् ।
गोमहिष्योः स्तम्भनं च सिद्धयोग उदाहृतः ॥ १ ॥

उष्ट्ररोम गृहीत्वा तु पशुपक्षिषु निःक्षिपेत् ।
पशूनां हि भवेत्स्तम्भः सिद्धयोग उदाहृतः ॥ २ ॥

ऊंटकी हड्डी लेकर कील बनाय चारों दिशामें गाडे तो जो पशु उसके मध्य जाय वह बाहर न निकले। पुनः ऊंटका रोवाँ जिस पशुके ऊपर डारे वह उसी जगह खडा रहे ॥ इति ॥

शत्रु स्तम्भन

गोरोचन और केसर महावरके साथ घिसके भोजपत्रपर शत्रुका नाम लिखे तो वह आठों पहर वशमें रहे ॥

नर नारी स्तम्भन

गृहे रजस्वला वस्त्रं गोरोचनसमन्वितम् ।
यस्य नाम्नि क्षिपेत्कुम्भे सद्यः स्तंभनकारकम् ॥१॥

रजस्वलाका वस्त्र लाकर उसमें गोरोचन और मजीठसे जिस स्त्री व पुरुषका नाम लिखकर एक घडेमें डाल दे तो वह स्त्री पुरुष तत्काल स्तंभित हो जावें ॥

अथ मेघ स्तम्भन

हण्डिकाद्वयमादाय श्मशानाङ्गारसंपुटे ।
स्थापयेद्वनमध्ये च मेघस्तम्भनकारकम् ॥ १ ॥

श्मशानकी राख लाकर दो ईटोंमें लपेट वनमें गाडे तो बरसता हुआ मेह बन्द हो जावे ॥

अथ निद्रास्तम्भनम्

सहमूलेन मधुकं पिष्ट्वा नस्यं समाचरेत् ।
निद्रास्तम्भनमेतद्धि मूलदेवेन भाषितम् ॥ १ ॥

पहिली विधि—कटेरीकी जड और महुवा एकमें पीसके सूँघनेसे निद्रा नहीं आती ॥

दूसरी विधि—दो तोले काफी मँगाकर आधा सेर जलसे औटाकर छान ले, फिर मिश्री मिलाकर पीवे तो रात भर जागे निद्रा नहीं आवे ॥

तिसरी विधि—निमक, मिर्च और सोंठ इन तीनोंको खूब महीन पीसके सात दिनतक नेत्रोंमें अंजन करे तो निद्रा न आवे, पुनः—आधसेर जलमें दो तोले काफी डालकर अग्निपर चढावे जब आधा जलके रह जावे तब उतारके मिश्री मिलावे फिर गर्महीं गर्म पी जावे तो रात्रिभर निद्रा न आवे ॥ इति ॥

अथ जलस्तम्भनम्

पद्मकं नाम यद् द्रव्यं सूक्ष्मचूर्णं तु कारयेत् ।
वापीकूपतडागेषु निक्षिपेद्बध्यते जलम् ॥ १ ॥

मंत्रः—ॐ नमो भगवते रुद्राय जलं स्तम्भय २ ठः ठः स्वाहा ॥ १०८ ॥ जपात् सिद्धिः ॥

प्रथम मिट्टीके घट (घडा) में पानी भर दे तत्पश्चात् पिलखनका मूल (जड) लेकर खूब महीन पीसके उक्त जल भरे हुए घटमें डाल दे तो जल बँध जायगा, पके और सूखे हुए ल्हसोडके फल लेकर पहिले खूब महीन पीसे पश्चात् जलमें छोडे तो जल बँध जाय ॥

पुनः—टबमें सेरभर पानी भरके अग्निपर धरे, उसमें मूठी-

भर नमक डारे फिर उतनी ही बरफ मिलावे तो एक घडीमें जल जम जायगा ।

कच्चे घड़ेमें पानी भरना

एक कच्चा घडा लाकर उसके भीतर सात बार घी कुवारके रसका गाढा लेप करके सात बार छायामें सुखावे फिर उसमें पानी भरे तो घडा न फूटे ॥

अथ नौकास्तम्भनम्

भरण्यां क्षीरकाष्ठेन कीलं पंचांगुलं क्षिपेत् ।
नौकास्तम्भनमेतद्धि मूलदेवेन भाषितम् ॥

भरणीनक्षत्रमें दुधारे वृक्षकी लकडी (जैसे गूलर पीपर आदि) लाकर पांच अँगुलकी लम्बी एक कील बनावे, फिर नावके छेदमें वह कील लगा दे तो नाव न चले ॥

दूसरी विधि

करु तलास कहुँ बनमें जाई । तहँते काला तीतर लाई ॥
पिंजरे माहिं ताहि लै रखना । हल्दी मेली कांगनी चुगना ॥
कांगन चुगाय बीट जोलनी । वाहि बीटकी भुरकी करनी ॥
ले भुरकी जब नावमें डारे । चलत नाव रुकै देख ले प्यारे॥

अथ गर्भस्तम्भनम्

एरण्डबीजमृत्वन्ते भुक्तं स्तम्भनगर्भकम् ।
बद्ध्वा कटयां धूर्तमूलं गर्भस्तम्भकरं परम् ॥ १ ॥
सिद्धार्थमूलं शिरसि बद्ध्वा कान्तां रमेच्च यः ।
गर्भं धारयते सा स्त्री मुक्तिमालभते पुनः ॥ २ ॥

धत्तूरमूलचूर्णं तु योनिस्थं गर्भस्तम्भकम् ।
तण्डुलीमूलतोयेन देयं तन्दुलवारिणा ॥ ३ ॥
धूपिता योनिरंध्रेषु निम्बकाष्ठेन युक्तितः ।
ऋत्वन्ते दीयते तत्र गर्भे दुःखविवर्जितः ॥ ४ ॥

मन्त्रः—ॐ ह्रीं गर्भधारिणि गर्भस्तम्भनं कुरु कुरु स्वाहा ॥ १०८ जपात्सिद्धिः ॥

कृष्ण चतुर्दशीको धतूरेकी जड लाकर रतिसमय कमरमें बांधे तो गर्भ रहे ॥

गर्भ थिर रहे

कुँवारी कन्याको स्नान कराके आदित्यवारके दिन सूर्यके संमुख बैठाकर ढाई पूणी कढ़ावे, उसे सात तागेका डोरा कर तीन २ गांठ देकर दो गंडा करे और यह मन्त्र २१ बार पढे॥ हाथमें ले गूगलकी धूप दे एक गलेमें बांधे दूसरा कटिमें ।

मन्त्रः—ॐ नमो आदेश गुरुको ॐ सेतंबर पुरुष पायाको रात्र थवैगर्भ न छोडै पांव उदवा मास गर्भको वासः पुरासाहि लेय निकास गौरी माता गर्भको थांभो हनुमन्त वीर गंडौ बांधौ राखि दशमास वीस पांख फुरो मन्त्र आदेश गुरुको ॥

अर्ध सुपारी लीजिये, अनुराधाके माहिं ।
ताको धूप जो दीजिये, कडै बँधावे ताहिं ॥
स्रवे गर्भ तिरिया नहीं, रहै जहांको ताहिं ॥

इति श्रीदत्तात्रेयतन्त्रे श्रीदत्तात्रेयेश्वरसंवादगर्भस्तम्भनं नाम चतुर्थः पटलः ॥ ४ ॥

अथ पञ्चमः पटलः

अथ विद्वेषणम्

ईश्वर उवाच

विद्वेषो नरनारीणां विद्वेषो राजमंत्रिणाम् ।
महाकौतुकविद्वेषसिद्धिं शृणु प्रयत्नतः ॥ १ ॥
एकहस्ते काकपक्षमुलकमपरे करे ।
मन्त्रयित्वा मिलित्वाग्रे कृष्णसूत्रेण वेष्टयेत् ॥ २ ॥
अंजलिं च जलेनैव तर्पयेयस्तु पक्षके ।
एवं सप्तदिनं कुर्यादष्टोत्तरशतं जपेत् ॥ ३ ॥
गृहीत्वा गजकेशं च सिंह चैव तु केशकम् ।
गृहीत्वा मृत्तिकां पादपोटली निखनेद् भुवि ॥ ४ ॥
तस्योपरि स्थापयेदग्निं मालतीपुष्पं होमयेत् ।
विद्वेषं कुरुते तस्य नान्यथा शंकरोदितम् ॥ ५ ॥
मार्जारिविष्ठामादाय विष्ठामादाय मौषिकीम् ।
पादानां मृत्तिकायुक्तं पुत्तलीं कुरुते नरः ॥ ६ ॥
नीलवस्त्रेण संवेष्टय मन्त्रयित्वा शतेन च ।
विद्वेषस्तत्क्षणादेव भ्रातरौ तातपुत्रकौ ॥ ७ ॥
गृहीत्वा सर्पदन्तांश्च पुनर्बभ्रोश्चलोमकम् ।
चिताभस्मसमायुक्तं गुटिकां कारयेन्नरः ॥ ८ ॥
उद्याने निखनेद् भूमौ मन्त्रयित्वा सनामकम् ।
विद्वेषस्तत्क्षणाच्चैव नान्यथा शंकरोदितम् ॥ ९ ॥
बभ्रुरोम कंचकाहेः सभायां धूपं दीयते ।

विद्वेषो जायते सत्यं नान्यथा शंकरोदितम् ॥ १० ॥
श्वानरोम गृहीत्वा च मार्ज्जारस्य तथा नखम् ।
सभायां दीयते धूपो विद्वेषो जायते तदा ॥ ११ ॥
मयूरविष्ठामादाय सर्पदन्तस्य पेषणम् ।
ललाटे तिलकं कृत्वा विद्वेषो जायते क्षणात् ॥ १२ ॥
गृहीत्वा गजदन्तं च पुनश्च सिंहदन्तकम् ।
पेषयेन्नवनीतेन तिलकं द्वेषकारकम् ॥ १३ ॥
अश्वकेशं गृहीत्वा च माहिषं केशसंयुतम् ।
सभायां दीयते धूपो विद्वेषो जायते क्षणात् ॥ १४ ॥
यस्य यस्य भवेद्द्वेषो यावज्जीवंतदा भवेत् ।
तत्पादमृत्तिकायुक्तं शत्रुपांसुसमन्वितम् ॥ १५ ॥
पुत्तला कियते सम्यक्श्मशाने निखनेद् भुवि ।
विद्वेषो जायते नित्यं सिद्धयोग उदाहृतः ॥ १६ ॥
गृहीत्वा शल्लकीकण्टं निखनेद् भुवि द्वारतः ।
कलहो जायते नित्यं विद्वेषो जायते तदा ॥ १७ ॥

मन्त्रः—ॐ नमो नारायणाय अमुकस्यामुकेन सह विद्वेषं कुरु कुरु स्वाहा ॥ १०८ ॥ जपात्सिद्धिः ॥

मनुष्यको चाहिये कि, अपने दायें हाथमें घूग्घू पक्षीका पंख और बायें हाथमें काले कौवेका पर ले एकमें मिला मंत्रसे अभिमंत्रित करे फिर काले सूतसे लपेट हाथमें ले जलके किनारे जा शत्रुका नाम लेकर तर्पण करे व १०८ बार उपरोक्त मंत्र जपे । यह कृत्य ७ दिन करे ॥

---

१ सेही (साही) का कांटा

द्वितीय विधि

हाथी और सिंहके बाल लाकर जिन मित्रोंकी मित्रता दूर करना चाहे उन दोनों मित्रोंके पैरके नीचेकी मिट्टी लेके सब चीज एकमें किला बांध धरतीमें गाड दे; पश्चात् उसीपर अग्नि जलावे और १०८ आहुती चमेलीके फूलोंकी देवे ॥

तृतीय विधि

सर्पकी दाढ और नौलेका बार, श्मशानकी भस्म एकमें मिला गोली बना ऐसी जगह गाडे कि, जिसमें मित्रके नांघते ही मित्रता छूट जाय ॥

चतुर्थ विधि

रविवार दोपहर समय गधा या भैंसा जहांपर लोटा हो उस जगहकी, धूल लाकर जिस गृहमें डारै उस गृहमें परस्पर लडाई हो।

इति श्रीदत्तात्रेयतंत्रे दत्तात्रेयेश्वरसंवादे विद्वेषो नाम पंचमः पटलः ॥ ५ ॥

अथ षष्ठः पटलः

उच्चाटनम्

येनाहृतं गृहं क्षेत्रं कुलं च धनपुत्रकम् ।
उच्चाटनं वधं कुर्याद् दुष्टदण्डो विधीयते ॥ १ ॥
ब्रह्मदण्डी चिताभस्म शिवलिङ्गं प्रलेपयेत् ।
सिद्धार्थेन च संयुक्तं शनिवारे क्षिपेद् गृहे ॥ २ ॥
उच्चाटनं भवेत्तस्य स्त्रीपुत्रस्य च बान्धवैः ।
विना मंत्रेण सिद्धिश्च सिद्धयोग उदाहृतः ॥ ३ ॥
गृहीत्वा गार्दभीं धूलिं वामपादेन निश्चितम् ।

मध्याह्ने भौमवारे च यद्गृहे च क्षिपेन्नरः ॥ ४ ॥
उच्चाटनं भवेत्तस्य जायते मरणान्तकम् ।
विना मंत्रेण सिद्धिश्च सिद्धयोग उदाहृतः ॥ ५ ॥
सिद्धार्थां शिवनिर्माल्यं यद्गृहे निखनेन्नरः ।
उच्चाटनं भवेत्तस्य उद्धृते तु पुनः सुखी ॥ ६ ॥
काकपक्षान् रवौ वारे यद्गृहे निखनेन्नरः ।
उच्चाटनं भवेत्तस्य नान्यथा शंकरोदितम् ॥ ७ ॥
उल्लूपक्षं कुजे वारे यद्गृहे निखनेन्नरः ।
उच्चाटनं भवेत्तस्य विना मन्त्रेण सिद्ध्यति ॥ ८ ॥
उल्लूविष्ठां गृहीत्वा तु सिद्धार्थं सहसंयुताम् ।
यस्याङ्गे निक्षिपेच्चूर्णं सद्य उच्चाटनं भवेत् ॥ ९ ॥
गृहीत्वौदुम्बरं काष्ठं मन्त्रेण चतुरंगुलम् ।
यस्य वै निखनेद्द्वारे ह्यवश्योच्चाटनं भवेत् ॥ १० ॥
काकोलूकस्य पक्षांस्तु हुत्वा चाष्टाधिकं शतम् ।
यन्नाममन्त्रयोगेन ह्यवश्योच्चाटनं भवेत् ॥ ११ ॥
नरास्थिकीलमादाय निखनेच्चतुरंगुलम् ।
मन्त्रयुक्तं रिपुद्वारे सत्यमुच्चाटनं भवेत ॥ १२ ॥

मन्त्रः—ॐ नमो भगवते रुद्राय करालाय अमुकं सपुत्र-बांधवैः सह हन हन दह दह पच पच शीघ्रमुच्चाटय उच्चाटय स्वाहा ठः ठः ॥ १०८ जपात्सिद्धिः ॥

उत्तराफाल्गुनीमें कुंकुमकी लकडी ७ अंगुल शत्रुके गृहमें

काल ।

रखनी । मन्त्रः—'ॐ श्रीं श्रीं श्रीं स्वाहा । शत्रोरुच्चाटनं भवति' वैरीके मस्तकके ऊपर घुग्घूका शिर लाकर चूर्ण करके डाले तो वैरीका उच्चाटन होवे तथा नींबूकी लकडी, घुग्घूका हाड, बिल्लीका चमडा और नखको मँगावे, फिर धत्तूरेका रस कढवावे तत्पश्चात् श्मशानका हाड ले, इन सबको एकत्र कर वैरीके गृहमें डाले तो उच्चाटन हो ॥

हस्त नछत्तर लीजिये, कीजै यह जु विचार ।
सेंधानोन जो लीजिये, ताको कर उपचार ॥
मूरति करिय गणेशकी, धारि शत्रूके नाम ।
सावधान ह्वै करै विधि, सिद्धि होय सब काम ॥
न्हाय धोय पूजन करै, जलसों करै पखाल ।
ज्यों तन छीजै तासु त्यों शत्रू लगै उखाल ॥

इति श्रीदत्तात्रेयतंत्रे दत्तात्रेयेश्वरसंवादे उच्चाटनं नाम षष्ठः पटलः ॥ ६ ॥

अथ सप्तमः पटलः

अथ सर्वजीववशीकरणम्

ईश्वर उवाच

ब्रह्मदंडी वचा कुष्ठं चूर्ण ताम्बूलदापनम् ।
रविवारे कृते योगे सर्वलोकवशंकरम् ॥ १ ॥
गृहीत्वा वटमूलं च जलेन सह घर्षयेत् ।
विभूत्या संयुतं भाले तिलकं लोकवश्यकृत् ॥ २ ॥
पुष्ये पुनर्नवामूलं करे सप्तभिमन्त्रितम् ।
बद्ध्वा सर्वत्र पूज्यंते सर्वलोकवशंकरम् ॥ ३ ॥

अपामार्गस्य मूलं तु कपिलापयसि पेषयेत् ।
ललाटे तिलकं कृत्वा वशीकुर्याज्जगत्त्रयम् ॥ ४ ॥
गृहीत्वा सहदेवीं च छायाशुष्कां तु कारयेत् ।
ताम्बूलेन ततश्चूर्णं सर्वलोकवशंकरम् ॥ ५ ॥
रोचनासहदेवीभ्यां तिलकं लोकवश्यकृत् ।
गृहीत्वौदुम्बरं मूलं ललाटे तिलकं चरेत् ॥ ६ ॥
प्रियो भवति सर्वेषां दृष्टमात्रे न संशयः ।
ताम्बूलेन प्रदातव्यं सर्वलोकवशकरम् ॥ ७ ॥
देवदाली च सिद्धार्थां गुटिकां कारयेद् बुधः ।
मुखे निःक्षिप्य सर्वेषां सर्वलोकवशंकरम् ॥ ८ ॥
कुंकुमं नागरं कुष्ठं हरितालं मनःशिला ।
आनामिकाया रक्तेन तिलकं सर्ववश्यकृत् ॥ ९ ॥
गोरोचनं पद्मपत्रं प्रियंगू रक्तचन्दनम् ।
एकीकृत्य जपेन्मन्त्रं सर्वलोकवशीकरम् ॥ १० ॥
गृहीत्वा श्वेतगुञ्जां च छायाशुष्कां तु कारयेत् ।
कपिलापयसा सार्द्धं तिलकं लोकवश्यकृत् ॥ ११ ॥
तन्मूलं यत्र ताम्बूले सर्वलोकवशीकरम् ।
तन्मूलेनालिपेद्देहं सर्वलोकवशीकरम् ॥ १२ ॥
श्वेतदूर्वां गृहीत्वा तु कपिलादुग्धपेषिताम् ।
लेपमात्रेण नारीणां सर्वलोकवशीकरम् ॥ १३ ॥
श्वेतार्कं च गृहीत्वा तु छायाशुष्कं तु कारयेत्।
कपिलापयसा सार्द्धं तिलकं सर्ववश्यकृत ॥ १४ ॥

बिल्वपत्रं तु संग्राह्य मातुलुङ्गं तथैव च ।
अजादुग्धेन तिलकं सर्वलोकवशंकरम् ॥ १५ ॥
कुमारीकन्दमादाय विजयाबीजसंयुतम् ।
तिलके क्रियते भाले सर्वलोकवशंकरम् ॥ १६ ॥
हरितालं चाश्वगन्धा सिन्दूरं कदलीरसम् ।
तिलके क्रियते भाले सर्वलोकवशीकरम् ॥ १७ ॥
अपामार्गस्य बीजानि छागीदुग्धेन पेषयेत् ।
अनेन तिलकं भाले सर्वलोकवशंकरम् ॥ १८ ॥
ताम्बूलं तुलसीपत्रं कपिलादुग्धपेषितम् ।
अनेन तिलकं भाले सर्वलोकवशीकरम् ॥ १९ ॥

मन्त्रः-ॐ सर्वलोकवशंकराय कुरु कुरु स्वाहा ॥
१०८ जपात्सिद्धिः ॥

दोहा-सौ तन्त्रनको तन्त्र यह, वशीकरण मन राख ।
तन मनसों वश कीजिये, बोलिके मीठी भाख ॥
पशु पक्षी आवन चहैं, सुनिके मीठे बोल ।
देखत टेढी दृष्टिको, भगैं बोल अनबोल ॥
जो सब गुणमें आगरो, है यह नरको देह ।
केवल यह वश होत है, सुनिके वचन सनेह ॥

सर्व जनवशीकरण तिलक

तगर, कूठ, हरिताल और केशर इन सबको बराबर लेकर अनामिका अंगुलीके लोहूसे पीस माथेपर तिलक लगाकर जहाँ इच्छा हो वहां जाय जो देखे सो वश होजाय ॥

सर्वजनवशीकरण वेव

मेंढासींगी, वच राल, खस, चंदन, और छोटी इलायची यह सब बराबर २ लेकर कूट छान ले। फिर पहिरनेका कोई वस्त्र धरके धूनी देवे तो नारी वश हो, क्रय विक्रयमें लाभ बहुत हो और देखते ही राजा खुश हो ॥

वशीकरणकी बुरकी

नदी किनारेकी झाऊकी जड मँगावे और जब पुष्य नक्षत्र हो तब उसमें कुढेकी छाल मिलावे; फिर बराबरही श्मशानकी राख मिलाकर जिस किसीके ऊपर छोडे तो तुरन्त ही वह वशमें हो जाय ॥

वशीकरण

उल्लू मांस ढूँढिकै लावै। तामें बकरा मांस मिलावै। जलसँग रत्तीभर दे काऊ। ह्वैके दास आय परे पाऊ ॥ करो तलास कहुँ खाल स्यारकी। सांभरकी सींग टुकर एक कामकी ॥ दोऊ मिलाय एकांतर कीजे। ताही पीस वाके ऊपर लगीजे॥घेरा जो लाय वाको धूप सुखाना। पुनि छायामें वाहि धराना ॥ केसर कपूर आकमाडे भाई। पीछे ले जलमें डरवाई॥जो पिवे नीर सो वशमें होई।छोटेसे गांवमें कीजै सोई॥

ले नक्षत्तर धनिष्ठा, शनिदिन निश्चय होय।
मल बबूलको लाइये, चेटक कीजे सोय ॥
शिर डारै नरनारिके, सो अपने वश होय।
उत्तम चेटक जानिये, संशय करे न कोय ॥

शत्रुवशीकरण

भोजपत्रपर लाल चन्दनसे दुर्जन मनुष्यका नाम लिखकर सहदमें डुबोवे तो दुर्जन वश हो ॥

वशीकरण तिलक

मनुष्यकी खोपडी लाकर उसमें धतूरेके बीज रक्ख, फिर उसमें सहद और कपूर मिलाके पीसे और तिलक करे तो चाहे पुरुष हो चाहे स्त्री देखते ही वशमें हो जावे । यह वसिष्ठजीका बताया कापालिक योग अनोखा ॥

वशीकरण बुरकी

चिताकी भस्म, कूठ, बच, तगर और कुंकुम एकमें पीसकर स्त्रीके शिरपर और पुरुषके पैरतले डारै तो जबतक जीते रहैंगे तबतक दासीके समान रहैंगे ॥

वशीकरण अंजन

तगर कूठ तालीस मिलावै । तब बातीसों पीस लगावै ॥ सरसों तेल दियामें मेलै । आदितवार पुष्यमहँ खेलै ॥ आधि रात अमावस नयन निहारिये । मनुज खोपडी ऊपर काजल पारिये ॥ रंचक अंज़न आजन जब देखिये । मन जो भावै यार सोई वश कीजिये ॥

इति श्रीदत्तात्रेयतंत्रे दत्तात्रेयेश्वरसंवादे वशीकरणं नाम सप्तमः पटलः ॥ ७ ॥

अथाष्टमः पटलः

अथ स्त्रीवशीकरणम्

ईश्वर उवाच

रविवारे गृहीत्वा तु कृष्णधत्तूरपुष्पकम् ।
शाखां लतां गृहीत्वा तु पत्रं मूलं तथैव च ॥ १ ॥

पिष्ट्वा कर्पूरसंयुक्तं कुंकुमं रोचनं शुभम् ।
तिलकं स्त्रीवशं कुर्याद्यदि साक्षादरुंधती ॥ २ ॥
चिताभस्म वचा कुष्ठं कुंकुमं रोचनं समम् ।
चूर्णं स्त्रीशिरसि क्षिप्तं वशीकरणमद्भुतम् ॥ ३ ॥
करपादनखानां च तद्भस्म क्रियते नरैः ।
खाने पाने प्रदातव्यं वशीकरणमद्भुतम् ॥ ४ ॥
शनिवारे गृहीत्वाथ वनितापादपांसुकम् ।
वामे पुत्तलिकां कृत्वा तत्केशं संवृतं युतम् ॥ ५ ॥
नीलवस्त्रेण संवेष्ट्य स्ववीर्यसंयुतं भगम् ।
सिन्दूरलेपनं कृत्वा निखनेद्वामद्वारके ॥ ६ ॥
उल्लंघ्य वशमायाति प्राणैरपि धनैरपि ।
यस्मै कस्मै न दातव्यं देवानामपि दुर्लभम् ॥ ७ ॥
ब्रह्मदण्डी चिताभस्म यस्याङ्गे निक्षिपेन्नरः ।
वशीभवति सा नारी नान्यथा शंकरोदितम् ॥ ८ ॥
ताम्बूलरसमध्ये तु पिष्ट्वा तालं मनश्शिलाम् ॥
भौमे च तिलकं कृत्वा वशीकरणयोषितः ॥ ९ ॥
सिन्दूर कदलीकन्दं पेषयेद् गुरुवासरे ।
अनेन तिलकं कृत्वा कान्तावशकरं परम् ॥ १० ॥
गोदन्तं नरदन्तं च पिष्ट्वा तैलेन लेपयेत् ।
एभिस्तु तिलकं कृत्वा कान्तावशकरं परम् ॥ ११ ॥
एवं चूर्णं हरिद्रां च गोमूत्रं घृतसर्षपाः ।
ताम्बूलरससंयुक्तमनेन मर्दयेत्सुधीः ॥ १२ ॥

मुखं भवति पद्माभं पादौ पद्मदलोपमौ ।
प्रियो भवति सर्वेषां स्त्रीषु राजकुलेषु च ॥ १३ ॥
गोरोचनं पद्मपत्रं पेषयेत्तिलकं कृतम् ।
शनिवारे कृते योगे वशीभवति निश्चितम् ॥ १४ ॥
गृहीत्वा मालतीपुष्पं पट्टसूत्रेण वर्त्तिका ।
भृगुवारे नृकपाले एरण्डतैलकज्जलम् ॥ १५ ॥
अञ्जयेन्नेत्रयुगले दृष्टमात्रे वशीभवेत् ॥
विना मंत्रेण सिद्धिः स्यान्नान्यथा शंकरोदितम्॥ १६॥

मंत्रःॐ नमः कामाक्षी देवी अमुकीं नारीं मे वशं कुरु कुरु स्वाहा ॥ १०८ ॥ जपात्सिद्धिः ॥

मन्त्र–वशीकरण सुपारी

ॐ नमो उर्वशी सुपारी कामनिगारी राजा परजा खरी पियारी मंत्र पढि लगाऊं तोहिं हिया कलेजा लावै तोडि जीवता चाटै पगतली मूवा संग मशान । सो वश्य न होय तो यती हनुमन्तकी आन । शब्द० ।

विधि–सूर्यग्रहणमें सात बार सुपारी मंत्रिको जाको चबवावे सो वश्य होय ॥

पुनः–ॐनमो गुड गुड रे तू गुड गुड तामडा मशान केलि करंता जा उसका देग उभा सब हर्षै हमारी आस खसमको देखै जलै बलै हमको देवै सकि रुचलै चालि चालिरे कालिकाके पूत जोगी जंगम और अवधूत सोती होय जगाय लाव बैठी होय उठाय लाव न लावै तो माता कालिकाकी शय्या-

पर पांव धरै । शब्द सांचा पिंड काचा फुरो मंत्र ईश्वरोवाच सत्य नाम आदेश गुरुका ॥

विधि—अर्कवारके दिन १ पैसा भर गुड श्मशानमें लेजाकर तेल बाकला लीजै, भैरोको पूजन करैं जिसको गुड खिलावे वह वश्य होय ॥

भैरवकी चौकीका मंत्र

ॐ नमो काला भैरव काली राति काला आया आधीराति चलै कतार बाँधूँ तू बावन वीर परनारीसों राखै सीर छाती धरिके वाको लावे, सोती होय जगायके लावै बैठी होय उठायकै लावै । शब्द० । विधि—रविवारसहित होली और दिवालीकी रातिको लाल एरंड एक झटकामें बायें हाथसे उखारि लावे ताको काजल करे और इसी मन्त्रसे २१ बार मंत्रित करके जिसके लगावे सो अपना होके रहे ॥

वशीकरण तन्त्र

पुष्यार्क अँधेरी रातिमें जन कोई कहीं जु आवै रे ।
साँझ समय दीवे धरे बतीते वे मसाना जावे रे ॥
भरिके मूठि राखकी लावे तामें वस्तु मिलावे रे ।
मोरबीट हरताल सुहागा तामें लेइ मिलावे रे ॥
लेके डारे शिर ज्यहि केरे प्रीति पुरातन पाले रे ।

वशीकरण विधि

रविदिन घडी दोयके तडके उठि मशानमें जावे रे। पीछे हाथ करे दोउ अपना लकडी लैझपटावे रे॥ ताको लेकर धरे एकांतर निज पूजन करि आवे रे। या विधि दिन इक्कीस जो पूजे तामें देर न लावे रे ॥ खातीके घर जावे जादिन टुकडा सात करावे

रे। पहले टुककी मेख गढावै घर शत्रूके जावेरे ॥ बशी कृत्य होय जीवसे जावे पिड न अपनो छाँडैरे। और टूक लै नदी बहावे मनसे कारज चीतैरे ॥ बन्दी खलास तुरत ही छूटे अपनो होत सो प्रीतम रे सात कांकरी चुनिके लावे पीछे घरको आवे रे धूप दीप चन्दनसों चर्चे पुष्प और पहिरावे रे। संध्या समय यह शिरपर डारे रोगदोष मिटि जावै रे ॥

वशीकरण नाटिका

उल्लूको हाड पीठ पाछिलो लीजै। चन्दनसों घसि तिलक करीजै ॥ केसर कस्तुरि कुंकुम डारे। त्रियहि मोहि निज शत्रुको मारे ॥ प्रथमहि जो तिय कपडा होई। ताको रक्त वस्त्र वा कोई ताहि लाय नाटिक अनुसरना। वस्त्र भिगो इक लेती करना ॥ वाजल एरंड तैलमें दीपक धर ना आँच लगाय तेहि काजर करना ॥ वाजल पारिके डिब्बी भरना। या विधिसों साधकनै करना ॥ पुनि साधक भल अवसर पावै। चित्रा बीति स्वाति जब आवै नख धरि तेहि तिय रेख लगावै। चित भ्रम होय चली वह आवै ॥

वशीकरण चेटका

लेकर नक्षतर आर्दरा, कहुँ तलाब चलिजाय। मधि धँसि माटि लीजिये, डुबकी एकहि लाय॥ माटीलावे गेहकी, कहिये कहूँ जो नाहिं। शिर तिरियाके डारिये, वश अपने हो जाहि ॥

पुष्य नक्षत्रमें लीजिये, कीजै यह जु विचार। धोबी पदरज लीजिये, ताको करि उपचार ॥ शिर तिरियाके डारिये रवि-दिन सांझ सँवार। सो चाहैकी आपको, नयना होत अँधार

माघ मास बुध अष्टमी, स्वाति नक्षत्र जो होय। ता दिन न्योतै आकको, चेटक कहिये सोय ॥ दूजे फेरै जाइये, लावै कोपल तोरि। शिर तिरियाके डारिये, रहे दोऊ कर जोरि॥

इति श्रीदत्तात्रेयतंत्रे दत्तात्रेयेश्वरसंवादे स्त्रीवशीकरणं नामाष्टमः पटलः ॥ ८ ॥

अथ नवमः पटलः

पुरुषवशीकरणम्

ईश्वर उवाच

गोरोचनं योनिरक्तं कदलीरससंयुतम्।
एभिस्तु तिलकं कृत्वा पतिवश्यकरं परम् ॥ १ ॥
पंचाङ्गदाडिमीं पिष्ट्वा श्वेतसर्षपसंयुताम्।
योनिलेपात्पतिं दासं करोत्यपि च दुर्भगा ॥ २ ॥
मालतीपुष्पसंयुक्तं कटुतैलेन पाचितम्।
एतैर्लिप्तभगा नारी रतौ मोहयते पतिम् ॥ ३ ॥

मंत्रः-ॐ नमो महायक्षिणी पतिं मे वश्यं कुरु कुरु स्वाहा ॥ १०८ जपात्सिद्धिः ॥

पुरुषवशीकरण तंत्र

गोरी सरसों, तुलसी, धतूर, ओंगा और तिलका तेल इनको एकमें मिलाकर खूब महीन पीसके इसका लेप स्त्री करे तो उसका पति तन मनसे वश हो जावे ॥

जब स्त्री कपडों (रजस्वला) से हो तब यह युक्ति करे कि चार दिनतक चार लौंगोंको भगमें भिगोवे फिर उनको पीसकर जिस पुरुषके शिरपर डारे वह पुरुष उस स्त्रीके सदा वश रहै ॥

स्त्री निज पांवके जूताके बराबर आटा तोलकर रविवार वा मंगलके दिन चार रोटियां बनाकर जिस मर्दको खवावे वह मर्द उस स्त्रीके वश होवे ॥

अथ राजवशीकरणम्

ईश्वर उवाच

कुंकुमं चन्दनं चैव कर्पूरं तुलसीदलम् ।
गवां क्षीरेण तिलकं राजवश्यकरं परम् ॥ १ ॥
करे सुदर्शनामूलं बद्ध्वा राजप्रियो भवेत् ।
सिंहीमूलं हरेत्पुष्ये कट्यां बद्ध्वा नृपप्रियः ॥ २ ॥
हरितालं चाश्वगन्धा कर्पूरं च मनःशिला ।
अजाक्षीरेण तिलकं राजवश्यकरं परम् ॥ ३ ॥
गृहीयात्सुदर्शनामूलं पुष्यनक्षत्रवासरे ।
कर्पूरं तुलसीपत्रं पेषयेत्कपिलावस्त्रके ॥ ४ ॥
विष्णुक्रांतानि बीजानि तैलं प्रज्वाल्य दीपके ।
कज्जलं पातयेद्रात्रौ शुचिपूर्वं समाहितः ॥ ५ ॥
कज्जलेनांजयेन्नेत्रे राजश्यकरं परम् ।
चक्रवर्ती भवेत्तस्य अन्यलोकेषु का कथा ॥ ६ ॥
अपामार्गस्य बीजानि गृहीत्वा पुष्यभास्करे ।
खाने पाने प्रदातव्यं राजवश्यकरं परम् ॥ ७ ॥

मन्त्रः-ॐ नमो भास्कराय त्रिलोकात्मने अमुकं महीपतिं मे वश्यं कुरु कुरु स्वाहा ॥ १०८ जपात्सिद्धिः ।

अथ राजवशीकरण तंत्र

पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्रमें किसी फुलवाडी या बगीचेमें जाकर

अनार तोड़ लावे फिर उस अनारको धूपदेकर उसके दहिने हाथमें बांधकेसभाके मध्यमें जावे तो राजा वश होय। यहऐसा तन्त्र है कि अगर करते बने तो राजा इंद्र भी वशमें होजायँ॥

इति श्रीदत्तात्रेयतंत्रे दत्तात्रेयेश्वरसंवादे राजवश्यं नाम नवमः पटलः ॥ ९ ॥

अथ दशमः पटलः

अथाकर्षणम्

ईश्वर उवाच

आकर्षणविधिं वक्ष्ये शृणु सिद्धिं प्रयत्नतः ।
प्रजानां राजवृंदानां सत्यमाकर्षणं भवेत् ॥ १ ॥
कृष्णधत्तूरपत्राणि रसरोचनसंयुतम् ।
भूर्जपत्रे लिखेन्मन्त्रं श्वेतकरवीरलेखनी ॥ २ ॥
यस्य नाम लिखेन्मध्ये खदिराङ्गारे तापयेत् ।
शतयोजनमायाति नान्यथा शंकरोदितम् ॥ ३ ॥
अनामिकाया रक्तेन लिखेन्मन्त्रं तु भूर्जके ।
यस्य मध्ये लिखेन्नाम मधुमध्ये च तिष्ठति ॥ ४ ॥
तदा ह्याकर्षणं याति सिद्धियोग उदाहृतः ।
यस्मै कस्मै न दातव्यं देवानामपि दुर्लभम् ॥ ५ ॥
नृकपाले लिखेन्मन्त्रं रोचनासहरोचनम् ।
तापयेत्खदिराङ्गारे त्रिसंध्यानुप्रयत्नतः ॥ ६ ॥
उर्वशीमपि चादाय वशीकुर्यादसंशयम् ।
यस्मै कस्मै न दातव्यं नान्यथा शंकरो दितम् ॥७॥

मंत्र-ॐ नमो आदिरूपाय अमुकम् आकर्षणं कुरु कुरु स्वाहा ॥ १०८ ॥ जपात्सिद्धिः ॥

आकर्षण नाटिका

बहु बनमें जो जैके चित्रबेलि जो लावै । चित्रबेलि जो लावे कि वाको धूप दिखावे । कहींसो घग्घू लावै कि वाको अन्न चुगावै । वाके पगमें बैरीकी चित्रबेलिकी देनी । वह रातको बोलै कि वाको वचन सो तोलै वाको वचन जो तोलै कि मेरी बेरी काटौ तौ तुमको देहूँ साटो देहूँ साटो औ मनमें होय जो मांगो मनमें होय जो मांगो मेरा लैस लागौ लैस लागौ कि वाको लेना तबहीं लेना तबहीं कि वाको छोडै जबहीं ॥

वशीकरण आकर्षण तन्त्र

होरीके दिन होरी न्योत ताकी लकडी रे । धूप दै करै तमाशो धोबीके घर जावै रे भाठी नीचे बारे वाको करिकै कोयला लावै रे । कूटि बाँटि चूरण करि राखै हस्त नक्षत्र जब आवै रे ॥ शिर तिरियाके डारे वाको सो चलि अपनै आवै ॥

दीपदानके दश दिन पहिले कूडो लावै रे ॥ तामें धरे जु एक रुपैया नित पूजन करि आवै रे ॥ मला काटिकै लावै वाको कुडाछाल मिलवावै रे॥होवे स्त्री कपड़ा जा दिन तादिन लोहू लावै रे ॥ सबको लेके जाय मशाना चुटकी राख मिलावै रे । शिरपर डारै नर नारीके सँग चलि अपुनै आवै रे ॥

इति श्रीदत्तात्रेयतंत्रे दत्तात्रेयेश्वरसंवादे आकर्षणं नाम दशमः पटलः ॥ १० ॥

अथैकादशः पटलः

वशीकरणतिलकम्

ॐ ह्रां ह्रीं कालि करालिनी ह्रीं ह्रींक्षीं क्षां फट् ।
इमं मंत्रं महेशानि जपेदष्टोत्तरं शतम् ॥ १०८ ॥
अजमांसबलिं　दद्याद्रक्तपुष्पैस्तथैव च ।
श्मशाने च ततः कुर्यात्षड्बलिं च निवेदयेत् ॥१॥
सप्ताहाभ्यां ततः सिद्धिः प्रसन्ना कालिका भवेत् ।
यद्यत्प्रार्थयते वस्तु ददाति च दिने दिने ॥ २ ॥
पुष्ये पुष्पं तु संग्राह्यं भरण्यां तु फलं तथा ।
शाखां चैव विशाखायां हस्ते पत्रं तथैव च ॥ ३ ॥
मूले मूलं समुद्धृत्य कृष्णोन्मत्तस्य संक्रमात् ।
पिष्ट्वा कर्पूरसंयुक्तं कुंकुमं रोचनं समम् ।
तिलके वशमायाति यदि साक्षादरुंधती ॥ ४ ॥

अथ इन्द्रजालकौतुकम्

इन्द्रजालं विना रक्षां न करोतीति निश्चितम् ।
रक्षामन्त्रो महामन्त्रः सर्वसिद्धिप्रदायकः ॥ १ ॥

मन्त्रः-ॐ नमो नारायणाय विश्वम्भराय इन्द्रजालकौतुकानि-दर्शय दर्शय सिद्धिं कुरु कुरु स्वाहा ॥ १०८॥ जपात्सिद्धिः ॥

रक्षामन्त्रः

ॐ नमः परब्रह्मपरमात्मने नमो मम शरीरं पाहि २ कुरु कुरु स्वाहा ॥ १०८ ॥ जपात्सिद्धिः ॥

एक दिन ।

ॐ नमो धरती माता धरती पिता धरती धरै न धीर बाजै सिंगी बाजै तरतरी आया गोरखराय मीनका पूत मंजका छडा लोहका कडा हमारी पीठ पीछे यती हनुमन्त खडा। शब्द सांचा फुरो मंत्र ईश्वरोवाच। विधि–सात बार झाड दीजे॥

अपनी देहरक्षाका मन्त्र

ॐनमो हनुमन्त वज्रका कोटा जिसमें पिंड हमारा पैठा ईश्वर कुंजी ब्रह्मा ताला इस घटका यती हनुमन्त रखवाला। शब्द०।

विधि–तीन बार इस मन्त्रको पढकर कहीं रहो या जाओ शरीरमें किसी तरहकी चिन्ता न होगी।

दृष्टिबन्धादिनानाकौतुकम्

घुणतालकपंचांगं वेष्टितं कनकं तथा।
दृष्टमात्रे दृष्टिबन्धं नान्यथा शंकरोदितम्॥ १ ॥
भौमवारे सर्पमुखे क्षिप्त्वा कार्पासबीजकम्।
उद्भवं बीजकर्पासं बालकैरण्डतैलकम्॥ २ ॥
तद्वर्ति ज्वालयेद्रात्रौ सर्पवद् दृश्यते ध्रुवम्।
वृश्चिकस्य मुखस्यान्तर्बीजं कर्पासिकं क्षिपेत्॥ ३ ॥
तद्वर्ति ज्वालयेद्रात्रौ वृश्चिको भवति ध्रुवम्।
वर्त्तिरेतयं भकर्त्तव्यं महाकौतुकशान्तये॥ ४ ॥
कार्पासानि च बीजानि नकुलास्ये च निक्षिपेत्।
भौमवारे कृते योगे नान्यथा शंकरोदितम्॥ ५ ॥
तद्वर्ति ज्वालयेत्संध्यां नकुलो दृश्यते ध्रुवम्।
एरंडतैलजं दीपं पुष्यार्के अहिकंचुकम्॥ ६ ॥
मण्डूकवसया दीपे सर्वे पश्यंति सर्पवत्।

हृदयं कृकलासस्य ग्राहयेद्विधिपूर्वकम् ॥ ७ ॥
तदधृतं ताम्रपात्रे तु वेष्टितं मुखवश्यकृत् ।
यस्मै कस्मै न दातव्यं देवानामपि दुर्लभम् ॥ ८ ॥
उल्लूकस्य कपालेन क्षतेन हतकज्जलम् ।
तेन नेत्रांजनं कृत्वा रात्रौ पठति पुस्तकम् ॥ ९ ॥
भल्लाततैलमत्स्यं तु लेपयेद्गात्रसन्ततम् ।
निःक्षिप्तं जलमध्ये तु मीनो जीवति तत्क्षणम् ॥ १० ॥
गृहीत्वांकोलबीजानि रविवारे सुनिश्चितम् ।
शृणु सिद्धिं महायोगिन्बीजानां कल्पमुत्तमम् ॥ ११ ॥
चन्द्रवारे च निक्षिप्ते मुखे मार्ज्जारनिश्चितम् ।
जायते बीजमेरण्डे मुखे धृत्वा बिडालवत् ॥ १२ ॥
अंकोलबीजलिप्ते तु गुरुवारे मुखे गजे ।
मंत्रेण सिंचयेन्नित्यं यावद्बीजपरोद्भवैः ॥ १३ ॥
त्रिलोहवेष्टितं कृत्वा एकबीजं मुखे क्षिपेत् ।
मत्तमातंगवीर्य्यस्तु वायुतुल्यपराक्रमः ॥ १४ ॥
दश हेम द्विषट् ताम्रं रौप्यं षोडशभागकम् ।
एतत्त्रिलोहं विख्यातं ज्ञातव्यं सर्वकर्मणि ॥ १५ ॥
बुधे वा शनिवारे वा कृकलां गृह्य यत्नतः ।
शत्रुमूत्रयुतं तत्र कृकलां तत्र निःक्षिपेत् ॥ १६ ॥
निखनेद्भूमिमध्ये तु उद्धृते च पुनः सुखी ।
नपुंसको भवेत्सत्यं नान्यथा शंकरोदितम् ॥ १७ ॥

चटकं मैथुनं पश्येद्यावद्द्वारं करोति च ।
तावद्ग्रन्थि च सूत्रेण दीयते कौतुकं महत् ॥ १८ ॥
कृकलासस्य रक्तेन लेपयेद् ग्रन्थिसूतकम् ।
आगच्छति महारूपा वनिता स्वेच्छचारिणी ॥१९॥
मध्यग्रंथिं मोचयित्वा स्रवतेव हि योषितः ।
विना मंत्रेण सिद्धिः स्यात्सिद्धियोग उदाहृतः ॥२०॥
रविवारे गृहीत्वा तु मृत्तिकाभांडषण्मुखम् ।
तस्य मध्ये स्थिरं कृत्वा अर्ककीलं नवांगुलम् ॥२१॥
श्वेतदूर्वा च संयुक्तमश्वगन्धा मनःशिला ।
ताम्बूलयुक्तं कृत्वाऽथ सुपत्रं तुलसी तथा ॥ २२ ॥
अपामार्गस्य पत्रं तु धात्रीपत्रं तथैव च ।
वटपत्रंतयोर्मध्ये घृतमिष्टान्नदुग्धकम् ॥ २३ ॥
मुखं वस्त्रेण संवेष्ट्य निखनेत्सस्यमध्यके ।
तदुपरि भूर्ज्जंत्वचि पंचदश लिखेत्सुधीः ॥ २४ ॥
शलभी मृगगणा मूषा शृगालाः कांजकास्तथा ।
पशुपक्षिनराश्चौराः कालकं जायते तदा ॥ २५ ॥
वसुन्धरा सस्यपूर्णा न विघ्नैः परिभूयते ।
यस्मै कस्मै न दातव्यं नान्यथा शंकरोदितम् ॥२६॥
सर्वे विघ्नाः पलायन्ते तथा युद्धेषु कातराः ।
विना मन्त्रेण सिद्धिः स्यात्सिद्धयोग उदाहृतः ॥२७॥
महाविद्या इन्द्रजालं विद्यानां सर्वमुत्तमम् ।
यस्मै कस्मै न दातव्यं नान्यथा शंकरोदितम् ॥२८॥

अथ तन्त्रविद्या

उत्तम मध्यम और निकृष्ट सब सुनि यामें काने रे ।
अब तुझसे तन्त्र उपदेश बताऊँ मति राखो कुछ छाने रे ॥
कहत महेश्वर सुनु री गिरिजा मन्तर सारे भाषैं रे ।
जो बूझे सो कहुँ अब तोसों नहिं राखौं कुछ छाने रे ॥
अब तन्त्रोपदेश बताऊँ सो सुनियो दे काने रे ।

रोग दोष मिट जाय

शनीवार दिन संध्या पहली घर कुम्हारके जावै रे ।
कूंडा ऊपरि चौंसठि दीवा उलटे चाक फिरावै रे ।
दीवे दीवे धरना बाती सबमें घृतै पुरावै रे ।
भात दूधका भरै जो कंडा तामें शक्कर मिलावै रे ॥
संध्या समय यह करै उतारा रोग दोष मिट जावै रे ॥ १ ॥

अन्य विधि

और उपाय कहूँ मैं तोसूं सो करियो चित दै करिकै रे ।
नौ माटीको करुवो ल्यावै ऊपर ढकना धरिकै रे ॥
सात भांतिको रेशम ल्यावै अरु सिंदूरसे चरचै रे ।
छाडछबीलो कपूरकचरी अगर कपूर मिलावै रे ॥
सात भांतिकी पुडी जो बांधै करुवै लेप करावै रे ।
लाल स्याह अरु पीली लीजै हरी गुलाबी भूरी रे ॥
धोली स्याह बताऊँ प्यारे और विधी समझाऊँ रे ।
भूरी और गुलाबी लीजै यही उपाय जु कीजै रे ॥
कडुवा तेल भरे ता भीतर जिसमें दीवौ जोवै रे ।
सांझ समयमें करै उतारो रोग दोष सब खोवै रे ॥ २ ॥

सर्वदोष दूर होनेका तन्त्र

रारकी तुली ल्याव कितहूँसे ताको खूब छिलावै रे ।
तिनका गिरको करै पान नौ काचे सूत बुनावै रे ॥
रंगबिरंगो करै पूतलो ताको भोग लगावै रे ।
काचा दूधमें पानी राखै रस्ता बीच धरावै रे ॥
काचो कलुवो रक्कौ सक्कौ सबै दोष मिटि जावै रे ॥ ३ ॥
वामां पगकी सात ठीकरी देख ठीकरी ल्यावै रे ।
ताको न्याय करै यां विधिसूँ धूप दीप दिखलावै रे ।
ताको चरचै कुंकुम चन्दन सात सूप लै ध्यावै रे ।
तुस अरु भुसा भरै वा भीतर रोगीको दिखलावै रे ।
पहर रातिको करै उतारा कुब्जा हाथ धरावै रे ॥ ४ ॥

ऊत पितृ दूर होय

सात सुपारी सात छोतरा सात छुहारा ल्यावै रे ।
तिनकूं लेकर घरकूँ आवै रोगीकूं दिखलावै रे ॥
ऊत होय पुनि पितृ होय वा ताको नाम उठावै रे ।
वायें कोने गाडै वाको ऊत पितृ पिंड छाडैं रे ॥ ५ ॥

ऊत पितृका दोष मिटै

होय मूल नक्षत्र जब, मूल ताड मँगवाय ।
ऊतपितरको दोष सब, लावतही मिटि जाय ॥

रोगदोष मिट जाय

आक अरंडको मूल मँगावै, ताको सिंदूर लगावै रे ।
गूगल धूपकी धूनी दीजै, यह मंत्र पढ उठावै रे ॥
मन्त्रः—ॐ श्रीं ह्रीं फट् स्वाहा ॥
याको लैके वायें हाथमें रोगीको दिखलावै रे ।
जो वो गाडै घरके कोने रोगदोष मिट जावै रे ॥ ६ ॥

बुद्धि पराक्रम होय

जोगी जंगम शैव संन्यासी जिनकी पदरज ल्यावै रे ।
धूप दीप दै न्योतै वाकूं शिरपर वाकूं डारै रे ।
बुद्धिबलवन्त होय पराक्रमी कुटुंब आपनो पालै रे ॥ ७ ॥
द्विजरज गोरज खररज लीजै श्वानकी शिलामाहिं दीजै रे ।
पुष्यार्कमें उपाय जो कीजे शिर काहूके डारै रे ॥
होय वह अपनो सोई वह पावै रे ॥ ८ ॥

चरित्र दीखे

तीन खूँटकी देखि खोपडी नरकी कहूँसों ल्यावै रे ।
नगद बावची और जगावत राति समयमें लावै रे ॥
हूली फूल मँगाकै ताको कोल्हू तेल कढावै रे ।
नरमा बनीकी रुई मंगावै बाती ताहि बनावै रे ॥
धर बत्ती दीवै लै जोवै ने चारित्र दिखावै रे ॥ ९ ॥

जो मांगे सो देवे

आक धतूरो माथासूं लै जडै कटेली ल्यावै रे ।
तिनको बांटि चूर्ण करि राखै पुष्य नक्षत्र जो आवै रे ॥
शिरपर डारै जो कोईके मांगै सोई पावै रे ॥ १० ॥

तुरकी

लाल अरंड कहूं जो देखै ताको न्यौतो दीजै रे ।
अर्कवारको सयम सामकूं एकै झटके लीजै रे ॥
दोय टूक लकड़ीका होय तु न्यारो न्यारो लीजै रे ।
जाकूं देखै पीढा बैठ्यौ जाके लकडी ल्यावै रे ॥
ऊठत पीढ्यौ लग्यो जु आवै लोग तमाशा देखैं रे ॥ ११ ॥

सर्प दीखने का तन्त्र

मूवो सर्प कहूं जो देखै ताको लेकरि आवै रे ।

ताकी ठोढी लैकारि लीजे ताको मुख बनवावै रे ॥
बँधैं कपास रुई जब तामें ताको तन्त्र जो कीजै रे ॥
बाँस बडाको बाँस मँगावै जाकै ले लिपटावै रे ॥
बाँधि बुहारी सभा बिच फेंके सबै सर्प ह्वै जावै रे ॥ १२ ॥

सर्प होनेकी विधि

मरा हुआ काला सर्प लाकर उनके मुँहमें बिनौला और थोडीसी मिट्टी डालकर बो देवे फिर एकांत (जहां कोई जा न सके) में गाड देवे जब उसमें रुई पैदा हो तब बिनौले काढके बाती बनाकर जलावे, फिर बिनौला मुँहमें रख जिस घरमें जाय उसमें आप सहित सर्प देख पडें ॥

नाचका तन्त्र

दोय पूँछको देखि विषभरो ताकी पूँछ जो लावै रे ॥
रुई लपेटि चार बाती दीवै ताको अग्नि लगावै रे ।
जा घरमाँही दीवो जोवै सब घरका हां नाचै रे ॥
देख तमाशो सभा बीचमें बडो अचम्भो माचै रे ॥ १३ ॥
खेल-गधा गधीको संगम देखे मुखसों बालि जु ल्यावै रे ।
धूप दीप दे गंडो कीजै ताको सूत लपेटै रे ॥
लाल स्याह कै पीली लीजै यही उपाय जु कीजै रे ।
अपने करमें पहरे वाकूं जहाँ तहाँ चलि जावै रे ।
लहिंगो उचिक शीशपर बैठे लोग तमासा आवै रे ।
करको गडो तलै उतारे लहिंगो चरण जु आवै रे ॥ १४ ॥
अर्कवारकूं चोरी करवा घर कुम्हाके जावै रे ।
बासन कटनौ डोरो देखै सोई लेकर आवै रे ॥

वा दिन चिडा चिडीका संगम देख सातैं गांठि लगावै रे ।
घाटबाट रस्ता बिच गाडै ताको छूटे नारो रे ॥ १५ ॥

सर्वदोष वायुगोला जाय

नदी किनारे नाव जु देखै ताको कांटो ल्यावै रे ।
घोडाको खुरताल मिलावै जिसको कडो गढावै रे ॥
धूप दीप दै करमें पहिरे सर्व दोष मिटि जावै रे ।
भूत प्रेत डाकिनी सिहारी जाकूं घोलके प्यावै रे ॥
मिटै पीर अरु हूक अंगकी वायुगोला मिटि जावै रे ॥ १६ ॥

झकमारता डोलै

दीपदानके ऊगत दिनकै भिक्षा करने जावै रे । ब्रासण बनिया डूम ढेढ अरु नीच मोनकी ल्यावै रे ॥ तिनकी बाटी खूब बनावे धरि दरवाजे राखै रे । हाथ लगा यह मुखसु बोलै रोग दोष मिटि जावै रे॥ताप तिजारी सीयोदाइ और सफोदर नाशै रे । बुरा करन मन सोच जाको तातै वचन जु बोलै रे। हाथ लगाय कहे मुख बाहर झक मारत ही डोलैरे ॥ १७ ॥

शिला उडानेका मन्त्र

बानी तंबोली मोचीके घर भिक्षा करने जावै रे ।
काली जोरी माहिं मिलावै खर मूत्रसूं भिजावै रे ॥

मन्त्रः—ॐ काला काली महाज्वरे । दिन जाय घर ल्यावे वाकूं बडी शिलाकूं चरचे रे ॥ याहि मन्त्रसे पडके नीचे परसन ताहिसो कीजै रे ॥ ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं फट् क्लीं स्वाहा । दश सहस्र १०००० मन्त्र जप प्रसन्न होय तब वर दे । उडे शिला वर मांगे यही आप कहे जहां पडे सोई रे ॥ १८ ॥

मनइच्छित फल पानेका मन्त्र

माघ मासकी तेरस अंधेरी ऊंट हाडको न्योतै रे ।
सांझ समय तिथि चौदशिके दिन जाकर वाको लावै रे ।
या विधि तंत्र जु कीजै वाको धूप दीप दिखलावै रे ।
वाको पुरुष काटिके लावै पीछे जलसों धोवै रे ॥
कुंकुम चन्दन चरचे वाको पीछे वर लै मांगै रे ।
पुत्र रु धन दारा सुख देखे मनचीता फल पावै रे ॥१९॥

मूत्र बन्धनका तन्त्र

भरणी नक्षत्र आवै जा दिन ता दिन चोरी कीजै रे । नाईके घर जाय अचानक चोर चमोटा लीजै रे ॥ मोचीके घर जावै पीछे दोय ठीकरी कीजै रे । नारी कहीं मतती देखै मूत गडहामें धरीजै रे ॥ मूतबन्द होय पेट जु फूलै निश्चय मरना मांडैरे ॥२०॥

मंगलवारके दिन जिस जगह शत्रुने मूता हो उस जगहकी मिट्टी लाकर किरकोटाके मुखमें डार बेरकी डालीमें बांधे तो शत्रुका मूतना बन्द होजाय ॥

मूवा मेंढक बोले

कातिक दीपमालिकाके दिन मूवा मेंढक लावै रे ।
गाडि जमीमें पारो भरिकै नींबू रस लै डारै रे ॥
मास दिवसके पीछे काढै जहँ तहँ शब्द उचारै रे ॥२१॥

इति श्रीउमामहेश्वरसंवादे तन्त्रविद्या सम्पूर्ण

अथ नाटिकाभेद

चाल गज जानौ धुक सांचौ सोई मूरख रे ।
अज्ञान लोग जानत नाहीं कहूँ बात सो तू सुन रे ॥

प्यारे सब घट व्यापक सो तो सबते न्यारे ।
मन्त्र रे तन्त्र तू ये सुन ले सारे ॥
नाटिकका भेद कर सो सुन प्यारे ।
टूटै अज्ञान सोई खूटै तारे आवै जो ज्ञान ध्यान सुन रे बारे

दो योजनतक दीखनेका अंजन

करियो तलास प्यारे मूई नारी। लावै जो चार चीजें सबसे प्यारी। लोहा अरु सीसा तांबा पारा लीजे। करके तिहिं खरल गोली आंचमें दीजै॥ लोहाकी डिब्बी मांहि धरि जो दीजै। मरी नारी ताके सँग प्यारे रहीजै ॥ लागै जो युक्ति डिब्बी धरिदे भगमें। आवै जो फूंकि लौटै वाहि पगमें॥ ढूँढि ढाँढि राखमाहीं डिब्बी लीजै। गोलीको काढि ताहि अञ्जन कीजै ॥ कूटि पीसि छानि जोई नेत्रमें रेखै । निश्चय कर सोई दो योजन देखै ॥

सौ योजनतक दृष्टि होय

कृष्णपक्षकी चतुर्दशीको गीधका शिर लाय मिट्टीमें गाडे, तापर लहसुन बोवे, जब पुष्यनक्षत्र आवे तब लहसुन लाकर काजलके संग पीस घी मिलाय आंखोंमें आंजै तो सौ योजन तक पृथ्वी चमकती हुई देखे और दिनमें तारा चमकते दीखें।

योजनकी बात श्रवण करे

करकै तलास कहूं गिरिवर जाना । गीध कहूं देखि वाकी बीट जो लाना ॥ वाके सम पीपल छोड जो लीजे । नीम्बूकी छाल मालकांगनी दीजे ॥ तांबेकी लोठि तामें पारा भरना । ऊपरसूं छादि यन्त्र पताली धरना॥धरतीमें गाडि ऊपर आंच

जो दीजै । प्यालाको धरि तले तामें अर्क चुवाजै ॥ श्रवणनमें डारि शीश साधन कीजै । योजनकी बात सब सुनिकै लीजै ॥

बावला होय

मुर्गाकी बीट कहूं लावै भाई । डोड कागकी बीट वाके माहिं मिलाई ॥ बांटिकै सुखाय वाको चूरण कीजै । शत्रुको चावलभर पानमें दीजै । अक्कल जो नष्ट ताकी तबहीं होई । कपडनको फाडि फाडि जीव सो जोई ॥

सोलह योजन चलै

चकवी चकोर मैना बीट जो लीजै । कगवरकी बीट वाके माहीं दीजै ॥ सबको मिलाय वाको बांधै गोला । मुखमें जो राखि चलैं योजन सोला ॥

मन इच्छित फल पावै

मेंढेके सींग रविदिन न्यौतके ल्यावै । वाकूं जलाय वाकी पुंगी बनावै ॥ कोनामें गाडि वाकूं तेल जो सींचै। शून्यमें आय आधीरातके बीचै। मनमें जो चिन्तवै कार्य सिद्ध होवै जगमें ॥

लोपांजन

कारो बिलाव कहूंसे ल्यावै । माखनको घृत वाकूं प्यावै॥ बांधे जो पाँव वाको घोटै रे । खायो घृत मुख होय गेरे ॥ सो हारि समेटि सारौ भेलो कीजै । वाको उठाय सर्व दीवे दीजै॥ रुई मँगाय कवी बाती कीजै। आग जो लगाय वाको काजल करना ॥ काजल उतार एक डिब्बी भरना । चावल प्रमाण काढि अंजन कीजै ॥ अलख होय अपना मतलब कीजै । और न देखे आप सबको देखै ॥

मोर और बन्दरकी हड्डी लाकर भैंसके घीमें खूब पकावे, फिर बारीक पीसके आखोंमें आंजे तो वह अदृश्य हो जायगा॥

दिनमें विमान दिखे

भूरी जो चील देखि वनमें जाना । घृतमें मिलाय वाकूं कपुर चुगाना ॥ करे जो बीट वाकी सारी लेनी । सारी जो बीट लेके दीवे धरनी । रुई मँगाय बाको काजल पारे । डिब्बी मँगाय वामें सारो डारे । नैननके बीच एक अंजन रेखे । जाते विमान सुतो दिनमें देखे ॥

रथसमेत सूर्यको देखना

बीज बीजौरा तेल ले ताम्र सुपात्रमें भरिये । बीज दुपहरी धूप माहिं धर यह उपाय तब करिये ॥ सूरजको जो देखे तामें रथसमेत दीखै वामें ॥

एक योजनकी बात सुने

सारसको पर जो प्यारे बीचली लानी । उडके जो जाय पहिले बोले बानी । ओं सरितपक्षनी महापक्षनी फट् स्वाहा पानीमें जाय परको धोके रखना ॥ पीछे जो जाय वाको नाटिक करना॥सोरा मिलाय गन्धक राल जोजो जो भरना। सँगलो मँगवाय लेप परके करना ॥ कपरा मँगाय लेप माटी करना । परको लपेटवाको लेप जो करना ॥ आँच जो लगाय वाको अर्क चुवावै । रत्तीभर पानमें जानि खवावै ॥ चावल भर सीख जाके मुँहडे नावै । योजनकी बात अपने श्रवणन सुनि है । जहाँ तहाँ जाय अपने कारज करि है ।

ऋद्धिसिद्धिका नाटिक

कीजै तलास नीलकंठ घूँसला।वामें जो अण्डा देखि की जो।

चाला ॥ उहाँ जो जाय पुष्यार्कके माहीं । सेवै जो धूप लगै बैठे ढांई॥पीछे घूँसलौ खोसि लीजै सारो । जलमें जो डारि वाको कीजै न्यारो ॥ बैठे जो ढिग वहां जाय जलके माहीं । तृण खोटि डारै जलके माहीं॥होवे जो सर्प तृण लीजो भाई।तृणको जो ल्याय वाको नाटिका कराई ॥ धूप दीप देके अन्नकी कोठीमें भरना । बढे ऋद्धि सिद्धि नहीं लेखो करना ॥

सर्वकार्यसिद्धि

करिकै तलास कहूं सिकरा लाना । ताको जो ला खासा सक्कर चुगाना॥करै जो बीट वाकी भेली करनी।ताके जो बीच एक धेला धरनी॥ राख षटमास वाको काढ पीछे। देके सुनारको वाको तार कढावे॥ पीछे जो लाय घर भीतर गाडै । बढे जो तार वह सरैको कोई । पीछै जो काढि कार्य कीजै सोई ॥

घोड़ा हाथी ग्राममें दौड़ें

करिके तलास हाड बकुलाको ल्यावै । ताको जो लाय हाड मेंढक मिलावै । ताको जो बांटि कूटी चूरण कीजे । केसर कपूर वाके माहीं दीजे । झीनोसो कपरो लाय चित्र जो करिये । घोडा और हाथी ऊँट तैसा मांडै । ताको जो जाय गामसीमा गाडै। तिनको जो जाय नित्य पूजन कीजै। नर जो हाड एक राखै जोरै रखना । पूजन या भांति दिना बसी जो करना ॥ मूँगनको भष वाको दीजै घोड । घोडा जो ऊँट हाथी ग्राममें दौडे ॥

गांवकी आफत दूरहो

वानरको हाड कहूँसे ल्यावै भाई । वाको जो ल्याय धूप

दिखाई ॥ धूप दीप देई गांव बाहर गाडै । पूजन जो करके तिन वाको आवे । गांवकी आफत अर्क सब मिट जावै ॥

भैरवसिद्धिः

बिना चूना मोठा सेर चार जो लीजै । हांडी जो ल्याय वाको खूब रांधीजै ॥ भोजन जो करते डाढ कंकर लागै । कंकर लै हाथ गावँ बाहर भागै ॥ पनघटको घाट कहूं देख भाई । लेकरि वह कंकर वा घाटको जाई ॥ देखे पनहारी जेहर भरती होही । डारे जे कंकर वाकी जेहरि माहीं ॥ फूटे जो हंडि वाकी गिडना लीजे । गिडनाको लेई वाको बनमें जाना ॥आवै जो गऊ पुनि जिसमें जाना ॥देखु जो गायको वह फलमें आती । समय जो आनि लागै दीवा वाती॥ गिड-नामें देखि देखि सामैं जावै । गोरज उडतीमें वाको दरशन पावै ॥ देख जो देव भाय भैरों आतो । धरै जो भेष वाको वाहन खातो ॥ कीजै अकरार मन मानै सोई । जो प्रसन्न होय बर मांगे सो देई ॥

भूतादिकसिद्धिः

कारिकै तलास कहूं बगला ल्याना। बगला जो लाय वाको पारा प्याना । पारा जो प्याय वाको छेर करना । छेर जो करांय पारा शीशा मिलना ॥ आंच तो लगाय वाको काजल पारै । डिब्बी मँगाय वामें सारो डारै ॥ समय जो पाय कोई अञ्जन रेखे।जमीके भूत प्रेत सारे देखे॥मतलब जो जानि कुछ मांगै भिक्षा । प्रसन्न जो होय जब देवै दीक्षा॥उनकी जो बात कहिये सबसे न्यारी । सौ कोसकी बात वह कहिदे सारी ॥

सौ कोस उड जानेका नाटिक

मोरकी बीट सेर चारि जो लाना । ताको जो लाय खासा धूप सुखाना ॥ झीनीसी बांटि वाको कपरे छानै । पीछे जो चार चीज और मिलानै॥लीज हरताल कौंच अमलीचीयां । शीशाकी गोली सबै भली कीयां ॥ सबको जो मिलाय एक नाटक करना । मूवो देखि गधा ताके मुहँमें भरना ॥ राखै इक्कीस दिना वाके माहीं। पीछे जो लाय वाको छांह सुखावै। लोहेको पात्र एक लैके आवै । तामें भारि राख डारी तोलौ पारौ ॥ पात्र जो लै थीर जमीमें गाडै । षट्मास जो आ निश्चय छांडै ॥ पारा शीशा मिलाय एक गुटका होई । बीते जौ मास पीछे काढै सोई ॥ दूध भात खाय वाको मुखमें लेना । सौ कोस उड जाय एक पलमें नेरा ॥

दरियाके बढनेका नाटिक

जलमें तलास करै घोरा मच्छी । वाको जो ल्याय वाकी काटेपुच्छी ॥ पीछे जो चार चीज ल्यावै भाई । लौंग मिरच सोंठि हलद मिलाव माहीं ॥ करुवो जो तेल पैसा चारि भारि लीजे । चोरे तो राखि वामें जो दीजै॥परवत जान कि उनको लेर मिलावै । पर्वतमें जाय एक नाटक करना । अर्कका फूल वाको अङ्ग लगाना॥चौतर्फा देखि मानो दरियासी उलटाय।ग्राम अरु गोरस्ता सारा बूढै। मनुष्य अरु नारी मानो बहि गये ढूंढै ॥

सर्पका जहर दूर हो

खासीसी सुन्दर देखि हलदी ल्यानी । तोले तुलाय तोला

चारि जो लानी॥ चारि भी तोता किये तो नून भी लेना। नून भी लेना कि वाको खूब पिसाना॥कपरेसा छानि वासों जलसों पानी। जलसों पनिक वाको बनमें जाई॥ बनमें जाना कि जहर सर्पको जानै। जहर सर्पको जावै कि दिन जो पावै॥

क्लोराइसडगोल्ड सौल्यूशनको सांपके काटनेके घावके चारों ओर खालके भीतर भरदो विष असर नहीं करेगा॥

स्वरूपका बदलना

करिकै तलाश कहूँ गोहरी लानी। वाको जो लाय वाको सहत औ पानी॥ दिन इक्कीस घर भीतर राखै। लेवेको छेर बाकी औषधि नाखै॥ औषधि जो चारि चीज ल्याजै भाई। आमा जो हल्दी नागरमोथा ल्यावै॥ मोचरस मँगाय सेंधानोन मिलावै॥करिके भेली कि एक हांडी गाडे। महीना जो सात वाको पिण्ड जो छाडै॥ पाछ जो काढि वाको घरमें ल्याना चावल जो एक खासा पानमें खाना। लपटे जो स्याह रूप नरको होई। सांची जो बात करै देखो कोई॥

नारीरूप दीखे

मनुष्यकी खोपड़ी लाकर उसमें लालगंजा बोवै फल आनेपर मुखमें धारै तो नारी रूप दीखे।

स्वप्नकी बात सच्ची हो

बनमें तलाश रूपा रेलको कीजै। बैठी देखि जो फेरासात जो लीजै। वाको उड़ाय वृक्ष लकड़ी लाना। धूप दीप देखे वाको अग्नि लगाना॥ घर ल्यायके सूख टाको कीजै॥सिरहाने

राखि वाको परचो लीजै ॥ स्वपनाकी बात सर्व सांची होई । बात जो विचार देखि निश्चय सोई ।

अथ चेटक भेद प्रारम्भ

तुम कही सर्व सुनि, समस्त नाटक भेद । अब चेटक उपदेश कहि, मेटो जीवको खेद ॥ अब चेटक सब कहता हूं, सुन सर्वन करि अंक । अब तुम नीके सब सुनौ, राखि चित्तमें चंक ॥ बडनीचे बड देखिके, ताको न्योतै जाय, दीपनको ल्याईये, अर्धरातिके माय ॥ न्हाय धोय अरु नग्न ह्वै, खेवे धूप लगाय । पीछे वाको लीजिये, मनमें प्रीति बढाय ॥ घरमें लेप धराइये, अनधन कोठी माहिं । देव इष्ट जो पूजिये, रहे लक्ष्मी ताहि ॥

दीठ मूठ टले

कृत्तिका कडी मँगाइये, सम जो लोह मँगाय ।
ताको करमें राखिये, दीठ मूठ टलि जाय ॥

ऋद्धि सिद्धि बढे

भरणी भादौ मासकी, कृष्णपक्ष जब होय । तामें चेटक कीजिये, जानत नाहीं कोइ ॥ चार कलश जलका भरै, चल्यो जाय वनमाहिं। धारि एकान्तर आइये, दूजे दिन फिर जाहिं॥ रीतो होय सो ल्याइये, भरो देत छिटकाहिं । रीतो लायके अनभरे, धरै एकंतर ताहि ॥ नित उठि पूजन कीजिये प्रसन्न पूजन पाहि ॥ प्रसन्न होय जब मातही, अन धन लक्ष्मी होय । भगति करै परसिद्धि होय, सुख पावै नर सोय ।

लेश होय

मृगशिर मारग जल लीजिये, ताको करै उपाय ।
शिरपर डारै तासुको, निशिदिन कलह जो थाय ॥

सर्प दीखैं

अशलेखामे कीजिये, बांबी सरप तलाश। जहां भर दीयो तेल भरि, राखै मनैं हुलास ॥ तादिन वाको ल्याइये, अपने घरके मांह। बत्ती धरके जोइये, धरि पीपलकी छांह ॥ जहां जु फुलै चांदनी, जहाँ जु सर्प दिखाहिं। डरें लोग सब देखिके, भै ज़ु रहै मनमाहिं ॥ इतनी चेटक देखिके, दूजे दिन फिर जाय । दिवा उठाय तब खोलिदै माया बहु वर्षाय ॥

घरमें नौलो दीखे

मरा नकुल इक लायके, ताके मुखके बीच । भरे बिनौला चतुर कहुं देवे वाको सींच ॥ जब वामें लागे रुई, ताकी बाती मेल । दीपक सांझ जराइये, भरि अंडीका तेल ॥ नौले ही दीखन लगें, इत उत सब घरमाहिं । शिवशंकरने कह्यो यह, होय अन्यथा नाहिं ॥ अर्कवारको करै जो कोई सत्य सत्य यह झूंठ न होई ॥

बीस योजन चले

श्रावणशुक्ल त्रयोदशि, सोमवार दिन होय। पूर्वाफाल्गुनि कीजिये, चेटक कीजै सोय ॥ नदी निकट हूँ जाइये, कीजै तह्रां निवास । मुई जो मच्छी ल्याइये, सोवै सो षट मास ॥ पारो शीशो हिंगलू, भरदे ताके माहिं। कपरौटी पुनि कीजिये जलमें गाढै ताहिं॥षट् मास तहँ रखिये, पीछे काढै वाहि ।

जलको गुटका कीजिये जलमें आंच लगाय ॥ दूध भात नित खाइये, शुचि पुनि ताको होय । ले गुटका मुखमें धरै चलै सो योजन बीश ॥ फिरिकै पाछे आइये जानो वाहिद ईश ॥

पचास कोस चलनेकी विधि

ढूंढै सेत ककोरा पहले ताको मल मँगावै । मूलकाकजंघा सरफोंका, दोनों सेत जु पावै॥ बांधि पोटली इन तीनोंकी; जाकी कम्मर बँधावै । चले पंथ सो जहां चलावै पशु पक्षी नहिं पावै ॥ जुगत जानि जो चुकै नाहिं तब यह करै तमासा । कोस पचास जाय फिर आवै बीच न मांगे बासा ॥

मार्ग चलनेका गुटका

काला तीतर लाकर तीन दिन भूखा रक्खै और चौथे दिन उसे पारा खवावै पश्चात गोदुग्धमें चावल भिगोकर खवावै फिर उसकी बीटमेंसे पारेके गोलेको निकाल मुहमें रखकर मार्ग चलै तो हारे नहीं ॥

वशीकरण

स्वाति नक्षत्र माघ मास बुधा अष्टमी होय। तादिन न्योतै आकको चेटक कहिये सोय ॥ दूजे दिन फिर जाइये ल्यावै कूंपल तोरि । शिर तिरियाके डारिये, रहै दोउ कर जोरि॥

प्रीति उत्पन्न करनेकी विधि

बिजौराकी जड और धतूरेके बीज प्याजके साथ बारीक पीसकर जो कोई सूंघे वह वश हो जाय ।

भूत प्रेत बांधे

पौष विशाखा लीजिये, कृष्णा तेरस होय। जो दिन चेटक

कीजिये, जो जानत सब कोय। पारस पीपरकी जड, पौष-वदी तेरसि दिन न्योत दीजै चौदशिकी राति ल्याय अर्द्ध-राति वाकलातेल लेजाय नग्न होय स्नान कर धूप देवे, विधिसे पूजा करे पीपलकी जड पहली करि राखे तब वह जड लीजै कोई रोगी होय पितृको देव हाडिको भूत प्रेत डाकिनीका तो वा जडको घृतमें अंजन करे बोल बकरै आछ होय ॥

स्त्री रजस्वला होय

लेत नछत्तर ज्येष्ठा, अरडूसाको मल। ताको ला अरु धूप दै, वह होवे अनुकूल ॥ ताको चेटक कीजिये, कटि तिरियाके बांधि। गयो फूल पीछे फिरै दिना तीसके साथ।

बिल्ली होनेकी विधि

कृष्णपक्ष शनिवारको बिल्लीका शिर काट तिसके बीच मिट्टी भर अंडीके बीज बो देवे और जलसे सींचता रहे, फलने पर उसके फल लाकर जो कोई मुखमें धरे वह बिल्ली सदृश दीखे, मुखसे निकालने पर असल सूरत दीखेगी।

सियार होनेकी विधि

ऊपरकी विधिके अनुसार सियारके सिरमें भांगके बीज बोवे, उस बीजके वृक्षमें बीज पैदा हो उन्हें जो कोई मुखमें धरे वह सियार तुल्य दिखाई पडे।

कार्य बिगडे

लेत नछत्तर पूर्वा, दिन शुक्करको होय। सात शूल ले बबूलके, ताको चेटक सोय ॥ सात भांतिको रेसम घनो, सात शूल लिपटाय। जो घर गाडे भूमिमें, कोई काम नहिं थाय ॥

बिच्छू पैदा करना

माटीका एक कुल्हड लाकर उसमें भैंसका गोबर भरै ऊपरसे गधेका मूत्र डार फिर थोडासा दही और बूरा छोडकर जहां कूडा कर्कट हो वहां गाड देवे। आठ रोज पश्चात् देखे तो बडे विषधारी भयंकर बिच्छू पैदा हुए मिलेंगे ॥

दूसरी विधि–निर्गुण्डीके बीचमें, अंगुल तेल लगाय।
बिच्छू अनगिन होयँगे, दीजै भूमि गडाय ॥

मरी मछली जलमें तैरे

मरी हुई मछली पर भिलावेका तेल चुपडके जलमें छोडे तो वह तैरती फिरेगी, डूबैगी नहीं ॥

मरी हुई मछली जिन्दा हो

मरी हुई मछली लाकर उसके मुखमें पारा भरै फिर पानीमें छोड दे तो जिन्दा होकर बीच धारेमें पहुंचेगी ॥

दिनमें नक्षत्र दीखे

काट धतूरा लेय मँगाई। कोदोंका भुस देय मिलाई ॥
दुहुँन जलाय करै इक ढेर। भर कपडा बत्ती कर फेर ॥
ताको दीपक देहु जलाय। काजल आंखिन लेहु लगाय ॥
दिनमें तारे दीखैं भाई। इन्द्रजाल विद्या यह गाई ॥

षण्ढीकरण

अर्कवार अनुराधा आवै। तब कलहारी जडको लावै ॥
जाको करै नपुंसक भाई। गाडै ताको मूतमें जाई ॥
तो वह मानुष होय नपुंसक। गडा रहै वह मूतमें जबतक ॥
मूल खोदके काढै जबही। जसका-तस ह्वै जावै तबही ॥

शत्रुकी देह गले

उत्तराषाढ जो लीजिये,कीजै यही विचार।सात शूल लै गाडिये, पेडूलाके माहिं॥ज्यों तन छीजै शत्रुको,त्यों पेडू गलिजाहिं ॥

वस्त्र गलनेका चेटक

शतभिषामें लीजिये, शीशो तोला चारि । ताको लेके ताइये, कर कटोरी ढारि॥चिनी खांड तामें भरै, चूर्ण बाजरो मेलि । कारिके निग्रह जाइये,ताको सींचे तेलि॥वाहि कटोरी गाड़िये, दिना तीस पर यांहि । वाको ल्यावे जायके, गाड़ै बजाज घर मांहि।कपरे बकुचे सब गलैं,जानत कोऊ नाहिं ॥

अनुभव–लेत नखत्तर पूरबा, पूरब दिशि चलि जाय ।
प्रात समयमें जाइये, कीजै यही बिचार ॥
गांव बाहरे सो मिलै, बात जो पूँछै ताहि ।
तो सांचीही जानिये, टलै एकहू नाहिं ॥
उत्तरा उत्तर जाइये, गांव बाहर चलि जाहि ।
सुनै शब्द तिरिया मिलै, सांच मानिये ताहि ॥
लेत नखत्तर रेवती, पश्चिम दिशि चलिजाय ।
सुनै शब्द चौपगत तो, पाछे फिरकै आय ॥

इति श्रीउमामहेश्वरसंवादे चेटकविद्याभेदो नाम एकादशः पटलः ॥ ११ ॥

अथ द्वादशः पटलः

यक्षिणीसाधनम्

ईश्वर उवाच

श्रृणु सिद्धिं महायोगिन् यक्षिणीमन्त्रसाधनम् ।
यस्याः साधनमात्रेण नृणां सर्वमनोरथाः ॥ १ ॥

अश्वत्थवृक्षमारूढो जपेदेकाग्रमानसः ।
धनदायी यक्षिणी च धनमाप्नोति मानवः ॥ २ ॥

मन्त्रः–ॐ ऐं ह्रीं श्रीं धनं कुरु कुरु स्वाहा ।
अष्टोत्तरं वा अयुतं १०००८ जपात् सिद्धिः ॥

आम्रवृक्षसमारूढो जपेदेकाग्रमानसः ।
अपुत्रो लभते पुत्रं नान्यथा शंकरोदितम् ॥ ३ ॥

मन्त्रः–ॐ ह्रां ह्रीं पुत्रं कुरु कुरु स्वाहा ॥ १०००० ॥
अयुतजपात् सिद्धिः ॥

वटवृक्षसमारूढो जपेदेकाग्रमानसः ।
यक्षिणी च महालक्ष्मीः स्थिरा लक्ष्मीश्च प्राप्यते ॥ ४ ॥

मन्त्रः–ॐ ह्रीं क्लीं महालक्ष्म्यै नमः १०००० जपात् सिद्धिः ।

अर्कमूले समारूढो जपेदेकाग्रमानसः ।
यक्षिणी च जयानाम्नी सर्वकार्याणि जायते ॥ ५ ॥

मन्त्रः–ॐ जयं कुरु कुरु स्वाहा १०००० जपात्सिद्धिः ॥

धात्रीमूले समारूढो जपेदेकाग्रमानसः ।
अशुभं क्षयमाप्नोति अशुभक्षयकारिणी ॥ ६ ॥

मन्त्रः–ॐ क्लीं नमः ॥ १०००० जपात् सिद्धिः ।

तुलसीदलसंयुक्तो जपेदेकाग्रमानसः ।
अकस्माद्राज्यमाप्नोति नान्यथा शंकरोदितम् ॥ ७ ॥

मन्त्रः–ॐ ऐं ह्रीं नमः ॥ १०००० जपात् सिद्धिः ।

अंकोलवृक्षमारूढो जपेदेकाग्रमानसः ।
राजाधिराजो भवति नान्यथा शंकरोदितम् ॥ ८ ॥

मन्त्रः—ॐ ह्रौं नमः ॥ १०००० जपात् सिद्धिः ।

कुशमूले समारूढो जपेदेकाग्रमानसः ।
सर्वकार्याणि सिद्ध्यन्ति नान्यथा शंकरोदितम् ॥९॥

मन्त्रः—ॐ वाङ्मयं नमः ऐं ॥ १०००० जपात् सिद्धिः ॥

अपामार्गे समारूढो जपेदेकाग्रमानसः ।
वाचां सिद्धिर्भवेत्सत्यं नान्यथा शंकरोदितम् ॥१०॥

मन्त्रः—ॐ ह्रीं श्रीं भारत्यै नमः॥१०००० जपात् सिद्धिः॥

औदुम्बरसमारूढो जपेदेकाग्रमानसः ।
भवेत्पुस्तकसंसिद्धिः सर्वविद्याश्चतुर्दश ॥ ११ ॥

मन्त्रः—ॐ ह्रीं श्रीं शारदायै नमः ॥ १०००० जपात्सिद्धिः॥

श्वेतगुञ्जासमारूढो जपेदेकाग्रमानसः ।
यक्षिणीं संतोषनाम्नीं देवानां वांछितप्रदाम् ॥ १२ ॥

मन्त्रः—ॐ सरस्वत्यै नमः ॥ १०००० जपात् सिद्धिः ॥

निर्गुण्ड्यां च समारूढो जपेदेकाग्रमानसः ।
विद्याप्राप्तिर्भवेत्सत्यं नान्यथा शंकरोदितम् ॥ १३ ॥

मन्त्रः—ॐ नमो जगन्मात्रे नमः १०००० जपात्सिद्धिः ॥

एकलिंगं महादेवं त्रिकालं पूजयेत्सदा ।
धूपं दत्त्वा जपेन्मंत्रं त्रिसहस्रं त्रिसंख्यकम् ॥ १४ ॥
मासमेकं ततो नित्यं यक्षिणी सुरसुन्दरी ।
देवि दारिद्र्यदग्धोऽस्मि तन्मे त्वं शंकरी भव ॥ १५ ॥
दत्वाऽर्घ्यं प्रणमेन्मन्त्री ब्रूते सा त्वं किमिच्छसि ।
ततो ददाति सा तुष्टा वित्तायुश्चिरजीवनम् ॥ १६ ॥

मन्त्रः-ॐ ह्रीं आगच्छ आगच्छ सुरसुन्दरि स्वाहा ।
१०००० जपात् सिद्धिः ॥
कुंकुमेन समालिप्य भूर्जपत्र सुलक्षणे ।
प्रतिपदां समारभ्य पूजां कृत्वा जपेत्तथा ॥ १७ ॥
त्रिसंध्यं त्रिसहस्रं तु मासान्ते पूजयेन्निशि ।
संजपेत्त्वर्द्धरात्रे तु समागत्य प्रयच्छति ॥ १८ ॥
दिने दिने सहस्रैकं प्रत्यहं परितोषिता ।
यस्मै कस्मै न दातव्यं नान्यथा शंकरोदितम् ॥१९॥
मन्त्रः-ॐ अनुरागिणि मैथुनप्रिये स्वाहा ।
शुक्लपक्षे जपेद्यावत्तावद्दृश्येत चन्द्रमाः ।
प्रतिपत्पूर्वमारभ्य एकलक्षमिदं जपेत् ॥ २० ॥
यक्षिणी अमृतानाम्नी अमृतं दीयते यया ।
यस्मै कस्मै न दातव्यं पीत्वा सद्योऽमरो भवेत् ॥२१॥
मन्त्रः-ॐ ह्रीं चंडिके हंसः ह्रीं क्लीं स्वाहा ॥
पूर्वमेवायुतं जप्त्वा कृष्णकन्याभिमंत्रिताम् ।
हस्तौ पादौ प्रलेपेन मुदा वक्ति शुभाशुभम् ॥ २२ ॥
त्रैलोक्ये यादृशी वार्ता तादृशी कथ्यते फलम् ।
कर्णपिशाचिनीनाम्नी नान्यथा शंकरोदितम् ॥२३॥
मन्त्रः-ॐ ह्रीं चंडवेगिनी वद वद स्वाहा ।
१०००० अयुत जपात् सिद्धिः ॥
अलके मल्लिकापुष्पं तथा सर्पाक्षिपुष्पकम् ।
ग्राह्याभिमंत्रितं यत्नाद्रक्तसूत्रेण वेष्टयेत् ॥ २४ ॥

मूर्ध्नि बद्ध कृतं सर्वं वक्तव्यं च शुभाशुभम् ।
त्रैलोक्ये यादृशी वार्ता तादृशं कथयेत्फलम् ॥ २५ ॥

कामरत्नोक्तयक्षिणीसाधन ।

साधनेवालोंके नियम

एकाग्रचित्तसे सम्पूर्ण यक्षिणियोंका ध्यान करे; भगिनी माता अथवा पुत्र, बंधु इनमेंसे किसी रूपसे ध्यान करे मांसरहित भोजन करे, पान खाना छोड दे, प्रातःकाल स्नान करके मृग चर्मपर बैठ जाय, किसीका स्पर्श न करे और नित्य कर्मसे निश्चिन्त होकर एकांतमें मन्त्रको उस समयतक जपे जबतक मनवांछित फलको विभ्रमा यक्षिणी देनेवाली प्रत्यक्ष न होवे ॥

विभ्रमा यक्षिणी

ॐ ह्रीं विभ्रमरूपे विभ्रमं कुरु कुरु एह्येहि भगवति स्वाहा ॥

विधि—इस मन्त्रको श्मशानमें मौन धारण करके जपे. डरै नहीं. गूगल और घीका दशांश हवन करे तो विभ्रमा देवी प्रसन्न हो जाती है ॥

रतिप्रिया यक्षिणी

ॐ ह्रीं रतिप्रिये स्वाहा ॥

विधि—ऐसा देवीका चित्र बनावे जो गौरवर्ण आभूषणोंसे आभूषित कमल पुष्पोंसे अलंकृत होवे । उसका चमेलीके फूलोंसे पूजन करे, एक सहस्र मन्त्र जपे इसी तरह सात दिवस तक तीनों समय जप करे, अर्द्धरात्रिके समय यह देवी आकर पच्चीस स्वर्ण मुद्रा देगी ।

सुरसुन्दरी यक्षिणी

ॐ ह्रीं आगच्छ आगच्छ सुरसुन्दरि स्वाहा ।

विधि-एकलिंग महादेवका पूजन दिनमें तीन बार करे और उक्त मन्त्रको त्रिकालमें तीन तीन सहस्र जपे, एक महीनातक ऐसा करनेसे सुरसुन्दरी यक्षिणी प्रसन्न होकर पास आवे तब जपनेवालेको उचित है कि अर्घ देकर उसे प्रणाम करे और जब देवी यह पूँछे कि, तैंने मुझे कैसे याद किया ? तब उससे प्रार्थना करे कि, हे कल्याणकारिणि ! मैं दरिद्रतासे दग्ध हूं मेरे दोषको दूर करो तब देवी प्रसन्न होकर धन और दीर्घायु देगी ॥

अनुरागिणी यक्षिणी

ॐ ह्रीं अनुरागिणि मैथुनप्रिये स्वाहा ॥

विधि-भोजपत्रपर कुंकुमसे लिखकर प्रतिपदासे पूजन करना प्रारम्भ करे, त्रिकालमें तीन सहस्र जप करे, एक महीने पीछे रात्रिमें जप करे, आधीरातके समय यक्षिणी प्रसन्न होकर आवेगी और एक सहस्र स्वर्णमुद्रा दे जावेगी ॥

जलवासिनी यक्षिणी

ॐ भगवन्समुद्र देहि रत्नानि जलवासो ह्रीं नमोऽस्तुते स्वाहा ॥

विधि-इस मंत्रको समुद्रके किनारे पर एक लक्ष जपे ऐसा करनेसे यक्षिणी प्रसन्न होकर उत्तम रत्न दे जावेगी ॥

वटवासिनी यक्षिणी

ॐ ह्रीं वटवासिनि यक्षकुलप्रसूते वटयक्षिणि एह्येहि स्वाहा ॥

विधि-तिराहेमें जहां वटका वृक्ष हो वहां पवित्र होकर इस मन्त्रको तीन लक्ष जपे, तब वह देवी प्रसन्न होकर वस्त्र अलंकार और दिव्यांजन साधकको दे जायगी ॥

चण्डवेगा यक्षिणी

ॐ नमश्चन्द्राघावा कर्णकारण स्वाहा ॥

दूसरा मन्त्र–ॐ नमो भगवते रुद्राय चण्डवेगिने स्वाहा ॥

विधि–वटके वृक्षपर चढकर मौन धारण करके इस मंत्रको एक लक्ष जपे फिर सात वार मंत्र पढकर कांजीसे मुखप्रक्षालन करे। रात्रिमें तीन महीने तक जप करे, ऐसा करनेसे यक्षिणी दिव्य रसायन देगी। ये दोनों मंत्र शंकरने स्वयं कहे हैं ॥

विशाला यक्षिणी

ॐ ऐं विशाले क्री ह्रीं श्रीं क्लीं कीं स्वाहा ॥

विधि–चिरमिटीके वृक्षके नीचे पवित्र होकर इस मंत्रको एक लक्ष जपे, सोंफके फूलोंको घीमें मिलाकर हवन करे ऐसा करनेसे विशाला प्रसन्न होकर दिव्य रसायन देती है ॥

महाभया यक्षिणी

ॐ क्रीं महाभये क्लीं स्वाहा ॥

विधि–मनुष्यकी हड्डियोंकी माला बनाकर गलेमें दोनों हाथ और दोनों कानोंमें लटका लेवे तथा साधक निर्भय और पवित्र होकर एक लाख मंत्र जपै, देवी प्रसन्न होकर एक रसायन देती है जिसके भक्षण करनेसे सब प्रकारके रत्न हस्तगत हो जाते हैं।

चंद्रिका यक्षिणी

ॐ ह्रीं चन्द्रिके हंसः क्रीं क्लीं स्वाहा ॥

विधि–इस मंत्रको शुक्लपक्षमें उस समयतक जपै जबतक चन्द्रमा दीखता रहे, पडवासे पहिले पूर्णमासी पर्यन्त ९ लक्ष

जप ले, फिर चन्द्रिका देवी अमृत देती है उसे पान करनेसे जीव अमर हो जाता है ॥

रक्तकम्बला यक्षिणी

ॐ ह्रीं रक्तकंबले महादेवि मृतकमुत्थापय प्रतिमां चालय पर्वतान् कम्पय नीलय विलसत् हुं हुं स्वाहा ॥

विधि—इस मंत्रका तीन महीने तक जप करनेसे रक्तकम्बला देवी प्रसन्न होती है, वह मृतकको जिला देती है और प्रतिमाओंको चलायमान कर देती है ॥

विद्युज्जिह्वा यक्षिणी

ओंकारमुखे विद्युजिह्व ॐ हुं चेटके जय जय स्वाहा ॥

विधि—इस मंत्रका १०८ जप कर थोडेसे मीठे भोजनका बलिदान वटवृक्षके नीचे एक महीनेतक करे तो देवी आकर हाथमेंसे भोजनको ग्रहण करती है, वह फिर यह वर दे जाती है कि मैं सदा तेरे पास रहूंगी और भूत भविष्यत वर्तमान तीन कालकी बात कह जाती है ॥

कर्णपिशाचिनी यक्षिणी

ॐ क्रीं समानशक्ति भगवति कर्णपिशाचिनि चंडरोषिणि वद वद स्वाहा ॥

विधि—प्रथम इस मंत्रको एक अयुत जप ले; फिर ग्वारपाठेको हाथोंपर मर्दन करके शयन करे, शयन समय वह देवी शुभाशुभ फल कह जाती है ॥

चामुण्डा यक्षिणी

ॐ क्रीं आगच्छ आगच्छ चामुण्डे श्रीं स्वाहा ॥

विधि–मिट्टी और गोबरसे पृथ्वीको लीपकर उसपर कुशा बिछा देवै, फिर पंचोपचार और नैवेद्यसे देवीका पूजन कर रुद्राक्षकी मालासे दश लक्ष जपै सोते समय आधी रातपर देवी स्वप्नमें सब शुभाशुभ फल कह देगी ॥

चिंचिपिशाची यक्षिणी

ॐ क्रीं चिञ्चिपिशाचिनि स्वाहा ॥

विधि–नीलवर्णके भोजपत्रपर गोरोचन, केसर और दूधसे अष्टदल कमल बनावे और प्रत्येक दलपर मायाबीज लिखकर शिरमें धारण कर लेवे फिर मन्त्रको जपने लगे, प्रथम यथा-संख्य जप करे (इस तरह सात दिवसतक) यत्नपूर्वक करनेसे वह देवी स्वप्नमें भूत भविष्यत् सब कह देगी ।

विचित्रा यक्षिणी

ॐ विचित्रे विचित्ररूपे सिद्धिं कुरु कुरु स्वाहा ॥

विधि–वटवृक्षके नीचे पवित्र हो इस मन्त्रको एक लक्ष जपै बंधूकके फूल शहद, अन्न दूध इनको मिलाकर हवन करे तब वह विचित्रा देवी प्रसन्न होकर मनवांछित फल देनेवाली होती है ॥

हंसी यक्षिणी

ॐ हंसि हंसि जने ह्रीं क्लीं स्वाहा ॥

विधि–नगरके भीतर प्रवेश करके पवित्र होकर एक लक्ष जपै और दशांशका हवन घीमें मिले हुए कमलके पत्तोंका करे ऐसा करनेसे हंसी देवी एक अंजन देगी जिससे पृथ्वीका गडा हुआ धन दीखने लगे और निर्विघ्न उसको ग्रहण भी कर लेवे॥

मदना यक्षिणी

ॐमदने विडम्बिनि अनङ्गसङ्गं सन्देहि देहि क्लीं क्रीं स्वाहा॥

विधि-पवित्र होकर स्थिरचित्तसे इस मन्त्रको एक लक्ष जपै; दूध और चमेलीके फूलकी एक लक्ष (लाख) आहुति देवे ऐसा करनेसे मदना यक्षिणी प्रसन्न होकर एक गुटिका देगी जिसको मुखमें धारण करनेसे मनुष्य अदृश्य हो जायगा ॥

कालकर्णिका यक्षिणी

ॐ ह्रीं क्लीं कालकर्णिके ठः ठः स्वाहा ॥

विधि-इस मन्त्रको एक लक्ष जपै और ढाककी लकडी, घी, शहद इनका हवन करे तो कालकर्णी प्रसन्न होकर अनेक प्रकारके ऐश्वर्य देगी ॥

लक्ष्मी यक्षिणी

ॐ ऐं लक्ष्मीं श्रीं कमलधारिणि कलहंसः स्वाहा ॥

विधि-इस मंत्रको एक लक्ष जपै, फिर अपने घरमें बैठकर लाल कनेरके फूलोंसे दशांश हवन करै, ऐसा करनेसे लक्ष्मी देवी प्रसन्न होकर दिव्य रसायन प्रदान करेगी ।

शोभना यक्षिणी

ॐ अशोकपल्लवाकारकरतले शोभने श्रीं क्षः स्वाहा ॥

विधि-चतुर्दशीके दिन लाल माला और वस्त्र धारण करके इस मन्त्रको जपै तो अनेक प्रकारके भोगोंको भुगानेवाली यक्षिणी प्रसन्न होगी ॥

नटी यक्षिणी

ॐ ह्रीं क्रीं नटि महानटि रूपवति स्वाहा ॥

विधि-अशोक वृक्षके नीचे जाकर चन्दनका मंडल लगा-

कर देवीका पूजन करके सहस्र वार धूप देवे, एक महीनेतक मंत्रको जपै, रात्रिमें एक वार भोजन करै, रात्रिमें फिर मंत्र जपके अर्धरात्रिपर पूजन करे, ऐसा करनेसे नटीदेवी आकर रस अंजन और अन्य दिव्य भोगोंको देगी ॥

पद्मिनी यक्षिणी

ॐ क्रीं पद्मिनि स्वाहा ॥

विधि–चौकके भीतर चन्दनका हाथभर चौका लगाकर पद्मिनीका पूजन करे गूगलकी धूप देकर एक सहस्र आहुति देवे। एक मासतक पूजा करके रात्रिमें जप करे अर्धरात्रिके उपरान्त देवी आकर दिव्य भोग और धन देगी ॥

गुरु बिन ज्ञान ध्यान नहिं हरि बिन, नर बिन मोक्ष न मुक्ती रे। धरणी करणी सार सकलमें, इस विधि भाषै उक्ती रे। इन्द्रजाल माल यह गुणकी, गुरुगम बिन नहिं पावै रे। वेद पुराण कुरानमें नाहीं; व्यासा जानी बातैं रे ॥ प्रथमै भेद वेदको सारो, सोहं मंत्र लेखै रे। भ्रुकुटी ध्यान धरै मन्मनको, तनक तमासो देखै रे॥एक वक्त भोजनका खाना, फेरि जो विधि कर जानै रे। आसन संयम यतन विधि साधै, वाद विवाद न वादै रे॥मंतर यन्त्र तन्त्र सारे हैं, नाटक चेटक कहिये रे। विधि विधान चातुरी वैद्यक;कोक निरंतर लहिये रे॥ छांदा बांधा तरकरा विद्या, ज्योतिष रूपके सारे रे। कहत उमा तुम सुनो महेश्वर, यही वृत्ति तुम पाले रे॥

इति श्रीयक्षभेदः सम्पूर्णः

अथ द्वितीयमन्त्रभेदो निरूप्यते

मथवायका मन्त्र

ॐ नमो आदेश गुरुको बालमें कपाल कपालमें भेजी भेजीमें कीडा कीडा करें न पीडा सोनाका सलाबा रूपाका हथौडा ईश्वर गाडे गौर्या तोडे इनको शाप श्रीमहादेव तोडे शब्द सांचा पिण्ड काचा फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा ॥

विधि–विभूतीसों सात बार चाकिये ॥

आधाशीशीका मन्त्र

ॐ–नमो बनमें ब्यानी वानरी, उछर वृक्षपर जाय । कूदि कूदि शाखानपै, काचा बन फल खाय ॥ आधा तोडै आधा फोडै, आधा देय गिराय । हुंकारत हनुमानजी, आधाशीशी जाय । शब्द० ॥ विधि–धरतीपर चाकूसे सात रेखा सीधी और सात रेखा आडी उन पर काटता जाय और मंत्र पढता जाय इसी तरह सात बार करे तौ अच्छा होजाय ॥

दूसरा मन्त्रः–ॐ नमो आदेश गुरुको काली चिडी चिग चिग करै धोली आवै वासै हरै यती हनुमंत हांक मारै मथवाई अरु आधाशीशी हरै गुरुकी शक्ति मेरी भक्ति फुरो मंत्र ईश्वरोवाच । विधि–इस मंत्रको २१ बार पढ पढके चाकु तो आधाशीशी जाय ॥

नेत्र दुखते अच्छे होय मन्त्र

ॐ नमो झलमल जहरभरी तलाई अस्ताचल पर्वतते आई । तहां बैठा हनुमंता जाई । फूटे न पाकै करै न पीडा । यती हनुमंत राखै हीडा ॥ शब्द० ॥

विधि—निंबूकी डालीसे ७ बार झाडिये ३ दिन७बार॥

दूसरा मन्त्र—नमो रामजी धनी लक्ष्मणके बान। आँख दर्द करै तो लक्ष्मण कुँवरकी आन। मेरी भक्ति गुरुकी शक्ति फूरो मंत्र ईश्वरोवाच सत्य नाम आदेश गुरुका।

विधि—२१ दिनमें मंत्र सिद्धि करे, धूप दीप नैवेद्यादिसे लक्ष्मणजीकी पूजा करे और प्रतिदिन १०८ जप करे॥

तीसरा मंत्र—ॐनमो आदेश गुरुको समुद्र समुद्र खाई इस मर्दकी आंख आई पाकै न फूटै पीडा करै गुरु गोरखनाथजी आज्ञा करे गुरुकी शक्ति मेरी भक्ति फुरो मंत्र ईश्वरोवाच।

विधि—नमककी सात कंकडीसे चाकै तौ आंखें अच्छी हों

कण्ठवेलका मन्त्र

ॐनमो कण्ठबेल तू द्रुम द्रुमाली। शिरपर जकडी वज्रकी ताली॥ गोरखराय गाजता आया। बढती बेलिको तुरत घटाया॥ जो कछु बची ताहि मुरझाया। घटि गई बेल बढै नहिं पावै। बैठी तहां उठन नहिं पावै। फटे पीडा करै तो गुरु गोरखनाथकी दुहाई फिरै। शब्द।

विधि—७ दिन मोरके पंखसे झाडे॥

कखलाईका मन्त्र

ॐनमो कखलाई भरत लाई यहां बैठा हनुमंता आई पकै न फूटै चल बाल जती रक्षा करै गुरु गोरखबाल। शब्द सांचा पिंड काचा फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा सत्य नाम आदेश गुरुका।

विधि—नींबकी डाली पत्ते समेत लाकर तीन दिवसतक

प्रतिदिन २१ बार झाडे और पीछे पृथ्वीकी मिट्टी उसपर लगा देवे तो कखलाई बैठ जायगी ॥

मन्त्र पीडाफल बन्धो

ॐ नमो आटी काटी आख्या बान्धूं पगानकी पीटी । शब्द० । विधि-सात बार मन्त्र पढि दीजै ।

ढबकाका मन्त्र

ॐ नमो खङ्गारी खङ्गारा कहां गया सवालाख परवतां गया सवालाख परवतां जाय क्या किया कोयला कराया कोयला कराय क्या किया छूरा गढाया क्या किया ढबकाका हाड गोड काटि काली कामलीमें लपेट सारे समुद्रमें बहाय । शब्द० ॥

विधि-शनैश्चरकी रात्रिको आठ अंगुलका एक तीरका एक कुडा लीजै, तासों २१ बार मन्त्र पढकर झाडो दीजै रास्तामें ठाढो रखिये ॥

आधाशीशीका मन्त्र

ॐ नमो दुघटा तौ बनमें बसे, तिपटो बसे कवाय । शीश पकडि करि चलिये, आधाशीशी जाय । शब्द० ।

विधि-रविवारके दिन सूर्योदयके प्रथम एक गिलासमें जल लेकर २१ बार इस मंत्रको पढकर जलके छींटे देवे तो आधाशीशी जाये ॥

दूसरा मन्त्र-ॐ नमो आधाशीशी हूं हुंकारी पहर पचारी, मुख मूंद पाटलै डरी, अमुकारे शीश रहै मुख महेश्वरीकी

आज्ञा फुरे ॐ ठं ठं स्वाहा। विधि–२१ बार इस मंत्रको पढ पढके माथे पर अंगुली फेरे तो आधाशीशी जाय ॥

धरन ठिकाने लाने का मन्त्र

ॐ नमो नाडी नाडी नौसे नाडी बहत्तर कोठा चलै अगाडी डिगे न कोठा चले नाडी रक्षा करै यती हनुमंतकी आन। शब्द०। विधि–नौ गांठिकी बांसकी लकडी लीजै नाभिपर रखके इस मंत्रको जपता जाय और उसमें होकर फूंक मारै तो धरन ठिकाने आवै।

अदीठका मन्त्र

ॐ नमो शिरकटा नखकटा विषकटा अस्थि मेद मज्जागत फोडा फुनसी अदीठ हुम्बल दुखानो रत्यावरोग रीघणवाय जाय चौसठ योगिनी बावन पीर छप्पन भैरों रक्षा कीजो आय। शब्द०। विधि–चुटकीमें विभूति लीजे सात बार मंत्रसे मंत्रिके फिर सात दिन फोडके चारों तरफ लगा दे ॥

पीलियाका मन्त्र

ॐ नमो वीर वैताल असराल नारसिंह देवखादी तुषादी सुभाल तुलाल पीलिया (भेद) तो काटै झारै पीलिया रहै न नेक निशान। जो रह जाय तो हनुमन्तकी आन। शब्द० ॥

विधि–कडुवा तेल कटोरेमें लेकर रोगीके माथे पर धारे दूर्वासे मंत्रको पढकर तेल चलाता जाय, तेल पीला होय तब उतारे २ दिन मंत्रिये।

बालाका मन्त्र

ॐ नमो वारारे तू सदा बलवंता बालाने खोदे हनुमन्तां।

शब्द० । विधि-साभरनोनकी डलीसे जहां बाला होय तहां ३ दिन चाकिये अच्छा होय ॥

बावले कुत्तेका मन्त्र

ॐनमो कामरू देश कामाक्षी देवी जहां बसै इस्मायल योगी इस्मायल योगीने पाली कुत्ती । दश काली दश काबरी दश पीली दश लाल । रंग बिरंगी दश खडी, दश टीको दै भाल । इनका विष हनुमन्त हरै रक्षा करै गुरु गोरखवाल सत्यनाम आदेश गुरुको । विधि-इस मंत्रको ग्रहणकी रात्रिमें १००० बार जपै, तेलका दीपक जलावे, लड्डुओंका भोग लगावे,इस प्रकार मंत्र सिद्ध करके फिर जिसको बावला कुत्ता काट खाय उसके घावके चारों ओर आरने उपलोंकी भस्मको ७ बार पढ़के लगादे, ३ दिनमें आराम हो जायगा ॥

दूसरा मंत्र-अलर्काधिपते यक्ष सारमेयगणाधिप ।
अलर्कजुष्टमेतन्मे निर्विषं कुरु माचिरात् ॥

विधि-जिसको बावले कुत्तने काटा हो उसको चौराहे अथवा नदी किनारे स्नान कराय आप पवित्र होके इस मंत्रसे १०० आहुति देवे पीछे डाभसे इसका झाडा देवे तो उसका विष उतरे

बिच्छुका विष उतारनेका मन्त्र

ॐ नमो सुरह पर्वतपर जाय हरी दूब खाती फिरे ताल तलैया पानी पिये सुरह गायने गोबर किया जामें उपजे बीछू सात काले पीले धौले लाल रंग बिरंगे और हराल उतर रे उतर बीछूका जाया नहीं गरुडजी उडके आया सत्य-नाम आदेश गुरुको शब्द सांचा फुरो मन्त्र ईश्वरोवाच ॥

विच्छूके विष दूर करनेका मन्त्र

विधि–दिवालीकी रातको इस मन्त्रको १०८ बार पढकर सिद्ध कर ले; जिस रोगीको बिच्छूने काटा हो उसे ७ बार मंत्र पढके पानी पिलावे तो रोगी अच्छा हो विष उतर जाय॥

ॐ झं हुं यं कं डं वं वं क्षं एं ऐं ओं हौं हं हः ।

विधि–बकुल (मौलसिरी) की छाल अथवा बीजोंको पीसकर इस मन्त्रसे जहां बिच्छूने काटा हो वहांपर लेप करे तो बिच्छूका विष दूर हो ॥

हांडी बांधनेका मन्त्र

खनाहकी माटी चरीका पानी गध चढि भीष पलानी काची हांडी काची पाली ऊपर जडी वज्रकी ताली तले भैरों किलकिलै ऊपर नरसिंह गाजे मेरी बांधी हांडी उकल तो गुरु गोरखनाथ लाज । शब्द० ।

विधि–रास्तेसे ७ कंकडी लाकर एक एक कंकडीपर सात २ मन्त्र पढकर हांडीमें मारै तो चाहै जितनी आग जलाओ हाँडी गरम नहीं होय ॥

कडाही बांधनेका मन्त्र

ॐ नमो जल बांधूं जलबाई बांधूं बांधूं कूवा वाही। नौसौ गांवका बीर बोलाऊ बांधे तेल कडाही । जती हनुमन्तकी दुहाई । शब्दसांचा पिंडकाचा फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा सत्य नाम आदेश गुरूको विधि–रास्तेमेंसे सात कंकड लाकर एक एक कंकडपर सात २ बार मन्त्र पढकर कडाहीमें मारै तो चाहै जितनी आग जलाओ कडाही गरम नहीं होगी ॥

कागजकी कड़ाहीमें पूआ उतारनेका मन्त्र

ॐ नमो घनीका तेल कागजकी कडाही जलै बलै तौ यती हनुमन्तकी दुहाई । शब्द० । विधि—चलती घानीका तेल लाइये, कागदकी कडाही जले नहीं ।

सुई काढनेका मन्त्र

ॐ नमो चड पड चना लोहार सारा। गढै लोहार लोहका तार मोड मोडकै कीया पानी लोहा जार भस्म कर हानी राम बीर तो जाया माटी लक्ष्मण वीर मूँदे घावे पाकै फूटै पीडा करे तो लक्ष्मण राजा रामचन्द्रजी रक्षा करे शब्द सांचा पिंड काचा फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा । विधि—विभूतिकी चुटकी भरकर उस जगह हाथ फेरै जहां सुई गडी हुई हो मन्त्र पढता जाय सुई अपने आप निकल आवेगी ॥

सीयाका मन्त्र

ॐ नमो कामरूदेश कामाक्षी देवी जहां बसे इस्मायल योगी इस्मायल योगीकी तीन पुत्री एक तोडै एक पिछो एक ताप तिजारी तोडै । शब्द० । विधि—जिसको सीयाका ज्वर आता हो उसके ऊपर इस मन्त्रको पढकर सिरकी चोटीसे फूंक मारना शुरू करै । ज्यों ज्यों ज्वर नीचेको उतरता जाय त्यों त्यों अपना हाथ भी नीचेको सरकाता जाय, थोडी देरमें ज्वर बिल्कुल उतर जायगा ॥

बीजासनका मन्त्र

ॐ नमो धारानगरी अजयपाल राजाके सायनरानी कीली कुचली बाई दहाई खोडी कानी उजली मली काली गोरी भूरी

लीली पूरी टांकनी रथैली रूपां बिरषा बाग बगीचा कुआँ बैरा भीतर बाहिर बलबेलिक चहूँसा कछु भयां करै तो राजा अजयपालका चक्र फिरै। शब्द०।विधि–बुहारीसे ७बार झाडो दीजे॥

नजर दूर करनेका मन्त्र

ॐ नमो सत्य नाम आदेश गुरुका ॐ नमो नजर जहांपर परि न जानी। बोलै छलसों अमृतबानी। कहे नजर कहांसे आई। यहांकी ठोर तोहिं कौन बताई। कौन जाती तेरो कहां ठाम। किसकी बेटी कहां तेरो नाम। कहांसे उड़ी कहांको जाया। अवहीं बस कर ले तेरी माया। मेरी जाती सुनौ चित लाय। जैसी होय सुनाऊं आय। तेलिन, तमोलिन, चडी, चमारी कायथनी, खतरानी, कुम्हारी। मेहतरानी; राजाकी रानी जाको दोष वाहिके सिर पडै। जहर पीर नजरसों रक्षा करै॥ मेरी भक्ति गुरुकी शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरोवाच॥

विधि–मोरपंखसे बालकके सिरसे पृथ्वीतक झाडा दे और मन्त्र पढता जाय॥

ढोरके रोग जानेका मन्त्र

ॐ नमो बैली देहली बांवि देहलीयराम सारी साटकी पशुनीको होजाय शब्द०॥

विधि–गौ खिडकके द्वारे ठाढौ रहिजै एक एकके चौतर्फी चारि चरि सांटी दीजे, मंत्र पढे तौ रोग जाय भलो होय॥

पशुका कीडा झाडनेका मन्त्र

ॐ नमो कीडारे तु कुण्ड कुण्डाला, लाल पूंछ तेरा मुंह काला मैं तोहिं बूझूं कहांते आया तोडि मांसतै सबकूं खाया

अब तू जाय भस्म होजाय गुरु गोरखनाथ करैं सहाय शब्द ॥
विधि-नींबकी डाली ७ बार झाड दीजै कीडा मरजायँ॥

स्त्रीके पैर थांबनेका मन्त्र

गौरी गण्डा देगई ईश्वर देगया बाचा महादेव थापा धर गया हुआ शब्द यह सांचा इस त्रियाकी चिन्ता मेटो दस मास दस मास, बांधू बीस पाख बाधूं इसका पैर खिसे तो गुरु गोरखनाथकी दुहाई फिरै ईश्वर गोरा दिया ताला या घट पिंडका गुरु गोरखनाथ रखवाला। शब्द सांचा पिण्ड काचा काचा फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा। मेरी भक्ति गुरुकी शक्ति सत्य नाम आदेश गुरूका ॥

विधि-सात बार जपे गंडा पैर पडै थंभे २१ दिन जपै।

दूसरा मन्त्र-जलबांधूं जलबाई बाँधूं बांधूं जलकी तीर। पांचों काचा कलुवा बांधूं बांधूं हनुमत वीर। सहदेव तेरी लकडी अर्जुन तेरा बाण। रावण रणतर थामदो जती हनुमन्तकी आन। शब्द सांचा पिंड काचा फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा मेरी भक्ति गुरुकी शक्ति सत्य नाम आदेश गुरूका ॥

विधि-शीरनी हनुमानूजीको भोग लगाना, यथाशक्ति पंचरंग रेशम अथवा क्वाँरी कन्याके हाथका काता सूत जिसका गण्डा सिरसे पैरतक नापके कमरसे बाँधे तो पैर थँभे ॥

तीसरा मन्त्र-ॐनमो गंगा उकारे गोरख बैठा धोरधियार गोरख बैठा, जाय, जय दूत पूत ईश्वरकी माया पडतार गात्र थंभाय। गोरा काते कातनौ ईश्वर मेले गंडा थांभि थांभि

हो हनुमान्जी बरती पडदा अंडा अन्धा कूबै सियालै छाया नख शिख सोधा पूतला बनाय पडैं न पैर भीजै चीर थांभि थांभि हौ हनुमान वीर शब्द० ।

विधि—कुवाँरी कन्याके हाथ पोनी कताय ७ सात बार मन्त्रिके गांठो दीजै थंभन होय ॥

पैर चलानेका मन्त्र

ॐ नमो हुकाली चौंसठि योगिनी हुँकरती बावन बीर दश गाँठि लोहाकी झरै मैना झरै तौ मारि मारि रे रक्किया बीर जाको होयो धरै न धीर। रकत्यो रकत्यो रक्त-जडी रकत्यो चाव मांसकी बडी। चावै चरण चलावै पैर मसानकी माटी भाराके बलि पडी। शब्द० ॥

विधि—शनिवारकी रातको मसानकी ७कांकडी लेकर मंत्रको २१ बार पढ़कर जिस स्त्रीके ऊपर कांकडी डारै पैर चलै ॥

रोधन बायका मन्त्र

ॐ नमो कामरूदेश कामाक्षी देवी जहां बसै इस्मायल योगी इस्मायल योगीके तीन पुत्री एक तोड एक पिछौडे एक बारी घनि बाय तोडे। शब्द०। विधि—मङ्गल और शनैश्चरको मनिहारकी मोगरसे झाडा दीजै ॥

डाढकी पीडाका मन्त्र

ॐ नमो कामरूदेश कामाक्षी देवी जहां बसे इस्मायल योगी इस्मायल योगीने पाली गाय नित उठ चरवा वनमें जाय वनमें चरै सूखा घास खाय पियके गोबर किया जामैं निपज्या कीडा सात सूत सुताला पूंछ पुँछाला धड पीला मुँह काला

डाढ दाँत गालैं मसूढ़ा गालैं मसूढैं करै तो गुरु गोरखनाथकी दुहाई फिरै। शब्द०। विधि—इस मन्त्रसे ३ लोहकी कीलोंको सात बार पढ़कर काठमें ठोक दीजै पीडा दूर होय ॥

दूसरा मंत्र—ॐनमो आदेश गुरुको बनमें ब्यायी अञ्जनी जिन जाया हनुमन्त। कीडा मकुडा माकडा ये तीनों भस्मन्त। गुरुकी शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा ॥

विधि—इस मंत्रको दिवालीकी रात्रिमें १००००० जप करै. सिद्ध होनेपर नींबकी डालीसे झाडै तत्काल आराम हो जायगा ॥

तीसरा मंत्र--ॐनमो आदेश गुरुको नौलख ओढै कामरी बैठे जहां गोपाल। जमुना गङ्गा सरस्वती, तहां ग्वाल अरु बाल॥ आये गोरख यतीजी, गौतमऋषिके पास। डाढ दाँतके दर्दको, आवत होय विनाश॥ आधो दियो धेनुको, आधो सन्तन माहिं। रोग दोष सबही टरैं, श्रीहनुमन्त सहाहिं॥ मेरी शक्ति गुरुकी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरोवाच॥ विधि—एक तेज छुरीसे धरतीपर २१ रेखा खींचे और हाथसे उस जगहको पकड जहां दर्द होता हो तो दर्द शांत हो जायगा ॥

डाढके कीडेका मन्त्र

सकोरामें सामेंमें सीशेमें पानी सीचीमें कीडा कीडामें कीडा मरै पीडा टरै। शब्द सांचा पिंडा काचा फुरो मंत्र ईश्वरोवाच॥

विधि—लोह की दो कीलोंसे डाढ कीलकें कुँएमें एक डाल दे और दूसरीको नींबूमें गाडै तौ कीडा मर जाय ॥

निनाईका मन्त्र

ॐ नमो तडभ उतड भड तेल करै दीजै बाती तेल बरै

गलत सलत तू बाई रोग निनाई रहै तो यती हनुमन्तकी दुहाई फिरै । शब्द० । विधि—विभूतिसो चाकिये निनाई जाय ॥

टीडीका मन्त्र

ॐ नमो पश्चिम देशमें अस्ताचल हुजा जहां अजयपाल खुदाया कुआँ जा कुआँमें निकसा नीर भेला हुआ बावन बीर जिन्होंने मिल मता उपाय हाथ पकारि टीडीको ल्याया सुन रे टीडी बांधू तेरी डाढ जिमि आसमान शिर लै बांधूं तीजे तेरा जाया ल्याऊं बारह कोस मुकाम कराऊं या विधि विचरे बावन वीर जाय डारी समुद्रके तीर मेरा किया सब कोइ लाजे मेरे शिरपर यती हनुमन्त गाजे किसीकी चलाई चलै नहिं मेरा डंका चारि खूंटमें बाजै या विधिकी चलाई न चले तो एक लाख अस्सी हजार पीर पैगम्बर लाजैं । शब्द० ।

विधि—इस मन्त्रसे टीडी तीन पकारिये तिनपर कनिष्ठि-काका लोहू छिडक दीजे, एक श्वाससे दौडे जहां ठेकरी धरै तहां टीडीको पडाव होय आगे न बढैं ।

इति श्रीइन्द्रजाले द्वितीयभेदः समाप्तः

अथ तृतीयमध्यमभेदप्रारम्भः

(कनिष्ठ भेद)

पूंगी बांधनेका मन्त्र

ॐ नमो बादी आया बांद करताकूं बैठा बड पीपलकी छाया रहुरे बादी बाद न कीजे बांधू तेरा कंठ अरु काया बांधूं

पुंगी अरु नाद बांधूं योगी अरु साधु बांधूं कंठकी पुंगी अरु मसानकी बानी अब तो रह रे पुंगी सुजान तलै बांधै नरसिंह ऊपर हनुमंत गाजै मेरी बांधी पूंगी बाजै तौ गुरु गोरखनाथ लाजै। शब्द। विधि—इस मन्त्रको प्रथम एक लक्ष जप करके सिद्ध कर ले, फिर जब खेल करना हो तब २१ उडद मँगाकर २१ बार मन्त्र पढै. एक एक उडदपर एक एक मन्त्र पढकर पूंगीमें मारै तो पूंगी नहिं बजेगी ॥

पैसा रोपनेका मन्त्र

ॐ नमो कालीदेवी किलकिला भैंरों चौंसठ योगनी बावन बीर ताँबाका पैसा बज्रकी लाठी मेरा कीला चलै न साथीतले भैंरों किलकिलै ऊपर हनुमन्त गाजै मेरा कीला पैसा चल तौ गुरु गोरखनाथ लाज। शब्द०। विधि—काँकरी ३ बार मंत्रिके मारिये ॥

पैसा उठानेका मन्त्र

ॐ हनुमन्त वीर हुआ हुलासा चल रे पैसा रूखा बिरखा तेरा बासा सबकी दृष्टि बांधि दे मोहिं मेरा मुख जोवै सब कोय बासा सबकी दृष्टि बांधि रोवै भरी सभामें मोहिं बिगोयै ॥

विधि—धूर मंत्रिके पैसापै मारे ॥

मूठिका मन्त्र

ॐ नमोवीर तो हनुमन्त वीर सूर्यका तेज शत्रुकी काया अदीठ चक्रदेवी कालिका चलाया चल रे बादी न कर बादमैं करिहौं तेरे जीवको घात मैं न डरूं तेरे गुरु पीरसूं मारूं ताने एकतीरसों मेरा मारा ऐसा घूमै जैसे भुजगकी लहर परे तोहि

गिरता मारूं बाण फेरि चलौ तो यती हनुमंतकी आन शब्द० ।

विधि--उडद मंत्रिके मारिये पछाड खाय ॥

दूसरा मन्त्र

ॐ नमो वीर तो हनुमन्त वीर भूरि मूठि चलावै तीर मैं की रुख नाखी तोडि लोहू सोखि मेरा वैरी तेरा भषहि तोडि कलेजा चराव सब धर्मकी हाथई बजे धर्मकी लालमें बलि तुम्हारे कहां गये भूरे बाल उलटि पछाड न पछाडै तो माता अंजनीकी आनि । शब्द० ।

विधि--होलीकी रात्रिको इस मन्त्रसे पूजा करे और १००० मन्त्र जपै सिद्ध होनेपर जिस वैरीसे बदला लेना हो एक मूठी काले उडदोंकी भरके मन्त्र पढ उसकी छाती-पर मारे तो पछाड खाय गिर पडे ॥

सांप कीलनेका मन्त्र

ॐ नमो सर्प्पा रे तू थूल मथल मुख बना तेरा कमलका फूल सर्प्पा बाँधूं तेरी भूवा दादी जिन तुहिं गोद खिलाया सर्प्पा बाँधूं तेरा रतनकटोरा जामें तोकूं दूध पिलाया बीज कीलनि बीज पाग मेरा कीला करे जु घाव तो तेरी डाढ भस्म हो जाय गुरु गोरख भी जाय लजाय ॐ नमो आदेश गुरुकी मेरी भक्ति गुरुकी शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरोवाच ।

विधि--शिवरात्रिसे आरम्भ करे और वर्ष दिनतक सवा-पहर जप करै, सिद्ध होने बाद आरने उपलोंकी राखपर ७ बार मंत्र पढके सर्पके ऊपर डारै तो सर्प बंध होय ॥

दूसरा मन्त्र-बजरी बजरी बजर किंवाड, बजरा कीलूं आसपास, मरै सांप होय खाक, मेरा कीला पत्थर कीलै, पत्थर फूटै न मेरा कीला छूटै, मेरी भक्ति गुरुकी शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरोवाच ॥ विधि-इस मन्त्रको पढकर एक कंकडी मारै तौ सांप कील जाय ॥

सर्प खोलनेका मन्त्र

ॐ नमो कीलन भईक कीलनी वासा भया कुवास जाहू सर्प घर आपने गै फिर चारों मास । शब्द सांचा फुरो० ।

दूसरा मन्त्र-पहर भगोये कापडे, कर मर्दाना भेष । बँधी बँधीपन छुटाई फिरि आचारों देश ॥ मेरी भक्ति गुरुकी शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरोवाच ।

विधि-इन मन्त्रोंको पढकर कंकर मारै तो कीला हुआ सांप छूट जाय ।

ऋद्धिका मन्त्र

ॐनमः शंखवादनी मम करती धरनी उधर इन चडी सवा पहर होय हाथ प्रक्षालि मुख धोऊं अपनो जो चीतो सोई फल पाऊं पगबंध भुजबंध मुझ समान बंधज चारि लाडु शिर सिंदूर ऋद्धि सिद्धि देवो बाबा नंदको पूत बैठो होय सोऊ लाय पास उठाय सो लै आवै न जावै न ल्यावै तो लाजै गौरीमाय या मंत्रको ईश्वरपार्वती जाने घर बैठी ऋद्धि सिद्धि जो आनै ईश्वरी मारी चटाका घाव ऋद्धि दे गणपति राय। शब्द० ॥

विधि-ब्रह्मभोज करनेकी सामग्रीको एक कोठेमें धरवावै;

ताको अछूता कपरासों ढकवावै, ता सामग्रीसे चारि लाडू बँधावै तथा आप बांधे तिनको कूएंपर लेजाय ताके संग कोरा कलश ले जाय, उसमें एक लाडू धरै सो वह लाडू कुएमें गेर दे, कलशको काढि एक लाडू बाहर बहाय दे या विधि दो लाडू तो बाहर बहाय दे और दो लाडू भीतर पधराय दे अरु कलश जलसे भर घर ले आवे सो एक कोनेमें धरि दे अरु उस सामग्रीमेंसे जितनी एक मनुष्य खा सके उतनी निकाल खूंटीपर टांगि दे, सामग्रीके ढिग बैठि यह मन्त्र जपै और एक मनुष्य उस सामग्रीमेंसे भरि २ देबो करै सौकी सामग्री होय और पांचसौ जीमें तो टूट न पडै बढती ही जाय ॥

वीर विधिका मन्त्र

ॐनमो देवलोक दिविरुया देवी जहाँ बसै इसमाइल योगी। छप्पन भैरों हनुमन्त वीर भूत प्रेत दैत्यको मारि भगावें पराई माया ल्यावें लाडू पेडा बरफी सेव सिंघाडा पाक बतासा मिश्री घवर बालूसाई लाग डोडा ईलायचीदाना तेल देवी कालीका ऊपर हनुमन्त गाजे एती वस्तु मैं चाहि लाव न तो तेंतीस कोटि देवता लाजैं मिरची जावित्री जायफल हरडे जंगी हरडे बदाम छुहारा मुफरैं रामबीर तौ बतावै वस्ती लक्ष्मण बीर पकडावै हाथ भूत प्रेतके चलावै हाथ हनुमंत वीरको सब कोऊ गावै सो कोसांकी बस्ता लावे न ल्यावै तो एक लाख असी हजार पीरपैगम्बर लाजैं। शब्द ।

विधि–गांव बाहर आंधो कूवां होय तहां जाय हनुमान्-

जीकी मूर्ति बनाके उसके संमुख बैठि धूप दीप देवे, मन्त्र पढै २१ बार, सवा पावका रोट घृत खाड शत हनुमानूजीको भोग लगावै, आचमन करवाय पीछे आप भोजन कर ले या विधि दिन २१ मन्त्र जपे, जब आकाशवाणी होय तब जो आप मांगै सो दे सही ॥

अगियावैतालका मन्त्र

ॐ नमो अगिया बीर वैताल पैठि सातवें पाताल लांघ अग्निकी जलती झाल बैठि ब्रह्माके कपाल मछली चील्ह कागली गूगल हरताल इन वस्तां लै चीलि न ले चढै तो माता कालिकाकी आन। शब्द०। विधि-होलीकी रातको एक लक्ष जपै, चील कागली मछलीके मांसका भोग लगावे; गूगल, हरताल या धूप बनाकर धूप देवे, मन्त्र जपै २१ बार कांकरी मन्त्रिके नाखै तहां अग्नि जलि उठै सही ॥

पानीके ऊपर चलनेका मन्त्र

ॐ नमो काला भैरूं कालिकाका पूत पगो खडाऊँ हाथ गुरुजी चलो मन प्रभात आकतू अग्रसं भरा तेरो न्योतो मैं जहां करूं पूजो दिन सात जो तू मनचीता कार्य कर दे मोहिं कुंकुम कस्तूरी केसरीसे पूजा करूं तुम्हारी मोर मनचीत्यौ मेरा कार्य करहु गुरु गोरखनाथकी बाचा फुर। शब्द०।

विधि-शनिवारको पुष्य नक्षत्रमें धौलो आक न्योति अर्क वारको पूजा करिये, पीछे जड उखाडि ल्याइये, जडकी पांवडीकी खूँटी बनवाकर पांवमें पहिरके दरियावके ऊपर चलिये पानी पगते लगे नहीं।

नजरबन्धका मन्त्र

ॐ नमो काला भैरूं घंघरावाला हाथ खड्ग फूलोंकी माला चौंसठसौ योगिन संगमें चोला देखौ खोलि नजरका ताला राजा परजा ध्यावै तोहिं सबकी दृष्टि बांधि दे मोहिं मैं पूजों तुमको नित ध्याय, राजा परजा मेरे पाय लगाय, भरी अथाई सुमिरौं तोहिं, तेरा कीया सब कुछ होय, देखूं भैरौं तेरे मन्त्रकी शक्ति चलै मन्त्र ईश्वरोवाच । शब्द० ।

विधि-अर्कवारके दिन चुटकी एक राखकी मसानसे लावे । २१ बार मन्त्र जपे भैरौंका विधिसंयुक्त पूजन करे, प्रसन्न करके तदुपरांत भरी सभामें चुटकी फूकते उडावे नजरि बन्ध होय कार्य करे सो देखै नहीं ॥

चोरी कढानेका मन्त्र

ॐ नमो सत्तरसौ पीर चौंसठसौ योगिनी बावनसौ वीर बहत्तरसौ भैरौं तेरहसौ तन्त्र चौदहसौ मन्त्र अठारहसौ पर्वत सत्तरसौ पहाड नौंसौ नदी निन्यानवेसौ नाला हनुमन्त यती गोरख रखवाला कांसीकी कटोरी अंगुल चारि चौडी कहो वीर कहांते चलाई गिरिनारपर्वतसे चलाई अठारह भार बनस्पती चल लीना चमारीकी बाचा फुरे कानी कुम्हारी चाक ज्यों फिरै कहाँ कहाँ जाय चोरके जाय चण्डालके जाय कहाँ ल्यावै चोरको चण्डालको ल्यावै गडौ धनको जाय बतावै चाल चाल रे हनुमन्त वीर जहां चलै तहां रहै न चलै तो गङ्गा यमुना उलटी बहैं । शब्द ॥

विधि—कटोरी कांसीकी पैसा तीनभार चौडी अंगुल चारकी गढाइये दिवालीकी रातिकी कटोरीका पूजन करिये, इस मन्त्रसे उक्त मंत्रिये, चौकमें स्थापन करिकै कटोरी चलै जहाँ चोरीका माल गाडा होय तहाँ चली जाय तहाँसे माल खोद लीजे निकसि आवैगा. १०१ दिनमें सिद्धि होय प्रतिदिन धूप दीप देकर १०८ मंत्र जपे, जो २१ दिनमें सिद्धि करै तो १००० प्रतिदिन जपै ॥

दूसरा मन्त्र—ॐ नमो नाहर वीर चलते तेगमें तेर सीर बहता चलता थांबे नीर सोये अनपै लागे तीर ज्यों ज्यों चालै तू धर धरी चालै पवन अरु चालै नीर ज्यों ज्यों चालै नाहरसिंह वीर चित्त चोरका धरै न धीर चोरका हात कांपे सिर कांपे छातीथर्रावेजहाँधरै चुराया धन तहांसे हटन न पावै दुहाई गुरु गोरखनाथकी दुहाई चौरासी सिद्धकी दुहाई पूरन पूतकी शब्द सांचा पिंड काचा फुरो मन्त्र ईश्वरोवाच सत्यनाम आदेश गुरुको ॥

विधि—इस मन्त्रको ग्रहणकी रातमें १०००० जपके सिद्ध करे फिर जहां चोरी काढनी होय तहां जाय, उत्तरको मुख करके बैठ जाय कांसेकी एक कटोरी सामने रख ले उसपर इस मन्त्रको पढकर चावल मारता जाय तो कटोरी आपही आप चलेगी खोदकर धन निकाल ले ॥

डाकिनीके मूंडनेका मन्त्र

ॐ नमो लोह सिंहातनी लौह ल्याऊं सिंहानाबदै नस्तर गढा

रामवीरने नस्तर गढाया लक्ष्मण वीरने तावदे बढिया मूंडूं तेरा डाकिनी माई जिन तोहिं दिया जनमो आई मूंडूं तेरा गुरुपीर जिन दिया मांस कनी मूंडूं तेरी मात अरु तात मूंडूं तेरा भाई भ्रात घर बैठी डाकिनिको मूंडूं पीठि बैठि सिंहरी हनुमन्त यती खबर लै आवै जानै लंका मारी मंडिका तरिया वीर ध्वजाधी-वती देख्यो शिर मडिरे छप्पन भैंरों गांव बापरि सँग लै हेरू मूंढि मुडिरे हनुमन्त वीर जाको हियो धरै न धीर घर बैठा मैं गोडा मूंडूं गांव बन काहेको ढुंढू या मन्त्रसे मूंडूं डाकिनी सिहारी हनुमन्त यती आन तुम्हारी । शब्द० ।

विधि–उस्तरा गढके लाकर मावसके दिन मंत्रिये १०८बार मंत्रित करके अपनो गोडो मूंडिये,डाकिनीको शिर मूडि जाय॥

मसान जगानेका मन्त्र

ॐ नमो आठ खाटकी लाकडी मूंज बनीका कावा । मुवा मुर्दा बोले नाहीं तो महावीरकी आन । शब्द० ।

विधि–मदिरा १ सेर, चमेलीके फूल लोबानकी धूप, छाडछडीलौ, लौंग कपूरकचरी, अतरका फोआ, चौमुखा चूनका दिया, इतनी चीजें लेकर मशानमें जाय धूप देवै, मसानमें मसानमर्दको देखिये,मसान जागे हाहाकार होय ।

नाजकी राशि उडानेका मन्त्र

ॐ नमो हँकालौं चौंसठि योगिनी हँकालौं बावन बीर कार्तिक अर्जुन वीर बुलाऊं आगे चौंसठि वीर जल बंधि बल बंधि आकाशबंधि पवन बंधि तीन देशकी दिशा बंधि उत्तर जो अर्जुन राजा दक्षिण तो कार्तिक विराजै आसमानलौं वीर

गाजैं नीचे चौंसठि योगिनी विराजैं पीर तो पास चलि आवै छप्पन भैरों राशि उडावैं एक बंध आसमानमें लगाया दूजै बांधि राशि घरमें लाया । शब्द० ।

विधि–दिवालीकी रातको बनमें जाकर मूसाकी मींगनी लावै, उसको ७ बार मंत्रिके राशिके ऊपर धरि आवै, पीछेसे राशि चलि आवै, भोग लगावै उसमेंसे अर्द्ध पुण्य कर दे ॥

दूसरा मन्त्र–ॐ नमो हंकालो चौंसठ योगिनी हंकालों बावन वीर कार्तिक अर्जुन वीर बुलाऊं आगे चौंसठ वीर। जल बांधूं आकाश बांधूं बांधूं तारा चंद । ज्योति बांधि सूरजको लाऊं करूं अग्निको मंद ॥ चारों दिशाका वीर बोलाऊं चौंसठ जोगिनी आवैं । राशि नाजकी फिर नहीं पावै मेरे घर सब आवैं । सत्य नाम आदेश गुरुको मेरी भक्ति गुरुकी शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरोवाच ॥ विधि–जिस खेतमें नाजकी राशि उडानी हो उस खेतकी राशिमें इसी मंत्रको पढकर बकरेकी मेंगनी रख आवै पीछेसे राशि घर चली आवेगी ॥

चढावका मन्त्र

ॐ नमो हाकान्त युगराज फाटंत काया जिस कारण युगराजा मैं तोका ध्याया हंकारत युगराज आया गाजत आया घोरन्त आया सिरके फूल बखेरन्त आया औरकी चौकी उठावन्त आया आपकी चौकी बैठावन्त आया औरका किवाँड तोडता आया आपका किवांड भेडता आया बांधि बांधि किसको बांधि भूतको बांधि प्रेतको देवदानवको बांधि उडन्त

गढंत योगिनी बांधि चौर चिरणागारको बांधि तिरसठ कलुवाको बांधि चौंसठ योगिनीको बांधि बावन बीरको बांधि आकाशकी परियोंको बांधि डाकिनी शाकिनीको बांधि चेटकको बांधि छलको बांधि छिद्रको बांधि द्वारको बांधि हाटको बांध गलोको बांध गिरारेको बांध कियाको बांधि करायको बांधि अपनीको बांधि पराईको बांधि मलीको बांधि कुचलीको बांधि पीलीको बांधि स्याहको बांधि सफेदको बांधि कालीको बांधि लालीको बांधि बांधि २ रे गढ गजनीके महमदा पीर चलैं तेरे संग सत्तरसौ बीर । जो बिसारि जाय तो सौ राजा हलालजाय उलटी मार पलटीमार पछाड मार धर मार कब्जा चढाय सुडिया हलाय शीश खिलाय शब्द० ॥

विधि–ग्रहणकी रातको १०००जपै मांस मदिराका भोग रखै तौ महमदा पीर हाजिर होय जो कार्य चाहे वह करा लेवे॥

जञ्जीरका मन्त्र

ॐ नमो सात समुद्रके बीच शिला सुलेमान पैगम्बर बैठा सुलेमान पैगम्बरके चारि मवक्किल तारिया सारिया जारिया जमारिया एक मवक्किल पूर्वको धाया देवदानवोंको बांध लाया॥ दूसरा मवक्किल पश्चिमको धाया भूत प्रेत बांधि लाया । तीसरा मवक्किल उत्तरको धाया अयुतपितृको बाँधि लाया । चौथा मवक्किल दक्षिणको धाया डाकिनी शाकिनीको पकडि लाया चारि मवक्किल चहुँ दिशि धावैं छलछिद्र कोऊ रहन न पावें रोग दोषको दूर बहावें । शब्द० । विधि–कपड़ेके ४ पुतले बनाकर

अर्द्ध रात्रिके समय चारों कोनोंपर गाड । धूप, दीप करके इस मंत्रको १०८ बार पढै कार्यसिद्धि हो ॥

दूसरा मंत्र ॐ नमो बिस्मिल्लाहि रहिमान रहिम गजनी सो चला मुहम्मदा पीर चला २ सवासेरका तोसा खाय असी कोसका धावा जाय श्वेत घोडा श्वेत पालन चापै चढै मुहम्मुदा ज्वान नौसौ कुत्तक आगे चलैं नौसौ कुत्तक पीछे चलैं काँधा पाछे भात डाला ध्याया चलैं चालि २ रे मुहमदा पीर तेरे सम नहिं कोई वीर हमारे चौरको ल्याव सात समुद्रकी खाईसों ल्याव ब्रह्माके वेदसों ल्याव काजीकी कुरानसों ल्याव अठारह पुरानसों ल्याव जाव जाव जहाँ होय तहाँसों ल्याव गढसों पर्व-तसों कोटसों किलासों ल्याव मुहल्ला गलीसों ल्याव, कुंचासों चौहटासों ल्याव, सेतखानासों ल्याव मोरी पनालासों ल्यावा बागबगीचासों ल्याव, कूँआ बावडीसों ल्याव, बारह आभूषण सोलह सिंगारसों ल्याव; काजल काजरोटीसा ल्याव, मेंढीकी मौंठसौं रोली मोलीसों हाट बजारसों ल्याव, खाटसों, पायासों, नौ नाडी बहत्तर कोठाकी घूमती बलायको ल्याव हाजिर कर हाड २ चाम चाम नख सिख रोम रोमस ल्याव रे ताइयासि-लार जिन्द पीर मारतौ पीटतो तोडतौ पछाडतौ हाथ हथकडी पाँवमें बेडी गलामें तौंक उलटा कब्जा चढाय मुख बुलाय सीस खिलाय कैसे हूं लाव लिये बिन मत आव ॐ नमो आदेश गुरुको ॥ विधि-गोबरका चौका लगाय रात्रिके समय धूप दीप चन्दन माला नैवेद्य चढाय सवासेर मोहनभोगको

भोग लगाय मन्त्रकूं १०८ बार जपिये, सिद्ध हो जाय, जब कोई काम करना होय तभी मन्त्र पढकर उडद माथेपै रखिये कारज सिद्ध होय ॥

मूठ चलानेका मन्त्र

ॐ नमो काला भैरों मसानवासा चौंसठ योगिनी करै तमासा रक्त बाण चलि रे भैरों कचिया मसान मैं कहूँ तोसों समुझाय सवापहरमें धुनी दिखाय । मूवा मूर्दा मरघट बास, माता छोडे पुत्रकी आस, जलती लकडी धुकै मशान, भैरों मेरा बैरी तेरा, खान सेली सिंगी रुद्रबाण मेरे बैरीको नहीं मारो राजा रामचन्द्र लक्ष्मण यतीकी आन । शब्द० ।

विधि—कोऊ मूवा मुर्दा जातो देखि मशानमें जाकर उस मुर्दाकी हांडी लेकर मशानकी अग्निमें लाल करै फिर उतारिके उसमें मूठीभर उडद डारि उनमेंसे जल जायँ सो न्यारा कर ले और जो फूलैं उन्हें न्यारा कर ले जले उडद उन्हें २१ बार मन्त्रि सबेरे बासी मुंह जिसके मारे वह सेवा करने लगै ॥

इति श्रीदत्तात्रेयतंत्रे उमामहेश्वर संवादे मन्त्रविद्यानाम द्वादशः पटलः ॥ १२ ॥

अथ त्रयोदशः पटलः

अथ रसायनम्

ईश्वर उवाच

गोमूत्रं हरितालं च गन्धकं च मनःशिलाम् ।
समं समं-गृहीत्वा तु यावच्छुष्यति पेषयेत् ॥ १ ॥
एकादशदिनं यावद्यत्नेन रक्षयेत्सुधीः ।
मन्त्रेण धूपदीपादिनवेद्यदुंग्धसंयुतैः ॥ २ ॥

मन्त्रः–ॐनमो हरिहराय रसायनसिद्धिं कुरुकुरु स्वाहा॥

१०००० अयुतजपात्सिद्धिः ॥

सवरीमोलकं कृत्वा वेष्टय वस्त्रेण यत्नतः ।
मृत्तिकां लेपयेत्तस्य च्छायाशुष्कां तु कारयेत् ॥३॥
गर्त्तकुण्डे विनिक्षिप्य पलाशकाष्ठवह्निकम् ।
अष्टप्रहरपर्यन्तं नान्यथा शंकरोदितम् ॥ ४ ॥
तद्भस्म जायते सिद्धमृद्धिसिद्धिप्रदायकम् ।
ताम्रपात्रेऽग्निमध्ये तु बिन्दुमात्रं च निक्षिपेत् ॥५॥
तत्क्षणाज्जायते स्वर्णं नान्यथा शंकरोदितम् ।
दद्यात्तु गुरुभक्ताय न दद्याद् दुष्टमानसे ॥ ६ ॥
सिद्धिपीठे भवेत्सिद्धिर्गायत्रीलक्षजाप्यकैः ।
यस्मै कस्मै न दातव्यं दातव्यं शिव भक्तये ॥ ७ ॥
अग्नेर्मुखं द्विजातीनां याजकांना विशेषतः ।
गोप्यं गोप्यं महागोप्यं देवानामपि दुर्ल्लभम् ॥ ८ ॥
वर्षं प्रतिक्रियां कृत्वा गोप्यं नवप्रकाशयेत् ।
वनितापुत्रमित्रादिगोप्यं सिद्धिप्रदायकम् ॥ ९ ॥

इति रसायन विधिः

सुवर्ण बनाना

आमलासार·गंधक एक टंक और बिजौरा एक टंक इन दोनोंको एकमें मिलाकर २८ पहर खरल करे, फिर गोली बनाकर आतशी शीशीमें रखके अग्निपर चढ़ाकर उसका रोगन काढे तत्पश्चात् ताँबेका पत्र बनवाकर उक्त रोगनको उसी तांबेके पत्रमें लगाकर अग्निमें जलावे तो सुवर्णहो जाय॥

दूसरी विधि–तबकी हरतालमें हर्दिया जहर मिलावे और इन दोनोंके बराबर पारा ले;इन सबको घीकुँवारके रसमें चार घडी खरल करके टिकिया बनावे, पीछे दो सकोलवा (परई) लेकर उनके मध्यमें टिकिया धरके छः पैसे भर चूना लेकर उन दोनों सकोलवोंके मुँह जोडके ऐसा बंद करे कि, सांस न रहै (ऐसे जोडको डमरूयंत्र कहते हैं) उसके ऊपर तीन तवा मट्टीके चढावै और ढाई सेर टिकिया मँगवा मट्टीके मध्यमें धरै, जब ठंढी हो जावे तब टिकियाको निकाल लेवे; पश्चात तांबेका पत्र लेकर अग्निमें खूब तपावे, फिर जरी टिकियोंका चूर्ण थोडासा बुर्कनिसे चक्कर खाके बैठ जायगा परंतु इस क्रियाके करनेमें पुण्य भी करना आवश्यक है ॥

तीसरी विधि–एक पत्थरपर थोडासा पारा रखकर उसपर सर्वबन्धन मंत्रका १००८जप करै फिर स्वयंभू पुष्पके रसमें एक वस्त्र रंगकर उसमें पारेको लपेट लो पश्चात् मिट्टीकी दो मूस (परई) बनाकर एकमें पारा रख दो और थोडेसे स्वयंभू पुष्प रखकर दूसरी मूससे ढककर उसका मुख बन्द कर दो,ऊपरसे मिट्टीमें भुस मिलाकर कपडमिट्टी कर दो, फिर धूपमें सुखाकर पुनःकपडमिट्टी करके धूपमें सुखाके अग्निमें धर दो,फिर निकालकर पान अथवा घीकुँवारके रसमें पारेका शोधन करो ऐसा करनेसे जब गुटिका बन जाय तब धतूरेका एक फल लाकर उसके भीतरकी गिरी निकालकर उस खोखले फलमें पारेके गुटिकेको रखकर काली तुलसी अथवा घीकुँवार भर दो और

सात प्रहर तक प्रचण्ड अग्निमें रख दो, ऐसा करनेसे पारेकी सफेद भस्म हो जायगी फिर इसमेंसे एक रत्ती भस्म तोला भर तांबा गलाकर उसमें डाल दो तो सुवर्ण हो जायगा परंतु इस विधिके करनेमें धनदा देवीका सदा जप और विधिपूर्वक पूजा करता रहे यदि कुछ विघ्न होगा तो पारेकी भस्म बिगड जायगी।

चौथी विधि—पीत धतूरा पुष्परस सीसा तोले आठ।
लाङ्गलीको लाय रस, और लेय रस पाठ॥
मर्दन करके खरल में गोला लेव बनाय।
गजपुटकी धर आगमें, फूंक स्वर्ण बन जाय॥

चांदी बनाना

मधु घृत अरु तांबा मँगवाय। सोनामाखी पारा लाय।
कीजै खरल इन्हें मिलवाय। दीजै तीव्र आग जलवाय॥
मूस माहिं रखकर मुख बन्द। जामें रहत न पावै सन्द।
अग्नि बीच फिर देय धराय। ऐसे चांदी सहज बनाय॥

इति श्रीदत्तात्रेयतंत्रे दत्तात्रेयेश्वरसंवादे रसायनं नाम त्रयोदशः पटलः॥ १३॥

अथचतुर्दशः पटलः

अथ कालज्ञानम्

ईश्वर उवाच

श्रृणु सिद्ध महायोगिन् दत्तात्रेय महामुने।
मनुष्याणां हितार्थाय मृत्युज्ञानं च कथ्यते॥ १॥
दातव्यं गुरुभक्ताय न दद्याद् दुष्टबुद्धये।
यस्मै कस्मै न दातव्यं नान्यथा शंकरोदितम्॥ २॥
न दृष्टा नासिका येन नेत्रभ्रमणकष्टकम्।

षण्मासाभ्यन्तरे मृत्युर्यदि रक्षति चेश्वरः ॥ ३ ॥
न दृष्टारुन्धती येन सप्तर्षीणां च मध्यगा ।
षण्मासाभ्यन्तरे मृत्युर्यदि पाति पितामहः ॥ ४ ॥
स्वस्नानसमये नित्यं मृत्युज्ञानं निरीक्षयेत् ।
हृदि शुष्कं भवेत्तस्य षण्मासान्ते न जीवति ॥ ५ ॥
बुद्धिज्ञानक्रियाहीनो विपरीतस्तु जायते ।
द्विमासेन भवेन्मृत्युः सत्यमेव न संशयः ॥ ६ ॥
गतिचालनपादानां खण्डितं खण्डितं पदम् ।
मासेन मृत्युमाप्नोति ह्यर्धपक्षे विशेषतः ॥ ७ ॥
द्वादशदलचक्रस्थं मृत्युकालं च वीक्षयेत् ।
चैत्रादिमाससंख्याश्च लिखेद्द्वादशके दले ॥ ८ ॥
मेषादिराशयः स्थाप्याः सूर्याद्याश्च ग्रहास्तथा ।
जन्मर्क्षं जन्मराशिश्च वीक्षिते मृत्युकालके ॥ ९ ॥
शनिभौमकेतुराहुविद्धे राशौ तु कष्टता ।
ऋक्षविद्धे राशिविद्धे मासे मृत्युर्न संशयः ॥ १० ॥
सूर्यविद्धे मनस्तापो बधे सौख्यं प्रवर्त्तते ।
तीर्थे जीवे च यात्रायां चन्द्रे स्त्रीसुखसंपदः ॥ ११ ॥
मृगविद्धे राज्यलाभ मासे मासे विचारयेत ।
वर्षद्वादशमासानि मृत्युकाले वदंति च ॥ १२ ॥
अहोरात्रं यदैकत्र वहते यत्र मारुतः ।
तदा तस्य भवेत्त्वायुः संपूर्णं वत्सरत्रयम् ॥ १३ ॥
अहोरात्रद्वयं शश्वत्पिङ्गलायाः सदा गतिः ।

तस्य वर्षद्वयं प्रोक्तं जीवितं तत्त्ववेदिभिः ॥ १४ ॥
त्रिरात्रं वहते यस्य वायुरेकपुटे स्थितः ॥
संवत्सरं तदा चायुः प्रवदंति मुनीश्वराः ॥ १५ ॥
रात्रौ चन्द्रो दिवा सूर्यो मासमेकं निरन्तरम् ।
भवेन्मृत्युर्नरस्यैव षण्मासाभ्यंतरे ध्रुवम् ॥ १६ ॥
भानुं संचारयेद्रात्रौ शशांकं चारयेद्दिवा ।
इत्यभ्यासरतो नित्यं स योगी नात्र संशयः ॥ १७ ॥

मन्त्रः—ॐ नमः कालरूपाय कालज्ञानं कुरु कुरु स्वाहा ॥
अयुतं (१००००) जपेत्सिद्धिः ॥

इति श्रीदत्तात्रेयतंत्रे दत्तात्रेयेश्वरसंवादे कालज्ञानं नाम चतुर्दशः पटलः ॥ १४ ॥

अथ पञ्चदशः पटलः

अथानाहारः

ईश्वर उवाच

अंत्राणि कृकलासस्य मज्जां कारंजबीजकम् ।
पिष्ट्वा तु वटिकां कृत्वा त्रिलोहेन तु वेष्टितम् ॥ १ ॥
तावद्यो धारयेद्धीमे क्षुत्पिपासा न बाधते ।
यस्मै कस्मै न दातव्यं नान्यथा शंकरोदितम् ॥ २ ॥
पद्मबीजं महाशाली छागीदुग्धेन पाचयेत् ।
साज्यं तत्पायसं कृत्वा भोजनं द्वादशं दिनम् ॥ ३ ॥
अपामार्गस्य बीजानि दुग्धाज्याभ्यां तु पाचयेत् ।
पायसं वटिकां क्षीरैर्भुक्त्वा मासद्वयं वसेत् ॥ ४ ॥

कोकिलाक्षस्य बीजानि विजयाबीजसंयुतम् ।
धात्रीबीजेन संयुक्ता वटिका क्रियतां नरैः ॥ ५ ॥
तस्या भक्षणमात्रेण तस्योपरि गवां पयः ।
क्षुत्पिपासहरं नित्यं नान्यथा शंकरोदितम् ॥ ६ ॥
औषधं कुतुनी नाम द्विहस्तश्चलकांदुशा ।
एरंडसदृशैः पत्रैः पुष्पैश्चापि सुलक्षयेत् ॥ ७ ॥
तस्याः कंदं समादाय ताम्बूलेनैव मात्रतः ।
भक्षणं प्रातरुत्थाय क्षुत्पिपासाहरं परम् ॥ ८ ॥
मन्त्रः—ॐ नमः सिद्धिरूपाय मम शरीरे कुरु २ स्वाहा ॥

क्षुधा तृषा न लगै

पद्मबीज, ओंगा, तुलसी और धात्रीबीज पीसके गोली बनाकर पहले गोली खावै पश्चात् गोदुग्ध पिवे तो क्षुधा तृषा न लगै ॥

दूसरा प्रकार-रविवारके दिन गोदुग्ध और लटजीगाके चावल लेकर खीर पकावे और उसमें ओंगा डाल गूगल धूनी देवे फिर चना और गुड एकमें मिलाके उसीसे हांडीका मुँह इस प्रकार बन्द करे कि इसके भीतर पानी नहीं जा सके, पश्चात् संकल्प करके बहते हुए पानीके भीतर खोदिके गाड देवै तो जितने दिनकी अवधि होगी उतने दिन क्षुधा न लगेगी, अवधि बीत जानेके पश्चात् उक्त-खीर निकालके खाय तो फिर क्षुधा लगेगी ॥

इति श्रीदत्तात्रेय तंत्रे दत्तात्रेयेश्वरसंवादेऽनाहारो नाम पञ्चदशः पटलः ॥ १५ ॥

अथ षोडशः पटलः

अथाहारकरणम्

ईश्वर उवाच

बंधूकेनापि वृक्षस्य पीतं कृत्वा फलैर्युतीः ।
योऽसौ भुंक्ते घृतैः सार्द्धं भोजनं भीमसेनवत् ॥ १ ॥
संध्यायां शुष्कवृक्षस्य कर्त्तव्यमपि मन्त्रितम् ।
प्रातः पुष्पाणि संग्राह्य मालां शिरसि धारयेत् ॥ २ ॥
कौपीनं संपरित्यज्य भौमवारेण सेवनात् ।
यस्मै कस्मै न दातव्यं सिद्धियोग उदाहृतः ॥ ३ ॥
उद्भ्रान्तपत्रमादाय कपिलश्वानदंतकम् ।
कट्यामेव द्वयं बद्ध्वा भोजनं भीमसेनवत् ॥ ४ ॥
गृहीत्वा मंत्रविन्मंत्री बिभीततरुपल्लवान् ।
धारयेद्दक्षिणे हस्ते विंशत्याहारभुग्भवेत् ॥ ५ ॥
अधरं कृकलासस्य शिखास्थाने विबंधयेत् ।
वायुपुत्रपरैश्वर्य्यं शक्तो भोक्तुं च पर्वतम् ॥ ६ ॥

मन्त्रः--ॐनमः सर्वभूताधिपतये ग्रासय २ शोषय २ भैरवि आज्ञापयति स्वाहा ॥

आहार बहुत करै

जो मनुष्य शनिवारको प्रातःकाल और सायंकाल बहेडके वृक्षको न्योत आवै और दूसरे दिन अर्थात् रविवारको प्रातः-काल उसके पत्ते तोड लावे और आहार (भोजन) करते समय अपने पाँवके नीचे धरलेवे तो वह आहार बहुत करै ॥

होट किरकिटा लायके, शिखा लीजिये बांध ।
भीमसदृश भोजन करे, यह प्रयोग जो साध ॥

इति श्रीदत्तात्रेयतन्त्रेदत्तात्रेयेश्वरसंवादे आहारकरणं नाम षोडशः पटलः ॥ १६ ॥

अथ सप्तदशः पटलः

अथ निधिदर्शनम्

ईश्वर उवाच

शिरीषवृक्षपञ्चाङ्गं कटुतैलेन पाचयेत् ।
विषेणैव समायुक्तं गन्धकं च मनःशिलाम् ॥ १ ॥
धूपं दत्त्वा जपेन्मंत्रं निधिस्थाने विशेषतः ।
पलायन्ते निधीँस्त्यक्त्वा यथा युद्धेषु कातराः ॥ २ ॥
राक्षसैर्भूतवेतालैर्देवदानवपन्नगैः ।
निधिं सुखेन गृह्णाति न विघ्नैरभिभूयते ॥ ३ ॥

मन्त्रः—ॐ नमो विघ्नविनाशनाय निधिग्रहणं कुरु कुरु स्वाहा ॥ अष्टोत्तरदशशत १००८ जपात्सिद्धिः ॥

पृथ्वीका धन दीखे

जो कोई वनमें मुवा मुर्दा पडा कहूं जो देखे रे । गौने दिनको जाय रातिमें पाछे माथौ मोडै रे ॥ उसके ऊपर तेल छिवावै नीचे दीवो बारै रे । धरिके बत्ती अग्नि लगावै शिरपर दीवो जोवै रे ॥ बैठ किनारे जाय जपै यह मन्त्र सिद्धि ह्वै जावै रे । फेर उठै वह मूवा मुरदा बडो जु धन बतलावै रे ॥

मन्त्रः—ॐचिडाला चक्रवर्तिन मन सिद्धिं कुरु कुरु स्वाहा

कालो जो डोड काग वनमें लीजै । माखनको घीव वाको

नित्य खवावे। करे जो छेर वाको सारो लीजे। बत्ती जो करि वाको दीवै कीजे॥ काजल उतार एक डिब्बीमें लीजे॥ अंजन करना कि एक भरिके सीकै। भूमिको गडो धन सबही दीखै॥

काला कौआ लाकर जीभ और मांस निकाल आककी रुईसे लपेट बत्ती बनावे, फिर बकरीका घी चिरागमें भरकर उस बत्तीको जलाकर काजल पाडके नेत्रोंमें लगावे तो जहां कहीं धन गडा होगा वह दीखने लगेगा इसमें सन्देह नहीं।

माघमघानक्षत्रमहँ, शुक्ला चौदसि होय।
चेटक ताको कीजिये, न जानत सब कोय॥
ताही दिनको पायकै, चलो जाय बनमाहिं।

मन्त्रः-ॐ शिरसि शूलिनी महायक्षिणी पुष्पदेवि मम कृपां कुरु कुरु फट् स्वाहा॥

फूलै झडै जो लीजिये, अर्द्ध रात्रिके मांहि।
पुष्प जो लावे गेहको, कहिये कतहूँ नाहिं॥
पुष्प जो लीजे हाथमें, जहां तहां चलि जाय।
गडो द्रव्य पडै दृष्टिमें, सुरति लगे तहां जाय॥

मनसिलको किरकोटाके रुधिरमें भिगोवे, फिर महीन पीस कर नेत्रोंमें आँजे तो पृथ्वीका धन देख पड़े॥

इति श्रीदत्तात्रेयतंत्रे दत्तात्रेयेश्वरसंवादे निधिदर्शनं नाम सप्तदशः पटलः॥ १७॥

अथाष्टादशः पटलः

अथ वंध्यागर्भकरणम्

ईश्वर उवाच

जन्मवन्ध्याकाकवंध्यामृतवत्साः कचित्स्त्रियः।

तासां पुत्रप्रापणाय शंभुना सूचितं पुरा ॥ १ ॥
पत्रमेकं पलाशस्य गर्भिणी पयसान्वितम् ।
ऋत्वन्ते तत्र पीत्वा वै वन्ध्या भवति पुत्रिणी ॥ २ ॥
एवं सप्तदिनं कुर्यात् शाकदुःखादिवर्जितम् ।
पतिसंगगता या च नात्र कार्या विचारणा ॥ ३ ॥
क्षीरशाल्यन्नमुद्गं च लघ्वाहारं प्रदापयेत् ।
एकमेव तु रुद्राक्षं सर्पाक्षीकर्षमात्रकम् ॥ ४ ॥
एकवर्णगवां क्षीरे ऋतुकाले प्रदापयेत् ।
एवं सप्तदिनं कुर्याद्वन्ध्या पुत्रवती भवेत् ॥ ५ ॥
यस्मै कस्मै न दातव्यं नान्यथा शंकरोदितम् ।
देवदारुस्य मूलं तु ग्राहयेत्पुष्यभास्करे ॥ ६ ॥
ऋत्वन्ते तानि पीतानि एकवर्णगवां पयः ।
एवं सप्तदिनं कुर्याद्वन्ध्या पुत्रवती भवेत् ॥ ७ ॥
उद्वेगगर्भशोकं च दिवारात्रं च वर्जयेत् ।
शीततोयेन संपिष्य शरपुंख्याश्च मूलकम् ॥ ८ ॥
वर्षयित्वा लभेद्गर्भं सा नारी पतिसंगता ।
समूलां सहदेवीं च संग्राह्य पुष्यभास्करे ॥ ९ ॥
छायाशुष्कं तु चूर्णं च एकवर्णगवां पयः ।
पूर्ववया पिबेन्नारी वन्ध्या भवति पुत्रिणी ॥ १० ॥
यस्मै कस्मै न दातव्यं नान्यथा शंकरोदितम् ।
नागकेशरकं चूर्णं नूतनं गव्यदुग्धतः ॥ ११ ॥
पिबेत्सप्तदिनं दुग्धं घृतैर्भोजनमाचरेत् ।

ऋतवन्ते लभते गर्भं सा नारी पतिसंगता ॥ १२ ॥
सिद्धियोगमिदं चूर्णं नान्यथा शंकरोदितम् ।
पुत्रजीवकपत्रैकं पिबेत्क्षीरमृतौ च या ॥ १३ ॥
पतिसंगेन सा नारी सत्यं पुत्रवती भवेत् ।
कदम्बपत्रश्वेतं वा बृहतीमूलमेव च ॥ १४ ॥
एतानि समभागानि अजाक्षीरेण पेषयेत् ।
त्रिरात्रं पंचरात्रं वा पिबेदेतन्महौषधम् ॥ १५ ॥
सत्यं पुत्रवती वंध्या नान्यथा शंकरोदितम् ।
गोक्षुरकस्य बीजं तु पिबेन्निर्गुण्डिकारसैः ॥ १६ ॥
त्रिरात्रं पंचरात्रं च वंध्या भवति पुत्रिणी ।
यस्मै कस्मै न दातव्यं नान्यथा शंकरोदितम् ॥ १७ ॥
कर्कोटबीजचूर्णं तु एकवर्णगवां पयः ।
घृते पिबेच्च मासं तु वंध्या भवति पुत्रिणी ॥ १८ ॥
मंत्रः—ॐ नमः सिद्धिरूपाय अमुकीं सपुष्पां कुरु कुरु स्वाहा ॥ १०८ अष्टोत्तरशतं जपेत्सिद्धिः ॥

बांझकी चिकित्सा

बीज गोखरूके पिवे, निर्गुंडी रस डार ।
दिना सात वा तीनमें, होय गर्भिणी नार ॥

बांझके गर्भ रहे

करके तलाश कहूँ जावे भाई । कालीसी चिरी देख वनमें जाई । आलोकि देखि लीला सूरत जो धरना । राखे दिन

बीस वाको नाटिक करना ॥ पीछे जो जाय वाको धारि जो लावै। वंध्या जो नारि देखि बंद बंधावै ॥ दूध जो मिलाय वाको खीर खवावै। रखै षट् मास ढोरो गलि जो जाई ॥ रहवै है गर्भ जो वाको चिडिया सुनि आई ॥

लेत नक्षत्तर रोहिणी, श्रावण कृष्णा होय। ता दिन चेटक कीजिये, फल पावे नर सोय ॥ कुम्भ जो लावे ता दिना, नदी निकट चलि जाय। भरे छबक्का नारको, कटिको तनक निवाय॥ सो जल प्यावे बांझको, तुरत पेट रहिजाय ॥ इति ॥

प्रथम महीनेमे गर्भरक्षा

प्रथम मासमें जो कहीं, गर्भवेदना होय। खस चन्दन पद्माख सम, गोपय पीवे सोय॥ तीन दिना ऐसे करे, सब पीडा मिटि जाय। गर्भ थमैं इस यत्नसे है, यह सहज उपाय ॥

दूसरे महीनेमे गर्भरक्षा

तिल काले अरु पीपल छाल। मेल मंजीठ सितावर हाल ॥
डार चौगुनो दूध जो पीवे। गर्भ रुके अरु बचो जीवे ॥

तीसरे महीनेमें गर्भरक्षा

क्षीरककोली लायके, देय खरैंटी गेर।
दूध मिलाकर प्याइदे, गिरे गर्भ नहिं फेर ॥

चौथे महीनेमे गर्भरक्षा

नीलोफर अरु गोखरू, गेर कसेरु मृणाल।
गो पयके संग पीजिये, रुके गर्भ तत्काल ॥

पांचवे महीनेमे गर्भरक्षा

सांठ ककोलि अरु तगर, नीलोफरको लाय।
गऊ दूध सँग पीजिये, गिरत गर्भ रुकजाय ॥

छठे महीनेमें गर्भरक्षा

शीतल जलमें पीसिये, मिसरी खैर रु सार ।
गऊ दूध संग पीजिये, पीडा सभी विचार ॥

सातवे महीनेमें गर्भरक्षा

पोहकरमूल कसेरु अरु, नीलोफर सिंघाड ।
पीस दूध सँग पीजिये, घटे रोग तज हाड ॥

आठवे महीनेमें गर्भरक्षा

गजपीपल अरु मोथा लाय । लकडी लै पदमाख मिलाय ॥
तब नीलोफर लै मँगवाय । डार कसेरू सब घुटवाय ॥
डार कसेरू पीवे जोय । अठयें मास न पीडा होय ॥

नवमें महीनेमें गर्भरक्षा

क्षीरककोली और गिलोय । तामें लेय निसोथ मिलोय ॥
डार मुलहठी पय औटावे । पीवे पय पीडा मिट जावे ॥

दशवें महीनेमें गर्भरक्षा

गऊ दूधमें सोंठको, डारलेय औटाय ।
रात समय यह पीजिये, सब वेदन मिटजाय ॥

सुखसे बालक होय

श्वेत सोंठकी जडको प्रसववतीके मूत्रमार्गमें धरै तो तुरंतही बालक पैदा होय ॥

दूसरा प्रकार—ओंगाकी जड़ चार अंगुल लाकर मूत्र-मार्गमें धरै तो प्रसूताके बहुत शीघ्र बालक पैदा होय ॥

लडका या लडकी होनेकी पहिचान

गर्भवतीका हृदय यदि एक मिनिटमें एकसौ चवालीस बार धडके तो कन्या होगी यदि एकसौ चौबीस बार धडके

तो पुत्र होगा। इस विधिको गर्भके पूरे दिनमें करना चाहिये।

पसली और डबकाकी औषधि

जिस बालकके डबकाका रोग हो उसकी इस प्रकार औषधि करे कि शनिवारको शशाका रुधिर लाकर गोली बाँध बालकको देवे तो व्याधि दूर हो।

इति श्रीदत्तात्रेयतंत्रे दत्तात्रेयेश्वरसंवादे वंध्यागर्भधारणंनामाष्टादशः पटलः ॥१८॥

अथैकोनविंशतितमः पटलः

मृतवत्सावत्सजीवनोपायः

ईश्वर उवाच

गर्भः संजातमात्रो वा पक्षे मासे च वत्सरे।
म्रियते द्वित्रिवर्षादौ यस्याः सा मृतवत्सका ॥ १ ॥
गृहीत्वा शुभनक्षत्रे अपामार्गस्य मूलकम्।
गृहीत्वा लक्ष्मणामूलमेकवर्णगवां पयः ॥ २ ॥
पीत्वा सा लभते गर्भं दीर्घजीवी सुतो भवेत्।
यस्मै कस्मै न दातव्यं नान्यथा शंकरोदितम् ॥ ३ ॥
पीत्वा कर्कोटिकाकन्दं भृङ्गराजेन पेषितम्।
ऋतुकाले तु सप्ताहं दीर्घजीवी सुतो भवेत् ॥ ४ ॥
अत्र योगे प्रकर्त्तव्यं यथा शंकरभाषितम्।
मार्गशीर्षेऽथवा ज्येष्ठे पूर्णायां लेपिते गृहे ॥ ५ ॥
नूतनं कलशं पूर्णं गन्धतोयेन कारयेत्।

---

१ "गोदुग्धसदृशं पुष्पं तांबूलसदृशं दलम्।
मध्ये च लालिमा रेखा लक्ष्मणा सा प्रकीर्तिता ॥

शाखाफलसमायुक्तं नवरत्नसमन्वितम् ॥ ६ ॥
सुवर्णमुद्रिकायुक्तं षट्कोणं मण्डलं स्थितम् ।
तन्मध्ये पूजयेद्देवीमेकांतां नामविश्रुताम् ॥ ७ ॥
गन्धपुष्पाक्षतैर्धूपैर्नैवेद्यसंयुतैः ।
अर्चयेद्भक्तिभावेन दुग्धैर्माषैर्मुहुस्तथा ॥ ८ ॥
वाराही च तथा चैन्द्री ब्राह्मी माहेश्वरी तथा ।
कौमारी वैष्णवी देवी षट्सु यंत्रेषु मातरः ॥ ९ ॥
पूजयेन्मन्त्रभावेन दधिपिण्डांश्च कारयेत् ।
सप्तसंख्याप्रमाणांश्च षट्संख्याषट्प्रमात्रकः ॥ १० ॥
सप्तमं तु पृथक् धृत्वा शुचिस्थाने विशेषतः ।
तद्भुक्त्वा गृहमागच्छेत्कन्यका बटुकस्त्रियः ॥ ११ ॥
भोजनं दक्षिणां दत्त्वा प्रणम्याकारयेत्ततः ।
विसृज्य देवतानां च सुनद्यां कलशोदकम् ॥ १२ ॥
स्वकुलं वीक्षयेद्धीमान् शुभानां शुभमादिशेत् ।
विपरीतं पुनः कार्यं यामवत्सु दिदंततः ॥ १३ ॥
प्रतिवर्षमिदं कुर्याद्दीर्घजीवी सुतो भवेत् ।
सिद्धियोगो ह्ययं ख्यातो नान्यथा शंकरोदितः॥ १४ ॥

मन्त्रः-ॐ नमः परब्रह्मपरमात्मने अमुकीगृहे दीर्घजीवि-
सुतं कुरु कुरु स्वाहा ॥

बालकके जीनेका उपाय

फूल कटेरी मधका जीरा, चार रत्तिभर पावै रे ।
कूटि बांबिका मिरच मिलावै, जब बालकको प्यावै रे॥

जिस स्त्रीका बालक जीवे नहीं सो यह उपाय करे कि सूखी हुई बन्दरकी बीट लेकर पके हुए एक पानमें धरिके इक्कीस दिनतक खाय और जब बालक उत्पन्न होय तब घूँटीमें चावलभर मिलाकर बालकके कंठमें डाले तो बालक चंगा रहे और यथाशक्ति पुण्य भी चाहिये ॥

इति श्रीदत्तात्रेयतन्त्रे दत्तात्रेयेश्वरसंवादे पुत्रजीवी नामैकोनविंशः पटलः ॥१९॥

अथ विंशः पटलः

अथ काकवन्ध्या

ईश्वर उवाच

पूर्वं पुत्रवती या सा क्वचिद्वन्ध्या भवेद्यदि ।
काकवन्ध्या तु सा ज्ञेया चिकित्सा तत्र कथ्यते ॥१॥
विष्णुक्रान्तां समूलां च पिष्ट्वा महिषदुग्धके ।
एवं सप्तदिनं कुर्यात्पथ्यं युक्तिश्च पूर्ववत् ।
गर्भं सा लभते नारी काकवन्ध्या तु शोभने ॥ २ ॥
अश्वगंधाग्रमूलं तु ग्राहयेत्पुष्यभास्करे ।
पेषयेन्महिषीक्षीरे पलार्द्धं भक्षयेत्सदा ॥ ३ ॥
सप्ताहे लभते गर्भं काकवन्ध्या चिरायुषम् ॥
यस्मै कस्मै न दातव्यं नान्यथा शंकरोदितम् ॥४॥

मन्त्रः-ॐ नमः शक्तिरूपाय अस्य गृहे पुत्रं कुरु कुरु स्वाहा ॥ १०८ अष्टोत्तरशतं जपेत् ॥

बांझपना दूर हो

श्रवण नखत्तर लीजिये, स्याह अरण्डको मूल ।
तादिन चेटक कीजिये, हर्ष होय अनुकूल ॥

ताको जडको लाइये, धूप दीप दे ताहि ।
गले त्रियाके बाँधिये, बांझदोष मिटि जाहि ॥
विष्णुकांता रूखडी, जड समेत मँगवाय ।
भैंस दूधमें पीसके, लीजै त्यार कराय ॥
हो ऋतुवन्ती नारि जब, माखन भैंस मिलाय ।
सात दिनोंतक दीजिये, गर्भ रहे सुख पाय ॥

इति दत्तात्रेयतन्त्रे दत्तात्रेयेश्वरसंवादे जन्मवन्ध्याकाकवन्ध्यापुत्रजननं नाम विंशः पटलः ॥ २० ॥

अथैकविंशः पटलः

अथ जयसंवादः

ईश्वर उवाच

मार्गशीर्षस्य पूर्णायां शिखामूलं समुद्धरेत् ।
बाहौ शिरसि वा धार्यं विवादे विजयी भवेत् ॥१॥
कृष्णसर्पकपाले तु वसामृत्तिकयान्विते ।
श्वेतगुञ्जां क्षिपेत्तत्र तस्य मूलस्य चाहरेत् ॥ २ ॥
ललाटे तिलकं कृत्वा पश्यंति पंचधा रिपुम् ।
श्वगणैर्भक्ष्यमाणं च पतितं च ततो भुवि ॥ ३ ॥
जपामालं राजकुले मुखसंस्थं जयप्रदम् ।
अपामार्गरसेनैव यानि शस्त्राणि लिप्यते ।
जायन्ते तानि संग्रामे वज्रसाराणि निश्चितम् ॥४॥
गृहीत्वा पुष्यनक्षत्रे श्वेतगुञ्जाग्रमूलकम् ।
धारयेद्दक्षिणे हस्ते द्रुतकार्यो भवेन्नरः ॥ ५ ॥

धत्तूरं करवीरं च अपामार्गस्य मूलकम् ।
हरितालसमायुक्तं तिलकं सुदिने कृतम् ॥ ६ ॥
अजाक्षीरेण संप्रोक्ष्य रणे राजकुले कृती ।
विरोधे द्युतकार्ये च नान्यथा शंकरोदितम् ॥ ७ ॥

मन्त्रः—ॐ नमो विश्वरूपाय अमुकेन विजयं कुरु २ स्वाहा ॥ १०८ अष्टोत्तरशतं जपेत् ॥

युद्धमें जीत

कीजे कारज जानिके, पुनर्वसुके माहिं ।
युद्ध जिते हारे नहीं, कीजै यही उपाहिं ॥

इति श्रीदत्तात्रेयतन्त्रे दत्तात्रेयेश्वरसंवादे जयसंवादो नामैकविंशः पटलः ॥ २१ ॥

अथ द्वाविंशः पटलः

अथ वाजीकरणम्

ईश्वर उवाच

बलेन नारी परितोषमेति न हीनवीर्यस्य कदापि सौख्यम् ।
अतो बलार्थं रतिलम्पटस्य वाजीविधानं प्रथमं विधेहि ॥ १ ॥
वल्कलं त्वाम्रवृक्षस्य मृत्पात्रे प्रविनिःक्षिपेत् ।
तस्योपरि जलं क्षिप्त्वा तदूर्ध्वं वसु दापयेत्॥ २ ॥
प्रातःकाले दुग्धसार्धं यः पिबेन्मकरध्वजः
धातुवृद्धिकरं लोके बलपुष्टिकरं तथा ॥ ३ ॥
कुमारीकन्दमादाय गवां क्षीरेण यः पिबेत् ।
बलपुष्टिकरो धातुर्जायते मकरध्वजः ॥ ४ ॥
गृहीत्वा च रवौ वारे भिंदिकां शुचिपूर्ववत् ।
छायाशुष्कं च चूर्णं तु अश्वगन्धासमन्वितम् ॥ ५ ॥

मुसलीगोक्षीरकं च विजयाबीजसंयुतम् ।
एकवर्णगवां क्षीरं य पिबेद्दुक्कमान्वतः ॥ ६ ॥
बलपुष्टिकरं देहे स्तंभनं धातुवृद्धिदम् ।
अनेन सिद्धतन्त्रेण कामदेवो भवेन्नरः ॥ ७ ॥
अश्वत्थफलमाग्राह्य छायाशुष्कं तु कारयेत् ।
दुग्धसार्धं पिबेत्सत्यं जायते मकरध्वजः ॥ ८ ॥
गृहीत्वा शुभनक्षत्रे ब्रह्मदण्डयाश्च मूलकम् ।
महिषीक्षीरसहितं यः पिबेन्मकरध्वजः ॥ ९ ॥
गृहीत्वा त्वमृतामूलं रवेर्वारेऽभिमंत्रितम् ।
छायाशुष्कं तस्य चूर्णं शर्करासहितं परम् ॥ १० ॥
महापुष्टिकरं पुंसां तस्योपरि गवां पयः ।
यस्मै कस्मै न दातव्यं नारी भवति किंकरी ॥ ११ ॥
मन्त्रः-ॐ नमो ह्यसुकं बलपराक्रमं कुरु २ स्वाहा ॥
१०८ अष्टोत्तरशतजपात्सिद्धिः ॥

वाजीकरण औषध

वाजीकरण औषध सन्तानको करनेवाला तथा तत्काल आनंदको करनेवाला है और जिससे अश्वकी तरह अतिबलवाली और अप्रतिहत सामर्थ्यवाला मनुष्य होता है और जिससे वृद्धिको प्राप्त होता है वह वाजीकरण है वह देहको अति पराक्रमी करनेवाला है ॥

जो मनुष्य आमलेके स्वरसमें भावित किये पीपल और आमलेके फलके चूर्णको खांड और शहत तथा घृतमें मिलाकर

चाटै और ऊपरसे दूध पीवे तो वह बुड्ढा भी जवानके सदृश हो जाता है ॥

सालममिश्री, मरोडफली और मूसलीको एकमें कूट पीस गोदुग्धके साथ जो पीवे वह वृद्ध भी तरुणसमान बलिष्ठ होय॥

विदारीकन्दके स्वरसमें भावित किये विदारी चूर्णको शहद और घृतमें मिलाकर चाटनेसे धातु वृद्धि होकर मनुष्य बलवान् होता है ॥

जो पुरुष एक तोला मुलहठीके चूर्णको घी और शहदमें मिलाकर चाटै और दूधका अनुपान करै तो पुरुष अतिवेगवाला हो जाता है ॥

कौंच और खरैंटीके बीजोंके चूर्णको खांडमें मिलाकर थनोंसे निकाले हुए दूधके साथ पान करै तो पुरुष अतिबलिष्ठ होता है ॥

इति श्रीदत्तात्रेयतंत्रे दत्तात्रेयेश्वर संवादे बलपराक्रमोनामद्वाविंशः पटलः ॥ २२ ॥

अथ त्रयोविंशः पटलः

अथ द्रावणम्

ईश्वर उवाच

शिलाकाशीसजशदकुसुमक्षौमलेपनम् ।
द्रावणंकुरुते स्त्रीणां बिना मंत्रेण सिद्ध्यति ॥ १ ॥
बृहतीफलमूलानि पिप्पलीमरिचानि च ।
मधुना रोचनासार्द्धं लिङ्गलेपाद्द्रवः स्त्रियाः ॥ २ ॥
क्षौद्रगन्धकलेपेन प्रयुक्तेन च तत्फलम् ।
यस्मै कस्मै न दातव्यं देवानामपि दुर्लभम् ॥ ३ ॥

शठीकनकपिपल्यः शरणं मर्दनं फलम् ।
एतानि लिङ्गलेपेन शीघ्रं द्रवति योषिताम् ॥ ४ ॥
मातुलुंगरसैर्लिंगं स्त्रीणां तु द्रवकारणम् ।
सिद्धियोगोऽयमाख्यातो दुर्लभो मानुषे जने ॥ ५ ॥
सोना रिपुको लायकै, देय पानके संग ।
ता पीछे पति मग्न ह्वै, तियसों करै प्रसंग ॥

अर्थात् रतिके समय सुहागा पानमें डालकर स्त्रीको खिलावे तो बहुत शीघ्र स्त्री द्रवै ॥

अथ वीर्यस्तंभनम्

कर्पूरं टंकणं सूतं तुल्यं मुनिरसं मधु ।
मर्दयित्वा लिपेल्लिङ्गं स्थित्वा यातं तथैव च ॥ ६ ॥
ततःप्रक्षालितं लिङ्गं रसौ रामाय चर्चितम् ।
वीर्यस्तम्भकरं पुंसां सम्यग्गत्यार्जुनोदितम् ॥ ७ ॥
कृकलासस्य पुच्छाग्रमुद्रिकाप्रेततंतुभिः ।
वेष्ट्य कनिष्ठिका धाया नरो वीर्यं न मुंचति॥ ८ ॥
मधुना यमबीजानि पिष्ट्वा नाभिं प्रलेपयेत् ।
यावत्पतिरसौ लेपस्तावद्वीर्यं न मुंचति ॥ ९ ॥
चटिलाडुं तु संगृह्य नवनीतेन पेषयेत् ।
तेन लेपयता पादौ शुक्रस्तंभः प्रजायते ॥१०॥
यावन्न स्पृशते भूमिं तावद्वीर्यं न मुञ्चति ।
यस्मै कस्मै न दातव्यं नान्यया शंकरोदितम्॥११॥
शशिसूतकटंकेण भागधेयं घृतेरणा ।
क्षौद्रेण कनकाक्षयुतं मुनिपत्ररसे यदि ॥ १२ ॥

लिपेन्मदयुता नारी गर्भनाशकरं त्विदम् ।
स्थूलमीनं समादाय सम्यक्स्वर्णं तु वेष्टयेत् ।
यः उद्घाटयते किंचिद्वक्के वीर्यं न मुञ्चति ॥ १३ ॥
शूकरस्य तु दंष्ट्राग्रं दक्षिणेन समाहरेत् ।
कट्यां पुरीपुटे बद्ध्वा शुक्रस्तम्भः प्रजायते ॥ १४ ॥
षट्‌फलं शुंठिकाक्वाथं विनाऽम्लेन प्रमुंचति ।
सिद्धियोगमिदं ख्यातं शुक्रस्तम्भनकारकम् ॥१५॥
सूरणं तुलसीबीजं सताम्बूलं प्रभक्षयेत् ।
न मुञ्चति नरो वीर्यं नान्यथा शंकरोदितम् ॥१६॥
डिंडिभो नाम यः सर्पः कृष्णवर्णस्तमाहरेत् ।
तस्यास्थि धारयेत्कट्यां नरो वीर्यं न मुञ्चति॥१७॥
रक्तापामार्गमूलं च सोमवारेऽभिमंत्रयेत् ।
भौमवारे समुद्धृत्य कट्यां बद्ध्वा तु वीर्यधृत्॥१८॥

शनिवारके दिन प्रातःकाल आकवृक्षको न्योत आवे दूसरे दिन अर्थात् रविवारके प्रातःकाल उसके फलको तोड लावै और उसी दिन उस फलकी रुई निकाल बत्ती बनाकर अरंड तेलमें जलावे, जबतक वह बत्ती जलैगी तबतक स्तम्भन रहैगा ॥

अथ लिंगवर्द्धनम्

वराहवसया लिंगं मधुना सह लेपयेत् ।
स्थूलं दृढं च दीर्घं च मुसलस्येव जायते ॥ १९ ॥
निशाषाडचूर्णं च भावितं नागवैरिणा ।
पातासनप्रयुक्तेन षण्ढत्वं जायते नृणाम् ॥ २० ॥
तिलं गोक्षुरचूर्णं च छागीदुग्धेन पाचकम् ।

शीतलं मधुना युक्तं स्वभुक्तं षंढनाशनम् ॥ २१ ॥
आर्द्रकं गंधकं चैव राजवृक्षस्य टंकणम् ।
समीक्ष्य समपातानि निःक्षिपेन्निंबपल्लवैः ॥ २२ ॥
स्थापयित्वा भुजे सव्ये वीर्यं द्रवति द्राक् स्त्रियः ।
मधुसैंधवसंयुक्तं पारावतमलान्वितम् ॥ २३ ॥
एतल्लिप्तेन्द्रियो रामां दासीवत्कुरुते रतौ ।
सिद्धियोगमिदं ज्ञानं नान्यथा शंकरोदितम् ॥ २४ ॥
प्रक्षालिताभगैर्नित्यं कृत्वामलककल्कक: ।
वृद्धापि कामिनी कामं बालावत्कुरुते रतिम् ॥ २५ ॥
हरितालं लिपेद्योनिं छागीदुग्धेन पेषयेत् ।
लोमशातमिदं ज्ञेयमुष्णं जलेन शोषयेत् ॥ २६ ॥
पद्मबीजं च सितया भक्षणं पद्मवारिणा ।
विलेपात्स्त्रीस्तनद्वंद्वं मासेन कुरुते दृढम् ।
मण्डीचूर्णं कषायेण युक्ततैले सुपाचितम् ॥ २७ ॥
अंकोलस्यापि पत्रं सहचरसहितं केतकीनां कदंबं ।
छायाशुष्कं च गंधं त्रिफलरसयुतं तैलमध्ये निधाय ।
तत्क्षितं लोहपात्रे क्षितितलनिहिते मासमेकं च यावत्
केशाकाशाप्रकाशा अलिकुलसदृशोयाति पक्षैकमात्रम् ॥
त्रिफलालोहचूर्णं तु वारुणीं पेषयेत्समम् ।
द्वयोस्तुल्येन तैलेन पचेद्वह्निं च नाशनम् ॥ २९ ॥
विष्णुक्रान्तानि पुष्पाण्यैरंडतैलेन पाचयेत् ।
केशं लेपयते तासां कृष्णवर्णं तु जायते ॥ ३० ॥

तैल तुल्ये भृंगरसे यावत्तैलं च पाचयेत् ।
स्निग्धभांडे गते भूमौ स्थिते मासात्समुद्धरेत् ॥३१॥
प्रत्यहं लेपयेत्पेष्यं कदलीदलसंयुतम् ।
त्रिफलाफलसंयुक्तं रुद्रजटासमन्वितम् ॥ ३२ ॥
सप्ताहलेपः कर्तव्यः केशाः स्युर्भ्रमरोपमाः ।
यावज्जीवं न संदेहो नान्यथा शंकरोदितम् ॥३३॥

अथ केशपातनम्

कोशातकी बीजसमुद्भवेन तैलेन केशा न पुनर्भवंति ।
धात्र्याक्षपथ्या सविडंगवह्निशतावरीगोक्षुरकामृतानाम् ॥
महिषीप्रयुक्तं मधुशर्कराभ्यां निशि प्रलेहं च घृतेन मिश्रम् ३४
वृद्धस्त्वाकुष्ठजीर्णं च बलहीनपराक्रमः ।
भक्षणे प्रातरुत्थाय तरुणो जायते नरः ॥ ३५ ॥

बाल उडानेकी विधि

ढाककी राख और हरताल केलाके रसमें खूब घोटे फिर जिस जगह लेप करे उस जगह रोयें न रहेंगे ॥

पोस्ताकी भस्म दश मासे और जवाखार ५ मासे तथा गोदन्ती हरताल ५ मासे इन तीनोंको एकत्रित करके खूब महीन पीसे पश्चात् केलाके रससे सानिके लेप करै. सखजानेके पीछे बाल उखाड डाले, जब फिर बढैं तब यही विधि फिर करै ॥ हरताल ५ टंक; जवाखार १ टंक; पोस्ताकी राख १ टंक और चूना १ टंक इन सबोंको पानीसे पीसकर जहां लगावे वहां बाल नहीं रहेंगे ।

चूना और हरताल सिरकामें पीसकर बालोंमें लगावे तो बाल न होंगे ॥

सात भाग चूना और एक भाग हरताल जलमें पीस शिरमें लेप करै तो बाल गिर जायँ ॥

इति श्रीदत्तात्रेयतंत्रे श्रीउमामहेश्वरसंवादे वाजीकरणं नाम त्रयोविंशतितमः पटलः ॥ २३ ॥

अथचतुर्विंशः पटलः

अथ भूतग्रहनिवारणम्

ईश्वर उवाच

शिरीषपत्रपुष्पाणि रविवारे समुद्धरेत् ।
उल्लूविष्ठां गृहीत्वा तु उष्ट्ररोम्णा च संयुताम् ॥१॥
श्वानविष्ठासमायुक्तां मार्जारीयेण संयुताम् ।
गोमयेनैव संयुक्तां गंधकप्रयुतां तथा ॥ २ ॥
श्वेतगुंजासमायुक्तां कटुतैलेन पाचयेत् ।
धूपं दत्त्वा जपेन्मंत्रं भूतबाधा च नश्यति ॥ ३ ॥
राक्षसैर्भूतबेतालैर्देवभूतज्वरादिभिः ।
डाकिनी प्रेतिनी चैव धूपं देयं पलायते ॥ ४ ॥

मन्त्रः—ॐ नमः श्मशानवासिने भूतादीनां पलायनं कुरु २ स्वाहा ॥ १०८ अष्टोत्तरशतं जपेत् ॥

भूत प्रेत दूर हो

होय जबै रविवार सुराई । पत्ता फूल सिरस ले आई ॥
घुग्घु बीट ऊंटके बाल । कुत्ता बिल्ली विष्ठा घाल ॥
गोबर गन्धक गुंजा श्वेत । कडवे तेल पकाकर लेत ॥
भूत प्रेतनी जाहि सतावे । धूनी देकर तुरत भगावे ॥
उपरोक्त मन्त्र १०८ बार पढै ॥

दोहा–अश्विनिमाहीं लीजिये, अश्वनखत जु कहाय।
ताकी धूनी दीजिये, भूत प्रेत भगि जाय॥

घुग्घूका मांस मँगायके अपने पास सुखाकर रख छोड आवश्यकता होनेपर उक्त मांसकी धूनी देनेसे भूत प्रेत तुरंत भाग जायँगे॥

अथ ग्रहनिवारणम्

अर्कमूलं च धतूरमपामार्गस्य मूलकम्।
दूर्वामूलं वटमूलं ह्यश्वत्थमूलमेव च॥ ५॥
शमीपत्रं चाम्रपत्रं पत्रमौदुम्बरं च तत्।
मृन्मयस्य च मध्यस्थं दुग्धं घृतसमन्वितम्॥ ६॥
तण्डुलं चणकं मुद्गं गोधूमं तिलसंयुतम्।
मधुतक्रममे तत्र संध्याकाले शनेर्दिने॥ ७॥
अश्वत्थमूलखननं ग्रहोपद्रवनाशनम्।
महादारिद्र्यहरणं महापातकनाशनम्॥ ८॥
यावज्जीवति सा लोके ग्रहपीडा न बाधते।

मन्त्रः–ॐ नमो भास्कराय अस्माकं सर्वग्रहाणां पीडानाशं कुरु कुरु स्वाहा॥ अष्टोत्तरशतजपात् सिद्धिः॥

सिंहव्याघ्रसर्पवृश्चिकभयनाशनम्

ईश्वर उवाच

सिंहं दृष्ट्वा नमस्कृत्य मन्त्रो जाप्यः पुनःपुनः।
पलायन्ते केसरिणो नान्यथा शंकरोदितम्॥ ९॥
पुष्यार्केण गृहीत्वा तु श्वेतार्कस्य तु मूलकम्।
धारयेद्दक्षिणे हस्ते सिंहबाधाभयं न हि॥ १०॥

अथ मन्त्रः–ॐ नमो अग्निरूपाय ह्रीं नमः ।

अथ सर्पविघ्ननिवारणम्

आस्तिकं मुनिराजं च नमस्कुर्यात्पुनः पुनः ।
स्वप्ने सर्पभयं नास्ति नान्यथा शंकरोदितम् ॥ ११ ॥

अथ व्याघ्रनिवारणम्

गृहीत्वा शुभनक्षत्रे धत्तूरमूलकं तथा ।
धारयेद्दक्षिणे बाहौ व्याघ्रबाधाभयं न हि ॥ १२ ॥

अथ वृश्चिक निवारणम्

गृहीत्वा शुभनक्षत्रे ह्यपामार्गस्य मूलकम् ।
धारयेद्दक्षिणे कर्णे वृश्चिकाद्भीर्न विद्यते ॥ १३ ॥

अथाग्निभयनिवारणम्

उत्तरस्यां च दिग्भागे मारीचो नाम राक्षसः ।
तस्य मूत्रपुरीषाभ्यां गतोऽस्तम्भवस्वाहा ॥ १४ ॥
अनेन मन्त्रेण सप्तांजलिजलमग्निमध्ये निःक्षिपेत् ।
अग्निः शाम्यति ।
गृहीत्वा रविवारे तु श्वेतकर्वीरमूलकम् ।
धारयेद्दक्षिणे हस्ते ह्यग्निबाधभयं न हि ॥ १५ ॥

अथ बन्धभेदः प्रारभ्यते

हरिगति छन्द । तांबेश्वर

तांबा तोला तीन तोलके लीजिये । रससे हरही ल्याय टंक द्वै दीजिये ॥ चार टंक तिल्लीका तेल सोय रे । हरिहा गजपुट दीजै आँच तांबेश्वर होय रे ॥

नागरस

शीशौ ले अधपाव ताव दे गलाना । दै लकडीकी आँच ठेकरै डालना ॥ सेमल कुतला लायकै रगरै खूब रे । हरिहा सुन्दर बनो नागरस खावो महबूब रे ॥

हरताल

थूहर इसमे ल्याय वाहिको पालि रे । माहिं भरे हरिं- ताल उपरिसों बोलि रे ॥ दे छानाकी आँच घडी द्वै चारिकी । हरिहा सुन्दर बनी हरितालकी कली अनारकी ॥

रूपरस

हरड बहेडा ल्याय करो वा चून रे । भरैं कोथले माहिं कसुहँरा मून्द रे॥करे कलीका टूक माहिं धर राखना । हरिहा सूक्ष्म दीजै आँच बहुर नहिं चूकना ॥ फरदबेल मँगवाय कि लुगदी कीजिये । चांदी तोला एक माहिं धरि दीजिये ॥ प्रहर दोयकी आँच लगावै खूब रे । हरिहा रूपरस होय जाय खावो महबूब रे

मृगांक

गंधक पारो मिलाय एक रस कीजिये । सोनो लेवे चार माहिं धरि दीजिये ॥ दे कोलोंकी आंच धौंकि नीचौ किये । हरिहा खूब बनी मृगांक खावो महबूब रे ॥

लोहसार

फोलाद लोह मँगवायके वाकूं रेतना । तीन दिन धव- निकी फूंक कि कोयला फूंकना ॥ हरिहा सुन्दर बनी लोहसार खावो महबबू रे ।

अभ्रक

गुड पूरानो ल्याय कसोरा रे । पतरा लेप लगाय टंक दश भार रे ॥ आँच लगायके अभ्रक कीजिये । हरिहा सरदी गरमी जाय खावो महबबू रे

अञ्जन

कार्तिक फल जा मंगाय जस्त पल लीजिये । मेहदी सम मँगवाय कर गरा दीजिये ॥ ताकी खाक बनाय कछू नहिं कामकी । हरिहा नैना अञ्जन आँज दुहाई रामकी ॥

सोनेकी खाक

सोनेकी खाक बनायकै सुन्दर, चावल एक चिरौंजीमें खावै ।
देह सुपुष्ट बढै अति बीरज, लागत भूख औ काम जगावै ॥
श्वासहु कास सफोदर ओदर, आदि जलंधर रोग नशावै ।
यहि भांतिके औरहु रोग हटैं, जेहिके गुण आयुर्वेद बतावै ॥

हरतालके गुण

गुण हरताल अगाध बतावत, चावल एक प्रमाण भये हैं ।
पानमें खात मिटे सब व्याधिहु, दूध रुभातको भोज किये हैं ॥
होय जो पुष्ट बँधे अति बीरज, बीरज राखि समाधि भये हैं ।
और गुणनकी गम्य नहीं पर, जानि परयो तो सौ दील लहे हैं ॥

पारदके गुण

पारदके गुण अपार कहे नर, जानहु जान अजानहु छानै ।
खानहु पान विचारिके कीजिये, निश्चय बातसौ जीवमें आनै ॥
गुणको अरुखा निभरयोसब जातहि, हानिजोवृद्धि कहामनमानै ।
और तो गुणको गम्य नहीं पर, पारदके गुण शारद जानै ॥

पावेदकी बहु भाँतिकी खाक, बनायकै शारद गुण ममान कियो है।
चावल एक चिरौंजीमें खावत, भावत सो पयपान कियो है ॥
बल अतुल बढ़ै अति बीरज बंधरु, पुष्ट अहार कभून कियो है।
रोगहु व्याधि करै सब दूरि जु, शक्करसों खाय बहुवर्ष जियो है॥

अथ गंधकविधि

गंधक अर्ककी खुराख सुनो, नर एक रतीभर पानमें खावै ।
अति दुरावक पाचिक जाकिकसो, यह पाय खट्टा दान अमावै॥
दिना सात जो नेह तजै सब, लोनहु नाहिं अलोनेहि खावै ।
गंधककी यह रीति कही, बहु रोग मिटाय अनन्द बढावै ॥

लोहबान विधि

लोहबानै जो पानमें खावत, लावत ऋतु जो ग्रीषम आवे ।
अति शीत सुगंध रहे उत्तर, भीतर पाचिक अन्न कबहुँ न खावै॥
नयन अरुण रहै निशि बासर, आलस दूरि करै लोहबानको खावे।
सुक्ख शरीर करे अति दीरघ, मनमस्त रहै लोहबानको खावे॥

अथ संखखार

सोमलखार अपार कह्यो नर जो गुणवाहि प्रकाश भये ॥
तापको पाय संताप स्त्रियाको, और नपुंसक मर्द भये हैं ॥
डोडेमें खाय डेढ़ जो चावल, बल वीर्य वृद्धिसों बाल भये हैं।

अभ्रकविधि

शरदीमें लौंग मिलायकै खाय तो, गरमीमें मिश्री मिलाय लिये ।
शीतमें पीतसी नागवलीसे, अभरक रत्ती दो तीन लिये हैं ॥
शीतमें अंग सुभाव सदा शरीरमें गरमीमें शरदी अनुपान भये हैं।
जो अंगमें अतिशीत जो व्यापत, ताहि विचारनौ पान गये हैं॥

मूंगेके गुण

प्रवालकी खाक बनायके सुन्दर, एक रत्तीभर पानमें लीजै ।

खार सुखार तजे सब लोनहिं,जानि अलोनोहि अन्न जु खीजै।
पुष्ट शरीर बढ़ै अति बीरज, नारिको संग कभूं नहिं कीजै ॥
गर्महुँ शर्द कभूं नहिं खावत, सात दिना यह साधन कीजै।

इति बन्धभेद समाप्त

फूलप्रश्न

एक,दो,चार,आठ और सोलह इन नम्बरोंसे फूलका पता लगता है, जिन २ चक्रोंमें वह फूल है उन २ चक्रोंके अंकको जोड़कर उसी नम्बरका दोहा पढ़ै,फूलका पता लग जायगा॥

नंबर १ चक्र.

अकवन	गुलाब	सेमर	हयकंद
दहवर्गा	गुलाबदा	नागश्वर	वेली
अडहुल	सेवती	करना	जुही
केवडा	केतकी	पांडर	कोई

नंबर २ चक्र.

गुलाब	सेमर	रूपमंजरी	हथकंदर
इश्कपेच	गुलाबदा	जटाधारी	कोई
चमेली	सेवती	कर्नइल	जुही
चम्पा	केतकी	कँवल	वेली

नंबर ४ चक्र,

परास	जटाधारी	चमेली	सूर्यमुखी
रूपमंजरी	कर्नइल	नागेश्वर	वेली
पांडर	रूसा	करना	जुही
सिंगार	गुलाब	कोई	हथकंदर

नंबर ८ चक्र.

रूसा	जुही	गुलाब	हथकंदर
करना	सेपती	रूपमंजरी	सेमर
गुलाबदा	चम्पा	अकवन	चमेली
सिंगार	दहवर्गा	दुपहरिया	कुसुम

नम्बर १६ चक्र

मालती	नागेश्वर	जटाधारी	कोई
सूर्यमुखी	इश्कपेच	गुलाबदा	रूपमंजरी
अडहुल	रूसा	गुलाब	समर
कुसुम	अकवन	गुलाबदा	हथकदर

१ केवडा

दोहा—पुलकित प्रीतम जानके, तन मन जीवन दीन ।
जीवन धन अस केवडा, सबै निछावर कीन ॥

२ कँवल

विरह दग्ध तन देत है, सहि ना सके शरीर ।
सहि न सकै उठि २ तके, कँवल ढरै जस नीर ॥

३ केतकी

बान विरहके ऐ सखी, जेहि लागै सो जान ।
केतकि धीरज मैं धरि, छिन २ निकसे प्रान ॥

४ परास

आप भला तो जग भला, चित जनि करो उदास ।
परास समै नारी सुनो, राखो पियपर आस ॥

५ पांडरा

रात गँवाई सोयके, दिवस गँवायो रोय ।
पिय विन तन पांडर भई, नीन्द कहांसे होय ॥

६ कनइल

जादिन प्रीतम आय हैं सेंदुर भरिहौं मांग ।
घर घर रंग मंजीठका, चीर कनइली राग ॥

७ बेलि

प्रीति पिया मोहिं दै गयै, और दीन कछु थोर।
अकेलि बेलि निहारती, चितवति पियकी ओर ॥

८ दुपहरिया

कन्त सिधारे ऐ सखी, तिल तिल दहै शरीर ।
जीवन बरी दुपहरिया, नयन ढरै जस नीर ॥

९ दहवर्गा

जबते प्रीतम तज गये, तबते कछु न सहाय ।
दहवर्गा दै बिरह गये, काहि पुकारा जाय ॥

१० चम्पा

अचरज देखो ऐ सखी, प्रीति कही नहिं जाय ।
चम्पा चटक दिखायकै, मधुकर रहा लुभाय ॥

११ सेवती

हम अबला अति दुखित हैं, पिछली प्रीति सुजान।
चरण शंभु सेवति रहौं, कन्त मिलें मोहिं आन ॥

१२ हारसिंगार

जबहीं जीवन हे सखी, पिय देखौं भरि नैन ।
हारसिंगार कहा सखी, सो बोले मृदु बैन ॥

१३ करना

राजकाज सब बिसरिगै, चित जो रहै उदास ।
आयो करना कुछ भला, कन्त हमारे पास ॥

१४ चमेली

प्रात समय पिय जागि हैं, निशिवासर इक संग ।
करि स्नान तन मांजि हैं, तेल चमेली अंग ॥

१५ जुही

पंछी ह्वैकै उडिमिली, जग मोसौं जो जाय।
घट भीतर पिय जूहि ला, नैनन रही समाय॥

१६ मालती

षोडशकला पुनीत है, सो मैं कियो सिंगार।
कनक मालती मन दियो, दियो पियापर डार॥

१७ अडहुल

प्रीतम सब देखन गये, चित्त चकित गये भूल।
निरखत लागु सुहावना, जस अडहुलके फूल॥

१८ इश्कपेच

पीतमको वा चाहिये, आप रहे मुख बेच।
बिरह लाग लिपटी रहै, (जस) इश्कपेचका खेत॥

१९ गुलाबदादी

मनमें करत हों ऐ सखी, गये प्राणपति तेज।
आशक मेरा चित्त है, जस गुलाबदादी प्रसेज॥

२० सूर्यमुखी

शूद्रत्रिया है बिच चूनी, सुख न है बिन कन्त।
सूर्यमुखी होंगे पती, बिरह बानकी अन्त॥

२१ नागेश्वर

तन अभरण ना सह सकै; नित नागेश्वर होइ।
जा दिन पिय परदेश गे, कहा कहूँ सखि तोइ॥

२२ जटाधारी

नहीं गुण चाटक सिखा, नहीं रही कुछ आस।
जटाधारी है शीसपर, खडी पियाके पास॥

२३ कोई

रँगरस ऐ खेलत सखी, सब कोई तजेउ शरीर ।
कोई नहिं सखि आपना, कासे कहौं स्वपीर ॥

२४ कुसुम

हंसगवनि मृगलोचनी, लिये सारिका पास ।
कुसुमी सारी पहनके, खडी पियाके आस ॥

२५ अकवन

आस पिया सेवत रहौं, जनि बिछुरो तनमाहिं ।
पिय लैके अकवन रहो, लागि रहा मनमाहिं ॥

२६ गुलाबवास

कर सिंगार कामिनि चली, सबै सहेली संग ।
साँझ समैं जस देखिये, गुलाबवास ले रंग ॥

२७ सेमर

यतन अनेक सो राखिये, घटभीतर है आस ।
सेवा बारह मास करि, शुक सेमर ले पास ॥

२८ रूसा

कनक कसौटी जानकै, कसिये प्रीतम आय ।
रूसाके पति आइके, रस चाखै चित लाय ॥

२९ गुलाब

प्रेमपन्थ पग रख सखी, जो मन साँचा होय ।
पीयके प्रीत गुलाब है, यश करता नहिं कोय ॥

३० रूपमंजरी

बालापन जो बीतगया, आय बुढापा छाय ।
रूपमंजरी होत प्रिय, फूल तोरि ना जाय ॥

३१ हथकन्दर

फूलचरितके भाव यह, कहै मनोहरवास ।
सब मिल हथकंदर भई, पियबिन बारह मास ॥

इति फूल प्रश्न

हरा रंग बनाना

अंगरेजी नील तोलाभर, सफेदा तीन मासे, हारसिंगारका पानी छटांकभर, सारावेन्द तोलाभर, गोंद छः मासे इन सबको मिलाकर पीसनेसे हरा रंग बन जायगा ॥

नीला रंग बनाना

अंगरेजी नील एक तोला, सफेद तीन मासे, गोंद ३ मासे सबको मिलाकर पीस लो पीला रंग बन जायगा ॥

लाजवर्दी रंग बनाना

लाजवर्दी तोलाभर, सफेदा चार मासे, नील तीन मासे गोंद तीन मासे इन सबको मिलाकर महीन पीसनेसे उत्तम लाजवर्दी रंग बन जायगा ॥

सुर्ख रंग बनाना

सिंदूर दो तोले, गिलैअरमनी नौ मासे, सफेदा तीन मासे गोंद छः मासे. सबको एकमें पीसनेसे सुर्ख रंग बन जायगा ॥

काजल बनानेकी विधि

चीढकी लकडीमें अग्नि लगाकर ऊपरसे थोडासा मिट्टीका तेल डालदो जब धुआं बहुत उठने लगे तब उसको ऐसे यत्नसे ढक दो कि धुआं न निकलने पावे। थोडी देरमें अत्युत्तम काजल बन जायगा ॥

कई प्रकारके रंग बदलना

लकडी लाय पतंगकी, जलमें दीजै डाल ।

फिर अलग कर राखिये, ताको रंग जु लाल ॥
सिरकाके फिर ग्लाससे; दीजै यह रंग डार ।
पीली रंगत होयगी, जैसे हारसिंगार ॥

ता रंगको लै डारिके, गेर फिटकरी नीर । काली रंगत होयगी, हँसन लगेगी मीर ॥ याही जलमें डारिये, सिरका लोह भिगोय । अचरजकी यह बात है,लाल रंग पुनि होय॥

एक रंगसे कई प्रकारके कपडे रँगना

गन्धक, नील और अगिया मँगाकर एक कांचके बर्तनमें राखे, फिर उसमें आठ गुणा पानी छोडे, सब चीजें मिलकर एक समान होजायँ तब कारबोनेट पुटास और नील इत्यादि सब एकमें मिलाकर रङ्ग तैयार करके उसमें सफेद कपडा भिगोवे तो बहुत उत्तम नीले रंगका होजायगा, फिर उसी रंगमें पीला कपडा रंगनेसे हरा रंग हो जायगा और लाल रंगका कपडा रंगनेसे बैंजनी रंग हो जायगा तथा नीले रंगका कागज गेरनेसे उसी दम लाल रंग हो जायगा ऐसा कौतुक देखकर लोग आश्चर्य मानेंगे ॥

कपडा रंगनेकी विधि

गेरुआ कपडा रंगना

पानीमें गेरू घिसै लीजै ।कपडेको भगवाँ रंग दीजै।

किसमिसी रंगना

नासपालके रंग प्रथम, फिर कत्था रँग माहिं ।
ईसबगोल मिलायके, बोर फिटकरी माहिं ॥

खाकी रंग रंगना

गुठली आम भिजावे रात ।कपडा रँगै उठत प्रभात॥

जोगिया कपड़ा रंगना

जितनो लेप कुसुम जल, पचगुन हारसिंगार ।
एक भाग जल फिटकरी, रंगै जोगिया डार ॥

अमुरदी रंगना

कपड़ेको पहिले फिटकरीके पानीमें भिगोले, फिर नीलके पानीमें फिर नासपाल और मजीठके रंगमें रंग ले ॥

सरदई रंगना

पांच भाग हलदीमें रंगकर दो भाग विलायती नीलमें रंगलेवे, फिर दो भाग फिटकरीके पानीमें ईसबगोलका लुआब बनाकर रंग देवे ॥

चन्दनी रंग रंगना

छारछबीला, नागरमोथा, कपूरकचरी, बालछड, सफेद चन्दनका चूरा इन सबको समान भाग लेकर औटा लेवे और छानकर चन्दनी रंग रँग लेवे ॥

आसमानीरंग रंगाना

मासे चार नील ले कच्ची । रँगिये वस्त्र बात यह सच्ची ॥

ऊदा रंग रंगना

प्रथम बीस भाग कसूम जलमें रंगकर फिर नीलकसूम जलमें डालकर फिर रंगे और पीछे पानीमें ईसबगोलका लुआब डालकर रंग डाले ॥

उन्नावी रंग कच्चा

नासपाल फिरि फिटकरी, फिर पतंग रँग माहिं ।
इसबगोल लुआव फिर, कच्चा रंग रंगाहिं ॥

उन्नावी रंग पक्का

प्रथम पांच भाग पीली हरडोंमें फिर दो भाग काठ रंगमें, फिर पन्द्रह भाग पतंगमें, और फिर दो भाग फिटकरीमें ॥

अमौआ सेवती रंग रंगना

प्रथम कपडेको पक्की नीलसे रंगकर धो डाले पीछे हलदीसे फिर नासपालसे, फिर फिटकरीके पानीमें ईसबगोलके लुआबसे रंगे ॥

हुलासी रंग

प्रथम नासपालके रंगमें रंगकर फिर काठके रंगमें रंगनेसे हुलासी रंग होजाता है ॥

आबी रंग

मासे एक नील ले कच्ची । आबी रंगे बात सब सच्ची ।

सुरमई रंग रंगना

रंगके गहरी नीलमें, रँगै कसमल रंग ।
देत खटाई तनकसी, बनै सुरमई रंग ॥

अब्बासी रंग

प्रथम नीलके रंग रँगै, पँचगुन कसुमल नीर ॥
फिर नींबके रस रँगै, सुन्दर बनै जु चीर ॥

सिंगरफी रंग

रंग सिंगरफके रंगमें, फेर फिटकरी नीर ।
ईसबगोलका लुआब दे, रंगे सिंगरफी चीर ॥

शरबती रंग रंगना

हार सिंगारके रंगमें आधा कसूमका रंग मिलाकर कपडा रँगै फिर ईसबगोलका लुआब दे तो शरबती रंग होजायगा ।

पक्का शरबती रंग रंगना

प्रथम थोडेसे गेरूमें रंगकर फिर मुलतानी मिट्टीमें रंगले फिर निर्मल पानीसे धोकर फिटकरीमें रंगकर ईसबगोलका लुआब देवे ॥

सुनहरा रंग

प्रथम कसूममें रंगकर हारसिंगारसे रंगे, फिर फिटकरीके पानीमें धो डाले, सुनहरा रंग हो जायगा ॥

मञ्जीठका रंग

हरा रंगकर फिटकरीके पानीमें रंगे फिर मँजीठके जलमें रंग लेवे ॥

सब्जकई रंग

अरसीको हलदीके साथ महीन पीसकर कपडा रंगे फिर पानीमें साबुन घोलकर उसे उसमें धो डाले फिर फिटकरीका पानी देवे ॥

लाजवर्दी रंग

तोले भर तांबेके चूरको दो नींबूके रसमें डालकर किसी चीनीके प्यालेमें रख दे, तांबेके गलनेपर कपडा रङ्गकर दहीके तोडमें धो डाले ॥

हिनाई रंग

सुपारीको पानीमें पीसकर कपडा रंगे, हिनाई हो जायगा ॥

बेंजनी रंग

प्रथम नीलमें रङ्गकर कसूमकी रैनीमें डाल दे और खटाई भी डाल दे ॥

मूंगिया रंग

पहिले कपडेको फिटकरीके पानीमें भिगोकर निचोड ले फिर हर्डाके पानीमें रंग ले पीछे हर्डा और कसीम दोनोंको मिलाकर रंगै फिर हलदी और पीछे नासपालसे रंगे, मूँगिया रंग हो जायगा ॥

लाल रंग

सेरभर कसूमके जलमें पावभर खटाई डालकर कपडा रंग लेवे॥

वसन्तो रंग

हरसिंगारमें रङ्गकर नींबूकी खटाईके साथ ईसबगोलका लुआब बनाकर रङ्गै और कूंचीसे कसूमके छींटे मार दे ॥

फिरोजई रंग

प्रथम चनक पानीमें रङ्गकर नीलेथोथेके गहरे रङ्गमें रङ्गे कपडा फिरोजई हो जायगा ॥

नारंगी रंग

हारसिंगारका रंग निकालकर फिटकरी डाल दे, फिर हाथसे मलकर झाग उठावे और कपडा रंगै, नारंगी रंग हो जायगा।

धानी रंग

नील, हलदी और फिटकरीके पानीमें यथाक्रम रंगनेसे धानी रंग होता है ॥

जाफरमानी रंग

कसूमका रंग, नील और फिटकरीसे जुदा जुदा रंगनेपर जाफरमानी रंग हो जाता है ॥

फाकताई रंग

प्रथम चार माजूफलमें रङ्गकर आधपाव काठके रंगमें रंगनेसे फाकताई रङ्ग होता है ॥

बदामी रंग

प्रथम थोडेसे कसूमके जलमें रंगकर नीबूकी खटाई देवे फिर हारसिंगारके जलमें ईसबगोलका लुआब देकर रङ्ग डाले॥

फालसई रंग

थोडी नीलमें रङ्गकर कसूमके जलमें रंगै, फिर फिट-करीमें ईसबगोलका लुआब देकर रंगै ॥

फूल गुलाब

थोड़ेसे कसूमके जलमें नींबूका रस डालकर रंगनेसे गुलाबफूल होता है ॥

चम्पई रंग रंगना

प्रथम कसूमके रंग रंगकर उससे आधे हारसिंगारके जलमें रंगे फिर थोडासा फिटकरीका पानी देकर निचोड डाले तो चंपई रंग होगा ॥

गुले अनार रंग

कसूमके दूसरे रंगसे रंगकर हल्दीके पानीमें खटाई डालकर रंगे ईसबगोलसे कलफ करदे ॥

कत्थई रंग रंगना

कपड़े प्रथम हल्दीके रंगमें रंगकर फिर नासपालके रंगमें रंगे फिर फिटकरीके पानीमें ईसबगोलका लुआब डालकर रंगे तो कत्थई रंग हो जायगा ॥

कर्पूरी रंग

हारसिंगारके जलमें रंग फिटकरीका पानी और ईसबगोलका लुआब देवे तो कर्पूरी रंग बन जायगा ।

कासनी रंग

दो तोले पक्की नालको पानीमें घिसकर उसमें कपड़ेको भिगोदे २ घण्टे पीछे निचोडकर छायामें सुखाले फिर दो तोले कसूमकी गादम रंगै, पीछे खटाई और ईसबगोलका लुआब डालकर रंगनेसे कासनी रंग हो जाता है ॥

कपासी रंग

प्रथम टेसूके फूलोंको भिजोकर,जल निकालले,उसमें कपड़ेको रंगकर फिटकरीके पानीमें ईसबगोलका लुआब देवे ।

गुलाबी रंग

कसूममें रङ्गकर खटाईके साथ ईसबगोलका लुआब देवे तो बढ़िया गुलाबी रङ्ग होगा ॥

फोकई रंग

छः मासे कच्ची नीलमें रंगकर कसूमककी रैनिमें रंग ले और ईसबगोलका कलफ चढा दे ॥

काकरेजी रंग

माइके रंगमें रंगकर ढाकके रंगमें रंगे फिर फिटकरीमें गोला देकर छायामें सुखाले फिर पतंगमें रंगकर ईसबगोलका लुआब दे देवे तो काकरेजी रंग बन जायगा ॥

खसखसी रंग

दो सेर पानीमें कसूमकी गाद डालकर कपडा रंगले फिर नीलमें रंगकर फिटकरीके जलमें ईसबगोलका लुआब डालकर रंगै॥

जाफरानी रंग

कसूमकी गादमें रंगकर उससे चौगुने हारसिंगारके जलमें रंगके फिटकरीके पानीमें ईसबगोलका लुआब डाल कर रंगै ॥

तूसी रंग

अच्छा सफेद कपडा लेकर फिटकरीके पानीमें भिगो देवे फिर उसे निचोडकर सुखालेवे, फिर पावभर बबूलकी छाल छः तोले कायफल इन दोनोंके रंगमें रंगे, फिर इसी रंगमें डेढ़ तोला कसीस डालकर रंगै और कलफ करै ॥

तोतई रंग

दश भाग हलदी और एक भाग नील मिलाकर कपडे को

रंगले फिर फिटकरीके पानीके साथ ईसबगोलका लुआब देकर रंग डाले ॥

पिसतई रंग

नील, हलदी, दहीका तोड इनसे अलग रंगकर लुआब देकर कलफ कर लेवे ॥

पियाजी रंग

दो भाग कसूमकी गादमें एक भाग फिटकरी देकर रंगनेसे पियाजी रंग होता है ॥

अंगूरी रंग रंगना

आधा सेर टेसूके फूलोंका जल निकाल ले उसमें कपडेको रंगकर, फिर तीन मासे कच्ची नीलमें रंगै फिर नीबूका रस देकर कलफ कर देवे ॥

अमौवा सुरखा

प्रथम कपडेको गेरूके रंगसे रंगकर साफ पानीमें अच्छी तरह धो डाले,पीछे हलदीके पानीमें रंगे फिर नासपालके रंगमें फिर फिटकरीके पानीके साथ ईसबगोलका लुआब देकर रंगलेवै॥

आर्गवानी

फिटकरीके पानीमें प्रथम कपडेको भिगोले फिर हरडके छिलकोंके जलमें रंगकर पतङ्गके जलमें रंग डालै तो आर्ग-वानी रंग हो जायगा ॥

नील रंग रंगना

पक्की नीलमें रंगकर ईसबगोलका लुआब देकर रंग ले नील रंग हो जायगा ॥

काही रंग रंगना

बहुत थोडी नीलके पानीमें कपडेको रङ्गकर निचोड डाले फिर छटांक भर नासपालके रङ्गमें रंग कर तोले भर फिटक-रीके पानीमें ईसबगोलका लुआब डालकर रंगे ॥

हाथीदांतको लाल रंगना

हाथीदांतको कतर कर किसी पात्रमें डाल दो और उसके ऊपर गौके दही या दूधमें लाल रंग डाल दो। थोडे दिन पीछे हाथीदांत नरम हो जायगा। जब उसमें चाकूकी नोक गडने लगे तभी उसमें लाखका रंग डालकर मूंद दो सात दिन पश्चात् देखोगे तो दांत लाल निकलेगा ॥

हाथीदांतको स्याह रंगना

हाथीदांतको लोहेके वर्त्तनमें भरके आगपर चढा दो और उसमें इतना पानी भर दो जो दांतके टुकडोंसे चार अंगुल ऊँचा रहे और उसीमें अनारका छिलका भी डाल दो। जब खूब गरम हो जाय तब उतारकर ठण्डा करलो फिर उसमें थोड़ा लोहचूर्ण और नीबूका रस डालकर वर्तनका मुख बन्द कर रख दो दश बारह दिनके पीछे देखोगे तो दांत काला निकलेगा ॥

अथ विधानभेद प्रारम्भः

सिंदूर बनाना

शीशा आधासेर जो लीजै, सोरा पाव मिलावै ।
तामें चूना सीप मँगाइके, बडौ ठीकरो ल्यावै ॥
ताको चूल्है आंच लगावै, तामें फिटकरी तोलो दीजै ।
पहर एक आंच मेलै, वाको स्याह रंग जो कीजै ॥
उतारि ठीकरो भूमें ले, ताको रगरा खूब लगावै ।

जब स्याह रंग जौ आवै, लोह करछीसा खूब लुडावै॥ उतारो लाल रंग जो होई। या विधि सिंदूर जाने सो कीज्यो कोई॥

जितना सिन्दूर बनाना हो उतनी सफेदा लेकर कूटकर महीन करलो, फिर चूल्हेपर कडाही चढाकर उसके नीचे मन्द अग्नि जलाकर सफेदाको डालकर चलाते रहो रंग बदलते ही उतारलो और ठण्ढा होनेपर फिर वैसे ही करो इसी प्रकार पांच या छःबार करनेसे सिन्दूरकासा रंग हो जायगा तब ठण्डा करके शीशीमें भरलो।

हींगलू विधि

सो माटीकी सीख जली। ताके मध्य जो दीजे॥
पारा गन्धक ल्याव ताको। बरोबर तौलि खिलावै॥
वा सीपजु माही भरना। तामें मासो हरताल जो बरना॥
एक घड़ा माटी जो लीजै। तामें बालूरेत भरीजै॥
वही रेतमें सीप जु गाडै। तब वाको चूल्हे धरि छाँडै॥
चार पहर लौं आंचमें दीजे। पीछो ठंढो करिकै लीजे॥
सुन्दर सिंगरफ यही विधिहोय। यों चातुरकर लीजयो कोय॥

रूमी सिंगरफ बनाना

गंधक दश तोलेमें नौसादर पांच तोले मिलाकर खूब महीन पीस एक शीशीमें भरे, फिर बालुकायन्त्र करके मन्द अग्निमें चढा देवे, आंच लगनेसे जौहर उड़ जाय तब उतारके ठंढा कर लेवे, पश्चात् शीशीको तोड़कर सिंदूर निकाल लेवे॥

कपूर बनानेकी विधि

तांबेकीइक डिब्बी लीजै। इक तोला फिटकरी भरीजै॥

और कपूर बराबर लावै। दोऊ डिब्बी माहिं भरावै॥
वाके ऊपर संपुट करना। सीजतमें खिचरी कै धरना॥
ताहि आंच दिन होय जो देना। अपने हाथ कपूर कर लेना॥

साजी बनावन विधि

कोई जंगली खार मँगावै। ताको सज्जी माहिं मिलावै॥
तिलकी लकड़ीमें जो कीजै। ताको भरि मटकामें दीजै॥
ताको मुक्ती आंच लगावै। ताको सज्जी ही बन आवै॥

अथ जंगाल विधि

होय जंगाल जो या विधि कीजै। एक पात्र तांबेका लीजै॥
बहिरू कुचला दही मंगावै। ताको पात्र माहिं भरवावै॥
तामें मुरदाशंख मिलावै। बहुर धूपके माहिं सुखावै॥
दिना बीसकी आंच जो दीजै। जंगाले या विधिसों कीजै॥

दोहा—मुरदाशंख जु लीजिये, मुकतौ दही मिलाय।
ताम्रपात्र जो घोलिये, दीजै धूप सुखाय॥

दूसरी विधि—एक भाग तांबेका चरा, नौसादर जो लावे। तांबेका बासनमें भरके, नीबूका रस प्यावे॥ गाड धरे पृथ्वीमें ताको, दिन चालीस प्रमाना॥ खोद निकासै पृथ्वीमेंसे हो जङ्गाल सुहाना॥

जवाखार विधि

सुन्दर खारी नोन मंगावै। ताकौ झीनो बहुत पिसावै॥
ताको भरि भरि मूठा बांधै। पानी सो लैके तिहि साधै॥
तामें लकड़ी बेझ करावै। ताको छाना आंच लगावै॥

तिनको वाटीकी विधि सेंकै । तब जाके बजारमें बेचै ॥
दाम मिलै पल्लायें कीजै । ताहि दशांश पुण्यहू कीजै॥
दोहा-खारी नोन मंगायके, सुन्दर बहुत पिसाय ।
मूठी सेंकै आगसे; जवाखार बनजाय ॥

पीपल बनाना

लाकै उडदचून पिसवावै । तामें राई सेर मिलावै ॥
जलसों लेकर ताको साधै । वाको पीपलसी करि बांधै ॥
बहुरो कारीं मिरच मँगावै । ताको पुट वापर चढवावै ॥
तापर तले हाथ जो फेरै । ताको बेचन जाय अँधेरै ॥
दोहा-उड़द चून पिसवायकै, राई माहिं मिलाय ।
मिरचनका पुट दीजिये, लीजै तेल फिराय ॥

मूंग विधि

खासा शंखचूर मँगवावै । ताहि सिंगरफमाहिं मिलावै ॥
चन्दरसमें त्यहि खरल जु कीजे। मँगासे फिर मनिया कीजि
बहुर धूपमें लेर सुखावै । ताको रेशम माहिं पुहावै ॥
सुन्दर गला बीच वह सोहै । नर नारीके मनको मोहै ॥
दोहा-शंखचूर मँगवाइये, सिंगरफमाहिं मिलाय ।
चँदरस मनिया बांधिये, दीजै धूप सुखाय ॥

चन्दरस विधि

जो कोइ चँदरस साँठ मँगावै । तामें मनिया खूब बनावै ॥
नोपकी साँठ मँगाकर लीजे । ताको कांटो दूरी जो कीजै॥
अंगुल चौडा बेझ बनावै । तामें मनिया नीके नावै ॥
साबरकी खालै जो लीजै । ताको मनियां ऊपर दीजै ॥

शनैः शनैः सारजको फेरै । ताको नहिं जो चमरा गेरै ॥
हलके हाथनसों जो चावै । तौ मनियाके आब जो आवै ॥
पीछे झीनै तार जो लीजे । वा मनियाके छेद जो कीजे ॥
ताकी माला सुन्दर होई । जाको रेशम डोरे पोई ॥

दोहा–चँदरस सौंठ मँगायकै, मनियां खूब बनाय ।
साबरचर्म मज्जन करै, माला तुरत बनाय ॥

कपूरकी माला बनानेकी विधि

जो कपूर सुन्दर मँगवावै । ताको हांडी मांहि भरावै ॥
नीचे वाको आंच जो कीजे । ताके ऊपर जल भरि दीजे ॥
ताको आंच जो मधुरी दीजै। घरी दोयमें उतारि जो लीजे ॥
वाही समय चूक नहिं जावै । लोह को साँचो तुरत मँगावै ॥
भरि भरि तामें मनियां काढै। ताको डारे पोयके छांडै ॥

दोहा–शुद्ध कपूर मँगाइये, भरिये डमरूयन्त्र ।
देकर आंच उतारिये, माला बनै स्वतन्त्र ॥

फिटकरी

श्वेत फिटकरी ल्यावै भाई । ताको मनियां खूब बनवाई ॥
ताकौ स्यार बेझले काढै । ताको ले चँदरसमें छांडै ॥
वाको धूप आंच जो दीजै । ताके मनियां पोहिके लीजे ॥

दोहा–श्वेत फिटकरी ल्याइये, ताके मनियां खूब बनाय ।
चन्दरस ताको दीजिये, लीजे धूप सुखाय ॥

सेंधानोनका कटोरा बनानेकी विधि

अच्छा सेंधानोन मंगावै । वाको घसिके डोल बनावै ॥
फेरा पुरानो कपरो लीजे । तासों घसि कपरौटी कीजै ॥

दोहा-सेंधानोन मँगायकै, घसिके डौल बनाय ।
जल कपडे मंजन करै, सेंधाही बन जाय ॥

कस्तूरी बनानेकी विधि

नफौ टंक जो चार मँगावै । ता सम पीछे पोई ल्यावै ॥
मोथा रस इक पाव जो लीजै । ता सम वाको काढौ कीजै ॥
बबोलको गूँद मंगावै । टंक चार पानी जो करावै ॥
कुटकी मासा दोय जो लीजै । कुटकीको लै वामें दीजै ॥
सबन कूटिकै इकतर करै । एक बाँसकी भोंगली भरै ॥
रंग श्याम जो वा सम कीजै । या विधि कस्तूरी करि लीजै ।

दोहा-नाफौ टंक जो चार ले, पोई माहिं मिलाय ।
गोंद बबूल मँगवायके, कुटकी माहिं रलाय ॥

केसर बनानेकी विधि

एक सेर जो मोठ मँगावै । ताको पानी माहिं भिजावै ॥
ताको तांतू छूटै सोई । जाके विरह फूलिकै होई ॥
तिनको छायामें सुखरावै । ताके तांतू सब झरि जावै ॥
नाकू वाके सब चुनि लीजै । वाकी केसरिया विधि कीजै ॥
पाछे केसू फूल मँगावै । ताको सुन्दर खरल करावै ॥
ताको सब जो सोई लेई । दीजै जलमें उनको भेई ॥
सज्जी पापरखार मँगावै । ताको सुन्दर लैर पिसावै
ताको माहिं सो डारै सोई । मास दोयमें केसर होई ॥

दोहा-विरहा मोठका कीजिये, ताको लेय झराय ।
रँग केसूका दीजिये, पापरखार मिलाय ॥

अफीम बनानेकी विधि

सेर दोय जो पोस्त मँगावै । ताको पानी माहिं भिजोवै॥
ताको खूब जो रगरा दीजै । वाको पानी छानके लीजै ॥
तामें एल्यौलवौ सेर मँगावै । पाव एक जौ कुचला लावै॥
ते सब बांटिके माहिं मिलावै । पीछे कोरो कूंडो ल्यावै ॥
तामें सारी वस्तु जु करना । ताको लेकर धूपमें धरना ॥
आछौ खैरी गूँद मंगावै । ताको लेकै माहिं मिलावै ॥
असली तेलमें खूब पिसावै । गोभीके जो पानहू ल्यावै ॥
ताके ऊपर लै भरकावै । या विधिसों अफीम बनावै॥

दोहा–अमल छोंतरा लीजिये, एल्यो देत मिलाय ॥
और कुचलो गूंदले, अलसी तेल मिलाय ।

पारेका कटोरा बनानेकी विधि

पाव एक पारेको लीजै । तासम तामें कलई दीजै ॥
वाको मोमको साँचो कीजै । ताको ताय साँचे भर दीजै ॥

दोहा–पारो कली मिलायके, दीजै आँच लगाय ।
साँचे भरकै डारिये, करटोरी बनजाय ॥

पारा एक भाग और रांग दो भाग लेकर अग्निमें खूब तपावे फिर काठकेसांचेमें उसको ढाल देवे तो सुन्दर कटोरा बन जायगा ॥

पारेका गिलास

पारा और नीलाथोथा दोनों बराबर लेकर पीस अपने पास रक्खो तो बेला बेली बनै गिलास ॥

कपूरका गिलास

दो गिलास माटीके मँगाकर एकमें कर्पूर भरै और दूसरेको उसमें औंधा इस प्रकार मूंदे कि जिसमें सांक न रहे फिर चूल्हेमें रख नीचे आग जलावे। जब कपूर उडके ऊपरके गिलासमें आजाय और धुआं बन्द होजाय तब ऊपरका गिलास उतार उसकी पिट्टी फेंक देवे इस विधिसे गिलास बनैगा ॥

गन्धकका कटोरा

जिस प्रकार कर्पूर उडानेकी विधि ऊपर कही है उसी विधिसे गन्धकको उडाकर कटोरा बना लो। यह कटोरा पीला चमकदार बनेगा ठंढा होनेपर इसमें दूध भरके पीनेसे हर्ष बल और बुद्धि बढती है ॥

नोनका कटोरा बनानेकी विधि

अच्छो सांभर नोन मँगावै। तामें गाजर बीज मिलावै ॥
वाको सही कटोरा होय। ताको सांचे ढारै कोय ॥

दोहा—सांभरनोन मँगायके, गाजरबीज मँगाय।
सांचौ थापै ताहिको, बने कटोरा भाय ॥

शंखदरियाव विधि

नदसार जो ताको अर्क दूधमें दीजै। राखे दिन सात पांच ॥
जो सोई पाछे जो काढै। ताहि यन्त्र पताली धरना ॥
ताके ऊपर आंच जो करना। ताके नीचे अर्क जौ झरना ॥
वीनो प्यालो भरके लेवै। सोई शंखदरियाव कहावै ॥
कहुँ नाय रोग जो होई। श्वास खांस सफोदर सोई ॥
और गुनहूँ करै अपारा। जाके जाने गुरुगम सारा ॥

दोहा-नौ सब खार मँगायके, अर्क दूध भिजवाय ।
यन्त्र पताली कीजिये, लीजै अर्क चुवाय ॥

इति श्रीविधानभेद सम्पूर्णं

अथ विधिसंयुक्त नाडीभेद

सुमति सरस्वति सुमिरिये । सुधि चित ही आनै ॥
पित्त वात पुनि श्लेषम जानै । देखि धमनीको पहिंचानै ॥
कहीं तिक्त उष्णकी खान । सो नागर परखत यह जान ॥
काकसालू सम चञ्चल नाडी । चपलचित्त जो चलै उघाडी ॥
दूध दही पुनि विश्वा खाय । यह सुभाय जाते सुनि भाय ॥
प्रात समयमें पानी प्यास । जाकी नाडी कफ घर वास ॥
खारो खाय सम्पूरण नाडी । मिष्ट खार फल पित्त पखाडी ॥
पित्त पापिनी होय सन्ताप । बात पित्त पाया होय बात ॥
चलती चलती कुलंग ज्यों कूदै । हंस मयूरकी गति ज्यों सूधै ॥
फूल धनियां जीरा भखिया । वा घूघूकी चाल परखिया ॥
मिश्री गरी सुख जीरा खाय । बात पित्तका भेद बताय ॥
पित्तनाडी कहुँ कफ घर बास । जो जानिये वैद्य घर हुलास ॥
मक्खी ही आवै जो भारी । फिर पीछे कफकै घर प्यारी ॥
पानी शरदी होय अलाप । पित्तनाडी यह लक्षण कलाप ॥
पेट रक्त जो धमनी जान । बातपै कोप शीतल खान ॥
शीघ्र चलै शीतलता आवै । बात पित्तको भेद लखावै ॥
भूखमें कोखै चपल होय चाले । रक्त उष्णकी जान सँभाले ॥

तप और निरखा बहुत अहार। सो वेगवती महावेग अपार ॥
मिष्ट अरु दूध दही पुनि खाय। पँछी कुलंग जु कूदे ताय ॥
शीतल भोग कपोत ज्यों जावै। जप नाडी कफके घर आवै ॥
कफश्लेष्म दोनों एक रास। शीत बात खाग्रा है श्वास ॥
क्षुधाहीन पुनि बल बहु देहा। शुभ नाड़ी पलमें न सनेहा ॥

त्रिविध नाड़ी लक्षणं

आदि चलै तौ पित्त कहीजै। मध्यमा श्लेषम गनि लीजै ॥
अन्त हो सो वायु विचारै। त्रैविध नाड़ी लक्षण सारै ॥
श्लेष्मवन्त नाड़ी परभात। दूजै जा मिथ्या पित जात ॥
तीजै यामके वायु बखानि। पुनि संध्यामें पितही आनि ॥
नागरसुरभि वायुकी नाड़ी। चपलचित्त ज्यों चलै उघाड़ी ॥
मन्दमन्द श्लेषमगति संध्या। लक्षण तीनि नाड़िका वंध्या ॥

सोरठा—नाड़ी एकसौ सात, जानि जानि चौबीस तन।
प्रथमहि जानौ जात, आवहु वेगुरु बाहिनी ॥
दोनों दोन जनाय, थानक मिष्ट कुरंग ज्यों।
पुनि आवै यह भाय, मेंढक ज्यों पक्षी फिरै ॥

रहि रहि पुनि हलकेही हालै। नाड़ी प्राण नाशिनी चालै ॥
अति क्षीणबल होय व शीत। सो जीवती जो करै निरजीत ॥

दोहा—जुरकै कोपै धामिनी, वेग उष्णता होय।
काम क्रोध पुनि वेग होय, चिंताक्षीणमय सोय ॥
मन्दागति चपली चलै, धातु क्षीण हो जाति।
अंश पूर्णते उष्णता, भारी गरई भाति।

दीपक अग्नि लघु बहै, पुनि वेगवती भेद ।
सुखमाहीं थिरता हवै, बलवंती उनभेद ॥
मंदमंद पुनि शीतता, व्याकुल थिरता धाम ।
वदति धामनी सुखमना, चलै क्षीण यह नाम॥

सोरठा-पंच भेद यह जान, लक्षण नाड़ीके कहे ।
समझ बात उनमान, फेर चिकित्सा कीजिये ॥
भार१खेद२मल३मूत्र४, चिहुट५कूरकर६मानिये
चिह्न लेत सब जानि, आठनना लक्षन सबै ॥
व्याकुल मल पित देव, भार खेद मल शीलता।
शीतल सुखमें लेन, चिहुट कुसुममें थीरता ॥
भोजन मिष्ट करे, न ताते सेवे पित्तमा ।
अथवा गान धरेन, पित लक्षण होय जिस थकी ॥

पित्त दग्ध जो किसीके होवै । ताते नाडी वह थिर जोवै॥
देह महाबल तन जो घटै । रोमकमें क्षुधा पाणिमिटै ॥
बात दग्धकी नाडी चंचल । रक्त विकार होवै अंचल ॥
इनपर देखौ नाडी सारी । पेखि वैद्य तुम करो विचारी ॥

दोहा-पित्त पंगु कफ पंगुहै, रक्त धातु पुनि जाय ॥
वायसी नाडी चल, ताकी पित्त घर थाय ॥

काम क्रोध पुनि होय स्वकीडा। वायथ की पुनि होवे पीडा ॥
प्रात समय लेन होवे क्षीण । तन जो छीन रोग होयक्षीण॥
पित्त नाडी पता उतपात । स्वर भंगे मन्दा गति जात ॥

तीक्षण खारश्वास पुनि थाय । धातु क्षीण होय निश्चित जाय॥
कण्ठा शोष अधर पुनि सूखै । खांसी होय कण्ठ बहु दूखै ॥
इत्यादिक लक्षण ये जाने । वैद्य धन्वन्तरिके सम माने ॥

इति पित्तनाडी लक्षण सम्पूर्ण

वायुनाडी लक्षणवर्णन

दोहा—शनि शनिसों नाडी चल, बकरतही पुनि बीत ।
हृदय धवल देह शीतता, क्षीण करै भय भीत ॥
क्रोध उठै गह काम थिर, चिन्ता भयमद छीन ।
मन्द अग्नि मंद चलै, वायु झिकोला दीन ॥
रोधरूप पराक्रोध अति, शीत विचलता नैन ।
देह थके अरु बल घटे, भोजनकी नहिं चैन ॥

इति वायुनाडी भेद

अथ कफनाडी लक्षण

हंस सखी एकै गति हीडै । तब नाडी कफके घर मीडै ॥
भारी होय शीतलता राखै । थिर थिर बहति मृत्यु सोई भाखै
तप्तोद्वेग वृद्धिकी नारी । सुख राखै कफनाडी प्यारी ॥
सन्निपातको भेद लखावै । सो नाडी कफके घर जावै ॥
दोहा—रहि २ नाडी जो चलै, सो वह प्राण हराय ।
पुनः छीन शीतल चलै, सो यमघर ले जाय ॥
ज्योतिहीन श्वेत होवै आभा । पूरन हो बतावै साभा ॥
चक्र विलोक नेत्र जे जोवै । कफ कोपै यह लक्षण होवै ॥

इति कफनाडी भेद

त्रिदोषनाडीलक्षण वर्णन

दोहा—तीतर लवा बटेरसी, इनहीं गति जो जाय ।
नाडी सोई त्रिदोषकी, रोगी तन क्षय जाय ॥
तन्द्रा निद्रा मोहवश, व्याकुलतामें आय ।
भग्न नेत्र अरु अरुन पुनि, रक्तवर्ण हो जाय ॥
नेत्रदोष बलि जानिके, वह त्रिदोष पहिचान ।
उष्ण नाडि पुनि तापकी, रुधिर अधिक सुख मान॥
गरुई सामथी धसी, तामें हियो बताय ।
परिहा मुखकी छबि भई, कृष्णा फिर पुनि भाय ॥
विकल नैन हों देहमें, सुख नहिं पावै थाय ।
मैन थोर उतफूल वाय, उन्मादहु तिथि धाय ॥
रोगीका रोग जानि, वैद्य विधि साधे ॥

इति नाडी भेद

अथ वैद्यकभेद प्रारम्भः

छन्द—नाडी भेद कह्यौ मैं तोसों, नहिं राख्यो कछु छानै रे । अब वैद्यकको भेद बताऊं; सो सुनियो दे कान रे ॥ श्रीधन्वन्तरि वैद्यक सारी, जाके भेद जो भारी रे और निदान वैद्यक जीवन में; कहीं धन्वन्तरि सारी रे ॥ गुडकी गोली तीन बनावै, नींब पान ले ढाई रे ॥ बांधि२दै रोगी सोगी, जो कोई खावै वाही रे ॥ हरै ताप अरु रोग तिजारी, सीया दाहरु नहरू रे। सोंठि सुहागा सिंगरफ सींधौ, बायबिडंग लै कासी रे ॥ हरदी मिरचा हींग पीपली, चित्रक और जमाली रे । बांटि

कूटिके गोली बांधै, खासा ठंढे पानी रे॥एक राती परमान बतायो, दियो रोग सब जारी रे। कफ अरु खांसी बाय चौरासी, देवे भात उदासी रे॥ अष्टदाह बँधा जु रंगवावे; सात दिनमें जा खांसी रे। और उपाय कहूँ मैं तोसौं;सो सुखको अति करता रे॥सोनामक्खी रेवतचीनी और निसोत मिलावै रे॥ बांटि कूटकै कपडे छाने, डेढ पैसाभारं लावै रे॥ भैंसि दूधसे डेढा मँगावै, ताको लै औटावै रे॥और तीसरो ल्याह जु तामें, पाछे लेर उतारै रे॥ भरै कटोरी पुडिया डारै, पहर रातिको प्यावै रे। भानु उदयमें रेचक लागै, दिशा मुहूरत जावै रे। दोय पहर जो राखै रेचक, तूरी दालि रंधावै रे। एक रस तापतिली खांसीमें, मिरची नोन मिलावै रे॥ भरै कटोरा ताको पीवै, ठंढी छाया सोवै रे। मुहुर्त पीछे रेचक लागे, रोग दोष सब खोवै रे॥भात दही अरु मिश्री हूँसो ताके ऊपर खावै रे।और उपाय कहूँ मैं तासों; होय मरद बहु भारी रे॥ लाल शरीर शिंगरफसी देही; बली भीमसों होवै रे। तालमखाना नगद बावची, ईसबगोल मँगावै रे॥ नागर मोथा अमली चीयां,बीजबन्ध लै पावै रे। कौंचबीच मस्तंगी लेना, धोली गोंद मिलावै रे॥ बांटि कूट कारि कपड़े छानै धरै एकन्तर सारी रे। घृत औ खांड बराबर लेना,भर राकै इक पारी रे॥ तीन दिनालों कोठी राखैं, पीछे भोग लगावै रे।काटै व्याधी जीवनकी सारी,दिन इकइसलौ खावै रे॥ जाकी लेकै गोली बांधै, पांचपैसा भारं भारी रे। पुष्ट शरीर सिंगरफ देही नर, खावै भाव नारी रे॥

शिरका गंज दूर करनेका यत्न

दोहा—हाथीदांत जरायके, सुरमा ले सम भाग ।
मलिये सिरपै मेलके, अजा दूधके झाग ॥

दूसरा यत्न

सहत चिरमिटी लायके,लीजे तिन्हें पिसाय । जहां गंज सिरबीज हो, दीजै लेप लगाय॥ उडै गंज दिन सातमें,कीन्हें यही उपाय । घुँघरीले काले उगैं,केश तहां सुख पाय ॥

देहकी दुर्गंधि दूर हो

कदम्बके पत्ता और अर्जुनफूल तथा लोधकी जड इन तीनोंको पीसकर उबटन करनेसे देह दुर्गन्धि दूर होगी ॥

शिरवायुका उपाय

मासा भरि तौ राई लीजै, तामें बच मिलवावै रे ।
मोठ भरी अफीम जो लीजै, माथै लेप लगावै रे ।
मेटै दुःख समाधि जो होवै,फेर दुःख नहिं पावै रे ॥

रूलाका उपाय

कुकुरभांगरा बीज मँगावै, ताको खूब बनावै रे ।
बांटि कूटिकै शिर पर डारै,मिटै दुखतही रूला रे ॥

आधाशीशीका उपाय

गोघृतसेती सोरा बाँटै, ताको नास जो दीजै रे ।
मिटै दुःख तुर्तहि सब भारी,यह उपाय जो कीजै रे ॥

कान दूखनेका उपाय

बीकामाली तुरत मँगावै, घृतमाहीं औटावै रे ।
वाको लेकै भरै कानमें, तुरत दुःख मिटि जावै रे ॥

मुखछायाका उपाय

आंबा हल्दी लीजै प्यार, सैंधे माहि मिलावै रे ।
कूट बरोबर भेना सारी, फिर नींबूरस पावै रे ॥
करै लेप ऊपर मुख जबहीं, तबहीं छाया जावै रे ।

मस्सा दूर होय

तज धनियां और लोध इनको बराबर लेकर पीसै और मस्से तथा मुहासों पर लेप करै तौ दो चार रोजमें अच्छे हों॥

कील जाने का उपाय

सरसों सेंधौं लौंग बचा जो, ये औषध सब लेवै रे ।
करिहैं हानि कालकी तबहीं,मुखपर लेप लगावै रे ॥

नेत्र दूखनेका उपाय

बदाम कपूर रती भर लावै, ताको खूब पिसावै रे ।
भरि अंगुली अंजन जो आंजै,दुखत आंखि रहि जावै रे॥

कण्ठवेला का उपाय

कंठोलकंद्र कहींसों लावै, ताको घसै लगावै रे ।
कंठमालको दुःख हरै सब, दिना सात लगवावै रे ॥

हूक जानेका उपाय

चनाको खार चना भरि लीजै । खांड मेलिके गोली कीजै॥
शयन समय भक्षण लै करना । प्रात समयमें शुचिसों रहना॥

दाढ दूखनेका उपाय

सुन्दर भात सुगन्धिको रांधै, तामें शक्कर मिलावै रे ॥
गोघृतसेती भोजन करगा, रवि परै तब खावै रे ॥
भोजन कर कुल्ला नहिं करना, डाढ दुखत रहि जावै रे॥

विभूतिका उपाय

पवांड बीज ठंढेनकी लकड़ी, घसिकै लेप लगावै रे।
जाय विभूति अंगकी, सुबही,तुरत समाधि है जावै रे।

बवासीरका उपाय

गंगापार तमाखू लावै, चैन माहिं मिलावै रे।
बांटि कूटिकै पुडी जु बाँधै, गुदामें धूनी लगावै रे॥
मुसको रोग मिटैगो तबही, रोग बवासीर जावै रे।

हिलता दांत दृढ होय

लोहा चून आलका फल ले ताको राख बनावै रे॥
निशि उठि ताको मंजन कीजे,हिलत दांत रहिजावै रे॥

व्योंचीका उपाय

गल्या सींग पारि तूली जो आवै, ताख लेकै आवै रे।
बांटिकै कपड़े छाने, घीसों लेप लगावै रे।
व्योंची रोग मिटैगो तबहीं, दिना सात जो लावै रे।

नाहरूका उपाय

सांप कांचली लाय कहींसे, गुडमें गोली कीजे रे।
एक रतीभर डार वामें, रविदिन वाको दीजे रे।
मेटै रोग नाहरू तबहीं, यह उपाय जो कीजे रे।

बिवाईका मरहम

बना हुआ मस्टर्ड २ ड्राम, ग्लिसराइल १ ड्राम,स्परमैटा-ईसी १॥ ड्राम थोडे गरम रहे किये हुए एकमें मिलाकर खरलमें घोंटै जबतक गरम रहे। ठण्डा होनेपर काममें लावे॥

बिना घावको बिवाई

तारपीनका तेल चौथाई पिंट कपूरके टुकड़े एक औंस

कैजपटका तेल दो ड्राम मिलाकर उस बिवाईपर मले जिसमें घाव न हुआ हो ॥

दूसरी विधि

नौसादर डेढ़ भागको उत्तम सिरका आधे भागमें खरल कर ऊपर लिखी विधिसे लगावे ॥

तीसरी विधि

सलफेट आफ कौपर एक ड्रामको तीन औंस पानीमें हल करके लगावे ॥

नकतीर बन्द होय

गौका सूखा गोबर मंगाकर खूब महीन पीसकर सूंघे तो नाकसे बहता लोहू थम जायगा ॥

पानी थोड़ासा गरम करके हाथ और पावोंको उसमें धर दीजिये नाकका लोहू थम जायगा ॥

पसीना रोकना

थोड़ासा नौसादर लाकर पानीमें मिला देहपर मले तो पसीना नहीं आवे ॥

वमन करना

तरबूजके फलकी जड़को पीस पिलानेसे वमन लगता है ॥

जीर्णज्वरका उपाय

रोगीके देहमें बकरीका रुधिर प्रवेश करनेसे जीर्णज्वर दूर हो जाता है ॥

श्वासका उपाय

स्याहीसोखा कागजको शोरेमें भिगोकर सुखाओ और

रातको जिस गृहमें रोगी सोता हो उसमें उसे जला दो तो श्वास बन्द हो जायगा ॥

दांतके कीडे दूर करना

हरडका चूर्ण सहतमें मिलाकर तांबेके पात्रमें भूनके गुटका बना दांतके नीचे दाबे तो दांतोंके सब कीडे मर जायँगे ॥

दूसरी विधि--दांतोंके नीचे सेहुंडकी जड दाबे तो कीडे मर जायँगे ॥

तिसरी विधि--गुञ्जाकी जड मँगवाकर कानमें बांधे तो दाढके कीडे तुरन्त झरजायँ ॥

बाल उगनेकी औषधि

तिलके फल गोखरू लेव, सेंधौं माहिं मिलावै रे ।
तिल्ल खोपरा लेपन करना, तुरत बाल उगि आवै रे ॥

जिस मनुष्यके शिरके बाल गिरने लग गये हों उसको उचित है कि सोते समय सूखा नमक पीसकर सिरमें मललिया तो बाल जम जायँगे ॥

धातुबंधका उपाय

ईसबगोल मंगावै सुन्दर, ताको राति भिगोवै रे ।
प्रातसमयमें मिश्री डारै, नींबूरसहि निचोवै रे ॥
दिना तीन जो पीवै या विधि, बंध धातु ह्वै जावै रे ॥

गरमी घावकी दारू

अन्त छाल चोरकी लावै, ताको ले औटावै रे ।
भीर मटको जल नीरको राखै, चौथो भाग उतारै रे ॥

तामें डारे खेजड आदी, टुक छ आंच लगावै रे ।
दोपैसा भर प्यावै वाको, गरमी रोग मिटावै रे ॥

सूजाक खोनेकी विधि

चन्दन तेल चार बून्द, दश तोले पानीमें डालकर सात दिनतक जो कोई पीवे तो उसके फिर सजाक नहीं होय ॥

कानके बहरेकी औषधी

धोली दूब कहींसों लावै, घृत माहीं औटावै रे ।
ताको लेकर भरै कानमें, तुरत बहिर मिटजावै रे ॥
काढा कर दशमूलका, लेवै तेल पकाय ।
डारत ही यह कानमें, बहरापन सब जाय ॥
ओंगाकी जड लेय मँगाय । तामें मनसिल देय मिलाय ॥
सहत संग जो बहरा खाय । सुनन लगे बहरापन जाय ॥
सरसों ओंगा और कटेरी । दूध मिलावै इनमें छेरी ॥
लेपन करै लौरपर जोई । लौर बढ़ी ताही छिन होई ॥
गजपीपल वच कूट मँगावै । इनमें फिर असगंध मिलावै॥
भैंस घीवमें लेय मिलाय । लेपै करत कान बढजाय ॥

धुन्धको उपाय

कायफल ले अरु जस्त मिलावै,मेहँदी रसमें खरले रे।
दिना सातलों खरल जु कीजै,पीछे अञ्जन दीजै रे ॥
धुंध फुली अरु जाला जावै,दुखत आंख मिटजावै रे॥

आंखका जल बन्द होय

सफेद साँठकी जडको घीमें पीसकर आंखमें अंजन करे तो टपकता हुआ जल रुक जाय ॥

दृष्टि बढाने का उपाय

वर्षाऋतुमें मकोय जड़ सहित लाकर रख छोडे, काम पडनेपर उसको तेलमें पकाकर एक महीने नित्यप्रति जो खाय उसकी दृष्टि गीधकीसी तेज हो जाय ॥

पथरका इलाज

एक टंकभरि साजी लीजे, तामें छांछ मिलावै रे ।
बांटी कूटि करि ताको पीवै, मूत्रकृच्छ्र मिटजावै रे ॥

बन्धकुशाद नामर्दका इलाज

बीज उटंगन पाव मगावै, ताकी खीर रंधावै रे ।
भेड दूधमें करना वाको, इन्द्री लेप लगावै रे ॥
बिंदु कुशाद मिटै तबहीं, नामर्द मर्द ह्वै जावै रे ॥

नामर्दका उपाय

श्वेत कनेरकी जड मँगवावै, दूध माहि भिजवावै रे ।
गरम जो करके दही जमावै, ताको घी निकसावै रे ॥
लौंग जायफर जावित्री ले घृत माहिं भिजवावै रे ।
दिन इक्कीस दूधमें राखे पाछे अर्क चुवावै रे ॥
धरे पताली मन्त्रहिं वाको सबै अर्क निकसावै रे ।
नागरबेल पान एक लेना ताको लेप लगावै रे ॥
उलटा सुलटा पान जो करना इन्द्री लेप लगावै रे ।
दिन तीन ले पट्टी बाँधे नामर्द मर्द ह्वै जावै रे ॥

वाणी सुधार

पीपल सोंठ बहेरा लाय । त्वक अरु सेंधा नमक मँगाय ॥
गऊ मूत्रसँग पीस पियावै । किन्नरसम कलरव सो गावै ॥
मिश्री सोंठ अरु सहत मिलाय । चाटें जो किन्नरसम गाय ॥

निर्गुंडी जडको कर चूरन। तिलके तेल पकावै ॥
चाटै या हि अनोखी औषधि। कोकिलसम सो गावै ॥

पथ्या घृत

पीपल हरडै सोंठ वच; सेंधा मिरच मिलाय।
तोले तोले लेय सब, और सँहजना लाय ॥
बाइस तोले लेय घी, चौगुन दूध मिलाय।
अग्नि चढाय पकाइये, जबतक दूध जलाय ॥
जो नर पीवै नित्य यह, पावे बुद्धि अपार।
एक बार यह बात सुन, क्योंहूँ नहीं बिसार ॥

पुत्र होनेका उपाय

कहूँ बात मैं तोसूँ सारी; सोइ पुत्रको करता रे।
पारस पीपरमूल मंगावै, मऊ घीवसों पीता रे ॥
पुत्र होय पराक्रम लीये, होय रांड मरे भरता रे।
पुत्र उपाय कहूँ मैं तोसूं; बांझ पुत्र होय आवै रे ॥
दूध खीर जो गउको लेना, दिना तीनि लौ खावै रे।
शियलिंगीको बीज मँगावै, गुड गोली निगलावै रे ॥
न्हानेके दिन तीनि जो बीतै, पुरुष संग बतलावै रे।

अथ गर्भ गिरानेका उपाय

अण्डी जडको कहूँसों ल्यावै, गन्धक लेप लगावै रे।
अंगुल अंक ९ भषा करि लेना, मूत्र मार्गमें राखै रे ॥
दिन तीनि जो या बिधि लेना, गर्भनिपातसु होवै रे।

अथ स्त्रीके फूलआनेका उपाय

देवदारु अरु मूढा पातौ, सेर जलमें औटावै रे।

पाँच पैसा भरि पानी रहै, तब लै वाकूं प्यावै रे ॥
दिना तीनि जो या विधि पीवै, वाहि फूल जो आवै रे॥

शुद्ध रजोधर्मका उपाय

तन्दुल दूध समान ले, पिस पकावे तोय।
कामिनी बल अनुसार निज, पिवे रजस्वला होय ॥
बीट कबूतर सहत सँग, जो नारी पी लेय।
होय रजस्वला शीघ्रही, मूलदेव कह देय ॥

बांझ करनेकी विधि

जब नारी रजधर्मसे चौथे दिन शुद्ध होय।
पांच दिवस जड पानकी, घोट पिये संग तोय ॥

स्त्रीका बहता लोहू रुके

सरपुंखा जड पीसिये, तन्दुल नीर मिलाय।
कर्ष मात्रके पियतही, बहत रुधिर थम जाय ॥
लाल चन्दन अरु दूध घृत, मिश्री सहत मिलाय।
पिवे रुधिर थम जायगो, है यह सहज उपाय ॥

पैर थंभनेका उपाय

बीज कांकड़ी जड़ी डाभकी, वाको लेर मिलावै रे।
मासा दोय जो गेरू ठारे, वाको घोटिके प्यावै रे ॥
थमै पैर जबहीं तब प्यावै, तुरत समाधि ह्वै जावै रे।

वधायवाकी औषधि

जहर बिजौरा लाय, माहिं बिजौरा मेलिये।
दश दिन घोटि पियाय, बडे छोड होय जीवको ॥

मिरगीका उपाय

साँप कांचली लीजिये, हांडी मांहिं भराय। मुख ऊपरसों

मूंदिये चूल्हे देव चढाय ॥ बीच छिद्र इक कीजिये, ताके नाक लगाय । धरिकै खैंचे नाकसों, वाके शिर चढ जाय ॥ मरेजु कीडा शीशको, मृगीरोग सब जाय । है अचेत रोगी परे, ऊपर जल छिडकाय ॥ धरिकै दाबे मुदगर, ऊपर नीर सिंचाय । तीन पहरला राखिये, पीछे चेत कराय ॥

गलतकोडका उपाय

श्वेत काथ जो लीजिये,जायपत्री बेत मिलाय। आठसहस्र जो लीजिये, नागरपान मँगाय ॥ ताके रससे खरलिये,गोली मोठ समान । रोगीको तब दीजिये, दिन इक्कीस प्रमान ॥

अग्निसे जले हुएकी दवा

चूना पानी और मिट्टीका तेल इनको एकमें मिलाकर अग्निसे जली हुई जगहपर लगा दो तो तुरन्त जलन बन्द होकर ठंढक आजायगी ॥

हिचकी दूर करनी

पावभर पानीमें ४ मासे राई छोडकर आगपर रखकर गुन गुन कर पीस छानकर तैयार कर लो और जिसको हिचकी रोग हो उसको पिलाओ तो तत्काल हिचकी बन्द होकर निंद्रा आजायगी ॥

हरतालकी भस्म

थूहरकी डंडी लाकर उसको पोली करलो और उसके भीतर हरताल भरलो बिनुआ कंडाकी आंचमें पहरभर रखनेसे हरतालकी उत्तम भस्म बनजायगी ।

मृगांक बनाना

गंधक और पारेको खरल करके गोलीबनालो और उसके

भीतर सोनेकी डली रख दो, इस गोलीको कोयलोंमें रखकर पहरभरतक धौंकनीसे धौंके तो मृगांक बन जायगा ॥

पारेकी भस्म करना

साफ पारा चार रत्तल, गंधकका तेजाब तीस औंस, नमक डेढ रत्तल, नौसादर आठ औंस, । पहिले दो रत्तल पारा कांचके बरतनमें ऐसिडके साथ डाले और बरतनको गरम रेतीमें आधा गाड़कर पानी सुखा देवे जब सूख जाय तब ठंढा करके बाकीका दो रत्तल पारा उसमें मिलाकर खरलमें घोंट कजली बनावे फिर उसमें नमक मिलाकर खूब घोटे और लुगदी बनाकर डमरूयंत्रमें रखदे और उस यंत्रको आधा रेतीमें गाड़कर ताव देनेसे नीचेकी शीशीमें उड़कर ऊपरकी शीशीमें सफेद रंगका सत जा जमैगा उसको निकाल कूट छान एक गैलन पानीमें नौसादरके संग भरकर अच्छीतरह गरम करले और फिर उसको मत चलावे जो गाद नीचे बैठ जाय उसको निकालकर साफ पानीसे धो डाले और उसमें नौसादरका पानी डालकर देखै जो सफेदीमें कम हो तो सुखाकर खरलमें डाल पीस डाल और उसमें गरम पानी डालकर खूब हिलावे, फिर ऊपरसे मैले पानीको नितार डालै इसी तरह जबतक नीचे गाद जमती जाय तबतक किये जाय पीछे उसे सुखाकर बारीक पिसावे इसमें रसकपूरकी मिलावट रहती है जो इसका रंग चूनेकासा सफेद हो जाय तो समझ लें कि अच्छी भस्म हो गई नहीं तो उसमें कुछ मिलावट समझे ॥

हरताल बनानेकी विधि

पारा एक भाग, नीलेथोथेका तेल दो भाग इन दोनोंको

खरलमें घोटके बारीक करलो और गरम रेतके यन्त्रमें रखकर अग्नि दो, सूखनेपर गरम पानीमें धोकर सुखालो पीला हरताल बन जायगा ॥

रसकपूर बनानेकी विधि

जद मुलतानी मिट्टी फिटकरी नमक दरियाकी सफेद रेती और पारा सम भाग तथा फटकिया सम्बूल आधा भाग सबको जुदा जुदा महीन पीसकर छान लो और पारेमें मिलाकर डमरू-यन्त्रमें रखकर चार पहरतक धीमी आंच देवे फिर बीस पहर-तक बबूलकी लकडीकी तीव्र आग देवे ऐसा करनेसे ऊपरके बर्त्तनमें रसकपूर जम जायगा । ठंढा होनेपर निकाल कर पास रक्खो, बनाते समयमें मुँह और आँखोंको धुएँसे बचालो, क्योंकि धुआं लगनेसे मुँह सूज जाता है ॥

रसकपूरकी डली बनाना

लाय आतिशी शीशी एक । रसकपूर भरिये ठेक ॥
ऊपर कर कपरोटी दीजै । यन्त्र बालुकामें रख दीजै ॥
नीचे दीजै आग लगाय । ऐसे रसकपूर उडजाय ॥
डार सलाई शीशी देखो । पेदे रसकपूर नहिं पेखो ॥
भर कपूररस दीजै और । जासूं फेर रह नहिं ठौर
चार बार ऐसेही करिये । थोडो थोडो लेके भरिये ॥
जो भरिहौ तुम एकहि संग । शीशी फूटजायगी तंग ॥
कपरौटी करदीजै दूर । शीशीको कर दीजै चूर ॥
जो ऐसे करिहो तुम भाई । रसकपूर डल्ली बनजाई ॥

पारेका तेल बनाना

पारेको गन्धकके तेजाबमें डालकर धीमी आगपर गरम

करलो तेजाबके सूखनेपर पारेका चून हो जायगा; उसमें पारेके समान और तेजाब डालकर पहलेसे तेज आग दो जब तेजाब सूख जाय तब फिर उतनाही तेजाब डालकर और भी तेज आग लगाओ, इसी तरह चौथी बार तेजाब डालकर जब आग लगाओगे तो तेजाब न सूखेगा, तेलके समान गाढा रहैगा यह जस्ताके सडानेमें काम आता है, इस कामके करनेमें धुएँसे आंख नाकको बचाता रहे ॥

गन्धकका तेल

आंवालासर गन्धकको एक कांचकी शीशीमें भरकर दूसरे बोतलका मुँह उससे मिलादो और गन्धकवाली शीशीको ऊपर और खाली शीशीको नीची करके वर्षाऋतुमें गड्ढा खोदकर घोडेकी लीदके बीचमें गाड दो, आठवें दिन लीद बदल दिया करो वर्षाऋतुके पीछे जो निकालकर देखोगे तो नीचेवाली बोतलमें तेल मिलेगा। गन्धकका तेल खुजली आदि त्वचाके रोगोंको लाभदायक है। इसकी थोडी मात्रा विषूचिकामें भी गुणकारक है ॥

हरतालका तेल

तबकिया हरताल एक छटांक महीन पीसकर हाथभर लम्बे चौडे कपडेपर लगा दो और ऊपरसे आकका दूध डाल दो इसी तरह नौ दिनतक प्रतिदिन आकका दूध डाल दिया करै। नौ दिन पीछें कपडेके टुकडे कर करके एक आतशी शीशीमें भर दे और दूसरी बोतलका मुख उस आतशी शीशीके मुखसे मिलाकर जोड दे, और लकडीके पतले २

छिलके रखकर आग लगा दे ठंढा होनेपर खोल ले तो नीचेकी शीशीमें तेल निकल आवैगा ॥

दूसरी विधि—हरताल एक तोला, पारा नौ मासे दोनों को महीन पीसकर जुहीके पत्तोंकी लुगदीमें रखकर पातालयन्त्रसे तेल निकालो, जानना चाहिये कि जुही एक छोटासा झाडदार पेड गेहूँके खेतमें होता है, इसके पत्ते छोटे और मोटे होते हैं डालियोंपर तिरखूँटे फल होते हैं, इसको चीरनेपर दूध निकला करता है ॥

नाहरूपर लेपन

साँप काँचली लीजिये; काली मिरच मिलाय ।
ठंढे जल लेपन करे, रोग नाहरू जाय ॥
पीली कौड़ी बारिये, मिरची राल बढ़ाय ।
गोघृतसों लेपन करे, रोग नाहरू जाय ॥

इति वैद्यकविद्याभेद सम्पूर्ण

अथ मन्त्र

ॐ नमो आदेश आदिपुरुषको गोविंद नगरसूं हनुमन्त आया गाजन्त आया घोरन्त आया किलकंत आया सवा मन की साँकल तोडंत आया सारका चरण चापन्त आया लोहका दण्ड मारन्त आया रूखा वृक्ष बाग बावड़ी उखाडन्त आया कुवां तालाब फोडन्त आया गढ कोट ढावन्त आया चलो २ हनुमन्त बीर न चलै तो करतलश्यामतीकी आन न चलै तो शुकदेव यतीकी आन न चलै तो मोगडं यतीकी आन न चलै तो लक्ष्मण यतीकी आन न चलै तो हनुमन्त यतीकी आन न

चलै तो स्वामी अचलपुरकी आन न चलै तो महादेवकी जटा न घाव छाले तीन पावकी लापसी इक्कीस पावका बीडा वलि तुम्हारी ल्यों किया करायापर चलो देव दानवपर चलौ परी दुश्मनपर चलौ भूत प्रेतपर चलौ भैसासुर खइपर चलौ इहारिंपर चलौ चौंसठि जोगिनीपर चलौ डंकिनी शंखिनीपर चलौ बावन बीरपर चलौ हमार हकाल्या नहीं चलै तौ सीता सतवन्तीके पान हलाल ॥१॥ ॐ बड़ा बलवन्तकारी नौखंडमें ज्योति तुम्हारी भीमकी भुजा उखाड़ी मेरुपर्वत मस्तक धर लाया जब छोड़ा जबी आया लवंग सुपारी जायफल पच पूजा ब्रह्माकी माकी ममना । ॐ नरसिंहका माथदेव अनन्त शीश चढय आव हनुमन्त रोम रोममें आव हनुमन्त चाम चाममें आव हनुमन्त नव नाडी बहत्तरि कोठामें श्रीहनुमन्त सभाते सुराजा रामचन्द्रजीकी कार्यसा-स्वाजन माते सो हमारा सारिये देखो आय वीर हनुमन्त तेरे मन्त्रकी शक्ति चलो मन्त्र ईश्वरोवाच ॥ २ ॥

मन्त्रः-काला कलुआ काली रातमें बुलावो आधी रातमें बुलाई न आई बुलाई कुलवे वीर कलवारे तुम्हारो वीर बावा पगकी अँगूठो करै बतावत बागर प्रेरेत गुरुः कान्ती सिखावत शक शोक भोग विलास आंकानी बावसका बारी परनारीसों वनी पियारी जीव तड़ातो पाँव पलैटे मूछा पाछै खेत्र लोटै औरौं देखे जलै बलै हमको देखै केवल कंबल॥ बगसः गुरूकी शक्ति मेरी भक्ति चलौ मन्त्र ईश्वरोवाच । आदित्य बारके

दिन गोली दीजै मंत्रिजे । ७,२८,१०८ बार श्रीराम नाम-

खेली अकनकवीरी सुनिये नारी बात हमारी ॥ एक पान रङ्ग मंगाय एक पान सेजसौं लावै एक पान मुख बुलावै हमको छोडि औरको देखे तौ तेरा कलेजा मुहम्मद बीर चक्खै ॥ पान ३ मन्त्र २१ बार पीछे स्त्रीको खवावै वश होय ॥

डाकिनीके मूडनेका मन्त्र

ॐ हरजस्वरीः जखरी आंख धरि सिंह गुडणी शंखिनी स्वाहा कडवी तुम्बीके रससूं गोडो भिजावै छुरी मंत्रीजै ११ बार पीछे गोडो मूंडै तो डाकिनीको माथो मूंड जाय । ॐ ॐ बजरी बजरी किंवाड बजरी कीडो दशों द्वार अम्बरी जडन बजरी खडा श्रीहनुमन्त रक्षा करै ॥

इति श्रीमदिन्द्रजाल उमामहेश्वरसंवादे मन्त्रविधि समाप्त

रक्तगुञ्जा कल्प

दोहा—गुंजाकी गति कहत हौं कौतुक चरित अपार ॥
गौरीते शिव कहत हैं, सर्व कल्पको सार ॥ १ ॥
मारण तारण वशकरण राजा मोहन अंग ।
उच्चाटन इह करत हैं बचन सिद्ध दलि भंग ॥ २ ॥
भूत प्रेत ग्रह डाकिनी यक्ष वीर वेताल ।
गुंजाकी जडके सुनौ कौतुक माया जाल ॥ ३ ॥
बहुत चरित अगणित कहै सकल सिद्धिकी खान ।
जो चाहै सोई करै साधनके वरदान ॥ ४ ॥
शिव आनन्द यह गुंज हैं जुगत गुप्त अरु ज्ञान ।

या सतगुरुसों भेद लखि साधो संत सुजान ॥ ५ ॥
अब याको साधन कहौं यथायोग्य उपदेश ।
जो साधै सो सिद्ध है कसर नहीं लवलेश ॥ ६ ॥
पुष्य होय आदित्यकूं जब लीजै यह मूल ।
शुक्रवारी रोहिणी ग्रहण होय अनुकूल ॥ ७ ॥
कृष्णपक्षकी अष्टमी हस्त नक्षत्र जु होय ।
चौदश स्वाती शतभिषा पुन्योकूं ले सोय ॥ ८ ॥
अर्द्धनिशा कारज करे मनकी संज्ञा खोय ।
धूप दीप कर लाइये धरै दूधसों धोय ॥ ९ ॥
जो काहू नरनारिकूं विष कोईको होय ।
विष उतरे सब तुरन्तही जडी पिलावे धोय ॥ १० ॥
जो घिस लावै भालमें सभा मध्य नर जाय ।
मान मिलै अस्तुति करै सबही पूजे पांय ॥ ११ ॥
हांजी हांजी सब करें जो वह कहै सु साच ।
एक जडीकी जुगुतिसूं, सबै नचावै नाच ॥ १२ ॥
तांबे मूल मढ़ायकै, बांधे कटिसूं सोय ।
नवें मास वा नारिके, निहचै बेटा होय ॥ १३ ॥
ऋतुवन्तीके रक्तसों, अंजन आँजै कोय ।
देखत भाजै सैन सब, महा भयानक होय ॥ १४ ॥
कारजहू घिसि आंजिये, मोहै सब संसार ।
गाली दे दे ताडिये, तऊ लगा रहे लार ॥ १५ ॥
मधुसूं अंजन आंजिये, दिखे वीर वेताल ।

जोइ मँगावे वस्तुकूं, लै आवे सो हाल ॥ १६ ॥
जो घिसकै लेपन करै, दूध संग सब अंग ।
भूत प्रेत सब अक्षयगण, लगे फिरैं सब संग ॥ १७ ॥
घिसके रुई लगाइये, बानि धरै बनाय ।
फेर भिजावे तेलमें, दीपक देय जलाय ॥ १८ ॥
करो अचंभो सबनमें, घर समान दरशाय ।
सातमहलके बीचसूं, लावे पलँग उठाय ॥ १९ ॥
जो घृतमें घिसके करै, लेप मूत्र नर ताय ।
भोगशक्ति बाढै अमित, मन बहु मोद बढाय ॥२०॥
अजामूत्रमें रगडिके बेंदी दे जो हाथ ।
करे दूरकी बात वो, रहे यक्षिणी साथ ॥ २१ ॥
गोरोचनके संग घिस, लिखिये जाको नाम ।
मृत्यु होय वाकी तुरत, नहीं वैरको काम ॥ २२ ॥
लिंगपत्रके अर्कसूं; घिसिये केवल नाम ।
भूत प्रेत अरु डाकिनी, देखत नसैं तमाम ॥ २३ ॥
स्याउ संग वा रगड़िकै, तलुआ तले लगाय ।
आंख मीचके पलकमें, सहज कोस उडजाय ॥ २४ ॥
जो घिस आंजे पीसके बन्दी छोड कहाय ।
बंदि पडे छूटे सभी, बिनही किये उपाय ॥ २५ ॥
जो गुलाब सँग याहि घिस, नाड़ी लेप कराय ।
घड़ी चारकूं जी परै, मुरदा सहज सुभाय ॥ २६ ॥
फिर अंकोलके तेलमें, घिसिके आंजे कोय ।

धन दीखै पातालको, दिव्य दृष्टि जो होय ॥२७॥
जो बाघिनिके दूधमें, घिस चुपरै सब अंग।
सर्व शस्त्र लागे नहीं, बढ़कर जीते जंग ॥ २८ ॥
घिसकै तिलके तेलमें, मर्दन करै शरीर।
दीखै सब संसारकूं, महावीर रणधीर ॥ २९ ॥
जो अलसीके तेलमें, घिसिये सहत मिलाय।
कोढ़ीके लेपन करै, कञ्चन तन हो जाय ॥ ३० ॥
जो कोई संसारमें, अन्धा आँजै कोय।
सात दिवसपर आँजिये दृष्टि चौगुनी होय ॥ ३१ ॥
श्याम नगद सँग रगडिकै, बीसों नख लिपटाय।
जो नर होय कुसारगी, देखत वश हो जाय ॥ ३२ ॥
कस्तूरीसूं आंजिये, प्रातसमय लौलाय।
मौत जु लखिये सबनकी, काल पुरुष दरसाय ॥३३॥
गंगाजलसूं आंजिये, दोनों नेत्रन माहिं।
बरषा बरसै भूलकी, यामें संशय नाहिं ॥ ३४ ॥
जो आंजै निज रक्तसूं, भरके दोऊ कोय।
देखै तीनों लोकको अपनी आंखन सोय ॥ ३५ ॥
जो आंजै निजमूत्रसूं, खुलै रागिनी राग।
जो घिस पीवै दूधसूं, होय सिद्ध सो भाग ॥ ३६ ॥
रक्त गुंज यह कल्प है, सूक्षम कह्यो बनाय।
जो साधै सो सिद्ध हो, यामें संशय नाय ॥ ३७ ॥

इति रक्तगुञ्जकल्प समाप्त

श्रीः

अथेन्द्रजालयन्त्रखण्डम् ।

श्रीसीताराम हनुमन्तवीर सहाय ।

सर्वोपरि यंत्र ।

राम	राम	राम
राम	सीताराम	राम
राम	राम	राम

इस यंत्रको तांबेके पत्रमें चन्दनके साथ अनारकी कलमसे नित्यप्रति भरके विधिवत् पूजा करे तो सर्व कार्य हों ।

कान न दुखनेका यन्त्र ।

२२	२९	२	८
७	६	१६	२९
२८	२६	९	१
४	६	२४	२१

यह यंत्र अनारके रससे लिखके कानमें बांधे तो कान न दुखे

सिंह भागजानेका यन्त्र ।

२३	३४	२	८
७	३	२०	३९
३३	२८	९	१
४	६	२०	२३

यह यंत्र सहदेईके रससे लिखके बांधे तो सिंह भागि जाय

वशीकरण यन्त्र ।

२७	३४	२	८
७	३	३१	३०
३३	२८	९	१
४	६	२४	२३

यह यंत्र नगारेपर लिखे शत्रुके नामका नगारा बजै तो वश्य कृत्य होय भ्रम जाय

वशीकरण यन्त्र ।

२३	३०	२	८
७	३	२७	२६
२८	२४	२	१
४	६	२५	२८

यह यंत्र नागरबेलीके रससे लिखै. स्त्री पुरुषको देखे तो वश होय.

नाथ चलनेका यन्त्र ।

२५	३२	२	८
७	३	२९	२८
३४	२६	९	१
४	६	१७	३०

यंत्र सरसोंके पातमें लिखकर चबावै तो नाथ चलै सही ।

वशीकरण यन्त्र ।

७	२१	२	७
६	३	१९	५१
२५	५७	८	१
४	५	७०	२४

पत्र प्याजके रससे रोटीपर लिखकर स्त्री पुरुषको देखे तो वश होय ।

कष्ट छूटनेका यन्त्र ।

२८	३५	३	७
७	३	३२	३१
३४	२९	९	१
४	६	३०	३२

यंत्र कांसेकी थालीमें लिखकर कष्टित स्त्री को घोलिकर प्यावे तो कष्ट छूटे.

आधाशीशीका यन्त्र ।

२९	३६	२	८
७	३	३३	३२
३५	३०	९	१
४	६	३१	३४

यंत्र रविदिन थूहरके नीचे लिखकर गाडै उलंघै तो अधूरा जाय

प्रयोग यन्त्र ।

३६	४३	२	७
६	३	४०	३९
४२	३७	८	१
४	५	३८	४

यंत्रप्रयोग सिद्धि जो कार्य करै उसमें उस का नाम लिखै प्रमाण सवा लक्ष ।

शत्रु मारण यन्त्र ।

४२	४९	२	७
६	३	४६	४५
४८	४३	८	१
४	५	४४	४७

यंत्र हाथीके नखसे कागदपर शत्रुके नामसे लिख मशान में गाडै तो शत्रुकी मृत्यु होय ।

राज सभामें मान होनेका यन्त्र ।

४४	५१	२	७
६	३	४०	४७
५०	४५	८	१
४७	४	४६	४९

यह यत्र भोजपत्र पर लिखै; पूजन करके राखै तो राजसभामें मान होय ।

वशीकरण यन्त्र ।

३७	४४	२	७
६	३	४१	४०
४३	३८	८	१
४	५	३९	४१

यंत्र पीकस लिख स्त्रीका चबवावे तो वश हो पुष्यार्कमें लिखिये सही ।

आधाशीशीका यन्त्र

३८	४६	२६	७१
३	८	४	७
१	८	२	३
११	७	२०	९

यंत्र रविवारको लिखिके माथेमें बांधैतो आधाशीशी जाय ॥

राजसभामें मान होनेका यन्त्र ।

४३	५०	२	७
६	३	४७	४८
४९	४४	८	१
४	५	४५	४७

यन्त्र कपूर, कस्तूरी से लिख बांधै तो राजसभामें मान होय ।

शत्रुमुख सूजनेका यन्त्र

४१	४२	२	७
६	३	४५	४०
४७	४३	८	१
४	५	४३	४०

यंत्र गधेके मूत्रसे शत्रुके नामको लिखै ऊपरसे जूता मारै तो शत्रुका मुख सूजै ॥

सर्वसभामें मान होनेका यन्त्र ।

५६	६२	२	७
६	३	६०	५९
६२	५७	८	१
४	५	५८	६१

यन्त्र भोजपत्रपर लिखै सोना रूपा ताम्रके यन्त्रमें मढाय गलेमें बांधै तो सर्वसभामें मान होय ।

सर्वकार्य सिद्धि प्रयोग यन्त्र ।

५५	६२	२	८
६	३	५९	५८
६१	५६	८	१
४	५	६५	५०

यंत्रप्रयोग सिद्धि श्वानके नखसे लिखै सर्वकार्य सिद्धि होय।

शूल चलानेका यन्त्र ।

६६	७३	२	७
६	३	७१	७०
७३	६८	८	१
४	५	६९	७२

यंत्र जंभीरीपर लिखै जाके नामको चित्रा नक्षत्रमें सुई गडावै, शरीरमें शूल चले ।

भट्टी फूटनेका यन्त्र ।

५७	६४	२	७
६	३	६१	६०
६३	५८	८	१
४	५	५९	६२

यंत्रको बोलकं छोडा

पर लिखै कलालकी भाडीमें डारै, भाठी फूट जाय ।

कुत्ता भूँकनेका यन्त्र ।

६	७५	२	८
७	३	७२	७१
७४	७०	९	१
४	७०	११	७३

यन्त्र कुत्तेके कानके ऊपर लिखै तो कुत्ता भूँकता फिरै ।

शत्रुकेशरीर सूजनेकायंत्र

६७	७०	२	७
६	३	७६	७३
७६	६२	८	१
४	७	११	७२

इस यन्त्रको छुरी से छेदै तो शत्रुका शरीर सूजै ।

ढोल फूटनेका यन्त्र

६५	७६	३	७
६	३	७	७२
७५	७०	८	१
४	५	६९	७

यन्त्र तालाबकी मिट्टीसे लिखै चमरा पर बाजती ढोलको दिखावैतो ढोल फूटै

चाकपरसे वासन न उतरनेका यन्त्र

७०	७७	२	७
६	३	७४	७३
७६	७१	८	१
४	५	७२	७५

यन्त्र कुम्हारके चाकपर खैरके कोयले से लिखै तो वासन उतरे नहीं ।

डाकिनी आनेका यन्त्र

७०	७०	२	७
६	७३	७६	७५
७६	७४	८	१
४	५	७८	७६

यन्त्र जरखके चमरे पर लिखै खैरके कोयलेसे तो सब गांव-की डाकिनी आवें खवावैं ।

गया मनुष्य आनेका यंत्र

७२	७६	२	७
६	३	७६	७५
७८	७३	८	१
४	५	७४	७७

यन्त्र रास्तेकी रेतसे लिखै ऊपर कोडा मारे तो गया मनुष्य घर आवै ।

व्यवहार घना होनेका यन्त्र ।

७४	८१	२	७
६	३	७९	७६
८०	७५	८	१
४	५	७०	७१

यंत्र दिवालीके दिन हाटमें संमुख लिखै, व्यवहार घना होय ।

व्यवहार घना होनेका यन्त्र ।

७३	८०	२	७
६	३	७७	७६
७९	७४	८	१
४	५	७५	७४

यंत्र लाल कपडेकी

गांठिमें राखै तो व्यवहार घना होय ॥

हाट उजड़ होनेका यंत्र

८३	८६	२	७
६	७६	७९	७८
८५	७५	८	१
४	५	७७	८२

यन्त्र शत्रुके हाटमें लिखै तो आश्लेषा नक्षत्रमें हाट ऊजड होय ॥

कलह होनेका यंत्र ।

७९	७६	२	७
६	३	८३	८४
८५	८०	८१	१
४	५	८१	८४

यंत्र कुम्हारके आवेकी ठीकरीपर लिखे किसीके घरके ऊपर डारे तो कलह होय ॥

विरोध होनेका यंत्र ।

५८	६५	२	७
६	३	६२	६१
६४	६९	८	१
४	५	६०	६३

यंत्र तँबोलीकी कूँडीके पानीसे लिखै शत्रुके घरमें गाडे तो विरोध क्लेश होय ॥

सर्प, भूत, प्रेत भय-नाशक यंत्र ।

८०	८७	२	७
६	३	८४	८३
८६	८१	८	१
४	५	८२	८५

यंत्र कागजमें लिखके घरमें राखै तो सर्प भूतप्रेतका भय न हो

सुख होनेका यंत्र ।

५९	६६	३	७
६	३	६३	६२
६५	६०	८	१
४	५	६१	६४

यंत्र कागजमें लिखके घरमें राखे तो अति सुख होय ॥

गया मनुष्य घर आनेका यंत्र

६२	६९	२	६
६	३	६८	६५
६८	६३	८	१
४	५	६४	६७

यंत्र अपनी बीचकी अँगुलीसे लिखे जलका कोडा मारे तो गया मनुष्य घर आवे ॥

जुवा जीतनेका यंत्र

६०	६७	२	७
६	३	६४	६३
६६	६१	८	१
४	५	६२	६५

यन्त्र स्वातीनक्षत्रमें लिखे दिवालीकी रात्रिमें हाथमें बांधे तो जुआ जीते, हारे नहीं ।

सब जानवर आनेका यन्त्र ।

६१	६८	२	७
६	३	६२	६४
६७	६२	८	१
४	५	६३	६६

यन्त्र काष्ठके पाटेपर लिखे, आसनमें रखै सर्व जानवर आवैं.

धनञ्जय वायुका यंत्र

४८	५५	२	७
६	३	५२	५१
५४	४८	८	१
४	५	५०	४२

यन्त्र ताम्रपत्रपर लिखे कण्ठमें बांधेतो धनंजय वायु जाय।

वशीकरण यंत्र ।

४९	५६	२	७
६	३	५२	५३
५५	५०	८	१
४३	४	५०	४४

यन्त्र गोभीके पत्र पर लिखे तो सर्वजन वश होगे ॥

दिनकी रात देखनेका यन्त्र ।

५२	५९	२	७
६	३	५६	५३
५८	६३	८	१
४	५	५५	५७

यन्त्र पीपर पत्रमें लिखै घरके पिछवारे गाडै तो दिनकी रात दीखै ॥

व्यवहार होनेका यंत्र

५०	५७	२	७
६	३	५४	५३
५४	५३	८	१
४	५	५१	५५

यंत्र घरके दरवाजे पर गाडें तो अति व्यवहार होय ॥

शत्रुमुख सूजनेका यंत्र

५३	६०	२	७
६	३	५७	५६
५९	५४	८	१
४	५	५५	५९

यन्त्र पनारमें शत्रुके नामको लिखे, जूता मारै तो शत्रुका मुख सूज जाय ॥

शरीर फटनेका यंत्र ।

६०	७१	२	७
६	३	५८	६५
७०	६५	८	१
४	५	५६	६९

यन्त्र धोबीकी शिलापर जिसके नामको लिखे उसका शरीर फटा करे ॥

पीडा दूर होनेका यंत्र ।

६५	७२	२	७
६	३	६९	६८
७१	६६	८	१
४	५	७८	६७

यन्त्र दातूनकी कूँचीसे पत्थरपर लिखे बैठे स्नान करावे तो पीडा दूर होय ॥

रोग न आनेका यन्त्र ।

८२	८९	२	७
६	३	५६	५५
५८	६३	८	१
४	५	८४	५७

यन्त्र चमडेमें लिखे मघा नक्षत्रमें मनिहारकीभाठियामें डारे तो चूडी करै रोग आवे नहीं ॥

नाज सडनेका यन्त्र ।

८४	९०	२	७
६	३	८८	८६
८९	८४	८	१
४	५	८५	८८

यंत्र सूएके पंखपर लिखकर नाजमेंगाडे तो सड उठै, बास बुरी आवे ॥

बुद्धि नष्ट होनेका यंत्र ।

८४	९०	२	७
६	३	८८	६६
९१	९७	८	१
४	५	८६	६९

यंत्र उल्लुके पंखपर लिखे किसीके शिरपर डारे तो उल्लूसरीखा होजाय बुद्धि नष्टहोय ॥

कांसे पीतलको ताव न आनेका यन्त्र ।

७	८	२	८
१	३	५	४
७	३	५	४
७	६	३	६

यंत्र पीपरके: पत्तेपर लिखै, ठठेरेकी भाठीमें गाडै तो कांसे पीतलमें ताव न आवे

नाडा टूटनेका यन्त्र ।

५	१२	२	८
७	३	९	७
११	६	९	१
४	६	७	११

यंत्र गिलहरीकी पूंछके बालसे लिखै रास्तेमें डारे, उल्लंघे उसका नाडा टूटे ॥

नाडा टूटनेका यन्त्र ।

४	११	२	८
१०	३	८	७
७	५	९	१
४	६	६	९

यन्त्र श्वेत कपडेमें लिखे, तालाव तथा कुँवा तथा बावडीके घाट ऊपर गाडे जो उलंघै उसका नाडा टूटे ॥

भूतही भूत दीखनेका यन्त्र ।

७	१४	२	८
७	३	११	१०
१३	९	९	१
४	६	९	१२

यन्त्र गिलोयके रससे भोजपत्रपर लिखे सिरहाने वरकर सोवे तो स्वप्नमें भूतही भूत दीखै ॥

धावरा जानेका यन्त्र ।

१०	१७	२	८
७	३	१४	१३
१६	१	९	१
४	६	११	५

यंत्र कागजपर लिखै, कंठमें बांधै तो धावरा रोग जाय ॥

सर्वकार्यसिद्धि यन्त्र ।

८	१५	२	८
७	३	१२	११
१४	९	९	१
४	६	१०	१३

यंत्र बांसकी कलम से सवालक्षलिखे तो सर्वकार्यसिद्धिहोय ॥

स्वप्नमें ऊँट दीखनेका यन्त्र ।

११	१८	२	८
७	३	१५	१४
१०	१२	९	१
४	६	१३	१६

यंत्र ऊँटके हाडपर लिखे, आर्द्रानक्षत्रमें शत्रुके घर गाडै तो स्वप्नमें ऊँटही ऊँट दीखै ॥

स्वप्नमें भूतही भूत देख पड़नेका यन्त्र ।

६	१३	२	८
७	३	१०	११
२	७	९	१
४	६	९	९

यंत्र केंवडेके रससे लिख सिरहने धरे तो स्वप्नमें भूतही भूत दीखै ॥

स्वप्नमें वानर दीखनेका यन्त्र ।

१२	१९	२	८
६	३	१३	१४
१८	१३	९	१
४	६	१४	१७

यंत्र वानरके हाड पर लिखे शत्रुके घर गाडै तो स्वप्नमें वानरही वानर दीखै ॥

आंचल न पकनेका यन्त्र ।

१९	१६	२	८
७	३	१३	१२
१५	१७	९	१
४	६	११	१४

यन्त्र अमलीके रससे लिख स्त्रीके गलेमें बांधै तो आंचल पकै नहीं ॥

सर्वकार्यसिद्धि यन्त्र ।

१३	२०	२	८
७	३	१७	१६
१९	१४	९	१
४	६	१५	१८

यंत्र बांसकी कलमसे सवालक्ष लिखै तो सर्वकार्य सिद्धि होय ॥

धावरा रोग नाशक यंत्र

१४	२१	८	२८
७	३	१५	१४
२०	१५	१६	१९
४	६	९	९

यंत्र भोजपत्रपर लिखै कंठमें बांधै तो धावरा रोग जाय ।

स्वप्नमें ऊंटही ऊंट देखनेका यंत्र ।

१८	२५	२	८
७	३	२	१
२४	१९	१९	१०
४	६	२१	१३

यंत्र ऊँटके हाडपर आर्द्रा नक्षत्रमें लिखे शत्रुके घर गाडै तो स्वप्नमें ऊँटही ऊँट दीखैं ।

शत्रुके भ्रमनेका यंत्र ।

१५	२६	२	८
७	३	१९	१८
२१	१६	९	१
४	६	१७	२०

यंत्र शिकरके परपै लिख शत्रुके घर गाडैतो शत्रु भरमता फिरै टिके नहीं ।

गया पशु आनेका यंत्र

१९	२६	२	८
७	३	२३	२२
२५	२०	९	१
१	६	२१	२३

यह यंत्र शेहके शूलकी कलमसे खूँटे पर लिखे,खूँटा गाडै तो गया पशु आवे ।

कमानका गोसा न चढ़ानेका यन्त्र ।

१६	२६	२	८
७	३	२०	२०
३२	१७	९	१
४	६	१८	२१

यंत्र कागलीके पंख पर सिकरेके बाल की कलमसे लिखे तो कमानका गोसा नहीं चढै ॥

शत्रुकी छाती फटनेका यन्त्र ।

२०	२७	२	८
७	३	२४	२३
२६	१	९	१
४	६	२२	२५

यंत्र बकरेके रुधिरसे लिखै, धोबीकी शिलाके नीचे गाडै तो शत्रुकी छाती फटजाय ।

गधा मारनेका यंत्र ।

१७	१४	२	८
७	३	२७	२०
२३	१८	९	१
४	६	१९	२२

यंत्र गधेके हाड पर लिखै, किसीकी जगहमें गाडै तो स्वप्नमे गधा मारता है ॥

गर्भ अधूरा जानेका यंत्र

२१	२८	२	८
७	३	२५	२४
२७	२२	९	१
४	६	२३	२६

यंत्र पेठेके रससे लिखके स्त्रीके गलेमें बांधे तो गर्भ अधूरा जाय ।

सर्प न आनेका यंत्र ।

३०	३७	२	८
७	३	३४	३३
३६	३१	९	१
४	५	३२	३४

यंत्र मालकांगनीके रससे लिखै, घरमें राखे तो सर्प नहीं आवे ॥

शूल होनेका यन्त्र ।

३४	४०	२	८
७	३	३७	३६
३९	३४	९	१
४	६	३५	३८

यन्त्र थूहरके दूधसे लिखे जिसके घर गाडै उसके शूल होय

भयनाशक यन्त्र ।

३१	३८	२८	१
७	३	३५	३४
३७	३७	४	१
४	६	३३	३६

यंत्र घरके सन्मुख गाडै तो भय नहीं होय ।

सर्प न आनेका यन्त्र ।

३४	३९	२	८
७	३	३५	३४
३८	३३	९	१
४	६	३९	३१

यंत्र काचके रससे लिखे, घरमें गाडे तो सर्प आवै नहीं ।

पुरुष वशीकरण यन्त्र

३३	४०	२	८
७	३	३६	३७
३९	३४	९	१
४	६	३५	२८

यंत्र रोटीपर लिख काले कुत्तेको खिलावे तो स्त्रीके वश पुरुष होय ॥

मूसोंसे कपडोंकी रक्षाका यन्त्र ।

६४	६१	२	८
७	३	६८	६८
७०	६५	९	१
४	६	६६	६९

यंत्र कौंचके रसस लिखे घरमें राखै तो मूसे कपडे न काटें॥

भूत प्रेत भयनाशक यंत्र

५५	६२	२	८
७	३	५९	५८
६२	५६	९	१
४	६	५७	६०

यंत्र स्त्रीके कण्ठमें बांधै तो भूत पेतका भय नहीं होय ॥

देवता प्रसन्न करनेका यन्त्र।

६५	७२	२	८
७	३	६९	६८
७१	६६	९	१
४	६	६७	७०

यंत्र आककी लकडीसे लिखै, माथेपर राखै तो देवता प्रसन्न होय।

स्त्रीदुग्धनाशक यंत्र।

६९	७६	२	८
७	३	७२	७३
७५	७०	९	१
४	६	७१	७४

यंत्र स्त्रीके दूधसे लिखै बायें कोनेमें गाडे तो स्त्रीका दूध जाय।

सबकार्य सिद्ध होनेका यन्त्र।

६७	७३	२	८
७	३	७१	६९
७२	६८	९	१
४	६	६८	७२

यन्त्र सिंदूर, कुंकुम कस्तूरीसे लिखै तांबेके पात्रमें पूजन करै तो सर्व कार्य सिद्धि होय॥

शत्रु विनाशक यंत्र।

६७	७४	२	८
७	३	७१	७०
७३	६८	९	१
४	६	६९	७२

यन्त्र लोहेकी कलमसे नदीके किनारे बैठके लिखे तो शत्रुका क्षय होय।

वशीकरण यंत्र।

६०	६७	२	८
७	३	६४	६३
६६	६१	६	३
४	०	६२	६५

यंत्र कांसेकी कटोरीमें लिखै, तेल भरी दिखलावै व माथे लगावे सो वश होय।

वशीकरण यंत्र।

५८	५५	२	८
७	३	६२	५१
५४	५९	९	१
४	६	५०	६३

यन्त्र स्त्रीके बायें पगकी पगतलीमें लिखै तो वह अपने वशमें होय॥

वशीकरण यंत्र।

६१	६२	२	८
७	३	६५	६४
६७	६२	९	१
४	६	६३	६१

यंत्र कुंकुम, सिंदूरसे लोटेके नीचे लिखै पानी पीवै सो वश हो॥

वशीकरण यंत्र।

६३	६९	२	८
७.	२	६६	६५
६.८	६३	९	१
४	६	६४	६७

यन्त्र केलेके रस

से श्रवण नक्षत्रमें लिखै पानीमें गाडै पानी पीवै सो वश होय ।

नाथ चलानेका यंत्र ।

७५	८२	२	८
७	३	७९	७८
८१	७६	९	१
४	६	७७	८०

यंत्र भोडलके पत्र पर लिखै जो उलंघै ताकी नाथ चलै ।

कूख बंद होनेका यंत्र ।

६३	७१	२	८
७	३	६७	६६
८२	७७	९	१
४	६	६५	८१

यंत्र जिसका बुहारी पर नाम लिख मशानमें गाडै तो कूख बन्द होय ।

अथाइक मनुष्योंके लड़नेका यंत्र ।

७०	७३	२	८
७	३	७४	७३
७६	७२	९	१
४	६	७०	७४

यन्त्र कुम्हारके आंवेके कोयलेसे शिलापर अथाईमें लिखे तो अथाईपै बैठे सर्व लडैं ।

अश्वमारण यंत्र ।

८६	७५	२	८
७	३	७२	७१
७४	७९	९	१
४	६	७०	७३

यंत्र घोडेके हाड पर लिखै, घोडेके थानमें गाडै तो घोडा मरि जाय ।

मस्त होनेका यंत्र ।

७९	७८	२	८
७	३	७४	७४
७७	७२	९	१
४	६	७३	७६

यंत्र थूहरके दूध से स्वाती नक्षत्रमें लिखै मर्द कमरमें राखै तो विषयके समय मस्त होय ।

विघ्ननाशक यंत्र ।

५६	६२	२	८
७	३	६०	५९
६२	५७	९	१
४	६	५८	६१

यन्त्र जापमें स्त्रीके समीप राखै तो कोई विघ्न नहीं होय ।

मोहिनी यंत्र ।

५९	६६	२	८
७	३	६३	६२
६५	६०	९	१
४	६	६१	६४

यन्त्र स्त्रीके दूधसे

पुष्य नक्षत्रमे लिखै तो पांव आय पडे कहो सो करै ॥

वशीकरण यंत्र

५७	६४	२	८
७	३	६१	६०
६३	५८	९	१
४	६	६९	६२

यंत्र हथेलीमें लिखै नित्य स्त्रीको बतावे तो वश्य होय ॥

फूल सूखनका यंत्र।

७६	७३	२	८
७	३	८०	७९
८२	७७	९	१
४	६	७८	८१

यंत्र मालीकी बाडीमें गाडै ता फूल आवे नहीं, सूख जाय।

पराक्रमका यंत्र।

७२	७९	२	८
७	३	६२	७५
७०	७३	९	१
४	६	७४	७७

यंत्र लिखके विषय करते समय दखाकरे तो बिंदु छूटै नहीं पराक्रम होय ॥

नामर्दकरने वाला यंत्र।

२३	८०	२	८
७	७	७७	७३
७९	७४	९	१
४	६	७५	७४

यंत्र रेशमके वस्त्रपर जिसके नामको लिख कसुम बीच गाडै तो पुरुष नामर्द होय

फुलवाड़ीमें बहुत फूल आनेका यंत्र

७७	८४	२	८
७	३	८१	८१
८३	७८	९	१
४	६	७९	८३

यंत्र लाखके पानीसे तूरके पत्तेपर लिखै मालीकी बाडीमें गाडै तो फूल आवें।

बिछुआ छुड़ानेका यंत्र

७४	८१	२	८
७	३	७९	७७
८०	७५	९	७
४	६	७६	७५

यंत्र केसूलेके रससे लिख स्त्रीका सुँघावे तो विछुवे छूटै ॥

बहुत भाजन करनेका यन्त्र।

७८	७५	२	८
७	३	८२	१८
८४	८९	९	१
४	६	८	१०

यंत्र करकेटक लोहूसे सेहके शूलसे लिखे, चूल्हा पीछे गाडै तो रोटी पोवे तो सब खाजाय।

मसान जगानेका यंत्र।

८०	८६	२	८
७	३	८४	८३
८५	८४	९	१
४	६	८२	८२

मशानकी ठीकरीमें

मदिरासे लिखै मदिराकी धार दे तो मशान जागै हां हां शब्द होय ॥

मारण यन्त्र ।

७९	८६	२	८
७	३	८२	८२
८५	८०	९	१
४	६	८३	८४

यंत्र धमासेकी कलमसे लिख जिसके नामको मशानमें गाडे सो मरै ॥

सर्व सिद्धि प्रयोग यंत्र

८१	१२	२	८
७	३	८५	८४
८७	८४	९	१
४	६	८४	८७

यंत्र प्रयोगासिद्धि अष्ट गन्धसे सवा लाख लिखै सर्व सिद्धि होय.

शत्रुके शरीर गलानेका यन्त्र ।

८३	९०	९	८
७	३	८७	८६
८९	८९	९	१
४	६	८५	८

यन्त्र चमडे पर शत्रुके नामका लिख नमकमें गाडे तो शत्रुका शरीर गले ।

बड़कवाय नाशक यंत्र ।

८५	९२	२	८
७	३	५९	८८
९१	९६	९	१
४	६	८७	९०

यंत्र अडूसेके रससे लिख सिरहाने राखे तो बडकवाय जाय।

वचनसिद्धि यंत्र ।

६६	९३	२	८
७	३	९०	८९
९१	८६	९	१
४	६	८७	९८

यन्त्र कुलीजनके रससे लिख ताबीज मे मडाय पास राख तो बचन सिद्धि होय ॥

घने फल आनेका यंत्र

८७	९४	२	८
७	३	९१	९१
९३	८८	९०	१
४	६	८६	९२

यंत्र जँभीरीके रससे लिखै अनारके पेड में बांधे तो फल घने आवे ॥

वशीकरण यन्त्र ।

९२	९८	२	८
७	३	९५	९५
९७	९३	९	१
४	६	९४	९६

यंत्र लज्जालूक रससे लिख माथेपर राखे तो सब जन वश्य होय ॥

आमके फल घने आनेका यन्त्र।

८८	९५	२	८
७	३	९२	९१
९४	८९	९	१
४	६	९०	९१

यंत्र आमके रससे लिख आमके पेडमें बांधे तो फल घने आवें ॥

बुद्धिहोनेका यंत्र।

८४	११	२	८
७	३	८८	८७
९०	८५	९	१
४	६	८५	७०

यन्त्र मालकांगनीके रससे जिह्वापर चांदनी चतुर्दशीके दिन लिखं तो विना पढे बुद्धि होय ॥

भूत न लगनेका यंत्र.

८६	९६	२	८
७	३	९५	१२
४२	३७	९	१
४	६	९१	९४

यंत्र दूधीके रससे लिख बालकके कंठ में बांधे तो भूत लगे नहीं ॥

मनचीता कार्य होनेका यन्त्र।

९२	५९	२	८
७	३	६६	१५
९८	९३	९	१
४	६	९४	९७

यन्त्र काकरेके रससे लिख वनमें गाडे तो मनचीता कार्य होय।

कामनान जगानेकायंत्र

७५	८२	२	८
७	३	७९	७८
६१	७६	९	१
४	६	७७	८०

यन्त्र पास राखे तो कामना जागे नहीं पुष्यनक्षत्रमें लिखे ॥

सब सिद्धि प्रयोग

९६	१०	२	८
७	३	९७	९०
२०	४५	९	१
४	६	९५	९८

यन्त्र प्रयोग सिद्धि करे, पास राखै सर्व सिद्धि होय ॥

बोध होनेका यंत्र.

७३	९१	२	८
७	३	७८	८६
९०	७४	९	१
४	६	८५	७९

यन्त्र श्रवण नक्षत्र शुक्लपक्षमे थालीमें लिखे थालीमें खीर खावे तो बोध होय॥

देईपेई भयनाशक यंत्र

७७	८४	२	८
७	३	८१	८३
८४	७८	९	१
४	६	७९	८५

यन्त्र त्रिखूंटी ठीक

रीमें लिख गलेमें बाँधे तो देईपेईका भय नहीं होय ॥

कांच न निकलनेका यंत्र

७६	८२	२	८
७	१	७०	७९
८२	७७	९	१
४	६	८२	८१

यंत्र बालकके गलेमें बांधे तो कांच निकले नहीं ॥

मनचेता कार्य होनेका यन्त्र ।

१	५	२	७
६	३	२	३
४	८	१	१
४	५	२	३

यन्त्र पीपलके नीचे बैठ सीसेकी कलमसे लिखै तो मन चता काय होय ॥

सर्वजनवशीकरण यंत्र

९२	९८	२	८
७	३	९५	९५
९७	९३	९	१
४	६	९४	९६

यन्त्र लज्जालूके रससे लिखै, माथेपर राखै तो सर्व जन वश्य होयँ ॥

आंबफल घने आनेका यन्त्र ।

८८	९५	२	८
७	३	९२	९१
९४	८६	९	१
४	६	९०	९१

यंत्र आंबके रस से लिख आंबके पेडमें बाँधै तो फल घने आवें ॥

बुद्धि होनेका यन्त्र

८४	९१	२	८
५	३	८८	८७
९	८५	९१	१
४	६	८६	८०

यंत्र मालकांगनीके रससे चांदनी चतुर्दशीके दिन जिह्वापर लिखै तो बुद्धि होय ।

मनचेता कार्य होनेका यन्त्र ।

९२	९९	२	८
७	३	९६	९५
९८	९३	९	१
४	६	९४	९७

यन्त्र फोकके रससे लिख वनमें गाडै तो मनचेतन कार्य होय।

बालभयनाशक यन्त्र ।

८५	९६	२	८
७	३	९४	८२
९७	९१	९	१
४	६	९०	९४

यन्त्र धीके रससे लिख बालकके गलेमें बांधै तो डरै नहीं ॥

प्रयोग यन्त्र

९१	१००	२	८
७	३	९७	९६
९९	९४	९	१
४	६	९५	९८

इस यन्त्रसे प्रयोग सिद्धि होय ॥

सुखसे बालक होनेका यन्त्र ।

१६	६	८
२	१०	१८
१२	१४	४

प्रसूति समय इस यन्त्रको लिखकर स्त्रीको दिखावै तो सुखसे बालक होय॥

बोध होनेका यन्त्र ।

९३	९१	२	८
७	३	९८	९६
९०	७४	९	१
४	६	९५	९९

यन्त्र श्रवणनक्षत्रमें शुक्लपक्षमें थालीमें लिखै थालीमें खीर खावै तो बोध होय ॥

देईपेईनाशक यन्त्र

७७	८४	२	८
७	३	८१	८१
८३	७८	९	१
४	६	१९	८३

यन्त्र त्रिखूंटी ठीकरीमें लिख बालकके गलेमें बाँधै ता देईपेईका भय नही होय ॥

मनचेता कार्य होनेका यन्त्र ।

व	प	२	७
६	३	२	३
४	८	१	१
४	५	२	३

यन्त्र पीपलक नीचे बैठ सीसेकी कलमसे लिखै तो मनचीता कार्य होय ॥

नजर न लगनेका यन्त्र

७२	८१	३३	४२
९८	८०	९	११
१५	३७	४८	१०
४५	७७	९	१

यन्त्र तांबेक पत्रमें लिख बालकक गलेमें बाँधै तो नजर न लगे निरोग रहे ॥

शत्रुबल नष्ट होनेका यन्त्र.

७९	६	२	८
७	३	८३	८२
१५	८०	९	१
४	६	८१	८४

यन्त्र धत्तूरेके रससे लिख गलेमें बांधै तो शत्रुका बल नष्ट हो जाय ॥

अकाल मृत्यु न होनेका यन्त्र.

—	=	≡	॥
॥	=	॥	।
≡	।।।		।
।।।	—	≡	=

यंत्र चंदनकी कलमसे लिख शिरमें राखै अकाल मृत्यु न हो।

भूत, देवी, यक्षके प्रसन्न होनेका यन्त्र.

तं०	तं०	तं०	तं०
पं०	पं०	पं०	पं०
दं०	दं०	दं०	दं०
लं०	लं०	लं०	लं०

यंत्र सिरसके पेडके नीचै बैठ लिखे तो भूत देवी यक्ष प्रसन्न होयँ ॥

अम्बिका देवीके प्रसन्न होनेका यन्त्र.

।।।	=	।।।	।।।।
।।।।	≡	।।।।	॥
≡	=	१	—
।।।	=		=

यंत्र आमके पेडके नीचे सवालक्ष लिखे अम्बिका देवी प्रसन्न होय ॥

शत्रु उच्चाटन यन्त्र.

लं०	लं०	लं०	लं०
लं०	लं०	लं०	लं०
लं०	लं०	लं०	लं०
लं०	लं०	लं०	लं०

यन्त्र तांबेके पत्र पर लोहेकी कलमसे लिखै तो शत्रुका उच्चाटन होय ॥

अलिंगधा यक्षिणीके प्रसन्न होनेका यन्त्र.

लं०	पं०	दं०	लं०
लं०	तं०	पं०	दं०
सं०	पं०	दं०	लं०
पं०	दं०	मं०	नं०

यंत्र आलेके रससे सवा लक्ष लिखे तो आलिंगधा यक्षिणी प्रसन्न होय ॥

देशाटन करनेका यन्त्र.

तं०	तं०	तं०	तं०
तं०	तं०	तं०	तं०
तं०	तं०	तं०	तं०
तं०	तं०	तं०	तं०

यंत्र मशानके कोयलेसे शत्रुक वस्त्रपर लिखे तो देशाटन करै।

हनूमानके प्रसन्न होनेका यन्त्र.

नं०	छं०	जं०	चं०
दं०	दं०	चं०	चं०
जं०	छं०	जं०	०
छं०	नं०	जं०	हं०

यंत्र सिंदूरसे सवालक्ष लिखै तो हनूमान् देव प्रसन्न होयँ ॥

गई वस्तु आनेका यन्त्र.

हू०	हू०	हू०	हू०
इं०	इं०	इं०	इं०
जें०	जें०	जें०	जें०
ह्रीं.	ह्रीं.	ह्रीं.	ह्रीं.

यंत्र बकरेक हाडकी

कलमसे कनेरकी छायामें बैठ लिखे ता गई वस्तु आवे ॥

कालिका देवीके प्रसन्न होनेका यन्त्र

हं०	सं०	पं०	फं०
पं०	पं०	पं०	जं०
नं०	पं०	सं०	०
चं०	०	सं०	दं०

यन्त्र कनेरके नीचे लिखै तौ कालिका देवी प्रसन्न होय ॥

चक्रवर्तीवशीकरण यन्त्र

जं०	जं०	जं०	जं०
जं०	जं०	जं०	जं०
जं०	जं०	जं०	जं०
जं०	जं०	जं०	जं०

यंत्र चाक फेरनेकी लकडीसे लिखै तो चक्रवर्ती वश होय॥

प्रसिद्धयर्थ यन्त्र।

दं०	दं०	दं०	दं०
वं०	वं०	वं०	वं०
सं०	सं०	स०	वं०
अ०	अ०	अं०	अं०

यंत्र प्रसिद्ध होनेके यथोक्त रीतिसे सवा लाख लिखै ॥

नजर न लगनेका यन्त्र

७	१८	१०	३५
१	३५	७	१८
३५	५०	१८	७
११	७	३७	१०

यंत्र भोजपत्रपरलिखके गलेमें बांधै तौ नजर नहीं लगेगी॥

विद्या और बुद्धिका यन्त्र

८	११	१२	१७
१३	२	७	६
११	१६	९	१४
१०	५	४	५

यंत्र प्रतिदिन लिखे तो विद्या और बुद्धि होय चौथे घरसे लिखना आरंभ करै.

शीतज्वरनाशक यन्त्र

३	४	७	१४
१	६	१०	६
१४	४	३	७
७	३	१४	४

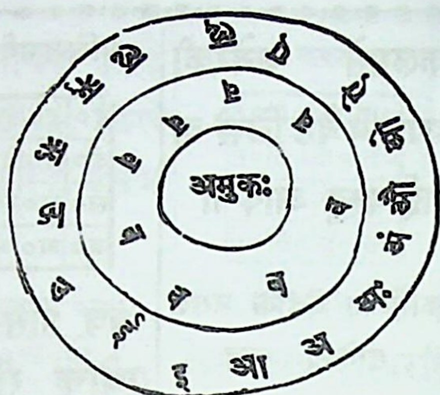
यंत्र शुभ मुहूर्तमें लिखके गलेमें बांध तो शीतज्वर दूरहोय.

क्लेश होनेका यन्त्र

३१	३१	३१	३१
३१	३१	३१	३१
३१	३१	३१	३
३१	३१	३१	३१

यन्त्र स्याहीं कागजपर लिखकेशत्रुके दरवाजेपर गाडै तो क्लेश होय उखाडे तो दूर होय ॥

अथ राजवशीकरण यंत्र



कांसीके पात्रको राखसे मांजकर चमेलीकी लकडीकी कलम बनाकर गोरोचन और चन्दनसे जिसको वश करना चाहे उसका नाम लिखे और उसके चारों ओर एक गोलाकार कुंडली खींच दे, उसके ऊपर अष्टदल कमल बनाकर वकार लिखदे और एक गोल रेखा खींच देवे उसमें अकारादि सोलह स्वर लिखे और मल्लिका चमेली तथा श्वेत कमलके पुष्पोंसे पूजन करै, सुगंधित द्रव्य सामने रक्खे और एक श्वेत वस्त्र उढा दे। इस यन्त्रका नाम महामोहन है, इसका विधिपूर्वक पूजन करके सुवर्ण अथवा चांदीके ताबीजमें मढकर शिर, भुजा अथवा गलेमें बांधे, चाहे स्त्री हो चाहे पुरुष उसके सम्पूर्ण दासकी तरह वश होजाते हैं ॥

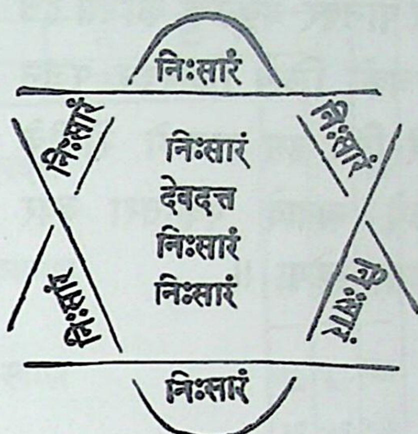
राजाके कोप शांत करनेका यन्त्र

ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं
ह्रीं	देवदत्त		ह्रीं
ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं

इस यंत्रको भोजपत्रपर गोरोचन, केशर चन्दनमें अनामिकाका रुधिर मिलाकर लिखे और अनेकप्रकारके पुष्प मिष्टान्न और मांससे विधिवत् पूजन करै, यथाशक्ति कन्या और ब्राह्मण भोजन करावे, योगिनियोंको नमस्कार करके राजदरबारमें जाय और

मुठ्ठीमें इस यंत्रराजको लेजाय तो तत्काल राजाका क्रोध शांत हो जायगा और राजा उसके वश हो जायगा ॥

भवबन्ध विनाशन यन्त्र



इस यन्त्रको भोजपत्रपर-गोरोचन और चन्दनसे लिखे और लोहेके ताबीजमें धरकर शिरपर राखे, धीरे२संसारसे वैराग्य उपजेगा पुत्र मित्र धन स्त्रीसे मोह बन्धन छूट जायगा और योगी होकर इच्छापूर्वक विचरने लगेगा ।

जुएमें जीतनेका यन्त्र

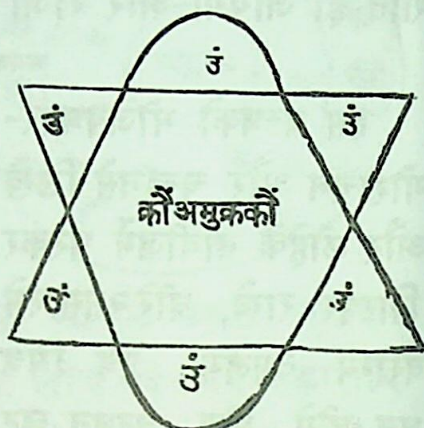
मे	खै	र	क्तं	द	ये	रु	पा
क	जि	न	नं	द	नी	च	नः
छ	दा	वी	य	मं	त्रं	ते	ष
हे	ष्टि	वा	मो	क्षि	ण	पा	त्रं
त्रं	पा	ण	क्षि	मो	वा	ष्टि	हे
ष	ते	त्र	म	य	वीं	दा	छ
नः	व	नी	द	नं	न	जि	क
पा	रु	य	द	क्त	र	खै	मे

इस यंत्रको अडीके पत्तेपर कौवेके पंखसे काजलकी स्याही बनाकर रातके समय पवित्र होकर लिखें,यह चौसठ कोष्ठका यन्त्र है इसमें इस बत्तीस अक्षरके मन्त्रको अनुलोभ और प्रतिलोभ रीतिसे लिख लेवे ॥

''मेखैरक्तंदयेरुपाकजिननंदनीचनः ।

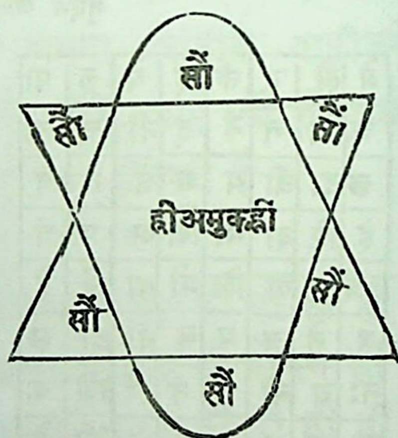
छदावीं ये मन्त्र ते षहेष्टि वामोक्षिण पात्रम्'' ॥

एकान्तरज्वरनाशन यन्त्र



हलदीके रसकी स्याही बनाकर पानपर बबूलके कांटेसे इस यन्त्रको लिखे लिखकर पूजन करे फिर इस पानको रोगीके लिये खवादे एकांतरा ज्वर जाता रहेगा ॥

आकर्षण यन्त्र

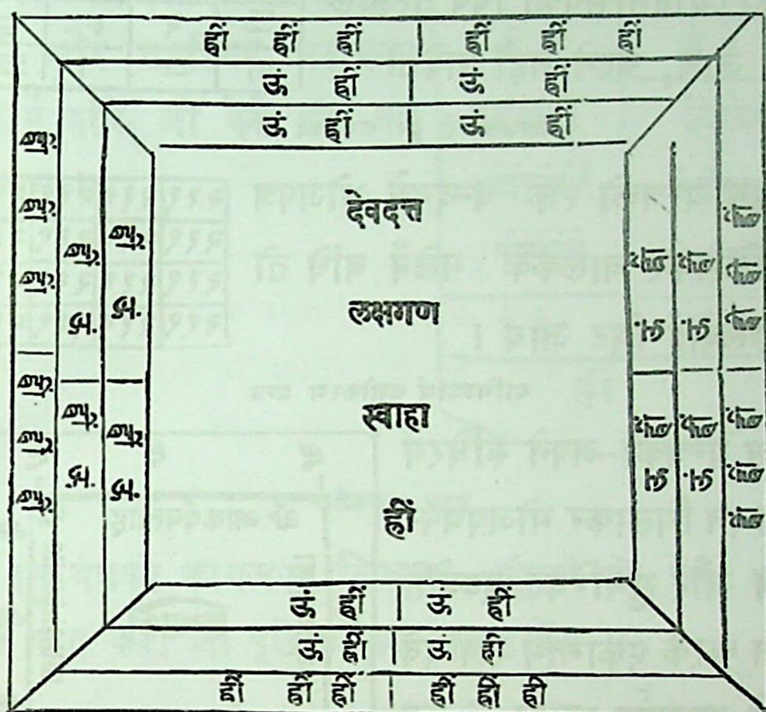


इस यन्त्रको गोरोचनसे भोजपत्रपर लिखकर धूप दीपसे पूजन करके घीमें रखदेवे नित्यप्रति पूजन करके त्रिपुराकी प्रार्थना इस मन्त्रसे करे ।

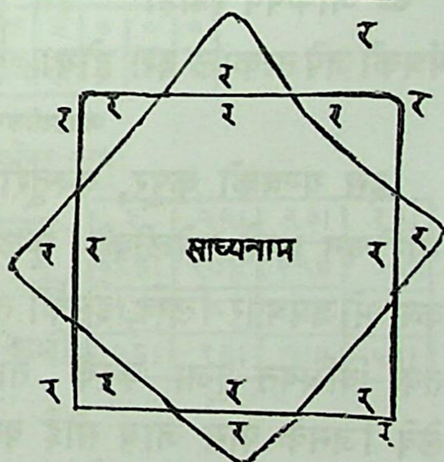
"आकर्षय महादेवि देवदत्तं मम प्रियम् ।
ऐं त्रिपुरे देवदेवेशि तुभ्यं दास्यामि याचितम् ॥'

सेना भागनेका यन्त्र

नीचे लिखे यंत्रको शंखाहुली, सूरजमुखी, गुलदौनके रसमें नगाडेके ऊपर लिखे और डंकेकी चोप देवे तो सेना भागजाय।



इस यन्त्रको श्मशानमें बैठकर खोपडेपर धतूरेके रससे लिखे और कृष्णपक्षकी अष्टमी तथा चतुर्दशीको पूजन करके वहीं गाड देवे और पूजन करे तो तत्काल ज्वर जाता रहता है, यह यन्त्र बालकोंके लिये अवश्य करे.



सर्पविषनाशक यन्त्र

इस यन्त्रको कागजमें लिखकर धोकर प्यावे तो सर्पका विष तत्काल उतर जाय, चढने नहीं पावे ॥

<table>
<tr><td>|||</td><td>=</td><td>|=|</td><td>=</td></tr>
<tr><td>||||</td><td>|</td><td>|| ||</td><td>=</td></tr>
<tr><td>≡</td><td>२</td><td>+</td><td>≡</td></tr>
<tr><td>|||</td><td>=</td><td>|</td><td>≡|</td></tr>
</table>

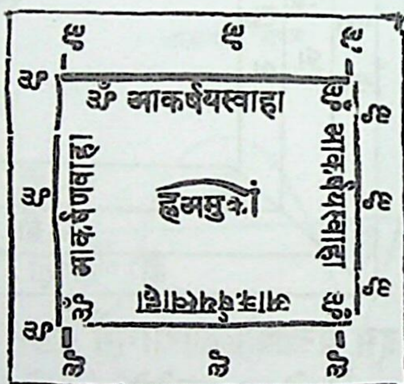
चिकलवाई दूर करनेका यन्त्र

इस यन्त्रको रक्त चन्दनसे भोजपत्र पर लिखकर बालकके गलेमें बांधे तो चिकलवाई मिट जाय ।

२१९	२१९	२१९	२१९
२१९	२१९	२१९	२१९
२१९	२१९	२१९	२१९
२१९	२१९	२१९	२१९

वाणिज्यार्थ वशीकरण यन्त्र

इस यन्त्रको अपने रुधिरमें गोरोचन मिलाकर भोजपत्रपर लिखे और सुगन्धित द्रव्योंसे पूजन करके एकान्तमें रख देवे " ॐ आकर्षय स्वाहा " इस मंत्रको जपे तत्काल वश होय॥



जगद्वशीकरण यन्त्र

इस यन्त्रको कपूर, कस्तूरी, चन्दन, गोरोचन इनसे चमेलीकी कलम बनाकर भोजपत्रपर लिखे, इसकी तीन दिन तक विधिवत् पूजा करके ताबीजमें मढाकर बांहमें बांध लेवे जिसके पास जाय सोई वश हो जाय ॥

ऊं वं जें ह्रीं ठं
डं ह्रीं ऊं ड
वं डं जगत् वं डं ह्रीं

वशीकरण यन्त्र

इस यंत्रको अष्टगंधसे भोजपत्रपर लिखकर विधिवत् पूजन करे और ताबीजमें मढायकर भुजामें बांधे; जो देखे सोई वश होजाय ॥

ॐ	
नं ट	नं पं
तंतंनंतंतं भंभंमंभंभं पंपंपंपंपं	दंदंदंद्दं डंडंडंडं यंयंयंयंयं
टं टं	न नं
ह्रीं	

पलीताका यन्त्र

इस यंत्रको कागजपर लिखकर सुंघावे तो प्रेत बकरे और बात करे, जो पूछे उसका जवाब देय ॥

अ	म्रू	सि	ज	ज	त्र	०	०	०
द	च	ना	पै	नि	खै	०	०	०

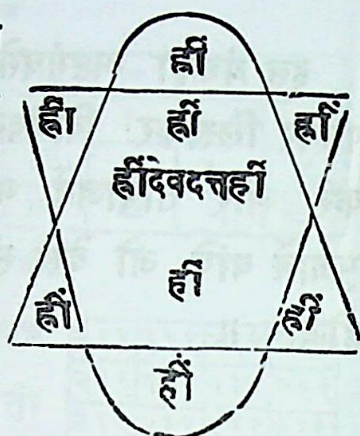
जुएमें जीतनेका यन्त्र

इस यंत्रको अष्टगन्धसे भोजपत्रपर लिखकर धूप दीजे और बांहमें बांधकर जुआ खेले कभी हारे नहीं जीते सही ॥

१	२५।	२३।	२३।
३१॥।	२७॥	३५॥	३६॥
१॥	८	२४॥	१९॥
२६।	१॥।	५॥।	४॥।

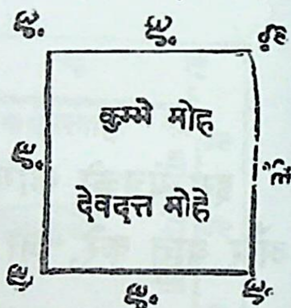
दिव्य स्तंभन यन्त्र

इस यंत्रको गोरोचन कुंकुमसे भोजपत्रपर लिखे और शराब संपुटमें रखकर भक्तिपूर्वक पूजन करे दूसरे दिन निकालकर शिखामें बांध लेवे और मौन होकर फलकी चिन्ता करे उसको इस यंत्रराजकी कृपासे कुछ भय नहीं होगा ॥



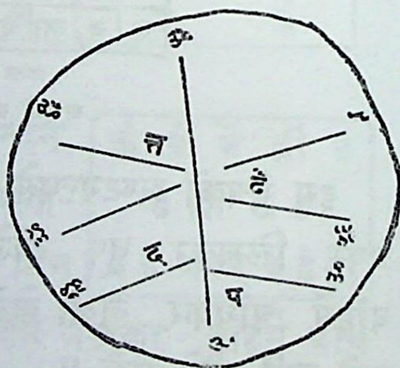
यात्रास्तम्भन यन्त्र

इस यंत्रकोशिलासंपुट पर गोरोचन,हरिताल,हलदी,मनसिल कुंकुमसे लिखे और पीछे फूलोंसे पूजन करके धूप, दीप नैवेद्य करे और इस यन्त्रको सम भूमिमें रखकर मिट्टीसे दबादे तो यात्रा बन्द होजाय ॥



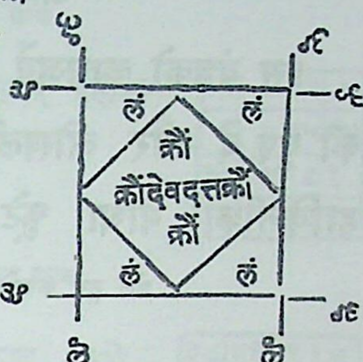
मुखस्तम्भन यन्त्र

इस यन्त्रको अपने घरकी भीतिपर खडियासे लिखे और बीचमें शत्रुका नाम लिख देवे सफेद फूल फलसे पूजन करके सफेद वस्त्र उढावे ब्राह्मण भोजन करावे तो बादमें शत्रुओंके मुखका स्तम्भन हो ॥



अग्निस्तंभन यन्त्र

इस यन्त्रको भोजपत्रपर पीत द्रव्यसे लिखकर पूजन कर ब्राह्मण भोजन करावे और इस यन्त्रको पृथ्वीमें गाड देवे और उसपर पानी-की धार छोडता रहै तो अग्नि शीघ्र शान्त हो जाती है ॥



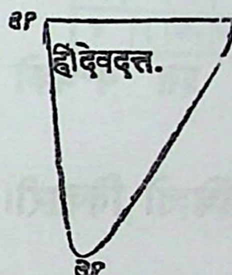
शत्रुनाशक यन्त्र

इस यन्त्रको गधेके कानके रुधिरसे मरघटकी ईंटपर लिखकर जिसके घरके ऊपर जाकर डाले उसके घरमें दुःख होय और शत्रुका नाश होजाय ॥

ॐ	एं	श्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह
लीं	र	भ	क्ष	कु	म
म	क्ष	ज्यं	च	क्री	कुं
क्ष	ते	म	त्र	द	क्ष
प	व	ल	ट	र	क्ष
उप	द्रु	वी	र	ल	स

शत्रुनाशक यन्त्र

इस यंत्रको कौवेके पंखसे भोजपत्र पर विष और हरतालसे लिखे फिर इस यन्त्रको श्मशानमें गाडदे अकस्मात् शत्रुकी मृत्यु होय ॥

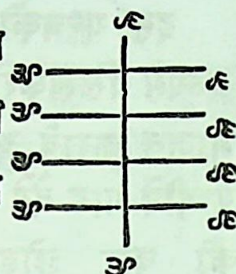


सास ससुर वशीकरण यन्त्र

इस यंत्रको गेहूकी रोटीपर लिख काली कुतियाको खवावे तो सास वश होय और कुत्तेको खवावे तो श्वशुर वश होय ॥

ॐ ह्रीं १ ११
ह्रीं ११
क्रीं स्वा

डाकिनी वकुरानेका यन्त्र



इस यंत्रको कागजमें लिखकर लोहवान की धूप दे और ओखलीमें धरके कूटे तो डाकिनीका माथा फूटे और बकुरै सही

प्रेत दूर करनेका यन्त्र

इस यन्त्रको गलेमें बांधे तो प्रेत दूर हो जाय ॥

ऊ	ह्रीं	२	७
६	३	क्रौं	क्ष्रीं
स्य	य	८	१
तं	दं	सं	जं
कं	जि	स	त
४	५	टं	टं

तिजारीका यन्त्र

इस यन्त्रको अष्टगंधसे लिखकर भुजामें बांधे तो तिजारी दूर होय ॥

९	२	७
४	६	८
५	१०	३

पानी बन्द करनेका यन्त्र

इस यन्त्रको कागजमें लिखकर जाय ॥

११	१८	२	८
७	३	३५६	३०५
३५८	३४३	९	१
४	६	३५५	३५७

बासन फोरनेका यन्त्र

इस यन्त्रको भैंसके सींगके ऊपर लिख-कर आवेमें गाडे बासन फूटें ॥

१	८	२	७
६	३	१५	१४
१०	२	८	१
६	५	१३	१६

आधीशीशी दूर करनेका यन्त्र

इस यंत्रको रविवारके दिन लिख माथे पर बांधै तो आधाशीशी जाय ॥

३८	४६	२	७
६	३	४३	४६
४	४०	८	१
४	५	४१	४८

राजामें सन्मान होनेका यन्त्र

इस यन्त्रको कपूर और कस्तूरीसे लिख-कर पास रक्खे तो राजा आदर करे ॥

४२	५०	२	७
०	२०	२७	४६
४९	४४	८	२
४	५	४५	४८

पंद्रहके यन्त्रकी विधि

यह यन्त्र चार प्रकारका होता है। खाकी, बादी, आबी और आतिशी ॥

खाकी			बादी			आबी			आतिशी		
८	१	६	६	७	२	२	७	६	४	९	२
३	५	७	१	५	९	९	५	१	३	५	७
४	९	२	८	३	४	४	३	८	८	१	६
वृष	क.	तु.	मि.	मी.	कुं.	क.	म.	वृ.	मेष	सिं.	धनु

अथ मन्त्रः

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं चामुण्डादेवी स्वाहा ।

विधि वर्णन

इस मन्त्रसे इतनी बातें सिद्ध होती हैं-बैरी प्रीति करै, वशीकरण होय, शरीरका कष्ट दूर होय, स्त्रीका कष्ट निवारण होय, गई वस्तु मिलै, विदेशी घर आवै, रोगी अच्छा होय, चोरी मिले, बँधुआ छूटे, श्मशान भूमिमें गाडै ॥

सर्वकार्य सिद्धिका उपाय

आकके पत्तेपर पन्द्रह दिनतक पन्द्रह यन्त्र लिख पत्तेके नीचे शत्रुका नाम लिख दो और अग्निमें जलादो तो बैरीका नाश होय । जो कार्यकी सिद्धिके लिये लिखै तो उत्तर दिशामें बैठके अनारकी कलमसे लिखै वैरीके ऊपर लिखै तो दक्षिण दिशामें मुख करके लोहेकी कलमसे लिखै और लि· लिखकर एकसौ एकबार मिटावै तो शत्रु मरै और संकल्प वैरीके नामका करै । इस यन्त्रको यदि शुभ कार्यके लिये लिखै तो संकल्प पहिले कर लेवे । इस यन्त्रको शुभ कार्यके लिये शक्लपक्ष और उत्तम दिनसे लिखना आरम्भ करै और जो अशुभ कार्यके लिये करै तो कृष्णपक्षमें किसी निकृष्ट वारसे प्रारम्भ करै, इस यंत्रको ब्रह्मचर्यसे लिखै, केवल मूँग चावलका भोजन करै तथा यन्त्रको लिखकर नदीमें बहावै । जो यन्त्र निकल कर बाहर आपडै उसको अपने पास रक्खे तो सम्पूर्ण कार्यकी सिद्धि होवे ।

कार्यके संकल्पकी विनती

लक्ष्मी प्रसन्नताको २००० लिखै, रोगी अच्छे कर

नेको ६०००, वशीकरण ३०००, परमेश्वरको प्रसन्न करनेको ४०००, देवता प्रसन्न करनेको ५०००, रोजगार लगनेको ४०००, विदेशीको घर बुलानेके लिये २०००, बांझ स्त्रीको बेटा करनेके लिये ५०००, मन इच्छित कार्य करनेको १५०००, खेती अच्छी उपजानेको २०००, मित्र मिलापको २०००, मंत्रकी सिद्धिको २०००, प्रेत दूर करनेको २००० गई वस्तु प्राप्त करनेको ५०००, शत्रु वश करनेको २००० बन्दिमोक्षियोंको ६०००, विष नाश करनेको २५००० सरस्वती प्रसन्न करनेको १०००, मनुष्यसे शत्रुता दूर करनेको २०००, औषधिकी सिद्धिको १०००, तिजारी दूर करनेको ६०००, दुःख दूर करके सुख उपजानेको २०००, राजसभाको मोहनेके लिये २०००, राजाके प्रसन्न करनेको ४०००, अनहोनी बातके करनेको एक लाख यन्त्र लिखे। इन यन्त्रोंको गेहूँके चून (आंटे) में गोली बांधकर मच्छियोंके लिये नदीमें डाल संपूर्ण कार्योंकी सिद्धि होय।

अब हम वह विधि लिखते हैं कि, जो पार्वतीने शिवजीसे पूंछी थी और उत्तरमें शिवजीने कहा कि हे शिवे! संपूर्ण यन्त्र कीले हुये हैं परन्तु यह पंचदशी यन्त्र कलियुगमें प्रसिद्ध फलदायक हैं। यह देवताओंको भी दुर्लभ हैं। इस यन्त्रका उद्धार यह है "ॐ हरिः श्रीहरिस्तथा"।

रविवारकी प्रयोगविधि

रवौ वारेऽर्कदुग्धेन श्मशाने भस्मना लिखेत्।
यस्य वर्णस्य नामानि चितामध्ये विनिक्षिपेत्॥

विक्षिप्तो जायते मर्त्यो ह्यष्टोत्तरशतं जपेत् ।

रविवारके दिन आकके दूधमें मरघटकी भस्म मिलाकर इस यन्त्रको लिखे और नीचे वैरीका नाम लिखकर चिताकी अग्निमें डालदेवे और उस पूर्वोक्त मंत्रको १०८ बार जपे तो वह मनुष्य विक्षिप्त हो जायगा ।

सोमवारकी प्रयोगविधि

चन्द्रवारे गृहीत्वा तु श्वेतदूर्वां च केशरम् ।
श्वेतगुंजासमायुक्तं कपिलापयमध्यतः ॥
पंचदशीं विलोमं तु संध्याकाले विशेषतः ।
यंत्रेण लिख्यते सम्यग्बाह्वोः कंठे च धारयेत् ॥
राजानं वशमाप्नोति अन्यलोकेषु का कथा ॥

सोमवारके दिन सफेद दूब, केशर, सफेद चिरमिटी और कपिला गायका दूध इन सबको पाकर संध्यासमय इस पन्द्रहके यन्त्रको विलोमरीतिसे लिखे और लिखकर बाहु और कंठमें बांध देवे तो राजा भी वशीभूत होजाता है और मनुष्योंका तो कहनाही क्या है ॥

मंगलवारकी प्रयोगविधि

भौमवारे गृहीत्वा तु काकरक्तं च पक्षकम् ।
यंत्रेण यस्य नामानि मृतवस्त्रे समालिखेत् ॥
तस्य द्वारे खनेद्भूमौ भवेदुच्चाटनं ध्रुवम् ॥

मंगलवारके दिन कौवेके पंखकी कलमसे उसीके रुधिरसे मुर्देके वस्त्रपर नाम लिखकर उसी द्वारकी भूमिमें गाड़ देवे तो निश्चय उस मनुष्यका उच्चाटन होय ॥

बुधवारकी प्रयोगविधि

बुधवारे गृहीत्वा तु नागकेशररोचनम् ।
यंत्रं लिखित्वा तेनैव तस्य वार्तिं समाचरेत् ॥
सर्षपतैलेन प्रज्वाल्य मंत्रमष्टोत्तरं जपेत् ।
नृकपाले कज्जलं कृत्वाञ्जयेन्मोहयेज्जगत् ॥

बुधवारके दिन नागकेशर और गोरोचनसे यंत्र लिखकर बत्ती बना लेवे और सरसोंके तेलमें उसे जलाकर मनुष्यकी खोपड़ीपर काजल पाडे और पूर्वोक्त मंत्रको एक सौ आठ बार जपकर काजल लगावे तो वशीकरण होजाय ॥

गुरुवारकी प्रयोगविधि

गुरुवारे हरिद्रादि रोचनं घृतमिश्रितम् ।
यंत्रराजं समालिख्य यस्य नाम समध्यकम् ॥
आसने निखनेच्चैव सर्वस्याकर्षणं भवेत् ।

गुरुवारके दिन हल्दी, गोरोचन, घी ये मिलाकर यंत्र लिखे बीचमें नाम लिख देवे और आसनके नीचे दबाले तो सबका आकर्षण होय ॥

भृगुवारकी प्रयोगविधि

भृगुवारे सकर्पूरं वचाकुष्ठमधूनि च ।
यन्त्रराजं तु संलिख्य भूर्जपत्रे सुशोभनम् ॥
दृष्ट्वा तं स्त्रिय आयांति प्राणैरपि धनैरपि ॥

शुक्रवारके दिन कपूर, बच, कूठ और मधु मिलाकर इस यंत्रराजको लिखे तो इसे देखकर धन और प्राण दोनों लेकर स्त्री चली आती है ॥

शनिवारकी प्रयोगविधि

शनिवारे चिताकाष्ठं पञ्चदशी विलोमकम् ।
लिखेद्येषां च नामानि श्मशान निखनेदपि ॥
कुक्कुटस्यातिरक्तेन म्रियते नात्र संशयः ।

शनिवारको चिताके काठको कलमसे मुर्गेके रुधिरसे उलटा यंत्र लिखकर मरघटमें गाडे, उसपर जिसका नाम लिखा हो वह अवश्य मरजाय ॥

यन्त्र लिखनेकी विधि

चन्द्रो नेत्रे तथा वह्निर्वेदबाणरसास्तथा ।
मुनिनागग्रहाश्चैव पञ्चदशी प्रकीर्तिता ॥

एक, दो, तीन, चार, पांच, छ, सात, आठ और नौ ये अंक पंद्रहके यंत्र बनानेमें काम आते हैं ॥

पन्द्रहके यन्त्रकी अन्य विधि

बडकी कलमसे कृष्णपक्षकी चौदससे इस यंत्रको लिखना प्रारम्भ करे तो धर्म, अर्थ,काम,मोक्ष मिले।अनारकी कलमसे एक सहस्र पृथवीपर लिखे तो बंधनसे छूटे और स्वामीसे मित्रता होय । पीपलकी कलमसे लिखे तो दरिद्रताका नाश होय । गोमूत्र,मनसिल, कपूर, तगर, गोरोचन इनकी स्याही बनाकर पीपलकी जडकी कलमसे भोजपत्रपर इस यंत्रको एक सहस्र लिखे तो मनोवांछित कार्य सिद्ध होय। बेलपत्रका रस,हरिताल, मनसिल इनको घोलकर बेलकी कलमसे दो सहस्र मंत्र एकांत और शुभस्थानमें बैठकर पृथ्वीमें लिखे तो मनोवांछित कार्य सिद्ध होय।आकके पत्तोंके रससे आकके पत्तेपर १०८यंत्र लिखे

और कीकरके वृक्षमें बाँध देवे तो इंद्रके समान भी जो प्रबल शत्रु होवे तोभी उसको ज्वर और देहशूल उत्पन्न होगा हलदीको जलमें घिसकर १०८ यंत्र पत्थरपर लिखकर बैरीकी चोखटमें गाड देवे तो भाई बेटे आदि नातेदारोंसे कलह होवे । ओंगेके रससे भोजपत्रपर लिखकर गलेमें बाँधे तो तिजारी चौथिया आदि सब प्रकारके ज्वर जाते रहते हैं । भांगरेके रससे इस यंत्रको भोजपत्रपर लिखकर बाहु और हृदयमें धारण करे तो शास्त्रार्थमें जीते ॥

पन्द्रहके यन्त्रका मन्त्र

ॐ ह्रीं क्लीं पारस्वपक्ष्या नवनागकुलसेवनाय स्वाहा ॥

विधि–पंद्रहके यंत्रकी गोली चूनमें बनाकर सवालक्ष मछलियोंको डाले और इस मन्त्रको पढता रहे। सन्तानके अर्थ इस यंत्रको शतावरके पत्तोंपर लिखे, भाग्यवृद्धिके लिये बडके पत्तोंपर देश अर्थके लिये कमलपत्रपर काम अर्थके लिये कांसीके पत्रपर भोजनके लिये केलेके पत्तपर इस यंत्रको लिखे॥

यन्त्र लिखनेकी कलम

सर्व कामकी सिद्धिके लिये चमेलीकी कलम आकर्षणके लिये जामुनकी कलम स्तम्भनके लिये बडकी कलम वशीकरणके लिये कुशकी कलमसे लिखे तथा शुभकामके लिये सोने रूपेकी कलमसे केसर चन्दन अगर कपूर और कस्तूरीसे लिखे ॥

पतिवशीकरण यन्त्र

एक लम्बा चौड़ा ऐसा भोजपत्र लावे जिसमें छेद न हो फिर अनामिका अंगुलीका रुधिर और हाथीका मद जावक और गोरोचन ये चारों चीजें मिला-कर चमेलीके काठकी कलमसे इस यंत्रको लिखे। फिर एक सुन्दर शुद्ध खेतसे काली मिट्टी

गँ गँ गँ गँ गँ गँ गँ गँ गँ गँ

ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं
क्रौं ह्रीं क्लीं गे अमुकः गं
क्लीं ह्रीं क्रौं ह्रीं क्लीं क्रौं ह्रीं
ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं

गँ गँ गँ गँ गँ गँ गँ गँ गँ

गँ गँ गँ गँ गँ गँ गँ गँ गँ गँ

लाकर उसकी गणपतिकी मूर्ति बनावे और उस मूर्तिके उदरमें इस यंत्रको रख देवे धूप दीप फूल माला आदिसे पूजन करके इस मंत्रका उच्चारण करे-

देव देव गणाध्यक्ष सुरासुरनमस्कृत ।
देवदत्तं महावश्यं यावज्जीवं कुरु प्रभो ॥''

इस मंत्रका उच्चारण करके हाथभर गहरा एक गड्ढा खोद कर उसमें उस मूर्तिको रख देवे ऊपरसे मिट्टी दाब देवे तो वह मनुष्य गणेशजीकी कृपासे जबतक जीवेगा वशीभूत रहेगा ॥

कालानल स्वामी वशीकरण यन्त्र

यह यंत्र इस तरह लिखा जाता है कि एक तीन रेखाओंसे आवृत चतुष्कोणमें उतनीहीं लिखे जितने उस साध्यके नामके

ह्मींह्दींह्नींह्लींह्लीं

अक्षर होते हैं और नामके हर एक अक्षरको ह्राँके गर्भमें रख देवे अन्तमें एक इकार लिख देवे यह यंत्र गोरोचनसे भोजपत्रपर लिखा जाता है इस यन्त्रको लिखकर एक चांदीकी प्रतिमाके हृदयमें रखकर उस मूर्तिका

पूजन करे और चौदसकी रातको चूल्हेके राथेमें पृथ्वी खोदकर इसको गाड देवे तथा बकरेका रुधिर भात और पूजा करके इनका बलिदान करै इस मंत्रको पढता जाय ॥

मन्त्र-ॐ महाकालाय स्वाहा ।

इस मंत्रसे १०८ आहुति देवै तो कैसाही हठी क्रूर और दुराग्रही स्वामी क्यों न हो वशीभूत हो जायगा । इस यंत्रका नाम कालानल है ।

अग्निनिवारण यन्त्र

हे भवनि ! यह यंत्र वह है कि जहां स्थिर होता है अग्निका भय नहीं रहता है । जिसके हाथमें यह यंत्र होता है उसको स्वप्नमें भी अग्निका भय नहीं हाता है ॥

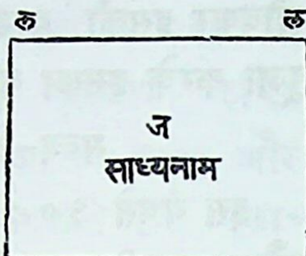
विधि—एक लंबे चौडे भोजपत्रपर चंदन, गोरोचन, कपूर इनसे इस यंत्रको लिखे फिर इसको त्रिलोहके तावीजमें मढवाकर भुजा या गलेमें बांधे अथवा घटके बीचमें दूधमें डाल देवे और नित्य प्रति इसका पूजन करता रहे और एक ब्राह्मणको भोजन करा देवै इससे अग्निका भय कभी नहीं रहता है, यह देवीयंत्रको कहै ॥

साध्यनाम

यात्रास्तम्भन यंत्र

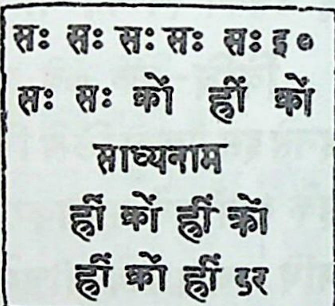
यदि कोई प्यारा हितू परदेशको जाता हो और उसे रोकना चाहै तो इस यंत्रको करै ॥

विधि--इस यंत्रको काठके तख्तेपर खडियासे लिखे जिसके नामका यन्त्र सिद्ध करना चाहे उसका नाम जकारके बीचमें लिख देवै इस तरह विधिपूर्वक इस यन्त्रको लिखकर घरके बीचमें इस तख्तेको औंधा टांग देवै और फूल, माला नैवेद्य आदिसे पूजन करता रहै तो निश्चय अपना प्यारा यात्रामें जानेसे रुक जायगा ॥



आकर्षण यंत्र

इस यंत्रको गोरोचन, केशर, चन्दनसे भोजपत्रपर लिखै और फिर धूप, दीप फूल, माला, नैवेद्य आदिसे विधिवत पूजा करके ऊपरसे पीला सूत लपेट देवे, मनुष्यके शरीरके उबटनेकी मूर्ति बनाकर उसके हृदयमें इस यंत्रको रख देवै और उबटनहीसे ढककर तीन दिनतक सायंकालके समय खैरकी अग्निसे तपावे। तपाते समय इस मंत्रका उच्चारण करता रहे ॥



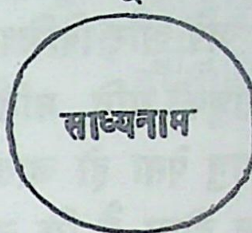
तापन मंत्र

ॐ देवदत्तं वेगेन आकर्षय भणिभद्र स्वाहा ।

इस रीतिसे करनेपर देशांतरमें गया हुआ मनुष्य वह चाहे जितने दूरपर क्यों न हो तत्काल खिंचा हुआ चला आता है।

मित्रदर्शन यंत्र

लाल चंदन और अपना रुधिर इन दोनोसे भोजपत्रपर इस यंत्रको लिखकर गंध पुष्पसे पूजन करे, धूप, दीप नैवेद्य, अक्षत, माला चढावे फिर इस यंत्रको घृतमें डाल देवे तो मित्र तीन दिनके भीतर आकर मिले, यह यंत्र अत्यंत गोपनीय है इसे किसीको न देवे न किसीसे इसका भेद कहे ॥



शत्रुओं के स्तम्भनका यन्त्र

	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
	ठं	ठं	ठं	ठं	ठं	ठं	
ठं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ठं
ठं	मं	मं	मं	मं	मं	मं	ठं
ठं	लं	लं	लं	लं	लं	लं	ठं
ठं	वं	वं	वं	वं	वं	वं	ठं
ठं	रं	रं	रं	रं	रं	रं	ठं
ठं	यूं	यूं	यूं	यूं	यूं	यूं	ठं
	ठं	ठं	ठं	ठं	ठं	ठं	
	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ

इस यंत्रको स्वच्छ लम्बे चौडे छिद्ररहित एक भोजपत्रमें लिख कर विधिवत् पूजन करे और नीचे लिखे हुए मंत्रका जप करे।

मन्त्र

ॐ ह्ल्र्यी ल ल ल ल अमुकस्य मुखं स्तंभय स्तंभय ठः ठः ठः ठः ठः स्वाहा ॥

इस मंत्रको सायंकालके समय तीन दिनतक १०८ प्रति दिन जपे और विधिवत् पूजन करता रहे। इस यंत्रके प्रभावसे शत्रुकी गति, मति बुद्धि बिलकुल नष्ट हो जाती है और वह शत्रु ऐसा हो जाता है जैसा मूढ और गूंगा और ऐसा मालूम होता है कि उसपर कोई ग्रह लग गया है ॥

सर्वरक्षा यंत्र

इस यंत्रको कस्तूरी, चन्दन, कपूरसे भोजपत्रपर लिखकर धूप, दीप, चन्दन, फूल, माला अक्षत, नैवेद्यसे पूजन करे

अ	आ	इ	ई
उ	ऊ	ऋ	ॠ
ऌ	ॡ	ए	ऐ
ओ	औ	अं	अः

और फिर धन, वस्त्र आदिसे ब्राह्मणोंका पूजन करके तांबेके यंत्रसे दाहिनी भुजा और स्त्रीके गलमें बांधे। इस यंत्रके धारण करनेसे मन प्रसन्न रहता है, भाग्य बढता है, सम्पूर्ण भय दूर हो जाते हैं और अष्ट सिद्धिकी उसे प्राप्ति होती है ॥

डाकिनीत्रासन यन्त्र

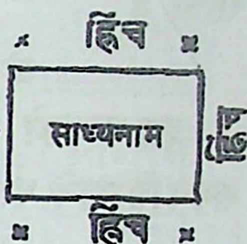
जब किसी मनुष्यको भूत प्रेत, पिशाच, डाकिनी, ब्रह्मराक्षस किसी स्त्री पुरुष या बालकको ग्रस लेवे तब इस यन्त्रको करे-

विधि—इस यंत्रको एक नवीन खपडेपर खडियासे लिखे और फल, फूल उपहारसे पूजन करके धूलसे ढकदेवे और अग्निके ऊपर उसको रखकर खैरके कोयलासे फूके तो वह बडा भूत रोता हुआ और कांपता हुआ तत्काल भाग जाता है और बालकको तत्क्षण छोड़ जाता है ॥

ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं
ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं
ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं
ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं

बालरक्षाका यन्त्र

इस यंत्रको भोजपत्रपर लिखकर विधिवत् पूजे और त्रिलोहमें इसको मढवा कर गलेसे बांध देवे तो शारीरिक और मानसिक सम्पूर्ण रोग दूर होजाते हैं, ईर्ष्या, कोप, दोष दूर हो जाते हैं, दांत निर्विघ्न निकल आते हैं तथा बालकको दूधका दोष कभी नहीं होने पाता है ॥



नजरपर २० का यन्त्र

इस यन्त्रको भोजपत्रपर रक्तचंदनसे लिखकर धूप देकर तांबेके तावीजमें मढवा कर उस बालकके गलेमें बांध देवे जिसको नजर लग गई होय तो नजर तत्काल दूर हो जायगी ॥

४	२		८
२	४	८	६
६	८	४	२
८	६	२	४

एकान्तरा रामबाण यन्त्र ।

इस यन्त्रको ठीकरीपर लिखकर भुजामें बांधै तौ एकांतरा जाता रहे ॥

१२	११	२	७
६	३	१६	१५
१८	१३	८	१
४	५	१४	१७

नित्यज्वरका यन्त्र ।

इस यन्त्रको ठीकरीपर लिखकर उस मनुष्यके हाथसे कुएमें गिरवावे जिसका ज्वर आता होय तौ उसका नित्यका ज्वर जाता रहैगा ॥

८२	८१	२	७
६	३	८६	८५
८८	८३	८	१
४	५	८४	८७

बुरे स्वप्नका यन्त्र ।

इस यन्त्रको भोजपत्रपर लिखकर सोते समय सिरहाने धरलेवे तो बुरा स्वप्न न दीखै॥

ह्०	सं०	खं०	फं०
वं०	दं०	घं०	जं०
नं०	पं०	अं०	दं०
चं०	यं०	जं०	दं०

मसान दूर करनेका यन्त्र ।

इस यन्त्रको भोजपत्रपर लिख कर गलेमें बांधे तौ मसान दूर हो ॥

८	३३४	३३४	३३४	७
८	३३४	३३४	३३४	७
८	३३४	३३४	३३४	७

प्रीति उत्पन्न करनेका यन्त्र ।

इस यन्त्रको लिखकर फुलेलमें जलावे तो प्रीति उत्पन्न होजाय ॥

२१	२६	२
२८	२४	२७
२३	२२	१०

प्रीतिनाशक यन्त्र ।

इस यंत्रको लिखकर कडवे तेलमें जलावे तो प्रीति नाश होय ॥

२१	२२	२३
२०	२४	२९
२५	१६	२१

प्रीतिनाशक दूसरा यन्त्र

इस यंत्रको कंटाईके पत्रपर लिखकर सुखा ले फिर जिस जगह सोवे तब उसके ऊपर डाल देवे टूट जाय ॥

४१	१८	११
२०	३०	१०
२३	३२	१९

छाया भस्म करनेका यन्त्र

इस यंत्रका पलीता बनाकर जलावे तो छाया भस्म होजाय

२४	१९	२०	१	२८	३९	३०
२९	२७	१८	९	७	४७	३८
३७	३५	२६	१७	८	६	४६
४५	३६	३४	२५	५६	१४	५
४	५५	४२	३३	२४	१५	१३
१२	३	४३	४१	३२	२३	२१
२०	१२	२	४९	४०	३१	२२

वलाय दूर करनेका यन्त्र

इस यंत्रको चार भोजपत्रके टुकडोंपर जुदे २ धार लिखकर चारों कोनोंमें गाड़ देवे तो सब बलाय दूर हो जाय

८	१०	१३	१
७४	२	७२	७१
	१७	६८	६
३९	०	४	१५

नरनारीविद्वेषण यन्त्र

ॐ अजिते स्वाहा

दे	व	द	त्त	दे	व	द	त्त
दु	र्भ	गा	भ	व	दु	र्भ	गा
						भ	व

ॐ अपराजिते स्वाहा

इस यंत्रको भोजपत्रपर गोरोचन और कुंकुम करके दोनों किनारोंपर जाय और मौन धारणसे लिखकर नदीके किनारेकी मिट्टी ले आवे उस मिट्टीसे गणपतिकी मूर्ति बनाकर इस यंत्र-

को उसपर डाल देवे और फिर उस गणपतिकी मूर्तिको गौके दूधसे स्नान करावे, अनेक तरहके फल फूल धूप दीप और मोदकोंसे पूजन करके स्तुति करे। इस तरह पूजन करके शराव संपुटमें रखकर संपुटके ऊपर अघोर अघोर दो बार लिख देवे और पृथ्वीमें गाड देवे तो स्त्री पुरुषोंमें परम वैर होवे॥

शत्रुवशीकरण यन्त्र

इस यंत्रको चौदशकी रात्रिके समय श्मशानमें जाकर मनुष्यके कपालपर लिखे और धत्तूरेके रससे मरघटके कोयलाको घिसकर स्याही बनाय और नग्न होकर लिखे फिर शराव संपुटमें इस यन्त्रको रखकर बलि मांसादि उपहार और अपने रुधिरसे पूजन कर और उसी जगह गाडकर प्रति दिन रातके समय उसपर अग्नि जलावे ऐसा करनेसे तीसरे दिन ज्वर आकर बढता चला जाता है॥

ग्लग्लि
साध्यनाम
ग्लग्लि

उच्चाटन यन्त्र

इस यन्त्रको चतुर्दशीकी रातके समय लाल वस्त्र और लाल फूलोंकी माला धारण करके चंदन लगाकर अनामिका अंगुलीके रुधिरसे लिखे और लाल रंगकेही पुष्पादिकोंसे पूजन करके ब्राह्मणोंको भोजन करावे दक्षिणा देवे। फिर इस यन्त्रके टुकडे करके उच्छिष्टभातमें मिलाकर श्मशानमें जाकर कौवोंको खिला देवे तो उच्चाटन होय॥

ॐ गं गणपति प्रहित
हुं गं देवदत्तः
हुं गं धं स्वांगहा

शांतिक पौष्टिक यन्त्र

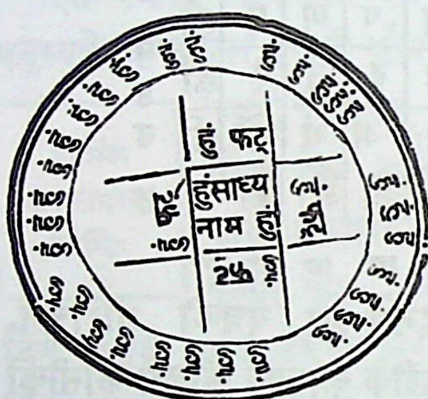
		उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	
		क्रौं	क्रौं	क्रौं	क्रौं	क्रौं	क्रौं	क्रौं	ह्रीं	
उ	ह्रीं	अं	आं	इं	ईं	उं	ऋ	ऋ	ह्रीं	उ
उ	ह्रीं	जं	झं	ञं	टं	ठं	ऊं	ऋं	ह्रीं	उ
उ	ह्रीं	छं	भं	मं	यं	रं	ड	लृं	ह्रीं	उ
उ	ह्रीं	चं	बं	स	हं	लं	ढं	ॡं	ह्रीं	उ
उ	ह्रीं	ङ	फं	षं	श	व	णं	ए	ह्रीं	उ
उ	ह्रीं	घं	पं	नं	ध	दं	तं	ऐं	ह्रीं	उ
उ	ह्रीं	गं	खं	कं	अः	अ	थं	ओं	ह्रीं	उ
उ		क्रौं	क्रौं	क्रौं	क्रौं	क्रौं	औं	क्रौं		उ
		उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	

सुन्दर तिथि और शुभ दिनमें इस यंत्रको गोरोचन, केशर, कपूर और कस्तूरीसे चमेलीके काठकी कीलसे कांसीकी थाली पर लिखे, फिर अत्यन्त भक्तिपूर्वक कमलके फूल, मालती, केतकी, चमेली, मल्लिका, बकुल इनके पुष्पोंसे पूजन करै, ऋतुके फल चढावै कपूर, तांबूल, धूप, दीप और सफेद वस्त्रसे पूजन करै परन्तु सुगन्धरहित और लाल रंगकी कोई वस्तु न चढावै इसी तरह नैवेद्यादिकसे तीन दिनतक पूजन करता रहे दुर्गापाठ करता रहे, घी और खीरका ब्राह्मणोंको यथेष्ट भोजन तीन दिनतक करावे और स्वयं तीन दिनतक पृथ्वीपर सोवै फिर चौथे दिन इस यन्त्रको निकालकर पत्रमें मढवाकर भुजा अथवा गलेमें

धारण करे । इस यन्त्रके धारण करनेसे ऊपरी बाधा दूर हो जाती है तथा विशेष करके अलक्ष्मी कलह और मंद-भाग्यता ये सब जाते रहते हैं तथा अन्य जो बाधा पहुँचाया चाहते हैं उनका सब कर्तव्य व्यर्थ हो जाता है । इस यंत्रका नाम शांतिक पौष्टिक है । यह देवताओंको भी दुर्लभ है ॥

दूरदेशज मारण यन्त्र

इस यन्त्रको मनुष्यके कपालपर श्मशानमें कौएके पंखसे लिखे। फिर इसकी भस्म करके रुधिर और विषसे लिखे यंत्र-को शरावसम्पुटमें रखकर राख भर देवे और अग्निके ऊपर रख देवे तो चाहे जिस देशको क्यों न गया हो उसको कालज्वर चढेगा ॥



मानिनी आकर्षणका यन्त्र



इस यंत्रकी दाहिने हाथकी आनामिका अँगुलीके रुधिरसे बायें हाथकी हथेलीपर लिखले और फूल, पान धूप, दीपसे पूजन करे तो वह स्त्री प्रहरभरमें आजाय ॥

विघ्ननाशक यन्त्र

ॐ	मं		व
दं	त	को	मं
त	र	लं	प
	गु	र	गो

इस यंत्रको मालकांगनीके रससे कागज पर लिखकर गलेमें बांधै कुछ भय नहीं होय ॥

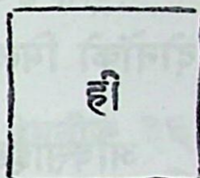
अन्य उच्चाटन

इस यंत्रको काले कुत्तेके रुधिरसे भोजपत्रपर लिखे और विधिवत् पूजन करके कुत्तेके गलेमें बांधदेवे ज्यों ज्यों वह कुत्ता दौडेगा त्यों त्यों वह मनुष्यभी भागे ॥



व्याघ्रादिसे बचानेका यन्त्र

यदि वनके बीचसे, कोई सिंह, व्याघ्र, रोझ आदि भेडिया मांसाहारी पशु आ घेरै तब इस मन्त्रको बायें हाथकी हथेलीपर थूकसे लिख लेवे और अनामिका अँगुलीमेंसे थोडासा रुधिर निकालकर उसके चारों ओर लगा देवे तो वह दुष्ट जंतु तत्काल भाग जायगा ॥



इति यंत्रखण्ड समाप्त

सुगंधि तेलकी विधि

नागरमोथा छटांक भर, पानडी छटांक, छारछबीला आध पाव, बालछड आध पाव, लौंग एक तोला, बडी इला-यची एक तोला, कपूरकचरी तीन तोले, कस्तूरी एक मासा, कपूर एक तोला.रत्नजोत एक तोला इन सबको जौकूट करके दो सेर सरसोंके तेलमें डालकर छः दिनतक धूपमें रखलो फिर बहुत थोडी आंच लगाकर उसे छानलो और बोतलमें

भरकर रखलो और आवश्यकताके समय काममें लाओ। यह बहुत सुगंधित तेल है ॥

इत्र बनानेकी विधि

गुलाबके ऐसे फूल लाओ जो अभी खिलनेके हों और उनको पानीके भरे हुए प्यालेमें छोड दो जब वे तैरने लगें तो उनपर कोयले दहकाकर रख दो इनकी गरमीसे इत्रकी कुछ बूँदे थोड़ीसे देरमें पानीपर आजायँगी, इनको रुईके फोहेसे उडाकर जिस कपडेपर लगाओगे वह महकने लगेगा ॥

नीलम बनानेकी विधि

स्ट्रास ४६०८ ग्रेन, औक्साइड औफ कोवाल्ट६८ग्रेन दोनोंको मिलाकर आगपर चढाओ नीलम बन जायगा ॥

पन्ना बनानेकी विधि

औक्साईड औफ कोमिअम दो दो, ग्रेन, ग्रीन ओक्साइड औफ कोपर ४२ ग्रेन, ष्ट्रास ४६०८ ग्रेन इन सबको गलाकर धीरे धीरे ठंढा करलो पन्ना बन जायगा ॥

हीरा बनाना

सिलीका आठ औंस, कारबोनेट औफ पुटास चौबीस औंस दोनोंको मिलाकर गरम करलो फिर ठंढा करके उसको डाइल्यूटेड नाइट्रिक ऐसिडमें डाले जब खदखदाना बन्द हो जाय तब पानीसे एसिडको खूब धो डाले फिर इसे सुखाकर कारबोनेट और लीड बारह औंस मिलावे और एक औंस सुहागा मिलाकर चीनीके खरलमें घोटलो फिर इसको गरम

करके पानीमें दो तीन बार बुझाओ और अन्तमें पांच ड्राम सोरा मिलाकर रख लो उमदा हीरा बन जायगा ॥

फिरोजा बनानेकी विधि

ओक्साईड औफ कोबाल्ट ११॥ ग्रेन, ग्लास औफ ऐन्टीमनी २४ ग्रेन, स्ट्रास ३४५६ ग्रेन इन सबको आग-पर पिघलाकर ठंढा करलो फिरोजा बन जायगा ॥

पुखराज बनानेकी विधि

स्ट्रास १८५ ग्रेन, ग्लास औफ ऐन्टीमनी ४४ ग्रेन, एपिल औफ केसिस एक ग्रेन इन तीनोंको मिलाकर आगपर चढालो उत्तम पुखराज बनेगा ॥

लाल बनानेकी विधि

स्ट्रास १४४० ग्रेन, औक्साईड औफ मेगनीज ३६ ग्रेन इन सबको मिलाकर गलालो ठंडा होनेपर चढाबाओ नकली लाल बन जायगा ॥

हीरेकी परीक्षा

हीरेके नगीनेकी पुश्तपर थोडा मोम लगा दिया जावे जो हीरा असली होगा तो उसमें वैसेही झलक मारती रहेगी और जो बनावटी होगा तो झलक बन्द हो जायगी ।

मोतीको जिलादेनेकी विधि

सज्जीखार, शोरा, सिंगरफ, चरबी, समुद्रफेन और मन-सिल इन सबको बराबर लेकर चरबीमें पकावे, जब झाग आने लगे उस समय मोतीको उसमें फिरावे और साफ रुईमें पकडे।

यदि साफ हो तो अच्छा है तो दूसरी बार फिरानेसे साफ हो जायगा ॥

सोनेकी चीजको जिला देनेका उपाय

गेरू दो हिस्सा नौसादर एक हिस्सा इन दोनोंको पानीमें साफ पत्थर पर पीसो फिर उन बनाई चीजपर लगाकर आग पर सुखालो । धुआं बंद होनेपर निकालकर ठंढे जलमें बुझाओ फिर स्वच्छ पानीसे धोकर और गेरू जलमें पीसकर उस चीजमें लगावो और अग्निपर सुखावो फिर ब्रश या साफ कपडेसे पोछकर जिला देनेकी सलाईसे मुहरा करो ॥

मूंगेको साफ करनेकी विधि

होईडोक्लौरिक ऐसीडको पानीमें मिलाकर काममें लावे अथवा एक ब्रशसे मूंगोंको ठंढे पानीमें मिलाकर धोवे और इसमें थोडा साबुनका चूरा भी मिलादे । क्लोराईड आफ लाइम मिलानेसे अधिक स्वच्छता आजाती है इसमें धोकर धूपमें रखनेसे सूखकर मूंगे साफ हो जाते हैं ॥

अर्ककपूर

कपूर एक औंस साफ की हुई स्पिरिट ८ औंस गलाकर मिलादे । यह नुसखा आजकल नये फारमकोपियामें है यह एक औंस कपूरको ९ औंस स्पिरिटमें गलावे ॥

कलाबत्तू बनानेकी विधि

केवल चांदीकी लगड़ी बनाकर सोहन या और किसी चीजसे ठोककर खडबडी करदे फिर उसपर पारा लगाकर मोटा वर्क या सोनेका पतला पत्रा लपेटकर आगमें धरके तावदे इससे

पारा उड जावेगा, सुनहरी वर्क चांदीकी लगडीसे लिपटा हुआ रह जायगा। जो वर्क कम हो तो उसी तरकीबसे जितना चाहे उतना लगा दे। फिर इस लगडीकी बारीक सलाइयाँ बनाकर जंत्री तार खैंचकर जितनी चाहिये उतनी लंबी और बारीक करले और हथोडेसे चपटी करे पीछे उसको लेप और जोश देकर इसपर जिला देवे फिर बटे हुए रेशमपर इस तारको चढा दे इस रीतिसे कलाबत्तू बनानेमें मिहनत अधिक नहीं होती है ॥

कलाबत्तू बनानेका सहज उपाय

निखालिस चांदीका जितना चाहे उतना पतला या मोटा तार जंत्रीमें खैंचकर और पीछे हथोडेसे ठोककर चपटा करलो और एलेट्रिक बैटरी अर्थात् विद्युद्यंत्रके द्वारा जैसा पतला या गाढा मुलम्मा करना चाहो करलो और फिर उसपर गीला करके बटे हुए पीले रेशमपर चढालो कलाबत्तू बन जायगा। और धातुके कलाबत्तू भी इसी रीतिसे बनाये जा सकते हैं ॥

सोनेकी वर्क बनाना

सौ नंबरका सोना लाकर जंत्रीमें देकर बारीक तार खिंचवालो गुञ्जा या जितना चाहिये उतने वजनके सांचेमें डाल कर बारीक बारीक टुकडे कतर और उनमेंसे हर एक टुकडेको हथौडेसे गढकर जितना बडा हो सके उतना चौकोन पत्तर बना लेवे इन पत्तरोंको हिरनीकी खालके तहदार थैलेमें एक

एक तहमें एक एक पत्तर भरकर थैलेका मुँह बन्द करदे। फिर एक चौरस पत्तरके शिरपर उस थैलेको रखकर बडे और चौडे मुँहके हथौडेसे कूटे यहांतक कि तमाम थैलेमें सोना फैलजाय फिर थैलेका मुँह खोलकर उन वर्कोंको पतले कागजपर निकाल गड्डियां बांधकर रखदे जितना बड़ा वर्क बनाना चाहे उतनीही थैलियां बना लेवे, इसी तरह चांदीके वर्क भी बना सकते हैं ॥

कलाबत्तूमेंसे सोना और चांदी दूर करना

पुराना या नया कलाबत्तू चिरागपर जलाकर तांबेके चौडे बरतनमें रखकर एक गोल पत्थरसे पीसले ऐसा करनेसे राख कलाबत्तूके तारसे अलग हो जायगी, पीछे उसको जलमें धोकर राखसे साफ करले और नये मूसम गलाकर लगडी बनावे और उसे कतर कतर कर बारीक टुकडे करलो फिर सोरेके तेजाबमें इन टुकडोंको डालदो और उस शीशीको बालुकायन्त्रमें आधी गाड़कर आगसे गरम करलो तो इन टुकडोंका पानी होजायगा, जब खदकना बंद होजाय तब शीशीको निकाल लो, उसके पेंदेमें जो काली गाद जम जायगी उसके ऊपरसे एक दूसरे चीनीके प्यालेमें तेजाब नितार लो और उस गादमें थोड़ासा ठंढा पानी डालकर धो डालो और उस धोये हुए पानीको उस नितारे हुए तेजाबमें डाल दो फिर उस तलछटको सुखाकर मूसमें गलानेसे सौ नम्बरका निखालिस सोना निकल आवेगा फिर उसको धोकर निकाले हुए

पानी और तेजाबमें और थोडा पानी मिलाकर उसमें साफ तांबेके थोडेसे टुकडे डाल दो और फिर उस शीशीको बालुकायंत्रमें रखकर आग जलादो जब पानीका सदकना बंद होजाय तब नीचे उतार लो, तांबा गलकर उसमें मिल जायगा और चांदी नीचे बैठ जायगी ठंढा होनेपर तेजाबको दूसरे चीनीके प्यालेमें नितार लो उस नीचेकी गादको पानीमें धोकर साफ करलो और सुखा लो साफ चांदी निकल आवेगी ।

सोनेका हरा रंग करना

नौसादर चार आउन्स, जंगार चार आउन्स, सोरा दो ग्रेन इन सबको खरल करके सिरकेमें मिलाकर सोनेपर आगमें रख दो ॥

पारेको काम के लायक बनाना

पारा रांग मिलाकर भाई । चम्पा दूध खरल करवाई ॥
बनि है तब यह ऐसा पारा । चाहै जो करिये तय्यारा ॥

दूसरी विधि

लोहेकी मँगवाय कढाई । असली तेल डारिये भाई ॥
पारा डाल पकाओ उसे । पारा जमैं उतारौ उसे ॥
ऐसा पारा जमि है भाई । चहै जो लीजो बनवाई ॥

इन ऊपर कही हुई दोनो तरकीबोसे. जो बेला बेली कटोरा कटोरी बनाओ और यदि बहु कडा करना चाहो तो कुछ दिवसतक उस बनी बनाई चीजको नींबके रसमें डाल दो बहुत कडी हो जायगी ॥

सब्ज और स्याह रोशनाई

जौकूट माजूफल १५ भागको २०० भाग पानीमें चढा-कर पाक घंटेतक खूब जोश दो पीछे इसको छानकर पांच भाग सलफेट और आयरन और चार भाग लोहेका चूरा डालकर मिलाओ, इसको आधी बोतल नीलका पानी तीन भाग सलफोरिक ऐसिड इन सबको मिलाकर तयार करलो यह रोशनाई लिखते समय हरी मालुम होती है परंतु पीछे स्याह हो जाती है, यह लिखनेमें अच्छी होती है ॥

सब्ज रोशनाई

कैलसिण्ड ओसीटो नाईट्रेट औफ कोमको अन्दाजके पानीमें मिला दो, सब्ज स्याही बन जायगी ॥

दूसरी विधि

नीली और पीली दोनों रोशनाइयोंको मिलानेसे भी उमदा सब्ज स्याही बन जाती है ॥

लाल स्याही बनानेकी विधि

सज्जी, एलुवा और कत्था इन तीनोंको मँगाकर अलग कूट जलमें भिगवादे फिर तांबेके पात्रमें कत्था जल भरकर चूल्हेपर चढा दे और नीचे आग जलादे जब उफान आने लगे तब सज्जी जल और एलुवा उसमें मिलादे जब तीनों मिलकर एक हो जायँ तब नीचे उतार लेवे इस प्रकार लाल स्याही तैयार होगी ॥

अंग्रेजी नीली स्याही

सलफेट और इंडोगोको पानीमें घोलनेसे स्याही बन

जाती है. जो रंग गहरा चाहो तो पानी कम डालो और जो फीकी रखना चाहो तो अधिक पानी डालकर पतली कर लो॥

देशी स्याही

उमदा काजलको मछलीके पतले सरेसके साथ घोटकर टिकिया बनालो अगर सुगंधित करना चाहो तो सोनेका वर्क लगाकर कस्तूरीका सत डाल दो ॥

मुहर लगानेकी स्याही

चन्दरस पच्चीस भाग, औयल औफ लवैण्डर दो सौ भाग, काजल दो भाग, नील एक भाग इन सबको मिलाकर गलालो मुहरकी स्याही बन जायगी ॥

दूसरी विधि

तोले भर मैजेण्टर लाकर ग्लेसारिन एक छटांक मिलादो तो मुहर लगानेकी उत्तम स्याही बन जायगी ॥

तीसरी विधि

ऐसे फैलटम एक भाग, काजल चौथाई भाग इन दोनोंको गलालो और छापनेकी स्याहीके लिये जो अलसीका तेल तैयार किया जाता है उसको डेढ भाग उसमें डालकर पकाओ जब तार बन्धने लगे तब स्पिरिट आफ टरपैण्टाइन चार भाग मिलालो। जितना टरपैण्टाइन कम मिलाया जायगा उतनीही स्याही अच्छी बनेगी । जिस चीजपर एक बार मुहर लगा दोगे फिर वह किसी तरह दूर न होगी । ऐसिड या ऐलको हलके धुलने पर भी मुहर वैसीही रह जावेगी ॥

कपड़ेपर निशानी स्याही

जस औस सिलौज आधी बोतल, गोंद, २॥ तोले इन दोनोंको मिलानेसे अदृष्ट स्याही बन जाती है इसमें मोर डैट मिलानेकी कुछ आवश्यकता नहीं है। धोबीसे कोरे थान धुलवानेमें यह स्याही बहुत काम देती है ॥

मुहरकी लाल स्याही

सिंगरफ चार भाग, सलफेट औफ आयरन एक भाग सुख लानेवाला तेल थोडासा डालकर खूब मिलावे यह लाल स्याही लगानेकी बहुत अच्छी बनती है ॥

सुनहरी रोशनाई

हरताल तबकिया ४ तोले, सोनेका वर्क पैंतालीस तोले, नवासीर चौथाई तोला, अण्डेकी जरदी चार तोले इन सबको घोटकर गरम पानीमें मिलालो, थोडी देर पीछे जब ऊपर नितरा पानी आजाय तब उसे धीरे निकाल दो और नीचेकी गादको आठ दिनतक कीकरके गोंदमें घोट लो पीछे शीशेमें भरके पांच चार दिन धूपमें रख दो इस तरह तैयार होनेपर लिखो तो उमदी स्याही सुनहरी हो जायगी ॥

दूसरी विधि

सोनेके वर्क लाकर सहतके संग पिसवाकर कटोरेमें रख पानी भरदे और कटोरेको खूब हिलाकर पानी गिरादे नीचे जो सोना रह जावे उसको निकाल ऊपरकीसी क्रिया दो बार करे फिर उसमें गोंद मिलाकर स्याही तैयार करले इससे

जो अक्षर लिखे जायँगे वे सोनेके समान होंगे । जो कोई अक्षरोंको पढेगा वह बहुत खुशी होगा ॥

छापनेकी स्याही बनाना

प्रथम–अलसीका तेल लाकर खूब औटाओ यहांतक कि औटाते औटाते उसमें जब आग लग उठे तब उसको एक ऐसे ढकनेसे ढक दो जिसमें हवा न जाने पावे । जबतक तेल बहुत न औटाया जायगा छापनेके काम नहीं आ सकता ॥

दूसरी वस्तु–जो इसमें पडती है काली राल होती है अच्छी स्याही बनानेमें यह अवश्य काम आती है । जब तेल अच्छी तरह औटा जाय तब उसमें राल डालकर मिला लो ॥

तीसरी वस्तु–साबुनके रहे विना इसके स्याही टैपके हरफोंपर जमजाती है और अक्षर बहुत जल्दी बिगड जाते हैं इस लिये काली स्याहीके वास्ते रोझनसोप अत्यन्त आवश्यकीय है । हलकी स्याहीके वास्ते कोईट नर्डसोप काममें लाते हैं । अगर साबुन ज्यादा पड जायगा तो अक्षर बिगड जायँगे और स्याही भी जल्द न सूखने पावेगी इसलिये साबुन अंदाजसे अवश्य डालना चाहिये ॥

चौथी वस्तु–काजल डाला जाता है, यह वजाटेबिल लैप ब्लेक होता है जो छोटे पीपोंमें बिकता है यही उमदा स्याही बनानेके काममें आता है ॥

पांचवां–आईबरीब्लेक अर्थात् हाथीदांतकी राख है यह बजनदार होती है और टाइप छापेकी स्याहीके साथ जलमें

थोडीसी मिलाई जाती है। इसके मिलानेसे लकडीपर नकशे अच्छे छापे जाते हैं ॥

छठी वस्तु-नील अथवा प्रशियन बिल्युक यह समभाग थोडा थोडा मिलाये जानेपर काजलकी स्याहीकी भूरी रंगतको दूर कर देता है या थोडी इन्डियन् रेडेको नील प्रशियन बिल्युक साथ पीसकर मिलावे तो बहुत अच्छी स्याहीका रंग हो जायगा ॥

तेल पकानेके समय जब तेलसे धुआं निकलने लगे तब एक कागजका टुकडा लकडीसे बांधकर और आगपर सुलगा कर तेलके ऊपर लगा दो तो तेल सुलग उठे बुखार जलजाने देवे और तेलको वैसाही जलता हुआ बरतनको आगपरसे उतारले या उनके नीचेकी आग बुझादे और तेलको गाढा होने दे और एक छुरीसे थोडासा निकालकर ठंढा होनेपर दो उँगलियोंसे दबाकर उँगलियोंको जुदा करै और जो आधे इंचकी बराबर उसका तार बांधे तो समझलो कि तेल तैयार होगया । इस तरह दो प्रकारसे तेल, एक पतला और एक गाढा ज्यादा कम पकाकर तैयार करे क्योंकि यह जरूर है कि दोनोंके मिलानेसे जुदे जुदे काम निकलते हैं । जो गरम हवामें काम आता है वह सरदीमें गाढा हो जाता है और बड़े हरफ या टैपोंको इतनी कडी स्याहीकी आवश्यकता नहीं होती जितनी छोटे टाइपके वास्ते दरकार होती है ॥

इस रीतिसे तैयार हुए छः बोतल तेलमें छः रतल रोझन तेलको गरम करके झाग मिट जानेके पीछे थोडा थोडा मिलाओ और रालके मिलतेहीं सेर भर अन्दाज बाउन सोपके टुकडे करके ऐसी होशियारीसे मिलाओ क्योंकि साबुनमें पानीका अंश होता है और इसके डालनेके समय तेलमें जोश होता है, राल और साबुन इन दोनोंको सींकचेसे खूब हिलाओ उस बरतनको आगपरही रहने दो । ऐसा करनेसे सब दवा मिलकर एक हो जायगी पीछे सात तोले प्रूसियन बिल्यूको खूब महीन पीसकर डाल दो तब विलायती कोयलेका काजल २ सेर और बालसम औफ को पीवीका काजल पौने दो सेर डालकर सबको खूब मिला दो यह उमदा टाईपके छापनेकी स्याही तैयार होगी ॥

छापनेके वास्ते हाथसे लिखकर पत्थरपर उतारनेकी स्याही

मैस्ट्रिक इन्टिअर्स आठ औंस, शेल्लाक बारह औंस, वेन्स टरपेन्टाइन एक औंस मिलाकर सबको गुदाच करलो फिर एक रतल मोम और छःऔंस टालो मिलावे जब ये सब जल जाय तब इसमें कडी टालो सोंपके टुकडे मिला दो पीछे चार औंस काल डालकर खूब मिलालो ठंढा होनेपर सांचेमें डाल कर जैसी चाहो छोटी बडी चकती बनालो, फिर तुमको कापीके कागज पर लिखना हो तब जितना टुकडा मंजूर हो घरके या मेहके पानीमें पकालो लिखनेसे पहिले कलमको तेलसे भिजो पोंछ डालो तो कलम अच्छी तरह चलैगी ॥

कापी लिखने का कागज बनाना

समागखी दो भाग, स्टार्च छः भाग और फिटकरी एक भाग इन तीनोंकी गरम पानीमें अलग अलग जोश देकर सोल्यूशन करलो फिर मिलादो फिर कागजपर बुर्श या हाथसे दो तीन बार पोतकर सुखा लो ॥

दूसरी विधि

कागजपर दो तीन बार पानीका हाथ फेर कर रेवत-चीनी और सफेद कांजीका सोल्यूशन बनाकर हाथ इसपर फेरो हाथ फेरतेही सुखाते जाओ इस तरह तैयार करनेपर पत्थरपर उतारनेकी स्याहीसे लिखिये ॥

कागजको एक तरफसे रंगना

मावेमें रंग मिलाकर कागजपर चढा दो ऐसा करनेसे रंग दूसरी तरफ नहीं फटेगा जब वह सूख जाय तब जैसा रंग तुम दूसरी तरफ करना चाहते हो सो मावेमें मिलाकर चढा दो ॥

उन्नावी रंगका कागज रंगना

जरदा पानीमें कागजको तर करो फिर फिटकरीके पानीमें गोता दो और सुखा लो। कागज उन्नावी रंगका हो जायगा॥

फिरोजी रंगका कागज रंगना

कागजको पहले चूनेके पानीमें फिर जंगलके पानीमें भिगोकर सुखा लो इसी तरह दूसरी बार भी करो तो कागज बहुत उत्तम फीरोजीरंगका हो जायगा ॥

किताबके किनारेपर सुनहरी छींटें

संगमर्मरकी खरलमें साफ शहत एक औंस और एक दस्ता सुनहरी वर्क डालकर घोटे। जब अच्छी तरह मिल जाय,

तब उसमें पानी डालकर खूब घोटकर छोड़ दे, जब पानी साफ हो जावे तब उसे नितार डाले और फिर पानीको नितार डाले जबतक सब शहत न घुल जाय तबतक इसी तरह घोट-कर पानी निकालता रहे, जब केवल सोना रह जाय तब इसमें एक ग्रेन कौरोसिव सल्बीमेंटको एक चमचाभर स्पिरिट औफ वाइनमें पिघलाकर थोडे गोंदके पानीके साथ उस सोनेमें मिलादे और शीशीमें भरकर काकसे बंद करदे और किताबोंके किना-रोंको गहरा काला या सब्ज या नीला या सुरख रंगदे पीछे उसपर सुनहरी पानीकी शीशीको हिलाकर जैसे चाहो छोटे या बडे छींटे देवे और सूखनेपर मोहरेसे जिला देवे और किनारोंको कागजसे छिपा रक्खे क्योंकि किनारोंपर गरद न गिरने पावे इसके सिवाय दूसरी चीजोंपर भी यह सुनहरा पानी बहुत सुंदर दिखलाई देता है परंतु कलम या ऊँटके बालोंके बुरससे उसको छींटे देकर कुत्तेके दांतसे जिला करते हैं ॥

रातमें दिनके समान चांदनी होय

घुर घूसिख हरताल लें, मानसिल लेय मिलाय ।
कर गोली आंजै दृगन, दिनसम रात दिखाय ॥

तरकीब दूसरी फूलझडीकी

शोरा अट्ठाईस तोले, कोयला ढाई तोले; गंधक सवा दो तोले, बीड आठ तोले ॥

शोरा अट्ठाईस तोले, बन्दूककी विलायती बारूद अडता-

तीस तोले इन दोनोंको महीन पीसकर उमदा बीड ८ तोले मिलाकर फूलझडी भर दो, ऐसा करनेसे फूलझडी बहुत ही अच्छी बनेगी ॥

गुलरेज गुलझडी

शोरा बारह तोले, गंधक एक तोला, कोयला एक तोला और लोहेका बुरादा तीन तोले लेवे ॥

तरकीब महताबकी

शोरा अट्ठाईस तोला, गंधक दश तोले, हरताल चार तोले गिला एक तोला लेवे ॥

नकटी महताब

शोरा एक शेर, हरताल चौदह दिरम, मुरगेके अण्डेकी सफेद चौदहदिरम, नील छः दिरम, सिंगरफ तीन दिरम, बीर बहूटी दो दिरम उन सबको मिलाकर जो महताब बनाई जाती हैं उसकी रोशनीमें जो मनुष्य होता है वह नकटा दिखाई देता है ॥

अनेक रंगकी महताब

शोरा दश भाग, गन्धक साढे तीन भाग, हरताल आधा भाग, नील पाव भाग, हरताल डालनेमें रंग जरद होता है । अगर सुरख किया चाहो तो हरतालके जगह सिंगरफ डालो और जो हरा रङ्ग करना चाहो तो तूतिया सब्ज मिलाओ ॥

गुल अकशोंका पेड

शोरा बत्तीस तोले, गंधक आठ तोले, कोयला दश तोले और लोहेका बुरादा पांच तोले लेवे ॥

बाण बनानेका बारूद

आध पावकी तालका बाण बनानेके लिये ३० तोले शोरा, कोयला पंद्रह तोले, गंधक दश तोले इन सब चीजोंको सुखाकर बहुत महीन पीस लेवे, बालकी चलनीमें जुवा २ छानकर फिर सबको मिलालो, शोरा आगकी तेजीको बढाता है और गंधक उसे मन्द करता है और कोयला सुनहरी चिनगारियां पैदा करती है। बाणकी रंजक मील पाउडर स्पिरिट और बाईनके संयोगसे बनती है।

सुनहरी रंगके जरद सितारे

क्लोरेट और पुटाश बीस भाग, नाइट्रेट औफ ब्रिटा तीस भाग, पिसा हुआ सोडा पन्द्रह भाग, गंधक आठ भाग, शल्लेक चार भाग और जो पूँछके तारे बनाना चाहो तो उस मसालेमें एक भाग कोयला और मिलादो इन सब चीजोंको शलैकके सोल्युशनमें भिजा दो ये सितारे बहुतही खूबसूरत और मनको प्रसन्न करनेवाले होंगे॥

सुर्ख बारूद

नाइट्रेट औफ स्टेनिशिया चालीस भाग, गंधक तेरह भाग, क्लोरेट और पुटास पाँच भाग, सलफुरीट एन्टीमनी चार भाग लेकर मिलावे॥

नीली बारूद

गंधक सोलह भाग, फिटकरी भुनी तेईस भाग, क्लोरेट औफ पुटाश इकसठ भाग लेकर बनाओ॥

जरद बारूद

गंधक सोलह भाग, सुखाया हुआ कारबोनेट औफ सोडा तीन भाग, क्लोरेट औफ पुटास इकसठ भाग सबको मिलाकर बनाओ ॥

नारंगी बारूद

गंधक चौदह भाग, खढिया चौतीस भाग, क्लोरेट औफ पुटास बावन भाग, मिलानेसे नारंगी बारूद बनैगी ॥

सुनहरी गुलवारखान

कोयला चार भाग, शोरा सोलह भाग, गंधक दश भाग, बन्दूककी बारूद पन्द्रह भाग, काजल दो भाग, लकडीका चूरा एक भाग इन सबको मिलाकर बानमें भरे ॥

नीला मीना बनानेकी विधि

औक्साईड और कोवाल्ट या इसी धातुके किसी नमकसे हासिल होता है, खुशनुमा नीला रंग मीनेको जैसा आता है बहुत अच्छा होता है इसलिये मीने बनानेकी यह तरकीब है । सिंदूर और शोरा दश दश भाग, ओक्साईड औफ कोवाल्ट एक भाग या कुछ कम ज्यादा जैसा रंग करना हो और सफेद स्पिरीट या फिलिक्क औक्लाईड औफ कोवाल्टके साथ मिलानेसे बहुत उमदा नीला मीना बनता है ।

सब्ज मोम बनाना

जंगार एक औंस, मोम निखालिस दो रतल, सोनोरस इसष्टिराइन पांच रतल और कुछ सुगंधित चीज इन सबको आगपर मिलावे तो अच्छा सब्ज मोम बन जायगा ॥

नीली लाख मुहरके वास्ते

शेलैक दो भाग, डिमाथर रेजट दो भाग, बरंगदीपैच एक भाग, वैनिस टरपैन्टाइन एक भाग एल्टम्यारेन तीन भाग इन सबको गुदाज करके मिलावे। जो हलका नीला रंग बनाना होवे तो इन चीजोंमें एक भाग,सुख सलफेट औफ लेड मिला दो।

काली लाख बनानेकी विधि

वैनिस टरपैन्टाइन ग्यारह तोले, शेलैक २२ तोले; कालो फूनी डेढ तोला, और अन्दाजका काजल इन सबको टरपैन्टाइनके तेलमें मिलाकर तैयार कर लो ॥

सुनहरी लाख बनानेकी विधि

बेनिस टरपैन्टाइन दश तोले, उम्दा शेलैक बीस तोले सोनेके वर्क चौदह तोले, बिरोजा पाऊडर सवा तोला, मैगनेशिया ताडवीन तेलमें मिलाया हुआ डेढ ग्राम ॥

मुहरके वास्ते नरम लाख

जरद राल एक भाग, मोम चार भाग सख्त चरबी एक भाग वैनिस टरपैन्टाइन एक भाग और जैसा रंग करना हो वैसा रंग डालकर धीमी आगपर पकावै ॥

चांदीके जेवरमें काले दाग दूर करना

क्लौरेड आफ लाइममें थोडासा पानी मिलाकर कूंची या ब्रूशसे धो डालो जेवर चमकने लगेगा ॥

जर्मनसिलवर बनानेकी विधि

लोहा एक भाग, नैकिल दश भाग, सीसा दश भाग, तांबा बीस भाग सबको मिलाकर गला दो। अत्युत्तम जर्मनसिलवर बन जायगा ॥

सोनेको सफेद करना

शोरा दो औंस, फिटकरी एक औंस, नमक एक औंस इन सबको बारीक पीसकर मिलालो और जिस सोनेको सफेद करना हो उसे पानीमें भिगोकर ऊपर लिखे हुए चूर्णमें लुडाओ पीछे मूस अथवा मिट्टीका ठीकरा लेकर ऐसा गरम करो कि लाल हो जाय तब उसके ऊपर उस सोनेको चिमटेसे पकडे रहो जबतक लगे हुए चूर्णका पानी सूखै तबतक उसको दूसरी तरफ फिराओ जब सूख जायगा तब सोना जरद रंगकासा दिखलाई देगा, उसको साफ ईंटपर रखकर ठंढा करलो फिर एक बड़ी मूस लेकर उसमें साफ पानी, एक मुठ्ठी पिसा हुआ निमक और पिसा हुआ टाट्टर डालकर सात आठ बूंद नौसा-दरके तेजाबको टपका दो और जोश देकर सोनेको उसमें उस समय तक डाल रक्खो जब तक वह सफेद न हो फिर उसको बाहर निकाल कूंचीसे धो धोकर साफ कर लो ॥

तलवारको जौहरदार करना

तेजाब फारूक आठ तोले और गरम पानी चार रतल मिलाकर तलवारको ताव देकर उसमें बुझावे तो तलवार जौहरदार हो जायगी ॥

पत्थरपर सुनहरी मुलम्मा

सोना छः भाग, एक्यू ओरजिया छत्तीस भागमें गलाकर एक भाग रांग मिलाकर बालसम आफ सलफर तीन भाग औइल आफ टरपैन्टाइनमें मिलाकर सहज सहज खरल करे

यहांतक कि सख्त हो जाय फिर इनमें औइल आफ टारपैन्टाइनके चार भाग और मिलाकर काममें लावे ॥

विनाकल चांदीका मुलम्मा

दो तोले नाईट्रेट सिलवरको सेर भर पानीमें गला दो जब गल जावै तब उसमें हाईपोसलफिट डाल दो जब यह भी गल जावे तब पानीमें स्पंज भिगोकर जिस चीजपर गिलट करना चाहो उसपर खूब रगडो । थोडी देरमें बहुत उत्तम चांदीका मुलम्मा हो जायगा ॥

मुलम्मा करना

उत्तम चांदी पांच भाग, नमकका तेजाब सत्रह भाग, शोरेका तेजाब इक्कीस भाग इन सबको मिलाकर चीनीके एक पात्रमें रखदो फिर इसमें सोना डालकर अग्निपर रखकर पिघलाओ जब उसमेंसे धुआं निकलना बन्द हो जाय तब उसको दूसरे बासनमें करलो फिर इसमें बहुतजल डालकर गरम करलो ठंढा होनेपर एक अच्छे बरतनमें रख दो । जिस वस्तुपर मुलम्मा करना हो उसे एक तारमें बांधकर उस जलमें लटकाओ और नीचे अग्नि जला दो । ऐसा करनेसे मुलम्मा चढ जायगा फिर उसको निकालकर धीरे २ साफ करलो ॥

तांबेका पानी बनाना

आधा सेर नीलाथोथा बारीक पीसकर उसमें छः ग्लास मैजर जल डाल दो और छान कर चीनीके एक पात्रमें भरलो और आधा पाव सज्जीका तेजाब चार ग्लास जलमें अलग रखलो फिर दोनोंको एक बडे वर्तनमें भर दो ॥

मंन मुद्रा

गूलरका दूध दो पैसे भर, बरगदका दूध दो पैसे भर, आकका दूध दो पैसे भर, पीपलकी लाख दो पैसे भर चुंबनपत्थर आठ पैसे भर इन सबकी घुटाई पहर भर अलसीके तेलमें करै फिर इस लुगदीसे संधिको लेपन करे तो कितना ही जल गरम हो संधि फूटै नहीं । इसीसे गंधकका तेल निकलता है ॥

तांबे पीतलको जलदी गलाना

टारटर, नमक और शोरा ये तीनों बराबर तोलमें लेकर बारीक नमक चूर्ण करे और जिस धातुको गलाना होवे उसमें आगपर खूब तपाकर उस चूर्णमें थोडासा डाले जो न गले तो और थोडा डालै जो इससे कुछ न हो तो थोडा और डालै जब अच्छी तरह गल जाय तब लगडी बनावे । यह धातु बहुत नरम और स्वच्छ निकलेगी । साढे बारह सेर धातुके लिये एक अखरोटकी बराबर चूर्ण बहुत है ॥

लोहेको जल्दी गलाना

इसपातका एक टुकडा लेकर अग्निमें खूब तपाओ जब लाल होजाय तब उसको चिमटेसे पकडकर एक हाथमें थाम लो और दूसरे हाथमें गन्धक लेकर उस गरम इसपातके लगादो लगाते ही इसपात पानी समान गलकर गिर पडेगा ॥

गुल दस्तावनतक हरा रखना

फूलोंका एक गुलदस्ता बनालो और पानीमें कार्बोनेट औफ सोडा मिलाकर छिडकते रहो । बहुत दिनतक वैसेका वैसाही बना रहेगा ॥

कपडेसे चरबीका दाग दूर करना

लिकर एमोनिया, ईथर और ऐलकोहल इन तीनोंको बराबर लेकर मिलालो, कपडेके दागके नीचे ब्लाटिंग पेपर लगादो फिर स्पंज (बादली) के टुकडेको इन तीनों चीजोंसे तर करके उसपर फेरो चर्बी पिघल जायगी और नीचेका कागज उसे सोख लेगा ॥

रेशमी वस्त्रसे चिकनाई दूर करना

पड चिकनाई जाय जो, वस्त्र रेशमी माहिं ।
बुरकत ही मगनेशिया, स्वच्छ होय छिन माहिं ॥

बालक कवि होवे

वचको चूरण पीसकै, पिये दूधके संग ।
खीर भात भोजन करै, कविता करै सुरंग ॥
"ॐ महेश्वराय नमः" इस मन्त्रका जप करे ।

लोहेको तांबा करना

नीलाथोथा घोलकर, लोहेपर मलदेय ।
रंगत अपनी त्यागके, तांबेकीसी होय ॥

तांबेका रूपा करना

मट्ठी गन्धक ले मँगाय । केलारस तामें मिलवाय ।
ताम्रपत्रपै लेप कराय । सोई रूपेसम ह्वै जाय ॥

लोहेको रूपा बनाना

मेरिनऐसिडमें कछु पारा लेय मिलाय ।
कौतुक करनेके समय लोहा टूक मँगाय ॥
देय डुबोय वा अरकमें लेके टुकडा लोह ।
कढतही अचरज यहै सो रूपेसम सोह ॥

अफीम बनानेकी विधि

सेर भर पोस्तेको पानीमें भिजाकर महीन पीसले और कपडेमें छान फिर इसमें आध पाव कुचला, आधसेर एलुआ इन सबको पीसकर एक कोरे कुंडमें भरदेवे फिर गोंदको अलसीके तेलमें मिलाकर उसमें मिलादेवे ऊपरसे गोभीके पत्तोंको पीसकर बुरका देवे ऐसा करनेसे अफीम बन जायगी ॥

अफीमका सार

एक पौण्ड अफीम कुटी हुई छोटे टुकडे और ६ पिंट पानी, पहले अफीमको दो पिंट पानीमें २४ घण्टातक भिगो रक्खे फिर पानीसे निचोडकर अफीमको गाढा करले फिर २४ घण्टे तक दो पिंट पानीमें भिगोकर पहलेकी तरह करके फिर तीसरी बार इसी तरह करे। इन तीनों बारके अर्कोंको मिलाकर फलालैनमें छानकर मामूली तौरपर गाढा करले ॥

बादामके शकरपारे

मैदा सेरभर, घी पावभर, बादामकी गिरी आधपाव बूरा सवासेर, मलाई पावभर दूध सेरभर इनमेंसे डेढ छटांक घी, सब मैदा और पिसी हुई बादामगिरी ये तीनों बस्तु मिलाकर मलाई डालकर दूधसे सान (मांड) ले फिर इनके शकरपारे बनाकर घीमें भून लेवे और बूरेकी चासनी करके उसमें छोड देवे। मीठे शकरपारे बन जायँगे ॥

होठोंका सफेद करना

पानमें डालके गन्धक खानेसे होठ सफेद हो जायँगे और पानीसे कुल्ला करनेपर फिर अपनी रंगतपर आजायँगे ॥

चित्रलोप करना

जलमें बडी गोह जो होय । ताकी चर्बी आने कोय ।
सो चर्बी हाथमें नावै । हाथ लाय चित्रहि दिखलावै ॥
मूठि बांधि चित्र लेय दुराई । तनछिन चित्रलोप हो जोई ।

दीपकमें जवाहिर दीखे

चर्बी काले साँपकी, लेय जुगतिसों कोय ।
आनि दियामें बालिये,ज्योति जवाहर होय ॥

नावकी तबाही

पक्का फल मँगवाय बेलकी, और मैनफल आनै ।
पीसै दूध डराय गायका, इहि विधि गोली सानै ॥
पोला सींग मँगाय गायका, भूमि पडा जो लीजै ।
जामुन बडी बराबर गोली, बांध छांह सुख कीजै ॥
सींग माहि भर राखै गोली, सात दिवस जो बीतै ।
ऐसा जतन करै जो कोई, राजसभामें जीतै ॥
बहती नाव जाय पानीमें, तहां खेल वह करिये ।
देखो छिद्र नावके पैंदे, तहां सुगोली धरिये ॥
बहकै चलै न खेवा मानै, रहै हार मल्लाह बिचारा ।
लीजै काढ छिद्रसों गोली,चलै स्वयं बिन खेवनहारा ॥

लकडीके छेद भरनेका मसाला

जापानी अलसीका गरम तेल और तारपीन बराबर लेकर आधा स्टार्च मिला दो और स्पंज या ऊनसे लगा लगाकर छेद बन्द कर दो अगर उसपर अखरोटकी बार-निस हो तो थोडा अम्बर मिलावे ॥

तांबेके रेतीले पत्थर जमानेका मसाला

साढे तीन भाग सफेद सीसा, तीन भाग लाइथेज, तीन भाग बोल और दो भाग काचके टुकडे मिलाकर दो भाग अलसीके तेलकी वारनिसके साथ घोट ले ॥

फट सिमेंट

चिकनी मिट्टीको सुखा पीस छानकर एक लोहेके बर्तनमें रक्खे और सूख जानेवाला तेल मिलाकर घोटे जब यह सब मिलजायँ और लेईसा हो जाय तो इसे तेलमें रक्खे जिसमें सोखना बन्द हो जाय इससे कौरोसिव गैस हवा नहीं निकलती मगर गरमीमें पिघल जाता है ॥

भोजन पकानेके बरतनोंका जोडना

सबसे मजबूत और आसान मसाला चूना और अण्डोंकी सफेदीसे बनता है किनारोंपर लगाकर जोरसे दबावे जल्दी जम जाता है और मजबूत हो जाता है, यह मसाला थोड़ाही तैयार करना चाहिये क्योंकि यह बहुत जल्दी कडा हो जाता है। केलसाइंड प्लाष्टर भी चूनेका काम देता है।

कोकस सीमेंट

कोकस सीमेंटको थोडे अलसीके तेलमें मिलानेसे उमदा जोडनेका मसाला तैयार होजाता है ॥

कुठारी या घरिया जोडनेका मसाला

पिसी हुई चिकनी मिट्टी माईटको रेतके पानीमें या सुहागेके अर्कमें मिलाकर लगानेसे हरसमय गरम रहनेवाली घरिया

जुड जाती है । आगपर रखनेसे यह कंबुकासा चमकीला मसाला तैयार हो जाता है ॥

अण्डोंसे बना जोडनेका मसाला

अंडेकी सफेदीमें बराबर पानी मिलाकर थोडा बुझा हुआ चूना मिलादे और लेई बनाकर तुरन्तही काममें लावे ॥

हाथीदांत या सीप जोडनेका सिमेंट

मछलीका सरेस एक भाग व्हाईटग्ल्यू दो भाग इन दोनोंको तीस गुने पानीमें गलालो और छानकर आगपर चढा दो जब छः भाग रह जाय तब तीसवां भाग गममास्टिक, आधा भाग एक कोलह और एक भाग ह्वाइटत्रिंक मिलाकर उसमें शामिल करे जब काममें लाना चाहे तब थोडा गरम करके जोड दो ॥

लकडी जोडनेकी लेई

आल्काईड आफ आयरन, चना कलई मँगाय ।
पोस्त सानके नीरमें, लकडी लेहु जुडाय ॥

संगममंर जोडनेकी लेई

प्लास्टर आफ पेरिस फिटकरीके पानीमें जितना मिल सके मिला लेवे । इसको भट्ठीमें पकाकर और पीसकर रख छोडे जब संगमरमरको जोडना चाहो उसमें पानी मिलाकर जोडदो इसका रंग संगमरमरके रंगकासा होता है ॥

मिट्टी मीठी लगै

गुंजा पत्ता लायके, पहिले लेय चबाय ।
फेर अँधेरी रातमें, मृत्तिका डेलीखाय ॥
गुड़सी सो मीठी लगे, खाते नहीं अघाय ।
ईश्वरकी माया प्रबल, अद्भुत ख्याल दिखाय ॥

अदृश्य होना

जीवत खंजन लाइये, फाल्गुनमास सुहाय ।
भादौं तक तेहि राखिये, पिंजरा बन्द कराय ॥
तब ताकी सिख लेयके, जंतर माहिं मढाय ।
राखैगो मुख ताहिं जो, सो फिर दीखै नाहिं ॥

जंतरकी विधि-दश भाग सुवर्ण, बारह भाग तांबा और सोलह भाग चांदी इन सबको मिलाकर जंतर बनावे ॥

अदृश्यकरण तावीज

पकड खंजीरा पिंजरा डालै । बरस एक ताको प्रतिपालै ॥
बरस एक दिन ऐसा आई । सात पंख शिर निकसैं ताई ॥
तादिन दृष्टि न आवै सोय । यदपि रहै पिंजरामें सोय ॥
नैननसों खोजत जिमि रहै । जैसे हाथ मेल तिहिं गहै ॥
दोहा-साता पंख उखाड़के, कंचन मध्य मढाय ।
कोइ न देखै तासुको, मुखमें लै तहँ जाय ॥

दो बाडी चीजोंका पानी करना

नाइट्रेड आफ एमोनिआ अरु ग्लौवरसौल्ट मँगाय ।
डाल खरलके बीचमें ले धीरे घुटवाय ॥
धीरे धीरे घुटतही अद्भुत अचरज देख ।
जाय कपाडन दूर हो पानीसीले पेख ॥

करेलोंका कडुआपन दूर करना

चूल्हे ऊपर राखिये छील करेला लाय ।
भर इमलीको नीर फिर जोश दीजिये ताय ॥
तीन वार ऐसे करे फेर मसाला डार ।
रहे न कडुवे नोकहू होय साग तैयार ॥

नीमके पत्तोंका मीठा होना

अजवायनको चाबिके, पत्ता नीम जु खाय ।
ते कडुवे लागै नहीं, है यह सहज उपाय ॥

दीमक दूर करनेका उपाय

जब कहीं दीमक लगै तब यह उपाय करै कि हींगको जलमें घोलकर जिस जगह दीमक हों उस जगह छिडक देवे तो भाग जाँय ॥

दूसरा उपाय—जहां कहीं दीमक लगै वहां कोलटार पोतवा देवै तो दीमक न लगै ॥

तीसरा उपाय—चितौरके पत्ते मँगवाकर घरमें जला देवे तो उन पत्तोंका धुवां लगनेसे दीमक भाग जाय ॥

चौथा उपाय—क्लोरेड आफ मरेरीके अर्थात् हल किया हुआ पारा एक तोला लेकर दो सेर पानीमें मिलाकर जहां जहां दीमक लगनेका सन्देह हो वहां २ छिडक दो दीमक या और दूसरे कीड़े कभी न लगेंगे ॥

मक्खी दूर करनेका उपाय

गौका दांत मँगाकर मट्ठेमें पिसावै जहां इसको धरोगे वहां एक भी मक्खी नहीं जायगी ॥

दूसरी विधि—अकरकरा, गन्धक और नर्गिसकी जड तीनोंको मिलाकर जलके साथ महीन पीस छानकर एक बर्तनमें लेवे और जिस जगह इसको छिडके वहांसे मक्खियां उड जायँगी ॥

तीसरी विधि-मट्ठेके साथ हरतालको पीस गोली बनाकर घरमें रख देवे तो सूंघते ही मक्खियाँ भाग जायँगी ॥

चौथी विधि-डालकर लकडी काशिया, चूरण ले करवाय। भिगो सवाभर दीजिये, सेर नीर मँगवाय ॥ घंटे भरमें छानकर दश भरदे गुड गेर। उतनी काली मिरच भी, पीसे मेरिय फेर ॥ ऐसे कर तैयार यह, राखौगे जिहि ठांव। मक्खी रहन न पावही, है यह, सहज उपाय ॥

पांचवीं विधि-काली मिरच एक भाग, गुड एक भाग, दूध या मलाई दो भाग इनको मिलाकर एक रकेबीमें रख दो मक्खियां न रहेंगी ॥

पिस्सुओंका मरना

रात्रिके समय एक पीतलके बर्तनमें पानी भरकर उसमें एक बूँद सरसोंका तेल और एक बूँद मिट्टीका तेल डालकर चारपाईके नीचे रख दो प्रातःकाल हजारों पिस्सू मरे हुए उसमें मिलेंगे।

पिस्सू दूर करना

इन्द्रायणफलको पीसकर जलमें मिलावे और सब घरमें छिडक देवे तो पिस्सू भगजायँ ॥

खटमल दूर करनेका उपाय

रुई आककी लायकै, बाती लेय बनाय। ताहि महावरमें भिगो, पीछे लेय सुखाय ॥ दीपक कडुवो तेल भर, बाती देय जलाय। घरमें खटमल एक भी तभी रहन नहिं पाय ॥

दूसरी विधि-गुड चन्दन अरु लाख मिलाय त्रिफल विडंग लेहु मँगवाय ॥ लाय आकका पत्ता और। सबको पीस

करो इक ठौर ॥ याकी धूनी दीजै जहां । खटमल मच्छर रहे न तहां ॥

तीसरी विधि–गन्धकधूनी दीजे खाट ।
खटमल गहैं मौतकी बाट ॥

जुआँ दूर करनेका उपाय

गाऊमूत्रमें डार खरैंटी करो लेप शिरमाहीं ।
सबको होय अचम्भा भारो रहें जुआं इक नाहीं ॥

दूसरा उपाय

कृष्ण धतूरको रस लीजै । पारो तामें मरदन कीजै ॥
तामें कपडा एक भिगोय । राखै शिरपै ताको सोय ॥
तीन पहरमें देखो भाई । जुआं एक रहने नहिं पाई ॥

घरमेंसे चूहे भागजायँ

ऊँट दाहिने हाथका लेना खून मगाय ।
घरमें धूनी दीजिये चूहा रहन न पाय ॥
बिल्लीको मल लायके पीस लेय हरताल ।
लेप कियेपर देखके भाग जायँ ततकाल ॥
बकरीकी ले मेंगनी और मूत हरताल ।
प्याजगांठ मँगवायकै लेहु पीस ततकाल ॥
जीवत मूस पकडके छोडै लेप कराय ।
देखै मूसो जो कोई सोई जाय पलाय ॥

मच्छर दूर करनेका उपाय

जा दिन मच्छर रातको अधिक दुःख दें आय ।
तेल लौंगको खाटपै छिडकत जाय पलाय ॥

हजार आंखका दीखने लगे

घुग्घूको सिर काट मँगावै । बीज धतूरेके जु बुवावै ॥
जब असाढ बदि चौदश आवै। धूप दीप कर भैरों ध्यावै॥
शिरकूं गाड भूमिमें देवै । जूंठा पानी उसमें देवे ॥
नित प्रति दीपक देय जलाई। बत्ती सूत घीवकी भाई ॥
उगे पेड जब करै उपाई । जड फल फूल छाल मँगवाई ॥
पीस तिलक माथेपै दीजै । सहस आंखको रूप धरीजै ॥
सुनी सुनाई दीनी छाप । सांच झूठको परखौ आप ॥

सभा कानी दीखे

उग्यो आंवरे वृक्षपै, करिये नीम तलास ।
लाय फूल फल मूल अरु, कर चूरण रास पास ॥
बाती तिन्हें लपेटकै, तेल नीमको डार ।
होय सभा बैठी जहां, दीजे दीपक जार ॥
या दीपककी चांदनी, जापै परिहै जाय ।
सो नर अस दीखन लगे, जैसे कानेराय ॥

शीशी अग्निसे भरी दीखे

शीशीमें मदिरा भरकर उसमें थोडासा गन्धक छोड़ देवे ।
फिर उसको अँधेरेमें रक्खे तो अग्नि भरी शीशी चमके ॥

शिर अग्नि समान चमके

गन्धक ताल सिंदूर अरु, मनसिल ले सम भाग ।
रंग कपडा शिर बांधिये, चमके जैसे आग ॥

विघ्न दूर करना

गोमूत्र हरताल और गन्धक विष मिलाकर चूर्ण करके जो
कोई अग्निमें धूनी दे तो उसके संकट विपत्ति सब दूर हों ॥

मुरदेको जिन्दा करना

एक बूँद मुरदेके मुखमें, डारै तेल अँकोल ।
एक पहर पीछे यह दीखै, देवै मुरदा बोल ॥

मुरदा न सडै

तीन हजार ग्रेन गरम पानी, सौ ग्रेन फिटकरी, पचीस ग्रेन खानेवाला नमक, बारह ग्रेन कलमी, शोरा साठ ग्रेन पुटाश दश ग्रेन आरसैनिक एसिड इन सबको मिलाकर ठंढा होने दो फिर उसमें दश लेटरके हिसाबसे चार सेर ग्लैसेरिन और एक लेटरमें चार भार फैनिलिक एक कोहल मिलाकर आधे लेटरसे पांच लेटरतक मुरदेको खूब मालिश करो और कुछ उसके भीतरभी भर दो इस तरह करनेसे बहुत दिनतक मुरदेकी देह न सडेगी ।

बेडी कटै

लाल कमल जटामांसी लावै । लाय तुल्य किरकिटै खवावै ॥
ताको मल जाके जु लगावै । तुरत बन्ध बेडी खुल जावै ॥

हाथकी वस्तु अदृश्य होय

जंगलसे एक मोर ला, दो दिन खान न देय ।
फिर कीजै ऐसो जतन, तब अचरज लख लेय ॥
मनसिल अरु हरतालकूं, गोघृतमें ले सान ।
गोली बांध चुगाइये, रती रती परमान ॥
इहि विधि बीतै सात दिन, तब यह करै उपाय ।
बींट करै दिन सातवें, रखिये जिन ढिग लाय॥
जबै दिखावै खेल तब, लेप हाथमें लेय ।
करमें राखै जो कछू, फिर न दिखाई देय ॥

घोडेका खेल

काला जीरा पीसकै, घोडा आंख लगाय ।
घोडेकूं दीखै नहीं, अन्धो वह ह्वै जाय ॥
वाकी आंख मट्ठेसे धोवै ।
फिर जैसीको तैसी होवै ॥

अश्वमारण

जब अश्विनी नक्षत्र आवै । अश्वहाड़ाकी मेख बनावै ॥
सात अंगुल ताको परमान । गाडै शाला घोडा हान ॥
ॐ ३ पच पच स्वाहा । इस मन्त्रका हजार जप करै ॥

मछली मारण

पूर्वाफाल्गुनिमें करै, झडबैरीकी मेख ।
गाडै धीवरके घरे, अंगुल आठ सु देख ॥
नष्ट होयँ मछली सब वाकी ।
अद्भुत यह लीला है ताकी ॥

ॐ जले स्वाहा । ॐमात्स्यि स्वाहा । इन दोनों मन्त्रोंका फल समान है किसी एकको सहस्र वार जपै ॥

दूसरी विधि—लाय मघा नक्षत्रमें काट भिलायौ आप ।
ताकी मेख बनाइये; सात अंगुलकी नाप ॥
धीवरके घर गाडै जाय । मछली तुरत नष्ट ह्वै जाय ॥

तीसरी विधि—अंगुल एक आककी लकडी, कृतिकामें घर लावै। धीवरके घर वा तलावमें, मछली रहन न पावै ॥

शाक नष्ट करनेकी विधि

गन्धक चूरौ लायके, जलमें लेय भिगोय ।
डारै जाके सागपै, साग नष्ट सो होय ॥

दूध नाशक

लकडी जामव पेडकी, आठ अंगुलकी लाय ।
अनुराधा नक्षत्रमें, ताकी कील बनाय ॥
पैनी करकै गाडिये, घरमें ताकूं जाय ।
ताकी गैया दूधसों, ताही छन हट जाय ॥

तेल रोकना

जब चित्रा नक्षत्र आवै । महुएकी एक कील मँगावै ॥
अंगुल चार होय परमान । जा घर होय तेलकी खान ।
तामें गाडै वाको जाय, तेल नष्ट ततछिन है जाय ॥

आगसे उंगली न जलै

दोहा–आर्सनिक दो भाग लै, पारा ले इक घाल ।
आधौ भाग कपूर ले, पीस मिलावै हाल ॥
इनको उंगली लेपकर, सीसो ले पिघलाय ।
गरम गरममें गेरिये, उँगली भुरसे नाँय ॥

जलमें हाथ डालै और सूखा निकले

घडा एक जलका भर लेवे । गेरु लायको पुडियेमें देवे ॥
हाथ गेर तामें पुनि दीजे । भीज नाहिं सूखोही लीजे ॥

एक हंडिया और तीन पेट

दोहा–ग्लास एक मँगवायके, गाढा शरबत भरिये । ताके
ऊपर दूध पुनि, धीरे धीरे भरिये ॥ पोर्टवाइन मँगवायके, ताके
ऊपर डारे। तीनों रंग जुदेही चमके, लख सब होय सुखारे ॥

टूटा हुआ फूल बहुत दिन तक हरा रखना

नमक नीर करिये तैयार । तामें फूल दीजिये डार ॥
बहुत दिनोंतक नहिं मुरझावै । जब देखै तैसेही पावै ॥

सेजपर अग्निक्रीडा

कपूर चीनियां हलदी लावे । इन्हें पानके रस घुटवावे ॥
छोटी छोटी बत्ती करके । ले सुखाय छायामें धरके ॥
खेल करनको जब मन आवे । इन्हें आगसे तभी चसावे ॥
चसते उन्हें सेजपर डारे । अग्नी शय्या नाहिं पजारे ॥

बबूलके कांटे चबाना

द्रोणपुष्पके पत्र चबाकर, रसको मुखमें राखै ।
छिपके करे काम यह सिगरे, महादेव यह भाखैं ॥
आके सन्मुख फिर बबूलके, कांटे खूब चबावै ।
हानी कछु नहिं होवै मुखमें, खेल सबै यह भावै ॥

आपही आप अग्नि पैदा होना

उँटमेंगना एक मँगावै । ताहि अगन बिच खूब जरावै ॥
लाल सुरख हो जाय अंगारा । सहत बीच डोबै तिहि सारा ॥
ऐसे कर राखै निज पासा । चाहे जब फिर करा तमासा ॥
तोड़ मेंगना धरै हवामें । अगिन आप चेतैगी तामें ॥

पाव रोटीका नाच

चाहे ले अखरोट इक, चाहै लेय बदाम । ताकी मींगी काढके करै फेर यह काम ॥ पारा गन्धक और फिर, शोरा आवे लेय । तीनोंको सम भागकर, वाहीमें भरिदेय ॥ डारतही तंदूरमें, अचरज अधिक लखाय । फुदक फुदक रोटी करे, परे बाहरी आय ॥

आज्ञाकारी अंडा

कांच पात्रमें लीजिये, नमक तिजाब भराय । अंडा तामें डारिये, दीजै हुकम सुनाय ॥ सुनत हुकम डूबन लगै, फिर उछलै फिर डूबै । हुकम सँग डूब तिरै, करे तमासे खूबै ॥

घंटेभरमें पेड़ लगाना

तल कसूम कढायकै, तुलसी बीज भिजोवै ।
आठ दिना गाडे मिट्टीमें, जब चाहे तब बोवै ॥
घंटे भरमें उगै पेड यह, है अचरज अति भाई ।
इन्द्रजालका होय तमासा, देखे सोइ हरषाई ॥

दीवारमें आग लगाना

मट्टीतेल शराब ये, दोनों लेय मिलाय । बाहरकी इक भीतपै, दीजै इन्हें पुताय॥सब लोगनके सामने, देय अगनकी लोय । जलन लगेगी भीत सब, हरज कछू नहिं होय ॥

आगका खुद जलना

चूना बिना बुझाही लावै फास्फोरस उसमें मिलवावै ॥
फिर इसको कपडेमें नाखै । पीतलके बर्तनपर राखै ॥
तापे छिडको थोडा पानी ।आग लगैगी बिना मलानी॥

शराबक दूध करना

आओ अजब तमाशा देखौ । मदका दूध होय सो पेखौ॥
बौर आमका पीस सुखालो ।मदमें थोडासा यह डालो ॥
देखो अजब तमाशा कैसा ।होय शराबका दूधसम ऐसा॥

अंडेका दर्पणपर खडा होना

अण्डा लेहु एक मँगवाई । नीचे एक सुराख कराई ॥
खूब हिला दर्पणपर धरे । अण्डा चिपक हले ना टरे॥

फौबारे के जलमें अंडेका उछलना।

अण्डेका रस काढिकै, करले खाली वाहि ।
नलके मलके ऊपरे, अधर छोडदे ताहि ॥
जल ऊपर अण्डा नचै, गिरन न पावै सोय ।
करै खेल ऐसी जगह, हवा जहां नहिं होय ॥

बिगडा घी सुधारना

लीजै एक कढाव मँगाई । तामें दीजै घीव चढाई ॥
दीजै गाँठ प्याजकी डार । नीचे दीजै आग अजार ॥
गरम गरम घीव जब होय । दीजै फेंक गाँठ तब सोय ॥
उत्तम घीव होयगा भाई । जो करिहो तुम वही उपाई ॥

हरा खेत सुखनेका उपाय

लावै गंधक ऊंटकटेरी । पीस पीसकर राखै ढेरी ॥
हरे खेतमें दीजै डार । खेत सूख होवै पतझार ॥

कढाई गरम न होय

तेल कढाई माहिं भर, मूत बैलको डार ।
गरम कढाई होय नहिं, दीजै अग्नि अजार ॥

दूसरी विधि

लाय काठ तुलसी अरु साल । तिनमें आग लगावै हाल ॥
गधा मूत्रमें इन्हें बुझावै । चूल्हेमें फिर इन्हें लगावै ॥
गरम होय नहिं नेक कढाई । यदपि कीजिये कोटि उपाई ॥

दिनमें तारे दीखनेका उपाय

काढै रस अगस्त पुनि तामें, सुरमा श्वेत भिजोवै ।
पीस दिवस चौथे कर अंजन, दिनमें तारे जोवै ॥

जादूका साबुन

पानी तेल मँगायके, लेवे खूब मिलाय ।
डारतही एमोनिया साबुन सम जम जाय ॥

तोपके समान शब्द करना

क्रीम औफ टार्टार मँगावै । गंधक जवाखार पुनि लावै ॥

तीनोंको सम भाग मिलावै। भर हुक्कामें आग लगावै॥
होवे शब्द तोप सम भारी। होयँ चकित सुनके नर नारी॥

गधा न रेंकै

घी अरु तेल मिलाकर भाई। गर्दभ चूतड देहु लगाई॥
जबतक लगा रहै वह तापै। रेंकन गधा नेक नहिं पावै॥

मुर्गा बांग न दे

मुर्गेके शिर तेल लगावै। मुर्गा बांग देन नाहिं पावै॥

दूसरी विधि

मुर्गेके गल बांधिये, एक ड्राम ले राँग।
कंठ मुरगको जाय रुक, देन न पावै बाँग।

अदृश्य अक्षर

कागज एक श्वेत मँगवावै। चूनेसों अक्षर लिखवावै॥
सूखेपर दीखै कछु नाहीं। कीजे तभी तमाशा ह्वांहीं॥
बोरे कागज पानी माहीं। श्वेतवर्ण अक्षर ह्वै जाहीं॥

तसलेका पानी गायब

धर इक ईंट बीच तसलाके। और पास जल भरिये ताके॥
मोटी बत्तीका इक दिया। ऊपर ईंट जलाओ भइया॥
औंधा मटका तापै धरो। दिया ईंट ताके बिच करो॥
धुआं संग पानी उड जाई। भीतर मटकेके खिंच जाई॥

बिना आग पानीका उबलना

ग्लास लीजिये दो मँगवाय। पानीसों दीजै भरवाय॥
एक ग्लासमें सोडा नाखै। दूजेमें नींबू सत राखै॥
दोनों पानी लेय मिलाई। पानी उबलन लागै भाई॥

बोतलकी चिकनाई दूर करना

पहिले थोडा सलफ्युरिक ऐसिड डाल दे, फिर पानी भरकर बोतल बन्द करदे जिसमें तेजाब उसके हर एक भागमें लग जाय फिर ठंढे पानीसे कई बार हिलाकर धो डाले इससे सब प्रकारकी चिकनाई दूर हो जाती है और किसी तरहकी गन्ध भी नहीं रहती ॥

स्याहीकी बोतल साफ करना

छोटे छोटे नाखून बोतलमें भरकर पानी वा सिरका डाल कर खूब हिलावे अगर इससे साफ न हो तो हैड्रोक्लेरिक ऐसिडसे साफ करे और दो या तीन दफे साफ करके धो डाले ॥

लैम्पपर चिमनी न चटके

चिमनीको ठंण्ढे जलमें डालकर जलके बर्तनको जल और चिमनी सहित आगपर रक्खे जब जल उबलने लगे तब उतारकर अपने आप ठण्ढा होने दे यह चिमनी लैम्प-पर चढानेसे कभी न चटकेगी ॥

कपडेकी चिकनाई दूर करना

चिकनाईपै भुरकिये, सेल खडीकूँ पीस ।
वेला फेरो अग्नि भर, चिकनाई नहिं दीस ॥

शिरके बाल काले करना

जपापुष्प अरु क़ीटी लोह, आय आँवले पीसे सोह ॥
करै लेप वासों दिन तीन, काले बाल जु महिना तीन॥

बाल सफेद करना

बकरी दूध भिजोइये, तिलको ले दिन सात ॥
तेल काढ शिर मसलिये, बाल श्वेत ह्वै जात ॥

पतंग की डोरका मांजा

हलब्बी काच बहुत बारीक पिसा हुआ एक छटांक-करंड पत्थर तीस तोले, इमलीका गूदा तीन तोले, ग्वारपाठेका गूदा आवश्यकतानुसार इन सबको खरलमें डालकर खूब मिलाले और प्रथमही डोरपर मोमकी गोली सूतै फिर ऊपर लिखी हुई वस्तुओंका गोला बनाकर डोरको सूतै और उसपर नदीकी बालू बुरक दो सूखने पर ऐसा उत्तम मांजा हो जायगा कि बहुत जल्द काट करेगा ।

चलता कोल्हू रुके

साबुन टूक मँगायकै. स्याही देय लगाय ।
डारै कोल्हू बीच तौ, चलत चलत रुक जाय ॥

शिरपर बत्ती जलाना

मुखसे त्रिकुटा प्रथम चबावै । थूक काढिं नरभूत मिलावै ॥
लेप शीशपर इसका कीजै । बत्ती जला शीश धरिलीजै ॥
बाल एक भी जलन न पाय । यामे संशय नेक न धाय ॥

बच्चे के दांत मुखसे निकले

बीज सिरसके लाव निकाल । पाय लीजिये तिनकी माल ॥
बालकके गर डारे रहौ । दन्त कष्टविन वाके लहौ ॥

शिरपर अग्नि चमके

मैनसिल और हरताल को अंकोल तेल में पीस उससे एक कपडा रंगे और शिरपर बांधे तो शिरपर वह कपडा जलती हुई मशालकी तरह रातको देख पडे ॥

निज देह अग्निके समान दीखे

मैनसिल गंधक अरु हरताल ।· ते सम भाग सिंदूर सुघाल
रँग कपडा ओढै निज तनपर । दीखै आग समान रात नर

ग्रहण दिखाना

तेल लाय अंकोलको, लेप काँचपै लेय ।
रवि राकेश निहारिये, ग्रहण दिखाई देय ॥

जलमें न डूबे

हलकी लकडी लायकै, सिंहासन बनवाय ।
लेप चिरमिटीका करै, जलमें देइ बहाय ॥
ऊपर ताके बैठके, चले जाहु बिन रोक ।
सुख जाखेओगे बहे, डूबनको नहिं शोक ॥

मनुष्यके मनकी बात जानना

आदितवार अमावस होई । ता दिन कर उपाय यह जोई ॥
काढ करेजा घुग्घू लावै धूप दीप दै सिद्ध करावै ॥
सोवतके उरा धारिये ताहिं । मनकी कहै छिपावै नाहिं ॥

चावल न सीजे

दूध आकमें चुपडके, चाँवल देहु चढाय ।
सीजन पावे एक नहिं, कोटिन करौं उपाय ॥

नगारा फुटे

जहां नगारा होय तहां, स्यारखाल जरवाय ।
फूटोसो बाजन लगे, अदभुत भाव दिखाय ॥

हथियारोंको काई न लगे

पित्ता मुरगी लायकै, अंडी तेल मिलाय ।
हथियारनपै दीजिये, इसको लेप लगाय ॥
फिर इनको उठवायकै, धरदीजै इकठौर ।
विना बुझा बिछवाइये, चूना चारों ओर ॥

कैसीही बरसात हो. लोहा जंग न खाय।
रहैं चमकसे शस्त्र सब, है यह सहज उपाय ॥

जुएमें जीतना

हस्त नक्षत्तर होय रवि, ता दिन करै उपाय।
न्यौते पेड पवांरको दिन पहले ही जाय ॥
रविदिन ताको लायके, बांध दाहिनी बांहि।
खेले जूआ जो कोई, जीते संशय नाहिं ॥

शत्रुके मंदाग्नि करना

इमलीकी इक कील लै, अंगुल पाच प्रमान।
मृगशिर रिपुके घर धरे, अग्नि मंद पडजान ॥

स्त्रीकी छाती जाती रहे

लाजवन्तीको लाइकै, तेहिकी पत्ती लेय।
फिर पत्ती दोउ हाथमें, अपने तू मललेय ॥
नारीको दिखलाइकै, जो मुट्ठी बँधिजाय।
छाती गायब होयगी, खोले फिर आजाय ॥

बन्दूककी चलती हुई गोलीको मुंह से पकड़ना

मोमकी एक गोली बनाओ और उसपर काला रंग कर दो जिससे गोलीसी नजर आवे जब तमाशा करना चाहो तो पहलेसे अपने एक साथीको सीसेकी गोली दो, कि वह उस गोलीको अपने मुँहमें छिपाकर तीस कदमके फासिलेसे खडा हो जावे और तुम जिस हाथसे बन्दूक पकडे हो उस हाथमें मोमकी गोली छिपाये रहो और दूसरे हाथमें एक सीसे की गोली ले तमाशा देखनेवालोंको दिखाकर कहो कि देखो हम इस

गोलीको बन्दूकमें भरकर उस मनुष्यको मारेंगे यों कह तुम थोडी देर बाद बातोंही बातोंमें सीसेकी गोलीको मुँहमें छिपालो और मोमकी गोली बंदूकमें भरकर अपने साथीके सन्मुख बंदूकका फैर कर दो तो तुम्हारे साथीको चाहिये कि बंदूकका फैर होते ही मुँहकी गोली दांतोंसे दबाकर रह जावे। देखनेवाले आश्चर्य करें कि, बंदूककी चलती हुई गोली मुंहसे पकड लिया सबसे बेहतर यह है कि, एक गज ऐसा बनवाओ कि जिस तरफके बंदूक भरने के वक्त बंदूकमें गज देते हैं उस तरफ एक गोलीका सुराख इस तरहका हो कि, जिसमें गोली फँस जा सके फिर जिस वक्त तमाशा किया जावे उस वक्त तमाशा देखनेवालोंको सीसेकी गोली दिखाकर बंदूकमें डालो फिर बंदूकमें गज देकर ठोक दो जिस वक्त बन्दूकमें गज दिया जावेगा उस वक्त बन्दूककी गोली गजके सुराखमें फँस जावेगी। फिर तुम बाकी तर्कीब ऊपर लिखे कायदेसे करो, बहुत साफ खेल होगा॥

मुखसे प्याजकी दुर्गन्ध दूर करना

प्याज खानेके पीछे सिरका और अजमोदको मिलाकर पीनेसे मुखकी दुर्गंध दूर होती है ॥

चिमनी धुएँसे काली न हो

बत्तीको सिरकेमें भिगोकर सुखा लो और फिर लैम्पमें जलाओ तो चिमनी काली न होगी ॥

वृक्षके पत्ते भरना

कूकर झिल्ली लायके; छायामें सुखवावे। सोंठ मिर्च पीपल

ये तीनों पीस कूट रखवावै ॥ मिहदी सम फिर घोल नीरमें, बायें हाथ लगावे। ताहि हाथसों छुवै वृक्षको । तब यह खेल दिखावे ॥ फल फूल पात अरु कोंपल, सब झरि परहिं जो धरनी । धन्य विधाता कौतुक तेरे धन्य गुरू की करनी ।

शब्दयक्त गिल्ला बनाना

एक कागजमें चांदीकी थोडी बारूद और मूँगके बराबर थोडेसे काचके टुकडे डालकर गोली बनालो और उसपर गीली माटी लपेट कर धूपमें सुखालो । जब तुम गुलेलपर रखकर गिल्लेको चलाओगे या जमीनपर मारोगे तो लगतेही बन्दूकके समान शब्द होगा ।

गुलाबके फूलकी चिडिया बनाके उडाना

एक टीनका नल कि, जिसकी लम्बाई ६ गिरह और वृत्त (घेरा) ४ गिरह हो तस्वीर अंकी सूरतका बनवाओ और उसके मध्यमें अंदरसे टीनका पर्दा रक्खा जावे नलके दोनों मुँह खुले रहेंगे फिर इस नलके दोनों मुँहवाले दो ढक्कन सूरत बतौर तस्वीरके ऐसे बनवाओ कि नलके मुँहपर ढक्कन लग जानेके बाद उनके जोड दिखाई न दें । जब कि, तमाशा दिखाना चाहो तो पहले से नलके एक खानेमें छोटी चिडिया बन्द कर नलके मुँहको ढक्कनसे बन्द कर दो और समाजमें एक फूल गुलाब आदिका लेकर तमाशा देखनेवालोंसे कहो कि देखो कि, इसे खाली नल में हम फूलको बन्द करते हैं यों कह तुम दूसरी तरफके खाली नलमें फूल बन्द करो, मुँहको

ढक्कनसे बन्द करके किसी मेज आदिपर रख दो फिर थोडी देर बाद बन्दूकका फैर कर नलका चिडियावाला खाना खोल दो तो चिडिया उड भागैगी देखनेवाले आश्चर्य करेंगे।

कटेरीखाना

जंगलकी एक वडपतिया नामक बूटी पहले चावलो फिर कटेरीको चबाओ तो न तो कडवी लगेगी और न कांटे ही नुकसान पहुँचायेंगे।

बोतलमें अक्षर लिखना

एक सफेद काचकी बोतलमें गोंद और कतीरेका पानी भरकर चारों ओरसे तर कर लो जिससे भीतरकी ओर सब बोतल चेपदार हो जाय फिर एक सफेद कागजपर थोडासा लिखकर उसके टुकडे २ करके बोतलके भीतर उतार कर तरकीबवार चिपका दो तो देखनेवालोंको ऐसा मालूम होगा कि, किसीने बोतलके भीतर अक्षर लिख दिये हैं।

बोतल में दर्पण उतारना

अबरखका एक चौखुंटा टुकडा लेकर उसकी एक ओर दर्पणकी तरह कलाई कर लो और एक उतना ही लम्बा चौडा कागज चिपका कर बोतलके भीतर उतार दो तो दर्पणसा दिखलाई देने लगेगा॥

बोतलमें पृथ्वी, समुद्र हवा और आकाश

एक सफेद बोतलमें कई रंगके काचके छोटे २ टुकडे तीन चार अंगुलतक भरदो, उसके ऊपर नील रंगका पानी उसपर मिट्टीका तेल और उस पर गन्धकका नीला तेजाब भर दो, इनके

चारों रंग अलग अलग चमकेंगे, सबके नीचेवाले काचके टुकडे पृथ्वीके समान, नीला पानी समुद्रके समान मिट्टीका तेल हवा और तेजाब आकाशके समान चमकेगा ॥

वृक्षके पत्तोंपर दीपदान

राल एक तोला लोहचूर्ण दो तोले, गन्धक एक तोला, कपूर छःमासे इन सबको पीसकर एक कपडेकी पोटलीमें बांधकर एक ऊँचे वृक्षकी सबसे ऊँची डालीपर बांधकर आग लगा दो तब ज्यों २ हवा चलैगी त्यों २ उसमेंसे चिनगारी निकल कर प्रत्येक पत्तेपर जम जाँयगी और वह मालूम होने लगेगा कि प्रत्येक पत्तेपर किसीने दीपदान किया है। यह खेल रातके समयका है ।

तासके पत्तेका मेजपरसे तमाशा करनेवालेकी तरफ दौडना

पहलेसे तुम १५ हाथ काले रंगका रेशमी सूत लो और उसके सिरे छोर) को किसी ताशके एक कोनेमें बांधकर मेज-पर रखदो और सूतका दूसरा छोर अपने साथीको,) कि जो जादूकी झोपडीमें छुपा है या तमाशा देखनेवालोंके साथ मिल कर तमाशा देख रहा है,) पकडा दो और उससे कह रक्खो कि जब हम 'वन् टू थ्री' की आवाज दें तो तुम 'थ्री' आवा-जपर किसी कदर सूतको एकदम अपनी तरफ खींच लेना। अब तमाशा देखनेवालों से कहो कि, देखो इस मेजपर ताशको जब हम बुलावें तो यह आपहीसे मेरे पास दौडा चला आवेगा यों कह तुम कुछ फासिलेसे मेजके चारों तरफ घूमकर अपने उस साथीके सामने कि जो सूतका दूसरा छोर पकडे, इस

हिकमतसे खडा हो जाओ कि तास खींचनेपर तुम्हारे हाथमें आजावे इसके बाद तुम तासकी तरफ देखकर 'वन्-टू थ्री' की आवाज दो 'थ्री आवाजपर ताश खींचेगा तो तुम खींचते हुए ताशको बीचहीमें पकड लो देखनेवाले आश्चर्य करेंगे। इसी तरकीबसे मेजपरका रूमाल और छल्लासे रुपया आदि खींच सकते हैं॥

जलते हुए रूमालको शिरपर धरना

पहिले उत्तम तेल मँगाकर शिरपर लगावे, फिर घीकुवारका रस निकाल शिरपर मल लेवे इसके बाद रूमालको भिगोकर उसे अग्निमें जलावे और जलता हुआ रूमाल शिरपर लेवे। बाल भी नहीं जलने पावेंगे।

चित्रके रोनेकी विधि

बालक पैदा होय जब, ताकी झिल्ली लाय।
रखिये अपने पासमें, पहिले ताहि सुखाय॥
चित्तरसारी जायकै, दीजै खेल दिखाय।
झिल्ली धरकै आगपै, धूआं देहु उठाय॥
धूआं लगतही चित्रमें, आंसू बहत दिखाय।
गूगल धूनी देतही, आंसू जाँय बिलाय॥

चोर भय दूर करना

शुक्लपक्षके पुष्य नक्षत्रमें गुञ्जाकी जडको लाकर शय्याके सिरहाने बांधै तो चोरोंका भय न रहे॥

गज निवारण

छछूंदर को लाकर हस्त नक्षत्रमें पीसे और हाथीके लेप करे तो हाथी निःसन्देह भागे॥

तमाशा देखनेवालोंको जले हुए रूमालोंका साबित होकर छातेपर लटक जाना

एक टीनका नल कि जिसकी लंबाई एक गज और वृत्त (घेरा) तेरा इंच हो और जिसका मुँह बंद और दूसरा मुँह खुला रहे, तस्वीरकी सूरतका बनवाओ बाद इस नलके अन्दर बीचों बीच खुले मुँहसे बंद मुँहतक एक टीनका परदा ऐसा लगवाना चाहिये कि जिसमें नलके अन्दर दो बराबर खाने बन जावें फिर नलके खुले मुँहका एक ढक्कन बनवाना चाहिये जब तमाशा दिखलाना चाहो तो पहलेसे तुम आठ तानवाले छातेमें तानोंके शिरोंपर आठ रङ्गके आठ रूमाल लेकर हरएक रूमालके एक एक कोनेको सूतसे सींदो इसके बाद छातेको टीनके नलके एकखानेमें बंदकर ढक्कनसे ढांक दो और आठ रूमाल पहले रूमालोंकी सूरतके अपने साथियोंको दे रक्खो फिर एक छाता पहले एक छातेकी सूरतका हाथमें ले समाजमें आकर तमाशा देखनेवालोंसे कहो कि यह छाता हम इस टीनके नलमें बंद करते हैं यों कह तुम छातेको दूसरे खानेमें रख ढक्कनसे बंद कर मेजपर रखदो थोडी देर बाद तुम तमाशा देखनेवालोंसे कुछ रूमाल मांगो तो तुम्हारे साथी वही आठ रूमाल जो पहिले रूमालोंकी सूरत के उनके पास हैं तुमको देंगे फिर तुम उन्हीं रूमालोंको जलाकर उनकी खाक बंदूकमें भरदो ओ बंदूकका फैर टीनके नलकी तरफ कर फौरन नलके पहले खानेका छाता कि जिसमें रूमाल सीं रक्खे हैं निकालकर तान

दो तो तमाशा देखनेवाले जले हुए रूमालोंका साबित होकर छातेके तानोंपर लटक जाना समझेंगे ॥

विना गिलाफ चढे छातेकी तानोंपर कपडेका लपेटना
और बन्दूककी फैर होते ही गिलाफका चढ जाना

इस खेलमें ऊपरके खेलका नल दरकार है पहले तुम नलके एक खानेमें गिलाफ चढा छाता छिपा रक्खो जब तमाशा दिखाना हो तो समाजमें आकर विना गिलाफ चढा छाता विना सिली हुई कलियों सहित कि जो पहिले गिलाफ चढे हुमे छाताकी कलियोंकी सूरतकी है, नलके दूसरे खानेमें रखकर बंद कर दो । फिर थोडी देर बाद बंदूककी फैर कर फौरन् पहले खानेके छाताको निकाल कर तान दे तो छातापर गिलास चढा नजर आवेगा देखनेवाले आश्चर्य करेंगे ॥

हाजरात

सूखी ओंगा शाख लै, दीजै रुई लिपटाय । भारि घृत कोरे दीपमें, बाती देहु जलाय ॥ सात बरसकौ दोय तो, बालक एक बुलाय । ताहि न्हवाय धुवायकै, श्वेत वस्त्र पहनाय ॥ सन्मुख दीपक लायकै दीजै ताहि बिठाय । देखत दीपक लोयको, भेद देत सुनाय ॥

वाती गई ठिकाने आवै

बनमें फूलै संखाहुली, तब यह काम करीज । हरदी रंग चावल ले जावै, शनि दिन न्यौतो दीजै॥रविदिन जाय प्रातही उठकै सात प्रदक्षिण कीजै। हाथ जोडअरु शीश नवाके, ताकी विनती कीजै॥ तबमुख करके सूरज ओरी, दूध प्याय ताकी

जड दीजै ॥ खोद लीजिये तोरि लाय, तेहि निज घरमें रखवाई ॥ जाकी धरन हटै निज धरसों, ताकी कटि बँधवाई ॥ धरनी ठिकाने छिनमें आवै, होय चैन बहुतेरो ॥ पीडा घटै दुःख मिट जावै, क्लेश न आवे नेरो ॥

फूलोंका रङ्ग बदलना

लाल व नीले रंगके फूलोंको ऐमोनिया (अंग्रेजी दवाका नाम है) का धुआं देकर पानीमें डालदो तो ऊदा रंग होगा॥ अगर सफेद रंगके फूलोंको ऐमोनियाकी धूनी दी जावे तो जर्द रंग होगा, ऊदे वा नीले रंगके फूलोंको म्यूरायटिक एसिड गैसका धुआं देनेसे लाल रंग होय, जर्द रंगके फूलोंको गंधककी धूनी देनेसे सफेद रंग होगा । अगर पहले सुर्ख करनेके ताजे फूलोंको गंधक का धुआं किया जावे तो सब फूल सफेद नजर आवेंगे; फिर थोडी देर बाद इन फूलोंपर फिटकरी मिले हुए ठंडे जलका छिडकाव किया जावे तो फिर सुर्ख नजर आवेंगे॥

एक वृक्षकी शाखामें तरह तरह के फूल निकलना

किसी वृक्षकी एक बड़ी डालीको पकड उसको लंबाईकी ओरसे चीरकर भीतरका गूदा निकाल डालो और उसमें कितनेही प्रकारके फूलोंके बीज भरदो और डालीका मुख बन्द करके ऊपरसे इस रीतिसे मिट्टी लेसदो कि बिलकुल संधि न रहे और डालीको वृक्षही पर छोड दो थोडे दिन पीछे जितने रंगके बीज तुमने उसमें भरे हैं उतनेही रंगके पत्ते फूल

टहनियां निकल आवेंगी और इसे देखकर सब लोग अत्यन्त आश्चर्य करने लगेंगे।

पीतलको सफेद करना

छिलका अंडा मुर्गाके, अरु नौसादर लाय। पीस छान तय्यार कर; लीजै अकर कढाय॥ पीतल लीजै आगपर, गरम सुरख करवाय। बुझा अरकमें दीजिये, ततछिन श्वेत दिखाय॥

सफेद फूलके कनेरके दरख्तको देखतेही देखते सुर्ख फूलके कनेरका दरख्त बनाना

एक कनेरकी ताजी सुर्ख फूलवाली डाली, कि जिसमें बहुतसे फूल हों, लाकर एकान्तमें पहलेसे उसके सब फूलोंको गंधकका धुआं दो तो इस हालतमें पांच मिनटके वास्ते सब फूल सफेद रंगपर आजावेंगे, अब तुम पांचही मिनटके अंदर एक मिट्टी आदिके गिलास या प्यालेमें कुछ मिट्टी डालकर उस मिट्टीपर कुछ पानीका छिडकाव कर दो और तमाशा देखनेवालोंसे कहो कि देखो इस सफेद फूलवाले कनेरके दरख्तको आप लोगोंकी नजरोंसे गायबकर इसकी जगह सुर्ख फूलवाले कनेरका दरख्त हाजिर करता हूँ यों कह एक लोटा ठंडा पानी, कि जिसमें पहलेसे कुछ फिटकरी मिली है, हर फूलोंपर छिडकाव करो थोडी देर बाद वे फूल अपनी सफेदीको छोड सुर्ख जावेंगे तो देखनेवाले बजाय सफेद फूलवाले कनेरके दरख्तको सुर्ख फूलवाले कनेरका दरख्त समझेंगे॥

पांच प्रकारके रंग बदलना

पांच गलास मँगवाकर नम्बरवार रख दो पहिलेमें सौल्यूशन

औफ आयोडाईन औफ पुटेशियन भरदो दूसरेमें सौल्यूशन औफ कौरोसिन सबलाईमेट अर्थात् रसकपूरका अर्क भर दो, तीसरेमें आयोडाईन और पुटैशियमका तेज अर्कमें औक्सलेट औफ ऐमोनिया डालकर भरदो, चौथेमें म्यूरियेट औफ लाईमका अर्क और पांचवेंमें हाइड्रासल्फेट औफ ऐमोनिया भर दो तब इनके रंग इस तरह बदलेंगे। पहिले ग्लासको दूसरेमें उढेलनेसे पहिले जरद फिर तत्कालही किर्मिजी लाल रंग हो जायगा तब दूसरेको तीसरेमें डालनेसे फिर साफ और स्वच्छ हो जायेगा तीसरेको चौथेमें डालनेसे दूधसा सफेद रंग हो जायगा। चौथेको पांचवेंमें डालनेसे गहरा काला हो जायगा। इस तरह करनेसे साफ और स्वच्छ अर्क पांच रंग पलटेगा ॥

दो कडवी चीजोंको मीठी करना

नाइट्र औफ सिलवर और हईपो सलफेट औफ सोडा ये दोनों चीजें अलग २ चाखनेमें बहुतही कडवी होती हैं परन्तु इन दोनोंको मिला देनेसे निहायतही मीठापन हो जाता है॥

दृश्य और अदृश्य

दर्पणपर करासीसी खडियेसे कुछ लिख दो और फिर रूमालसे पोंछ डालो तो लिखा हुआ कुछ भी दिखाई न देगा अगर मुँहकी भाफ दर्पणपर फेंकोगे तो अक्षर दीखने लगेंगे भाफके सूखनेपर फिर न दिखाई देंगे फिर फूंकनेपर दिखाई देने लगेंगे उसी तरह चाहे जबतक करते चले जाओ ॥

हाथसे प्याजकी दुर्गन्धी जाय

प्याजकी दुर्गन्धि हाथोंमें होजाने पर राईके जलसे धोवे तो दुर्गन्धि जाती रहे ॥

कुएकी डाली हुई अंगूठीकी एक एक कबूतरीकी पैर गलेसे जो बोतलसे पैदा हुआ निकलना

एकही किस्मकी दो अँगूठियाँ लो अब तुम पहलेही इनमेंसे १ अँगूठी कबूतरके गले या पैरमें पहना दो और एक काले रंगकी बोतल काटकर उसमें उस कबूतर को बन्द करके बोतलको किसी चेपदार (सरेस) से जोड दो। जब तमाशा दिखाना मंजूर हो तो इस बोतलको मेजपर रक्खो और दूसरी अँगूठी किसी मनुष्यको देकर कुएँमें डलवा दो जिस वक्त वह अँगूठी कुएँमें डालदे तो तुम उससे कहो कि यार! कहो अँगूठी कुएँमें सचमुच न डाल देना ! अजी क्या डाल ही दी ? खैर अब आजाओ गई चीजका क्या पछताना फिर तुम थोडी देर बाद मेजपरकी बोतल तोड दो तो कबूतर निकलेगा और उसको जहां अँगूठी पहनाई थी निकल आवेगी। देखनेवाले आश्चर्य करेंगे ॥

फलोंके बीज बताना

१ नारंगी—अगर नारंगीको ताक पहाडियां तो उसको तिगुना करो उतनेही बीज नारंगीके होंगे यदि पहाडियां जप्त हों तो उसके दुगुने बीज होवें। २ तरबूज—तरबूजमें जितनी लकीरें हों उसको अस्सीसे गुणा करो गुणनफल तरबूजके बीज होंगे। ३ अनारके—ककडोंसे तिगुना कर फिर ४ से

गुणा करो फिर गुणनफलको ६ से गुणा करो गुणनफल अनारके बीज होंगे ॥

एक गोला दो आवाज

सीसेकी एक गोली लेकर उसे भीतरसे पोली करलो फिर उसमें चांदीकी बारूद भरकर लकडीकी डाट लगादो फिर जैसे बंदूकमें गोलीको भरकर चलाया करते हैं उसी तरहसे उस गोलीको भरकर चलाओ तो एक आवाज मामूली गोली चलते समयकी होगी और दूसरी आवाज गोलीके निशानेपर लगनेके पीछे होगी ॥

जला हुआ रूमाल बन्दूकके फैर होते ही साबित होकर सफेद बोतल के अन्दर से निकलना

एक सफेद बोतल लेकर उसकी पेंदी काट डालो और उसके पेंदेके बीचोंबीच एक बारीक सुराख करो बाद इसके एक छोटी मेज डेढ फीट लंबी चौडी और ४ इंच ऊँची बनवाओ और उस मेजके तख्तेकी सतह (धरातल) के बीचों-बीच एक तोल सूराख आरपार इस अंदाजका बनवाओ कि, जिसमें ऊपर बयान की हुई बोतल पेंदोके तरफसे चावलकी लंबाईके बराबर फँसकर खडी हो जावे । जब तमाशा करना चाहो तो पहिलेसे एक बड़ी मेजपर यह छोटी मेज रक्खो और उस छोटी मेजके चारों तरफ ४ इंच ऊंची लटकती हुई रंगीन कपडेकी झालर (पर्दा) लगाओ बाद इसके पेंदी कटी हुई बोतलको छोटी मेजके सुराखमें पेंदीकी तरफसे चावलकी लंबाईकी बराबर फँसाकर खडी करो फिर एक रूमाल उसके

नीचे रखकर एक बारीक रेशमके सूतका एक शिरा उस रूमालके बीचोंबीच टांग दो और दूसरा शिरा बोतलके अन्दर पेंदीके नीचेसे डाल बोतलके बीचवाले सूराखकी राह बाहर निकालकर अपने साथीको (कि, जो जादूकी झोप-डीमें छुपा बैठा है,) देदो बाद इसके तुम एक दूसरा रूमाल कि जो पहले रूमालकी सूरतका है, समाजमें दिखाकर जला दो और उसकी खाक बंदूकमें भर 'वन् टू थ्री' की आवाज देकर फैर करदो तो तुम्हारा साथी बंदूककी फैर होते ही 'थ्री' आवाजके साथ उस रेशमके सूतको जल्दी, मगर सहारेसे खींचे तो वह पहला रूमाल रेशमके कारण बोतलमें आजावेगा ॥

रूमाल का अंडा बनाना

मिट्टी या लकडीके दो अंडे एकसे बनवाओ जिनमेंसे एक पोला और दूसरा ठोस हो फिर दो रूमाल सुर्ख रंग हुए बहुत महीन कपडेके ऐसे बनवाओ जो उस पोले अंडेके भीतर अलग २ घुस जावें । इस रीतिसे सब सामान इकठ्ठा करके एक रूमाल हाथमें लेलो और उसके नीचे पोला अंडा छुपालो और दूसरा जेबमें डाललो । हाथवाले रूमालको, जिसके नीचे पोला अंडा छिपा हुआ है और ठोस अंडेको तमाशगीरोंको दिखलाओ और कहो कि अब रूमालका अंडा बनता है, यह कहकर ठोस अंडेको जेबमें डालदो और पोले अंडेके भीतर किसी न किसी रीतिसे हाथवाले रूमालको

घसेडकर दिखलाओ कि अंडा बनाया फिर दूसरी जेबसे रूमाल निकालकर दिखलाओ ॥

कांचके गोलेमें चुरटके धुआं फूलनेसे घुमता रहे

कांचके गोलेके दो जोड (पलवें) होते हैं कि जब दोनों पलवे जोडे जावें तो एक साबित गोला बन जाता है। अब एक पलवेमें सज्जी और सोडा पानीमें मिलाकर लगाओ और दूसरीमें क्लोरेडेरिक एसिड (अंगरेजी तेजाब) का लेप करो फिर दोनों पलवे जोड दो तो इन तेजाबोंके संयोगसे गोलेमें गुब्बारा उठेगा। तुमको चाहिये कि इसी मौकेपर चुरटका धुआं छोड दो तो तमाशा देखनेवालोंको गोलेके अन्दर चुरट का धुआं घूमता नजर आवेगा ॥

पत्थर तिरने का तन्त्र

ससा स्यारकी मेंगनी, ले आवे रविवार। गुठली बेर मिलायकै, पीस करे तैयार ॥ ऊपर पत्थर लेप कर, जलमें देहु बहाय। पत्थर तैरोही करै नेक न डूबन पाय ॥

बिना आगके ज्वार भुनना

थूहर दूध मँगायकै, देवो ज्वार भिगोय। राखौ अपने पासमें, छाया सुख जब होय, खेल करो तुम जब कभी, राखो धूपके माहिं। खिलजै हैं कछु देरमें, यामें संशय नाहिं॥

हथेलीपर सरसों जमाना

दूद्धीको रस लायकै, दीजै सरसों भेय। चार पहरमें काढिकै छाया सुखाकर लेय ॥ हाथ बीच धरि मृत्तिका, दीजै सरसों दाब। जलके छींटा देतही, फिर सरसों उगि आव॥

बालोंको सफेद करने की विधि

अजा दूधकी भावना, हरड देउ दिन सात।
पीस तेलमें लेपकर, बाल श्वेत होय जात ॥

दूसरी विधि

थूहर दूध भिजोइये, दिवस सात तिल लाय।
तेल काढि शिर लेपकर, बाल श्वेत होय जाय ॥

कोयलाको रुपहरा करना

जलता कोयला लायकर, रखियो बर्तन माहिं। डार काष्टिक दीजिये, ऊपरसे तेहिं पाहि। डारत काष्टिक ताहिपर शब्द भयंकर होय। रंग पलटकर कोयला, तभी रुपहरा होय ॥

देखते ही देखते एक पांसेका दो पांसाकर दिखाना

एक ही लम्बाईके दो पांसा, जिनमें एक ठोस और दूसरा पोला हो टीन या लकडीके बनवाओ मगर पोला पांसा इस कदर पोला हो कि जिसमें दूसरा ठोस पांसा उसके अन्दर चला जावे, जब तमाशा दिखाना मंजूर हो तो पहलेसे ठोस पांसेको पोले पांसेके अन्दर छुपा दो बाद इसके तमाशा देखने वालोंसे कहो कि यह पांसा है हम इसको रूमालमें रखते हैं जब तुम पांसेको रूमालमें रक्खो तब पोले पांसेके अन्दरका ठोस पांसा रूमाल हीके अन्दरसे निकालकर दो पांसा कर दिखाओ इसी तरह दो पांसेका एक पांसा कर सकते हो॥

पानीसे भरा हुआ ग्लास पानीके भीतर खाली करना

एक ग्लासको पानीसे भरकर उसके मुखको ऐसे यत्नसे बंद करो कि औंधा करनेपर पानी न निकल सके फिर उस ग्लासको

पानीके भीतर औंधा ले जाओ उस डाटको निकाल लो और ग्लासको औंधा ही पानीके ऊपर निकालो परन्तु उसका मुख पानीके भीतर रह जावे तब एक क्लियाया पोला नरसल ग्लासके मुखमें लगाकर दूसरे शिरसे फूंक मारो तब पानीमें बुलबुले उठने लगेंगे और पानी ग्लाससे निकलता रहेगा इस प्रकार करते २ सब पानी निकल कर ग्लास खाली रह जायगा ॥

विना रंगतके दो जलोंका नीला करना

एक पानी भरे कांचके ग्लासमें प्रसियेट और पुटासकी थोडीसी बूदें डालदो और दूसरे पानी भरे ग्लासमें सलफेट औफ आयरनका हलका अर्क डालदो । इन दोनों ग्लासोंमें निर्मल विना रंगका जल दीखेगा फिर इन दोनों ग्लासोंके जलको किसी तीसरे बर्त्तनमें मिलाओगे तो चमकीला गहरा नीला रंग हो जायगा ॥

विना रंगतके दो जलोंका काला करना

एक ग्लासमें डाईल्यट हाइड्रोफोस्फट औफ ऐमोनिया दो और दूसरेमें ऐसीटेट औफ लीडका अर्क भरदो । ये दोनों अर्क जुदे २ स्वच्छ और विना रंगतके होते हैं, उन दोनोंको मिलानेसे दोनों काले दिखाई देने लगेंगे ॥

जादू का लाल रंग रंगना

चकुन्दरकी जडका अर्क जो बहुत लाल होता है उसे ग्लासमें भरदो उसमें थोडासा चनेका पानी डालते ही जलका दूध होकर बिना रंगत होजायगा । फिर उसमें एक सफेद

कपडा भिगोकर तत्काल सुखा लो, सूखते ही कपडा लाल हो जायगा ।

दीपकके उजालेसे सफेदको काला करना

मलमलके एक टुकडेपर नाईट्रेड औफ सिलवरसे कुछ अक्षर लिख लीजिये सूर्यके प्रकाशमें देखनेमें कुछ दीखाई न देगा अँधेरे मकानमें ले जानेसे भी कुछ न दीखेगा, परन्तु ज्योंही लैंपकी तेज चांदनीमें देखोगे तो काले अक्षर दीखने लगेंगे

मछलीके कांटे गलानेका उपाय

जहां मछलीके कांटे हुआ करते हैं उस स्थानको छुरीसे चीरकर पिसा हुआ सुहागा भर दो और डोरेसे लपेट दो फिर उसमें उचित मसाले डालकर अग्नि पर पकाओ पकनेपर उतारलो और डोरा खोलके फेंकदो तो मछली विना कांटेकी रह जायगी ॥

मछली ताजी रखना

सालमन मछली या और किसी प्रकारकी मछली लाकर एक चीनीके बरतनमें रखदो और उसको मीठे सौल्ड तेलमें भरदो और बरतनका मुँह ऐसा बन्द करदो कि हवा न जाने पावे, जब निकालोगे मछली ताजी पाओगे ॥

सेवका न सडना

मोमको पिघलाकर उसमें एक २ सेवको डुबोकर साफ और सूखी घासमें इस तरहसे रक्खो कि एक दूसरेसे न लगने पावें फिर उनको खूब बन्द करके रखदो ॥

लाल चीटियोंका इलाज

ग्रीन शीजको लाकर, रखिये खिडकी माहिं।
जो चाहै भगवान तौ, चींटी रहि हैं नाहिं॥

बिना दीपक उजाला

सिरका स्वच्छ मँगायकै, भरिये शीशी माहिं।
डारतही हरताल तबकिया, होय चांदनी जाहि॥

एक अँगूठी और जला हुआ रूमाल साबित होकर
एक डबल रोटीसे निकलना

दो अँगूठियाँ और दो रूमाल एकही सूरतके लो जिनमेंसे तुम पहलेही एक अँगूठीको एक रूमालके किसी कोनेमें बांधो और उसको डबल रोटी गूंदे हुए आटेमें रखकर तन्दूरमें पकालो जब तमाशा करना चाहो तो यह डबल रोटी अपने एक साथीको दे रक्खो कि वह छिपाये रहे, फिर समाजमें आकर दूसरी अँगूठी दूसरा रूमाल, जो पहली अँगूठी और रूमालकी सूरत के मौजूद हैं, तमाशा देखनेवालोंको दिखाकर अँगूठीको तो कुएँमें डलवादो और रूमालको जलाकर उसकी खाक बंदूकमें भर फैर करदो बाद इसके तमाशा देखनेवालोंसे एक डबल रोटी माँगो तो तुम्हारा साथी जरा बाजारकी तरफ जाकर लौट आवे और वह डबल रोटी तमाशा करनेवालेको देवे और तमाशा करनेवाला वह रोटी तमाशा देखनेवालोंमेंसे किसी एक मनुष्यको देकर तोडनेकी आज्ञा दे, जिस वक्त वह मनुष्य डबल रोटी तोडेगा तो उसके अन्दर वह रूमाल अँगूठी सहित निकल आवेगा देखनेवाले आश्चर्य करेंगे॥

घडी आदिका गायब होकर डबल रोटीसे निकलना

दो घडी एकही सूरत की लो, अब जिनमें एक घडी छठवे नंबरके खेलके संदूकसे गायब करो और दूसरी घडीमें नंबर बीसवें खेलकी तर्कीब लगाकर घडीको डबल रोटीसे निकाल तमाशा देखनेवालोंको दिखा दो ॥

गरम जंजीरका हाथसे सूतना

पहलेसे हाथोंमें घीकुवारपाठेका अर्क या मुर्गीके अंडेकी जरदी या मुलहटी पानीमें घीसकर लगालो फिर जंजीरको खूब गरम करके किसी जगह लटका दो फिर थोडासा तेल उसपर छोडदो फिर पोले २ हाथोंसे सतो कभी हाथ न जलेगा॥

जले हुए गंजीफेका साबित होकर बोतलसे निकलना

एक साथके दो गंजीफे लो एक गंजीफा तो काली बोतलमें भरकर बंद करदो और एक गंजीफा सबके सामने जलाकर बंदूकमें भरदो फिर बोतलको निशाना लगाकर गोली मारदो बोतलके फुटतेही गंजीफा निकल आवेगा ॥

कपडेपर हवन करना

अच्छी मधु दो अग्निकी, और कपूर मँगाय। घिस घिसके कर्पूरको, मधुहीमें मिलवाय॥ कपडेको उसमधु विषे, सात बार भिजवाय। फेर सुखाय बिछाइये, धरतीमें ले ताय ॥ उस कपडे पर लकडियां, चुनकर होम कराय। घृतको डारि जराइये, जब लकडी जल जाय॥ कपडा झाडि निकासिये, लागे धब्बा नाहिं। जिहि जिहि को दिखराइये, अचरच आवै ताहि॥

कांसेका एक चौडा कटोरा लेकर उसकी पेंदीपर ऐसा तंग

कपडा बिछावे कि, जो सिर्फ पेंदीके बराबर रहे फिर हलद कपूर और शराब मँगाकर पीसके गोली बनावे, जब सूख जाय तब गोली कटोरेके कपडेपर जलावे तो कपडा नहीं जलेगा॥

ब्राह्मी और कपूरको पीसके जलमें छोडे फिर उस जलमें कपडा सात बार भिगोकर छायामें सुखावे जब सूख जाय तब कपडेपर निर्भय हवन करे तो कपडेमें अग्निका दाग न लगे और देखनेवाले आश्चर्य मानें ॥

बैंगन कूदे उछले

वर्षा ऋतुमें ल्याइये मेढक नर को मार। मंगल दिन होवे जबै, या होवे रविवार ॥ ताके मुख भरि मृत्तिका, उडद भरै दो चार। मुख ऊपरको राखिकै, धरती गाडै लार ॥ पानी दे सींचा करै, जब पकजावे बेल। प्रथम उडद जो लीजिये, वाको करिये खेल ॥ बैंगनको जो टोकरा, वामें वाको मेल। सब बैंगन उछले परै, करि देखो यह खेल ॥

नींबू उछलनेका उपाय

नींबू एक कागजी लावे। ताकी तब दो फांक करावे ॥
पारा हलदी उसमें भरै। तब उसका मुख बन्द जु करै॥
तेज अग्निका दीजै ताप। नींबू उछलन लागै आप ॥

कागजी नींबू लाकर उसमें छेद करके नौसादर और पारा भरकर धूपमें रखदो तो नींबू उछलने लगेगा ॥

पुरुष नृत्य करे

गिरगट पीरे रंगका, रवि मंगलको लाय।

होय मिथुनका चन्द्रमा, तब वाको मरवाय ॥
जबलौं वह तडफा करै, नंग आप रह जाय ।
फिर उसकी दुम काटिके, बाती कीजै लाय ॥
दीपक तथा मशालमें, तेल विषे जरवाय ।
नाचन लागे मर्द सब, जो चांदनमें आय ॥

खेती नष्ट होय

जो आर्द्रा नक्षत्रमें, रिछ हाडको टूक ।
अरिकै गाडै खेत जो, नाज न होवे चूक ॥

अक्षर रंग बिरंगे होयें

कोरे कागज पर लिखे, जो नींबू रस लाय ।
आग दिखाये होयँगे, लाखी अक्षर आय ॥
लहसनके रसमें लिखै, जो अक्षर मन आय ।
आग तपाये होयँगे, पीरे मेरे भाय ॥

दूधसे लिखिके आग दिखावें । पीरे अक्षर सब खील आवें ।
गाजरके रससों जो लिखै । आग तपावे पीरे दिखै ॥
गेंदेकी पत्ती मँगवावै । ताके रससों जो लिखवावै॥
हरे रंगके अक्षर होवें । आग दिखाये लाखी होवें ।
प्याजके रसमें घिसै छुहारा । तारों सिखके धूप धरारा ॥
पीरे अक्षर दीखै सारे । सो आवै सब काम तुम्हारे ।
पात अनार रससों जो लिखिये । हरा रंग उनहूका पेखिये ॥
धरै आगपर तूसी होय । या विधिको जाने नर कोय ॥
लिखे दूधसों जलमें डारे । नीले अक्षर होवें सारे ॥

नारंगीके अर्कसों, करपर लिख सुखराय ।
उनपर फेरे राख जो, कारे दृष्टि पराय ॥
आक दूधका यही विचार ।। कर देखो जब चाहो यार ॥

काले अक्षर सफेद हों

कच्ची स्याहीसों लिखै, कागज श्वेत मँगाय। काजल तापर रगडिये, कागज कृष्ण दिखाय ॥ फिर जल छींटा दीजीये, स्याही जाय उडाय । अक्षर चमकैं श्वेत वे, खेल सबै यह भाय ॥ जैसे कागजपर लिखो अक्षर सोही रंग ॥ दीखैगो अचरज यहै, पडे नेक नहिं भंग ॥

मायारूपी पीले अक्षर लिखना

मिट्रेट औफ एमोनिया, और तूतिया लाय । स्वच्छ काचके पात्रमें, ले सम भाग मिलाय ॥ नई लेखनीसों लिखे अक्षर कागज श्वेत। लिखत समय दीखैं नहीं, दीखनको सुन हेत ॥ अग्नि तपावै वाहि जब, दीखैं अक्षर पीत । कागज शीतल होतही, मिटै अनोखी रीत ॥

मायारूपी हरे अक्षर लिखना

स्पिरिट औफ कोवाल्ट मिलावै, ता समान जल लेय। श्वेत पत्र नूतन कलम, चाहो जो लिख लेय ॥ कागज कोरोसो लगै लिखतेही ततकाल । अक्षर दीखैं सब हरे, अग्नि तपाये हाल ॥ कागद शीतल होतही, फिर नहिं कछु लेखाय । सबको मन हर्षित करै, जादूको दिखराय ॥

मायारूपी गुलाबी अक्षर लिखना

जवाखार अरु ऐसीडही, ले सम भाग मँगाय । एकसाईड

औफ कौवाल्ट मँगावै तीनों लेय मिलाय ॥ कौतुक करनेके समय, नई कलम मँगवाय । कागद पै अक्षर लिखैं, परवे दीखैं नाय ॥ अग्नि तपाये ही तुरत, रंग गुलाबी होय । यह अचरजको देखके, हरषैंगे सब कोय ॥

अंधेरेमें बिना दीपक उजाला

शीशीमें भर दीजिये, लागै अरक मँगवाय।फास्फरस पुनि गेरके दीजे डाट लगाय ॥ शीशीको मुख बंद खोलिये, अँधियारे घरमाहिं । दीपक सम हो चांदनी यामें संशय नाहिं ॥

कपडेकी ओटमें निशाना लगे

दारू भरि बन्दूकमें पारा भरिये यार ।
फिर कपडेकी ओटमें, हनै कबूतर चार ॥

बुझा दीपक जले

गंधक अरु हरताल ले, और कपूर मिलाय।सब सम नन्हीं बांटकर धरे कही रखवाय॥पवन पाय दीपक बुझे, गुल बुझने नहिं पाय।तुरत जो गुलपर डारिये, तो दीपक बरिजाय ।

मेहसे दीपक न बुझे

फेन समुन्दर गंधक लावै । दोउनको समभाग पिसावै ॥
रुई लपेट बनावै बाती । यह विद्या सबके मन भाती ॥
जलत दिया बूझन नहिं पावै।मेह पवन कैसाहू आवै ॥

शीशा चबाना

शीशा लेय अग्निमें डारै । आग समान होय जब लारै ॥ रस अदरखमें ताहि बुझावै । फिर ले सुखमें ताहि चबावै होय न दुःख घाव नहिं होवै । याहि देखि बहु अचरज होवै॥

जलसे घर भरो दीखे

चरबी मछली भेडकी, एकतर तिन्हें कराय। ताकी बाती बारिकै, दीपकमें जरवाय॥ हो चांदनी घर विषे, भलो तमाशा होय। सब घर पानीसा भरो, देखि बडो भय होय॥

समुद्र दीखै

चरबी मेंढक लायके, जंगल माहिं जराय।
दृष्टि करै चहुँ ओर जब, सागर भरो दिखाय॥

मरे सर्प दीखे

तांबेका दीपक बनवावे। सांप कांचली बाती नावे॥
दीपकको उजियारो होय। सांप मरे देखैं सब कोय॥

चलनीमें जल न छनै

घीकुँवारके रससे चलनीको सात बार पोतके सातों बार छायामें सुखावे तो चलनीके छेद बन्द हो जायँगे फिर उसमें जल भर देवे तो एक बूँद भी नीचे नहीं टपकेगा और तमाशा देखनेवाले आश्चर्यित होंगे॥

तमाशा अनोखा

जुगुनूको शिर काटि मँगावै। मृग चरबी तिहपर लिपटावै॥
बाती करके जोवै ताकूं। होय तमाशा दीखै वाकूं॥

कागजके लिखे अक्षर उडैं

नौसादर औ शंखिया (सेंधानमक) और सुहागा लाय॥
तीनों सम ले पीसके, अक्षर पै लगवाय॥ कागज धरिये धूपमें,॥
अक्षर सब उडि जाँय। देखनहारे देखके, भौचकसे रहि जाँय॥

जलका फालूदा होय

केशर मिश्री श्वेत कतीरा। पीस छानके मन धर धीरा॥

करे तमाशा सभा मँझारी जल भर प्याला ढकना भारी ॥
वही दवा जो जलमें डारे । देख न लेवे कोई प्यारे ॥
घडी दोय जो पीछे पेखै । फालूदाको उसमें देखै ॥
जो खावै फालूदा भाई । भलो स्वाद वह वामें पाई ॥

अंडेका नाच और जलमें तैरना

मुर्गा अथवा हंसको, अंडा लेय मँगाय। किंचित् पारो देय भर सूक्ष्म छेद कराय ॥ बन्द करै तब छेदको, ऊपर मोम लगाय । जासे अंडा रस कहीं, बाहर निकल न जाय ॥ यह सब कर राखै जतन, पहले अपने पास । जान सकै नहिं कोई यह पीछे करै तमास ॥ खेल करते समय फिर, काच रकेबी लाय । थोडी आंच जरायके, गरम करावै ताय ॥ अंडाहूको कर गरम, धरे रकेबी माहिं । धरत धरत नाचन लगै, देखै वही सराहि ॥ एक पात्रमें गरम जल, फिर देवै भरवाय । छोडै तब अण्डा यही; सबको वही दिखाय ॥ छोडतही तैरन लगै, अचरजकी यह बात । विस्मित सब देखन लगै; धर होठनपै हाथ ॥

हाथसे शहतका छत्ता तोडनेका उपाय

बनतुलसीको अरक लै, पोतै सब निज अंग । बाहीको इक वृक्ष लै, राखै अपने संग ॥ या ढंग रंग जमायके, छत्ताके ढिग जाय । सूंघतही वा गंधको, मक्खी जायँ पलाय ॥ तोडै तब आनन्दसों, छत्ताको निज हाथ । मधु चाखनकी मित्र यह, अजब अनोखी बात ॥

अण्डा उडे

अंडेमें जो छेद कर, भरे ओस तिहि माहि ।
छिद्र मोमसे बन्द कर, तौ अंडा उड जाहि ॥

रूखकी डारी झुक जाय

भेड साँप अरु आदमी, इनको हाड मँगाय ।
मेला करिके गोडिदो, धरतीमें जो ताय ॥
चिह्ले पीछ काढिके, सुमासा पिसवाय ।
तेल रूख डरवाय तो, डार झुकी हो जाय ॥

सभा के लोग कूकर दीखें

विष्ठा सियकी मँगावावै । कर्णमैल कूकरको लावै ॥
अरु विष्ठा कूकरको लेय । भेंड मुईकी चर्बी लेय ॥
चारों वस्तु वस्त्रमें मेल । करिके बाती दीपक ठेल ॥
दीपक भर रोशन सिमाव । रोशन करके धरे सिताव ॥
जो नर सभा मझारी होई । कूकरसे दीखें वे लोई ॥

खेतकी रक्षा

रवि दिन नर चकोरको लावै । कोरी हांडीमें बंद करावै ॥ दै धूनी लोबानकी, गाडे खेती माहिं । रक्षा होगी खेतकी, कुछ अचरज है नाहिं ॥ खेतीमें जो वस्तु है, कोई लेके खाइ । तो बोलेगी पेटमें, यही वस्तु दुखदाइ ॥

रोगी का रोग बुद्धि करके खोवे

कोरे कागजपै लिख, चनासेती देव । फिर मुहरासे घोटिये कोउ न जाने भेव ॥ रोगीको शिरसे छुवा; बार उतारे सात। तुर्त डारिये जल विषे, देव प्रगट हो जात॥ रोग गयो निश्चय भयो, रोगीको यह बात। बुद्धिमानकी बुद्धिसे, तुर्त रोग मिटिजात॥

घीकुवार रस काढिके, पुतला एक बनाय।
कोरे कागजपर बने, रोगीके शीर छाय॥
सात बार जिहिं बारकै, अग्नि माहि दे डार।
जरता दीखै अग्निमें, देव रोग फिटकार॥

ताम्रपत्रपर अक्षर बने

ताम्रपत्र जो लाइये, उसपर लिखिये तात। तेज आब मँगवायके, जो हो मनकी बात॥ देके काहूसा कहै, धरो पर घरे माहिं। काम तुम्हारो होयगो, आठ दिवसके माहिं॥ धूप दीप अरु पुष्प ले, नित्य चडावौ ताहि। मनमें निश्चय राखिये, दिन व्यतीत हो जाहि॥ आठ दिना नर जो हुवे, अक्षर प्रगटै तात। वाके मन निश्चय भयो, है सब सांची बात॥

धातुके पत्रोंपर अक्षर लिखनेकी विधि

किसी धातुके जिस पत्रपर अक्षर लिखने हो उसको भली भांती स्वच्छ कर लो और मोमको पिघलाकर पतली पतली तह उसपर चढा दो जब मोम जम जाय तब बहुत उत्तम अक्षर मोमकी तहतका खोद दो अर्थात् मोममें होकर पत्र चमकने लगेंगे। जहां वे अक्षर बनाये गये हैं और मोम हटाया गया है उसमें शोरेका तेजाब भर दो और ऐसा यत्न करदो कि तेजाब फैलने न पावे इस कामके करनेसे दो पहर पीछे मोमको हटाकर इस जगहको पोंछडालो तो खुदे हुए सुन्दर जैसे थे वैसे ही निकल आवेंगे॥

तलवारपर नाम लिखना

पहले तलवारको अच्छी तरह साफ करलो फिर मोमको

पिघला कर उसपर अक्षर लिखो जब अक्षर सूखजाँय तब नीलाथोथा बारीक पीसकर और नींबूका अर्क दोनोंको अक्षरों पर डालदो तो थोडी देरमें अक्षर दिखाई देने लगेंगे

धनके खजानेसे सांप हटाना

गिरिकर्णी अरु लाय चमेली । श्वेत आक तामें ले मेली ॥
मूली बच अरु लाय कटेरी । सबको पीस कीजिये ढेरी ॥
पांव लेप जो करके जाय । साँप यक्ष सब जाँय पलाय ॥
बिना रोक ले आय खजाना । हीरा अरु सुवरण मन माना ॥

उशवाका सार

साढे तीन पाउण्डसो सारसापरिला ३ गैलन स्वच्छ किये हुए पानीमें गरम करे, जब १२ पिंक रहजाय तब उतार कर छान लेवे । दो गैलन पानीके साथ फिर सारसाको औटावे जब आधा रह जाय तब छान लेवे और दोनोंको मिला वेदे और गरम करे जब १८ औंस रहजाय तब उतारकर ठंढा कर लेवे और २ औंस साफ की हुई स्पिरिट मिला देवे ॥

हुक्का अपने आप गुडगुडाय

जो मदारिया हुक्का माटी, जा बजारसे लावै ।
चना बडी भरावै तामें, जहां आम ना आवै ॥
रस नींबूका काढिकै, अपने पास छुपाके राखै ।
दृष्टि बचाय सबनकी प्यारे, हुक्कामें तेहि नाखै ॥
हुक्कामें उस नींबूरसको, नायके मारग भरिये ।
और हार फूलोंका लेके, हुक्का ऊपर धरिये ॥
भरिके चिलम धरे हुक्कापर, कहे पीरजी पीयो ।

गुडगुड बोले हुक्का तबहीं, थरथर होवे हीयो ॥
देख तमाशा अचरज माने, लोग सबै जिन देखो।
कहे खिलाडी हुक्का पीवो, पीर मेरे तुम पेखो॥

दो बासन आपसमें लडें

एतवार या मंगलको दिन, कुत्तेके दो दांत कढाले। दोय दाँत बिल्ली कढवा ले दोनों होयँ जु काले ॥ चारोंमें सिंदूर मँगाके, प्याला भीतर धरिये। प्यालापर सरपाश लगाके, एक ओरको रखिये ॥ दोय दांत बकरेके बहरूं, भेड दांत दो ल्यावै, भेड दांत सिंदूर लगाके, बासनमें रखवावै ॥ बक्र दाँत दूजे बांसनमें, बंद कराके राखै। दोनोंको ले धरे जमीमें, उत्तर दक्षिण राखै॥दोऊ मध्यबासन वह धरिये, जामें चार हैं दाँत। फिर चपडाकी धूनी देकर, देख तमाशा तात॥ दोऊ ओरसे दोऊ बासन, दौड २ टकरावैगा। और बीचला बासन, उनको बारंबार हटावैगा ॥

तोपके समान शब्द करना

एक तोला गन्धक, दो तोले जवाखार और दो तोले क्रीम आफ टारटर इन तीनों चीजोंको अलग अलग पीस-कर मिला देवे इन मिली हुई चीजोंमेंसे चार रत्ती तमाखू पीनेकी नलीमें भरकर अग्नि लगा दो तोपकासा शब्द होगा, परंतु नली न फटेगी ॥

बिच्छूका जहर हटे

जिसको काटे बिच्छू आय। नौसादर चूना मिलवाय॥
ताहि सुँघावे बेगी लाय। तुर्त जहर वाको मिटजाय ॥

बीट लाय ढिग राखियो, मुर्ग कबूतर मोर ।
आकमूल मिलवायके, धरो पीस इक ठौर ॥
बिछू काटै जहँ कहीं, इनकी धूनी देय ।
धूनी लागत विष नसै, मन भावत सुख होय ॥

किसीको बिच्छूने डंक मारा हो तो उस स्थानपर थोड़ा शंखिया पानीमें घोलकर लगा दिया जावे तो बहुत शीघ्र रोगी अच्छा होगा ॥

बिच्छूका भय दूर करना

होय जबै नक्षत्र शुभ, ओंगेकी जड लाय ॥
बांधै दक्षिण कानमें, बिच्छू भय सब जाय ॥

सर्प का जहर हटे

सर्प जिसे काटे सो लाय । नीला थोथा पीस सुँघाय ॥
श्वेत साँठकी लाओ मूल । लेपो होय दूर विष शूल ॥
सब प्रकार विष जाय नसाय । है यह अद्भुत एक उपाय ॥

मूषक विष निवारण

सरसों केशर अरु मठा, घृत समभाग मिलाय ।
पीवतही विष जाय नस, इन्द्रजाल यह गाय ॥

बावले कुत्ते का विष दूर होवे

आकदूध गुडतेल मंगाय । लेप किये कूकर विष जाय

मेंढक विष हरण

त्रिकुटा अरु चौलाइ पिसावै। छान पिये मेंढक विष जावै ॥

व्याघ्रनखका विष दूर करना

छान नीम अरु सेमर लाय । लेय गरम जल सँग पिसवाय॥
नख अरु दन्त लग्यो जहँ होय । किये लेप विष नासै सोय ॥

मकडी का विष दूर करना

केशर नाग मँजीठ अरु, दोनों हलदी लाय।
लेप किये तत्कालही, विष मकडीको जाय॥

बिलावेका विष दूर करना

तेल भिलायके लगे, फूल देह जो जाय।
माखन अरु तेल पीसके, ऊपर देहु लगाय॥

संखियाका विष दूर करना

खाय संखिया चढै नशा जो, यह उपाय कर लीजै॥
पीस छाल गूलरकी जडकी, पानी सँग पी लीजै॥

संखियाका दर्प नाशक

खांड और मननेसिया मिलाकर देनेसे संखियाका विष दूर हो जाता है।

जल निर्मल करना

घडेके भीतर निर्मलीके बीज पीसकर रगड दो तो फिर उसमें कैसाही मैला पानी भर दो थोडी देरमें निर्मल हो जायगा॥

फिटकरी पीसकर भरे घड़ेमें डाल दो तो पानीके सब अवगुण दूर होंगे

दीपकमें पतंग न आवै

प्याज टूक दीपकमें धरै। तासों रहै पतंगा परै॥

ताना बिगाडना

अश्विनी नक्षत्रमें जामुनकी लकडी लाकर १२ अंगुलकी एक कील बनाकर कोलीके घरमें डालै तो कपड़ा बनानेका सब सूत नष्ट हो जाय॥

शीशीका रस उड़े

शीशीमें रस नींबू भरे । पीली कौडी भस्मी करे ॥
सो भस्मी शीशीमें छाँडै । अंगूठेंसो मुख वाको माँडै ॥
शीशीमेंसे रस उड जावै । यह विद्या सबके मन भावै ॥

वस्त्र अग्निमें न जले

घीकुवार रस काढिकै, तामें वस्त्र भिजोय ।
छायामें सुखरायकै, फिर वाहीमें डिबोय ॥
सात बार भिजवायकै, छायामें सुखराय ।
फेर अग्निमें डारिये, आंच न लागे ताय ॥

कपडेको अच्छी वारुणी (शराब) में भिगोवे फिर कपडेमें अग्नि लगावे तो कपडा न जले ॥ उंटकटैयाकी जडके रसमें कपडा भिगोके छायामें सुखावे तत्पश्चात् अग्निमें डारे तो कपडा न जले ॥

कूपमेंसे दूध काढ

एरण्डकी मींगी पीसकै, घट भीतर लिपवाय ।
फिर जलसे वाको भरे, दूध जो निकरै आय ॥

दूसरी विधि

मलमल लाय महीन अति, लेवे दूध भिगोवे सोय ।
छाया सूखी ताहि कर, फेर भिगोवे सोय ॥
सात बार ऐसे करै, करकै राखै पास ।
भरे घडेमें गेरिये, होय दूध जल जास ॥

जादूका दूध होना

गूलर बरसाद और आकका दूध मँगाकर बर्तनके भीतर लेप

करके सुखा लेवे फिर जल मँगाकर बर्तनमें भरदेवे तो पानीका दूध होजायगा। यह तमाशा देख लोग खुश होंगे ॥

पानीका दीपक जरे

श्वेत मोम अरु गन्धक पीरी। दोउ मँगाय करै ततबीरी ॥
मोम गलाय गन्धकको डालै। तिसमें बाती वस्त्र डुबावै ॥
दीपक जल भर बाती बारे। देख तमाशा भूलैं सारे ॥

स्त्री कपड़े होय

काग चोंचको रविदिन लावै। गूगल धूनी दे रखवावै ॥
जब लकीर धरतीमें पोवै। नांगे नारि जो कपडे होवै ॥
ताहि चोंच जो धोके प्यावै। लोहू बहतोही रुक जावै ॥

अग्निसे मुख न जरे

नौसादर अकर्करा, मुखमें लेई चबाइ।
पानीसों कुल्ला करे, फिर लै आग चबाइ ॥
जरे नहीं मुख आगसो, सीरी लागे आग।
लाग बिना नहिं होइहै, इन्द्रजालके स्वांग ॥

गुपचुप जिह्वापर सुनु भाई। लेप लिक्विड स्ट्रॉक्स लगाई ॥
तब फिर खेल दिखावे आय। देवे सबको मन हर्षाय ॥
जलत एक अंगार मँगाय। वापै गंधक लेय मिलाय ॥
तब जिह्वापर राखै वाहीं। ऐसे जीभ जलैगी नाहीं ॥

बासन सुनहरा रङ्गका होय

रस नींबू अरु कहरुवा, खरके मूत्र पिसाय।
बासनपर लेपन करै, सुवरण सम होजाय ॥

शीशा तराशके फूल बनाना

बत्ती करे कपासकी, तोडा जैसा होय ।
पनी छुरी मँगायकै, कहूँ जो कीजे सोय ॥
प्रथम छुरासों कीजिये, शीशा ऊपर चिन्ह ।
उन चिह्ननपर दम करे, वा बत्तीको भिन्न ॥
फिर अंगुरीसा तोडियो, शीशाके सब टूक ।
यहि विधि शीशाके बने, फूल करे ना चूक ॥

आंखमें पानी आने का इलाज

जो धूल आदि पडनेसे आंखमेंसे पानी बहने लगे तो एक भाग गरम पानीमें एक पोपीडिकोशन मिलाकर धो डाले ।

शीत ज्वर दूर होय

एक मक्खी कुछ हींग ले, आधी मिर्च ले गोल ।
इनको जलमें पीसके, आंखिन आंजे जोल ॥

चौथे दिनको ताप जाय

उल्लूका पग गूगल स्याह । लत्तामें बाती बनवाय ।
घृतमें सान जरावे ताय । काजल कर आंखिन लगवाय॥
चौथे दिन जो आवै ताप । सो हटजाय सुखी होय आप ॥

इकतरा ताप हटै

श्वेत धतूरा रविदिन लाय। पहले दिन न्योता दें आय ॥
नरके दायें हाथमें, नारीके विपरीत ।
जो बांधे तो इकतरा, हटे यही परतीत ॥

नजर दूर करना

बालकको लागै नजर, तो कीजै यह बात ।
सुरखा मिरचा तीन ले, बार उतारै सात ॥

जलते चूल्हें झोकिये, धांस उठेगी नाहिं ।
नजर कुजर मिट जायगी, ताही छिनके माहिं ॥

तत्काल दही बनाना

पोस्तसंगके दाने लावे, पीस सुखाय तयार करावे ।
लीजे तभी दूध औटाय । जासे दही जमायो जाय ॥
पोस्त संग चूरण दे डार । होय देखते दही तयार ॥

दुग्ध जमें

तालमखाना पीसके, दूध माहिं मिलवाय ॥
जामन बिन जम जायगो, जब चाहे करवाय ॥

भोजन करता हसें

धूर लाय खरलोटकी, रवि दिन मंगलवार ।
जिनकी थालीके तले; धरै वे हँसिहै यार ॥

रात्रिमें कहीं जाय भय न लागे

तस्मा लावै चर्मको, जो लिरियाकी होय ।
जो बांधै निज कमरमें, निशि भय ताहिं न होय ॥

दो मुर्गा लडता न हटें

चकमक पत्थर पीसके, लोहचूनको पीस ।
जो मुर्गाकी आंखमें, न्यार न्यार आंजीस ॥
जो मुर्गा दोनों लडे, कट कट युद्ध करैं ।
हटैं नहीं लड़वो करैं, जबलों न न्यार करैं ॥

अफीम का नशा उतरना

कोई मनुष्य अफीमके नशासे बेहोश होजाय तो सीताफलके पत्तोंका अर्क निकाल कर उसको पिलावे नशा उतर जाय॥

शराबका नशा जाय

मूली अरु ले फिटकरी, पानीमें घिसवाय ।
मदमातेको प्याइये, नशा तुरत मिटजाय ॥
पी शराब जो बहुतसी, भयो होय बेहोश ।
गिरी नारियल दूध अरु, दिये होयगो होश॥

टूटी चीनीका जोड

चूना सूखा लाय मिलावै । अरु अंडेकी धौल मिलावै ।
टूटी चीनी मांझ लगावै । जुडवावे पर धूप सुखावै ॥

दर्पणमें निज सूरत कूकरकीसी दीखै

चूंची काटि कूकरी लेवै । कांच पीठकर ताको लेवै ॥
जो देखे मुख आपनो वामें । कूकरसो मुख दीखे तामें ॥

अग्निसे हाथ न जरे

मेंढक चरबी हाथसों, मलकै अग्नि उठाय ।
हाथ जले नहिं अग्निसों, देखे जब चित चाय॥
लाय मुलेठी भांगरा, ले समभाग मिलाय ।
पीस छानि रस खैंचिकै, हाथन लेप कराय॥
छाया हाथ सुखायकै, उनपर धरै अँगार ।
अचरजकी यह बात है, अग्नि सकै नहिं जार॥
लाय फिटकरी सांभर नोन । मुर्गा अण्ड सिरका त्योंन ॥
पारा अरु अफयून कतीरा । पीसै सब सम भाग सुधीरा ॥
फिर सिरकामें तिन्हें मिलावे । हाथन ऊपर लेप लगावे ॥
छायामें ले तिन्हें सुखाई । अग्नि धरै फिर जरै न भाई ॥

काढ ग्वारपाठेका रस ले। पार डार हाथमें मसले ॥
सूखेपै फिर अग्नि उठावै। हाथ नेक नहिं जरने पावै ॥

नौसादरके जलमें कर्पूर रगडकर हाथमें चुपरे पश्चात् अग्नि उठावे तो हाथ न जले ॥ समुद्रफेन पीसकर हाथोंमें लगाकर अग्नि उठावे तो हाथ न जले ॥

शीशीमें अंडा डाले

सिर्का अंगूरी मँगवावै। तामें अंडाको नखवावै ॥
तीन दिना तर ताहि निकारै। सकरे मुख शीशीमें डारै ॥
पवन लगे तब कर्रा होय। याही विधिसा काढे कोय ॥

अंडा कूदे फांदे

एक टंक पारा भरै, अंडामें करि छेद।
मोम लगाके बंद करि, छेदक दीजै भेद ॥
बारू धरके धूपमें, जवै गर्म हो जाय।
बापै अंडा जो धरै, उछरै गरमी पाय ॥

जलमें सूखा चलनेका उपाय

लक्कडी अरलू लायकै, लेहू खडाऊं बनाय।
पहिर तिन्हें भीजै नहीं, जल ऊपर जो जाय॥

विना खूंटी की खडाऊंपै चले

घुघची धौरी पीसकै, जलमें ताहि मिलाय।
काष्ठ खड़ाऊंपर उसे, पांव जमाकर जाय ॥

हाथमें धरी वस्तु न दीजे

मैनसिल अरु हरताल ले, माखनमाहिं मिलाय। गोली उसकी सात करि, मोर पकर खिलवाय ॥ सात दिनोंमें मोर

जो गोली खावै सात । तदन्तर ले बीटको, कीजै ऐसी बात ॥ घिसके बीट जो कीजिये, हाथन ऊपर लेप ॥ सोना रूपा हाथ ले देख सके नहिं कोय ॥

आवेंके बासन फटें

कौंचबीज मँगवावे कोई । काले घोडे सुमूहू जोई ।
दुहुन मिलाय आवेमें डारै । बासन सबै टूट है वारै ॥

हस्त नक्षत्रमें तीन अंगुलका कनेर लाकर कुम्हारके घरमें गाडे तो उसके बर्त्तन फूटै ॥

शत्रु भ्रमण कर

दश अंगुलकी कील इक, पीपल काठ बनाय ।
अरिके घरमें गाडिये, भ्रमैं शत्रु दुख पाय ॥

लडाई करना

कौआ और उल्लूके पंख मिलाकर शत्रुका नाम लेकर हवन करै तो प्रीति नष्ट हो जायगी ॥

आंच जलै और अन्न न सीजे

लकड़ी बबई लेय जलाई । गधामूत्रसो ताहि बुझाई ॥
जलती आंच दीजिये डार । ताको जो फिर खेल निहार॥
सौ मन लकड़ी देहु जलाय । तो भी अन्न न सीजन पाय ॥

टीडी दूर करना

रवि दिन होय अमावश जबहीं । बन्दर हाड़ लाइये तबहीं ॥
कोरे खपड़ा मांझ धरीजे । धूनी अगर ताहि पुनि दीजे ॥
सिन्दूर टीको एक गलावे । तेल भरो दीपकहु जलावै ॥
गांव हद्दपर दीजे गाड़ । टीड़ी घुसै न भीतर हाड़ ॥

अग्निपर चलना

केलाकन्द भांगरा लावै । मेंढक चर्बी फेर मँगावै ॥
मन्द अग्निपर लेय पकाई । पांवन लेप अग्निपर जाई ॥

तप्त तेलसे न जलना

रजस्वलाका लोहू लाय । तामें गद्धामूत मिलाय ॥
बगलेकी फिर चरबी लावै । धारि चूल्हेपर सबै पकावै ॥
करै हाथपर लेप जो याको । तप्त तेलसों जलै न ताको ॥

बिना मौसम फल फूल लगना

जिस घोसलेमें सुतरमुर्ग रहता हो उसकी मट्टी कूड़ा कर्कट सब इकट्ठा करके खात बना लेवे फिर जिस वृक्ष में बिना मौसम फल प्रकट करना चाहे तो उस वृक्ष के चारो तरफ एत थांवलेकी तरह गढा खोद लेवे और उसमें वह खात भर देवे ऊपरसे थोड़ा थोड़ा पानी सींचता रहै तो मनकी इच्छा पूर्ण हो जायगी ।

वृक्ष सूखे फलैं फूलैं नहीं

पारा पानीमें मिला, मूल रूखम डार ।
सूख जाय वह रूख है, फले न लावै बार ॥

आम लगाने का उपाय

लाय तेल अंकोलका, गुठली आम भिगोय ।
गाड़ैपै उगै, तुरत, संशय नेक न होय ॥

कमल उगाना

वाहि तेलमें डारिये, कमल बीज ले एक ।
जलमें डारतही उगै, सुन्दर कमल सुरेक ॥

काक चोडी आदिका पकड़ना

चावल अथवा ले चने, या ले गेहूँ आय । आक दूधमें

तर करे, और सुखावै ताय ॥ जहां परिन्दे हों घने, डारे ह्वाँ लै जाय । जो आवै सुधि भूलिहै, पकड लाइये ताय ॥

काग पकडनेकी विधि

आक दूध सिंगरफ तिल तेल । चावल अरु दही तामें मेल॥
सबको कर एकत्र पकावै । काग खाय बेसुधि हो जावै ॥

नेत्ररोग दूर होय

बंदर विष्ठा लेप जो कीजै । नेत्ररोग ताही छिन छीजै ॥

दांतोंका दर्द दूर होय

जो किसी मनुष्यके दांतोंमें दर्द होता हो तो मुंह धोनेके समय सात बार मंत्र पढके कुल्ला करे अच्छा हो जायगा मंत्र यह है—

हम इक सर तुम हो बत्तीस । हमरी तुम्हरी कौनसी रीस ॥
हम कमाँय तुम बैठो खावो । मरती बिरिया संगहि जावो॥

मंत्र बवासीर जाय

इस मंत्रको तीन बार पढकर आबदस्त लेवे परमेश्वरकी कृपासे जल्दी आराम हो चाहे खूनी हो चाहे बादी, दोनोंको आराम होय । मंत्र-खुरासानकी टेनीशाह खूनीवादी दोनों जाय उमती उमती चल चल स्वाहा ।

विधि—लाल सूतमें तीन गांठें देकर २१ बार मंत्र पढकर पांवके अँगूठेमें बांधे ॥

शराबका पीना छुटे

श्याम कागको पित्ता लावे । तिहि शराबमें धोय पिलावै ॥
सो नर फेर शराब न पावै । कोटि जतन करि जब लगि जीवै॥

पसलीका उपाय

दिवाली या होलीको जिस किसी दिन ग्रहण पडे उस दिन १०१ बार स्वच्छ होके पढे और लोबान आगमें डालता जाय तब सिद्ध होय, जब काम पडे तब लकडी एक सेर और सींकें सात अंगुलकी नापके काटले और नीचे लिखा मन्त्र सात बार पढे और झाडे तो दोनों चीजें बढ जायँगी और जब दूर हो जायँगी तो बराबर रहेंगी। मंत्र-हं मन्दिरके किनारे सुरहागाय सुरहागायकेपेटमें बच्छा बच्छाके पेटमें कलेजा कलेजाके पेटमें डबडब कर उमर बढे दुहाई लोना चमारीकी ॥

पनहरीका घडा खाली होय फिर भरिजाय

चोंच हंसकी लाइके जब दिन मंगल आइ। पनघट मारगविषे, एक लकीर कढाइ। जो जावै तिहिं लांघिकै, पनघटकी पनिहार। जल बिन खाली जानिकै, मटका फेर निहार ॥ जब वहांसे उलटी फिरै, घडा भरा दिखराइ। मूरखता निज जानिकै फिर लांघनि करि जाय ॥ जब आवै वह पारको, मटका खाली आइ। फिर जावै जब पारको, भरा हुआ दिखराइ ॥

पनहरीका घडा फूटे

अन्त मासका मंगल आवे, तब यह जतन करावे। जो कुम्हारसे डोरा लावै, भूगर आनि धरावै ॥ रात्रि समय पग जल धर पैठे, दक्षिण मुख हो जावै गगन मांझ दृष्टिको राखै, अन्त भावना लावै ॥ उस डोरेमें सात गांठ दे, जब जब तारा टूटें। गूगर धूनी देकर उसको, मन इच्छा फल लूटै ॥ बहुरो

डोरा लाइ जो नाखै, मारगमें पनघटके। लंघतही पनहारीको घट, फूटी जाय बेखटके ॥

राक्षस दीखे

अंकोलका तेल अंगमें लेपे तो भयंकर रूप देख सब मनुष्य भागें ॥

भूत दीखे

गन्धक मीठे तेलका, ले पारीमें डाल ।
भूत भयंकर दृष्टिमें, आवै बारंबार ॥
गुञ्जाकी जडको मँगवावे । बेलपत्र रसमें पिसवावे ।
नेत्र आंजिकै देखे जबहीं । आवे भूत दृष्टिमें तबहीं॥
चिनोटी रस आंखमें आँजै । दीखै भूत भयंकर साजै।
दीप तेल अंकोल भरि, गृहमें देय जलाय ॥
भूत प्रेत दीखन लगैं, देखै सो डरजाय ॥

कुपितको प्रसन्न करनेका उपाय

भोजपत्रपै नाम लिखै, गोरोचनसे लेय ।
दूध बीच ताको धरै, सभी क्रोध तज देय ॥
जो कोई तुमपर होवे क्रोध। नाम लीजिये ताको सोध ॥
तालपत्रपै लिखिये आय । कांटेको एक कलम बनाय ॥
गाड कीचिमें दीजै ताहि । क्रुद्ध प्रसन्न होगयो आहि ॥

शत्रुका मुख बंद करना

चौलाईकी जड मँगवावै । चांदीका तावीज मढावै ॥
मुखमें धरिये ताको धाय । मूक होय अरि जाय पलाय ॥

श्वेत चिरमिटीकी जड लाय । बाद समय मुख रखिये ताय ॥
शत्रु होय जाय तब मूक । बोलै नहीं करै बहु चूक ॥

पुत्र और पुत्रियोंकी संख्या बताना

यदि कोई मनुष्य यह पूँछे कि मेरे कितने पुत्र और कितनी पुत्रियां हैं? तो उससे कहो कि, जितने तुम्हारे लडके और लड़किया हैं उनको दूना करके पांचसे गुणा करदो और गुणन फलमें जितनी लडकियां हैं जोड दो। जब वह ऐसा कर चुका तब जुडा हुआ अंक उससे पूंछलो जो इकाईकी ओर अंक है उतनी लडकियां और जो दहाईकी ओर है उतने लडके हैं॥

बादलकी दूरी जानना

बिजलीकी चमकके साथ अपनी नाडीपर अपना हाथ धरो और फिर बादल गरजने तक गिनते जाओ कि नाडी कितनी बार चली? बिजलीकी चमकके बादलीकी गरजतक जितनी बार नाडी चलती है उसके आधे मीलपर बादल होता है॥ जैसे नाडी अगर दश बार चले तो पांच मीलपर होता है॥

अथ पन्था प्रश्न

शृङ्गार नदं श्रुति बाणं राम रसास्तिं थिः सूर्यसुतोऽथ कामः । अंर्कः शशाङ्कोऽष्ट विलोचनं च मुनीन्द्ररुद्रां भुवि लेखनीयाः ॥ १ ॥

यदा कदाचित् कोपिपृच्छत्येवम् मदीयः पुत्रो वान्यः मित्रवर्गश्च विदेशात् कदाऽऽयास्याति कीदृक्कया वर्त्ततेऽदुखी दुःखी वा? तदा पंडित इदं चक्रं भुवि लिखित्वा पृच्छकहस्तेन

प्रश्नचक्र

१६	९	४	५
३	६	१५	१
११	१२	१	८
२	७	४	११

पूगीफलादिकमेतच्चक्रोपरि धारयित्वा फलं वदेत्। यत्रांके पूगी फलं धृतं तस्यांकस्य फलं तस्मै पृच्छकाय देयम् ॥ १ ॥

फल

चन्द्रे बाणे तथा रुद्रे[11] जानीयात्सत्समागमः ।
शृंगारश्रुतिरामेषु सन्देशं च समाप्नुयात् ॥ १ ॥
रसलोचनकामेषु जानीयात्सुखिनं नरम् ।
समुद्रे दूरगामी स्यादर्के[12] चौराद्भयं भवेत् ॥ २ ॥
दर्शमे चिन्तया युक्तःकुशली स्यात्ति[15]थीन्द्रयोः ।
मुनीनां भाषितं सत्यं निधनं वसुनन्दयोः ॥ ३ ॥

अथ तत्पुरुषकल्पः

मन्त्रो यथा—तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि ।
तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् ।

विधि—शिवजी बोले हे सुव्रते ! सुनो तत्पुरुषमन्त्रका फल कहता हूँ, बिल्व और उदुम्बरको छोडकर एक लक्ष समिधा लेकर हवन करनेसे ब्रह्महत्या दूर होती है । अजाके दक्षिण कर्णमें ग्रहण कर रात्रिमें निर्भय हो दक्षिणामूर्ति लिंगके समीप जपे तो एक महीनेमें परम मनोरम रूपसे यक्षिणी आकर सम्पूर्ण कामनाओंको प्रदान करती है ।

जो घृतयुक्त करवीरके पुष्पोंसे जिस स्त्रीकी इच्छा कर हवन करे वह सात रात्रिमें उसके पास आ जाती है इसमें सन्देह नहीं॥

जो कर्णिकारके फूलोंसे छः महीने हवन करता है, देवता गन्धर्वोंकी स्त्रियें स्वयं आकर उसको मनोभिलषित पदार्थ

देती हैं। हे देवि ! जो तत्पुरुष मन्त्रको लिंगके निकट प्रति दिन जपता है वह बुद्धिमान् इसी देहसे मुझ (शिव) को प्राप्त होता है। आदित्यके सामने मुख कर मन्त्र जपता हुआ सब पापोंसे छूट जाता है। तिल और लवण मिलाकर हवन करनेमें शत्रु वशमें हो जाते हैं। दूर्वा और घृतका हवन करनेसे यश मिलता है, मार्जनसे रोग दूर होता है, राक्षसोंसे रक्षा होती है जो इस मन्त्रको निरन्तर एक वर्ष वा छः महीने जप करता है उसको यक्षिणी स्वयं आकर दर्शन देती और सिद्धि देती है॥

तत्पुरुषकल्प समाप्त

झारा रामरक्षाका

ॐ रोम रोमकी रक्षा रामजी करें, हाडनकी रक्षा हरजी करें, टकानकी रक्षा टीकमजी करें, पिंडरीकी रक्षा मोहनजी करें, गोडनकी रक्षा गोवर्धनजी करें, जांघनकी रक्षा जनार्दनजी करें, इन्द्रीकी रक्षा, इंद्रजी करें, कमरकी रक्षा केशवजी करें, पेटकी रक्षा पुरुषोत्तमजी करें, खँवानकी रक्षा गरुडजी करें, कंठकी रक्षा कृष्णजी करें, ओठनकी रक्षा हनुमन्तजी करें, जिह्वाकी रक्षा पार्वतीजी करें, नाककी रक्षा नरसिंहजी करें नेत्रकी रक्षा नारायणजी करें, ब्रह्मांडकी रक्षा श्रीसकलदेव शास्त्र सहाय करें चोटीकी रक्षा चतुर्भुजजी करें, आकाशकी रक्षा ज्योतिस्वरूपजी करें, रैनकी रक्षा चन्द्रमाजी करें, दिनकी रक्षा श्रीसूर्यनारायणजी करें धरती माता सदा रक्षा करवो करें, अनहद नाद बाजे धनतृण प्राल जंजालभय व्यापेनपीरा अंडेसो ब्रह्मंड

परख डोलै खण्डे खण्डे झल होय तो झलको मारूं, घात होय तौ घातकूं मारूं, छलछिद्र होय तौ छलछिद्रकूं मारूं जलमें थलमें फूलमें दृढकर बांधो पालबीज जमामन दे गया श्रीब्रह्मा विष्णू मुरार तल झडै पिंडवा पडे जहां बैठे बाबा हनूमन्त हुंकार करे हाट होठ काया जामें शब्द समाया राख राखहो निरंजना सरनाई तेरी आल जञ्जाल भय व्यापै न पीडा चौकी फिर गये बावना बीरा इतके रामरक्षा सत्य करे भाषी सत्यनाम सत्यवीर सत्यनाम आदेश गुरुका शब्द सांचा पिंडकाचा फुरो मंत्र ईश्वरोवाच मेरी भक्ति गुरुकी शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरोवाच॥

विधि—मोरपंखसे इस मन्त्रको पढता हुआ इक्कीस बार झारा देवे बालकके सब रोग जायँ॥

हनुमानजीका झारा मन्त्र

जयति हनुमानजी निज ध्वानधूप ध्यान धरूं सेवू वीर हनुमान जटाजूट अवधूत जङ्ग जञ्जीर लँगोट गाढी भूतकूं वश प्रेतकूं वशकर गादाकी मारदे, तेल सिंदूर फल फूल पानमंगल चढे आप देखे जब रोट होवे, सत्यकी नाव नरसिंह खवे दुष्टके लात बजरंग देवे तोटे वज्रकिवांड वज्रकी कडी चार लाख अस्सी हजार वशकर रावणकी दीनी धडाधडी, सत्यवीर हनुमान बरस बारहके ज्वान हाथमें लड्डू मुखमें पान सीताकी गये खोज गये तो मोसे पतित अनाथकी नहीं करोगे का महाराज हनुमंत गुणवंता गाजंता घोरंता डगरी बैठे राज करन्ता ऋद्धि लाओ सिद्धि लाओ राजा परजा वशकर बडी बेग मेरे

पास लाओ मेरे पास बडी बेग नहीं लाओगे तो माता अञ्जनीका दूध पिया हल्लालसे हराम कराओगे बडी बार बेग लाओगे तो माता अञ्जनीका दूध पिया हल्लाल करोगे यही पानका बीडा तुम्हारी भेंट है जो वाचा चूके तो ऊभ्योहि सूखै मेरे हंकारे नहीं हंकोगे तो माता अञ्जनीकी दुहाई नरसिंह पिताकी दुहाई आदि पुरुषकी दुहाई सती सीताकी देखूँ हनुमन्ता वीर तेरी शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरोवाच ॥

विधि—इस मन्त्रका बालकको झारा देनेसे भूत प्रेत श्मशान सब भागेंगे झारा मोरके पंखसे देना चाहिये ॥

शतवारण सरस्वती स्तोत्र ।

अथ ध्यानम्

शुद्धां ब्रह्मविचारसारपरमामाद्यां जगद्व्यापिनीं
वीणा पुस्तधारिणीमभयदां जाड्यान्धकारापहाम् ।
हस्ते स्फाटिकमालिकां विदधतीं पद्मासने संस्थिताम् ।
वन्दे त्वां परमेश्वरीं भगवतीं बुद्धिप्रदां शारदाम् ॥ १ ॥
ह्रीं ह्रीं हृद्यैकबीजे शशिरुचिकमले कल्पविस्पृष्टशोभे
भव्ये भव्यानुकूले प्रमुदितवदने विश्ववन्द्यांघ्रियुग्मे ।
पद्मे पद्मोपविष्टे प्रणतजनमनामोदसम्पादयित्री
प्रोत्फुल्लज्ञानकूटे हरिहरदयिते देवि संसारसारे ॥ २ ॥
ऐं ऐं ऐं जाप्यतुष्टे हिमरुचिमुकुटे वल्लकीव्यग्रहस्ते
मातर्मातर्नमस्ते दह दह जडतां देहि बुद्धिं प्रशस्ताम् ।
वेदे वेदांतगीते अतिपरिपठिते मोक्षदे मुक्तिमार्गे
मार्गादित्यस्वरूपे भव मम वरदे शारदे शुभ्रहारे ॥ ३ ॥

धीं धीं धीं धारणाख्ये धृतिमतिमुनिभिः प्रेमिभिः कीर्तनीये
नित्ये नित्ये निमित्ते मुनिजननमिते नूतने वै पुराणे ।
पूर्णे पुण्यप्रभावे हरिहर नमिते पूर्णतत्त्वे सुवर्णे
मातर्मात्रार्धतत्त्वे मति-मति-मति-दे माधवस्य प्रिये वै॥४॥

क्लीं क्लीं क्लीं सुस्वरूपे दह दह दुरितं पुस्तकव्यग्रहस्ते
संतुष्टाकारचित्ते स्मितमुखि सुभगे जृम्भनि स्तम्भनीये
मोहे दुग्धप्रभावे मम कुरु कुमतिध्वंसविध्वंसमीडे
गीर्गौर्वाग्भारतित्वां कविवृतरसने सिद्धिसाध्ये विशुद्धे ॥५॥

सों सों सों शक्तिबीजे कमलभवमुखाम्भोजभूतस्वरूपे
रूपे रूपप्रकाशे सकलगुणमये निष्कले नित्यशुद्धे ।
स्तौमि त्वाहं च देवीं मम खलु रसनां मां कदाचित्यजेथा
मा मे बुद्धिर्विरुद्धा भवतु मम मनो यातु मा देवि पापम् ॥६॥

मा मे दुःखं कदाचित् क्वचिदपि समये पुस्तके नाकुलत्वं
शास्त्रे वादे कवित्वे प्रसरतु मम धीर्मास्तु कुण्ठा कदाचित

विधि—त्रयोदशीके दिन इस स्त्रोतका पाठ करना प्रारम्भ करे गोबरका चौका लगवाकर धूप, दीप, नैवेद्य और फूलमाला करके इक्कीस पाठ करे। फिर प्रतिदिन इसी तरह करता रहे। इसके पाठके करनेसे सौ श्लोक कंठ याद करनेकी शक्ति हो जाती है, बहुत उत्तम कविता करने लगता है और सरस्वतीकीसी बुद्धि हो जाती है ॥

एकमुखिहनुमान कवच

ॐ नमो भगवते विचित्रवीर हनुमते प्रलयकालानलप्रभाप्र-

ज्वलितप्रतापवज्रदेहाय। अंजनीगर्भसंभूताय। प्रकटक्रमनल्प-दानवयक्षरक्षोग्रहबन्धनाय। भूतग्रहबन्धनाय। प्रेतग्रहबन्धनाय। पिशाचग्रहबन्धनाय। ब्रह्मराक्षसग्रहबंधनाय। चौरग्रहबन्धनाय। मारीचग्रहबन्धनाय। एहि एहि आगच्छ। आगच्छ। आवेशय आवेशय। मम हृदये प्रवेशय। स्फुर स्फुर सत्यं कथय कथय व्याघ्रमुखबन्धनाय। सर्पमुखबन्धनाय। लंकाप्रासादभञ्जनं श्रीरामचन्द्रं वशमानय क्लीं ह्लीं ह्लीं श्रीराजानं वशमानय श्रीराजानं वशमानय श्रीं ह्लीं क्लीं श्रीं आकर्षय मम शत्रून् मर्दय खरवे श्रीरामचन्द्रस्य तापय तापय तापय मम कार्याणां सिद्धिं कुरु कुरु ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रैं ह्रौं ह्रः हूँ फट् स्वाहा ॥

विधि—इस कवचको प्रत्येक मंगलवारको एकसौ आठवार जपे सवासेरकी गुडधानी बन्दरोंको गेरे, चुर्माका भोग रक्खे तो संपूर्ण भय दूर हो जाय परंतु प्रथम सवालक्ष जप करके सिद्धि करले और सवामन रोट भोग धरे ॥

दश रोग के झारनेका मन्त्र

पर्वत ऊपर पर्वत और पर्वत ऊपर फटिकशिला फटिक शिलापर अंजनी जिन जाया हनुमन्त नेहला टेहला काँखकी कखराई पीछेकी आदटी कानकी कनफेट रालकी वद कंठकी कण्ठमाला घूटनेका डहरू डाढकी डढशूल पेटकी तापतिल्ली फिया इतनेको दूर करे भस्मंत नातर तुझे माता अंजनीका दूध पिया हराम मेरी भक्ति गुरुकी शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाच सत्यनाम आदेश गुरुका ॥

विधि–सात शनैश्चर हनूमानजीका पूजन धूप, दीप, नैवेद्यादिसे करे प्रतिदिन १०८ मन्त्र जपे स्त्रीके पास नहीं जाय फिर होली दिवाली तथा ग्रहणमें १०८ मन्त्र जपे। कखराई, अदीठ, कनफेर, बद कंठमाला, ढाढशूलको राखसे झाडे, डहरूको ताप तिल्लीको छुरीसे झाडे, हनूमानका प्रसाद बटवाय दिया करे ॥

भैरवसिद्धि प्रयोग

ॐ काली कंकाली महाकालीके पुत्र कंकाल भैरव हुकुम हाजिर रहे मेरा भेजा काल करे मेरा भेजा रक्षा करे आन बांधूं बान बांधूं चलते फूलमें भेजू फूलमें जाय कोठेजी पडे थर थर कांपे हल हलहले गिरि गिरि पर उठउठ भगे बकबक बके मेरा भेजा सवा घडी पहर सवा दिन सवामास सवा बरसको बावला न करे तो माताकी कालीकी शय्यापै पग धरे वाचा चूके तो ऊभा सूखै वाचा छोड़ कुवाचा करै धोबी की नाद चमारके कूंढेमें पडे मेरा भेजा बावला न करे तो रुद्रके नेत्रसे आगकी ज्वाला कढे सिरकी लटा टूट भूमिमें गिरे माता पार्वतीके चीरपै चोट पडे बिना हुकुम नहीं मारना हो कालीके पुत्र कंकाल भैरव फुरो मन्त्र ईश्वरोवाच सत्यनाम आदेश गुरुको॥

विधि–इस मन्त्रको कालरात्रि अथवा सूर्यग्रहण रात्रिको सिद्ध करे। त्रिखूंटा चौका देकर दक्षिणकी ओर मुख करके बैठ जाय और एक सहस्र इस मन्त्रका जाप करे पीछे लाल कनेरके फूल, लड्डू सिंदूर, लौंगका जोडा और चौमुखा

दीपक आगे धरे और दशांश हवन करे, जब भैरव भयंकर रूपसे सन्मुख आवे तब डरे नहीं तत्काल फूलकी माला गलेमें गेर लड्डू आगे रक्खे फिर उनसे जो काम कराना होय सो करावे तत्काल सिद्धि होयगी ॥

ज्वालामुखी मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं सिंहेश्वरी ज्वालामुखी जृंभिणी स्तम्भनी मोहनी वशीकरणी परघनमोहनि सर्वारिष्टनिवारिणी शत्रुगणसंहारिणी सुबुद्धि दायिनीॐआं क्रों ह्रां त्राहि त्राहि अक्षोभय अक्षोभय अमुकं मे वश्यं कुरु कुरु स्वाहा ॥

विधि-इस मन्त्रको दीपमालिकाकी रात्रिको जपें, चमेलीके फूल, बरफी, सिंगरफ आदिका भोग धरे, फिर दशांश हवन करे इसी तरह प्रतिदिन जप करता रहे फिर जो कुछ कार्य चाहोगे तत्काल ज्वालामुखी सिद्ध करेगी ॥

रक्षा मंत्र

ॐ क्षीं क्षीं क्षीं क्षीं क्षीं फट् । विधि-भगवान् कहते हैं कि यह मन्त्र साक्षात् मेरा रूप है । इस मन्त्रको ५०० जप करनेसे त्रिलोकीमें उसके समान कोई नहीं रहता और नित्य धन धान्य पुत्र मित्र बढते हैं ॥

वशीकरण सुपारी मन्त्र

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय त्रिलोचनाय त्रिपुरवाहनाय अमुकं मम वश्यं कुरु कुरु स्वाहा ।

विधि-इस मंत्रको सिद्ध योगमें १०८ बार जपे और जिसको सुपारी पढके देवे वह वश्य होता है ॥

वशीकरण पान मंत्र

हरे पान हरयाल पान चिकनी सुपारी श्वेत खैर दाहने कर चना मोही लेह पान हाथमें दे हाथ रस ले ये पेट दे पेट रस लेह श्रीनारसिंहवीर थारी शक्ति मेरी भक्ति फुरो मंत्र ईश्वर महादेवकी वाचा ॥

विधि—इस मन्त्रको २१ बार पढकर जिसको पान खवावे सोई वश होय इसमें सन्देह नहीं ॥

वशीकरण मंत्र

ॐ नमो कट कट कट घोर रूपिणी अमुकं मे वशमानय स्वाहा । विधि—इस मंत्रको ग्रहणमें १००० बार जपे फिर रविवारको इससे अभिमंत्रित करके अन्न भोजन करे और भोजन करते समय उनका नाम लेता जावे जिसे वशमें करना चाहे तो शीघ्र वशीभूत होता है ॥

वशीकरण

ॐ श्वेतवर्णे सितपर्वतवासिनि अप्रतिहते मम कार्यंकुरु कुरु ठः ठः स्वाहा।विधि—मिट्टी सहित सफेद चिरमिटीके फलको ले आवे और कृष्णपक्षकी चतुर्दशी अथवा अष्टमीको पृथ्वीमें बीज गेर देवे और नीचे लिखा हुआ मन्त्र पढकर पानी सींचे।

अथ सेचन मंत्र

ॐश्वेतवर्णे सितवासिनि श्वेतपर्वतनिवासिनि श्वेतसर्वकार्याणि कुरु कुरु अप्रतिहते नमो नमः स्वाहा।विधि—पुष्यनक्षत्रमें पवित्र होकर एक दिन उपवास करे और जितेंद्रियतासे धूप दीप उपहारादिसे न्यास करे।ॐ श्वेत०हृदयाय नमः ॐ

पद्ममुखे शिरसे स्वाहा, ॐ नमः सर्वज्ञानमये शिखायै वषट्, ॐ नमः सर्वशक्तिमत्यै कवचाय हुं ॐ नमः नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ परमंत्रभेदने अस्त्राय फट्, सर्वाण्यंगानि नमोन्तादीनि इस प्रकारके न्यास करके मूल मन्त्रसे उसको उखाड लावे ॥

अथ उत्पाटन मंत्र

ॐ नमो भगवति ह्रीं श्वेतवासे नमोनमः स्वाहा। विधि—इस मूलमंत्रका प्रथम एक अयुत जप करे तिल, दूध, घृत मिलाकर दशांश हवन करे इस विधिसे चिरमिटीकी जड उखाड लावे उसको सफेद चन्दनमें घिसकर लेप करे तो वशीकरण होवे ॥

पुतली वशीकरण

"ॐ ह्रीं ह्रीं क्लं क्लं फट् नमः"



ॐ नमः क्षिप्रं कामिनीं अमुका मे वशमानय हुं फट् स्वाहा ॥

विधि– तांबेकी एक ऐसी चौकोन मूर्ति बनवावे जैसी यह बनी है इस मूर्तिका पूजन रक्तचन्दनसे नित्य करे, चमेलीके फूल चढावे और मौन साधकर एक सहस्र मंत्र नित्य रात्रि समय २१ दिन जपकर सिद्ध करे फिर जिसको इनमेंसे फूल लेकर फेंके वह तत्काल वश हो ॥

हुं फट् हुं फट् ।



अथ मंत्र

ॐनमः कालरात्रि शूलहस्ते महिषवाहिनि रुद्रकालकृत-शेखरे आगच्छ आगच्छ भगवति अतुलवीर्ये सर्वकर्माणि मे वंश कुरु कुरु महेश्वर. आज्ञापयति श्रीं श्रीं श्रीं स्वाहा ॥

विधि–लोहेकी एक ऐसी मूर्ति बनवावे जैसी इस चित्रमें है लाल २ दो नेत्र. बिखेरे हुए बाल, क्रोधसे निकली हुई जिह्वा, एक हाथमें खड्ग, दूसरेमें खप्पर, भयानक स्वरूप धारण किये हो इसको सूर्यग्रहणकी रातसे सिद्ध करना प्रारंभ करे, हजामत न बनवावे, नख बढने दे, ब्रह्मचर्य रहे, अपने शत्रुपै सदा ध्यान रक्खे । फिर इस मंत्रको पढ पढकर कडवे तेलमें गुडहरके फूल डुबोकर शत्रुका नाम ले लेकर हवन करता रहे और आठवें दिन मूर्तिका पूजन करके ढाकके कोपलोंकी अग्निमें डाल दे फिर लाल गरम होनेपर निकालकर कटेरीके रसमें भिगो दे ऐसा करनेसे सवा मासमें कार्य सिद्ध होनेमें सन्देह नहीं॥

राजवशीकरण तिलक

ॐ क्लीं सह अमुकं मे वशं कुरु कुरु स्वाहा। विधि–इसको एक लाख जपकर सिद्ध करे फिर इसको एक हजार जपकर केशर, चन्दन, गोरोचन और कपूर मिलाकर गोदुग्धमें घिस लेवे और तिलक लगाकर राजाके सन्मुख जाय देखतेही वश हो जाय ॥

वेश्यावशीकरण मंत्र

ॐ द्राविणी स्वाहा । ॐ हामिले स्वाहा ।

विधि–ओंगेकी कील सात अंगुलकी लाकर उसपर यह मन्त्र सातबार पढकर वेश्याके घरमें डाल दे तो वेश्या वश होजाय ।

शत्रुवशीकरण मंत्र

ॐ ह्रीं क्लीं ऐंह्रो भोगप्रदा भैरवी मातंग त्रैलोक्यं वशमानय स्वाहा ।

विधि—मनसिल और गोरोचनपर इस मन्त्रका एक सहस्र जप करे। तिलक लगाते समय सात मन्त्र जपे तो शत्रु देखतेही वश होजाय ॥

वशीकरण सावर मंत्र

ॐ नमो भगवति रुद्राणी चामुण्डानी देवदत्तं मम वश्यं कुरु कुरु स्वाहा ।

विधि—इस मन्त्रका एक लक्ष दो सहस्र सोलह जप करे। धूप, दीप, नैवेद्य चढावे। जिसको वश करना हो उसके बालकोंको लाकर गूगलमें मिलाकर गोली बनावे और सहस्र बार मंत्र पढ पढकर हवन करे, इस रीतिसे मन्त्रको सिद्ध करनेपर जिसको वश किया चाहे वह उसी जगह आ जावेगा जहां बैठकर जप किया जाय ॥

सर्वजनवशीकरण मन्त्र

ॐ नमो आदेश गुरुको राजा मोहूँ परजा मोहूँ ब्राह्मण बाणिया हनुमन्त रूपमें जागत मोहूँ जो रामचन्द्र परमाणिया गुरुकी शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरोवाच ॥

विधि—इस मन्त्रको प्रथम २१ दिवसतक एक सहस्र प्रति दिन जपे और चन्दन, फूल, दीप, नैवेद्य नित्यप्रति करता रहे तो श्रीरामचन्द्रजीका ध्यान करके चौराहेकी धूल उठाकर उस पर २१ बार इस मंत्रको जपकर माथेपर बिन्दी लगाले जो देखेगा वह वश होजायगा ॥

वशीकरण मन्त्र

ॐ मोंह्रों । विधि-विना भोजन किये ही इस मंत्रका पांचसौ जप करे तो असाध्य राजा, पुत्र मित्र बांधव सब वश होजायँ यह सब मंत्रोंमें उत्तम मंत्र है ॥

वशीकरणपुष्प मन्त्र

ॐ चामुण्डे जय जय वश्यं करि जय जय सर्वसत्वान्नमः स्वाहा । विधि-इस मंत्रको १०००० बार जपे, रविवार या भौमवारको उक्त मन्त्रसे अभिमंत्रित किया हुआ पुष्प जिसे दिया जायगा वह अवश्य वशमें होगा ॥

ॐनमो भगवते रुद्राय सिद्धिरूपिणे शिखिवन्ध सर्वेषां शिवमस्तु हन हन रक्ष सर्वभूतेभ्यश्च नमः ।

विधि-पीपलके वृक्षपर चढकर इस मंत्रको एक लक्ष जपे फिर कनेरके फूलपर सात मंत्र पढ अपने पास रक्खे जिसको देवे वह वश हो ॥

त्रिभुवनवशीकरण मन्त्र

ॐ नमो भगवति मातंगेश्वरि सर्वमुखरंजनि सर्वेषां महामाये मातंगे कुमारिके नन्द २ जिह्वे सर्वलोके वश्यकरि स्वाहा ॥

विधि-१०००० जप करनेसे यह मन्त्र सिद्धि होता है। चन्द्रग्रहणके समय श्वेत विष्णुकांताकी जड ग्रहणकर उसका अंजन नेत्रोंमें लगानेसे निःसंदेह त्रिभुवन वशीभूत होता है। मनसिल, गोरोचन, ताम्बूल मिलाकर तिलक लगाके जिससे

सम्भाषण करे वह ही वशीभूत होता है । शुक्लपक्षकी त्रयोदशीको सफेद घुँघचीको जडसहित लाकर पानके साथ देनेसे सब लोक वश होजाते हैं ॥

त्रैलोक्यवशीकरण भूतनाथ मंत्र

ॐ नमो भूतनाथ समस्तभुवनभूतानि साधय हुं ॥

विधि—इस मन्त्रका एक लक्ष जप करनेसे भूतनाथ सिद्ध होजाते हैं फिर इनका स्मरण करनेसे ही आकाश पाताल और पृथ्वीके चराचर प्राणी वशीभूत होजाते हैं ॥

प्रेतवशीकरण मंत्र

ॐ श्रीं वं वं भुं भूतेश्वरि मम कुरु कुरु स्वाहा ॥

विधि-मूल नक्षत्रमें बबूलके नीचे तीन दिन इस मन्त्रको प्रतिदिन १०८ बार जपे तो प्रेत प्रगट होकर मांग मांग कहे, तब वचन लेकर जो मनमें विचार हो वह मांगे ॥

मोहनी मंत्र

तेकसोंमें तेल राजा परजा पावे मेल कछु पानी मस्तक ल्यान छः सै वीर मेरे पाय लगाव हाथ खड्ग फूलोंगी माला जानि विजाने गोरख जाने मेरी गतिको कहे न कोय हाथ पछानो मुख धोऊँ सुमिरौं निरञ्जनदेव हनुमन्त यती हमारी पति राखो मोहनी दोहनी दोनों बहन आव मोहनी रावल चले मुख बोले तो जिह्वा मोहूं आस मोहूं पास मोहूं सब संसारमें निकलूं टीका देय ललाट । आवे तो नाहिं पकड बांध ले आवे दुहाई अञ्जनीके पूतकी दुहाई, (लक्ष्मण जतीकी दुहाई) गुरु गोरखनाथकी दुहाई, निरञ्जन भगवानकी मेरी भक्ति गुरुकी शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरोवाच ॥

दीपमालिकाकी रातको एक थालीमें ग्यारह दीपक जलाय भोजपत्रपै इस मंत्रको सिंदूरसे लिख पूजन करे और १०८ मंत्र जपे जिसको मोहना होय उसकी ओर मुख करके तीन बार मन्त्र जपे तत्काल वश होय ॥

लौंग मोहनी मंत्र

ॐ नमो आदेश गुरु कामरू देश कामाख्या देवी जहां बसे इस्माइल योगी इस्माइल योगीने दीन्हीं एक लोंग राती माती । दूजी लोंग दिखावे राती । तीजी लोंग रहे थहराय, चौथी लोंग मिलावे आय । नहिं आवे तो कुआं बावडी घार फिरे रंडी कुआं बावडी छिटक मरे ॐ नमो आदेश गुरुको मेरी भक्ति गुरुकी शक्ति, फुरो मन्त्र ईश्वरोवाच ॥

विधि–ग्रहणकी रातको चार लोंग लाकर चार दिशाओंमें धरे बीचमें चौमुखा दीपक जलावे । फिर धूप सुगन्ध माला नैवेद्य चढाय एक सहस्र मन्त्र जपे सिद्ध होनेपर सात मन्त्र पढके लोंग दे जो खाय वश होजाय ॥

शत्रुमोहनेका मंत्र

ॐ नमो महाबल महापराक्रम शस्त्र विद्या विशारद अमुकस्य भुजबलं बन्धय २ दृष्टिं स्तम्भय २ अंगानि धूनय २ पातय पातय महीतले हुं ।

विधि–ओंगेका रस निकालकर इस यंत्रसे अभिमंत्रित कर शस्त्रपर लेप करके संग्राममें जाय तो शत्रु देखतेही मोहित होय॥

सभामोहनी सिंदूर

हथेलीके हनुमन्त बसै भैरूं बसै कपार । नारसिंहकी मोहनी

मोहो सब संसार ॥ मोहन रे मोहनताबीर सब वीरनमें तेरा सीर सबकी दृष्टि बांधदे मोहि तेल सिंदूर चढ़ाऊ तोहि । तेल सिंदूर कहांसे आया कैलास परवतसे आया कौन लाया अंजनीका हनुमंत गौरीका गणेश काला गोरा तोतला तीनों बसे कपाल बिंदा तेल सिंदूरका दुशमन गया पताल । दुहाई कामिया सिंदूरकी हमें देख सीतल हो जाय हमारी भक्ति गुरुकी शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरोवाच । सत्यनाम आदेश गुरुका ॥

विधि—सात शनिवार दीपक तेल करके लोबान खेवे मिठाई भरे १०८ जपे फूल पान करके पूजा करे सिद्ध हो जाय तो पीछे जहां जाय सिंदूरपर सात बार मंत्र पढ माथेपै लगाय जाय राजा गुस्से हो जाय दंड देवेको बुलावे तो देखतेही शीतल होजाय । जिस सभामें जाय वहांके सब मनुष्य बडा आदर भाव करें और प्रीतिसे सन्मान करें ॥

अथ अघोरकल्प

अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः ॥
सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः ॥

शिवजी बोले हे देवि ! केवल अघोर स्मरणसे सब पाप दूर होजाते हैं । अघोर मंत्रके जपमें तिथि नक्षत्र वा विशेष उपवासकी आवश्यकता नहीं है । पहिले पंचगव्यसे स्नान करके मन्त्रसे शिवकी अर्चना कर दश सहस्र जप करके घृतकी सहस्र आहुति दे यह पुरश्चरण त्रिलोकीको वशमें कर सकता है । चतुर्दशी वा अष्टमीको मेंढककी वसा लेकर देवके दक्षिण

ओर स्थित हो आठ सहस्र जपकर मृणालतन्तुकी बत्ती बनाकर खोपडीके ऊपर काजर पारे उसका अञ्जन आंखोंमें लगानेसे मनुष्य अदृश्य होजाता है, कुसुम्भके तेल अथवा मंडूककी बसाके दीपकसे आकके फलमें स्थित कपासकी बत्ती बनाकर यत्नके साथ पूर्वोक्त प्रकारसे काजर पारे उसे नेत्रमें आंजनेसे तत्काल अदृश्य हो जाता है । ब्रह्मा, इन्द्र विष्णु इन लोकोंको इसी देहसे प्राप्त हो सर्वदर्शी और दिव्यरूप हो जाता है ॥

शुद्ध स्रोतोंजनको लेकर प्लक्षपात्रमें रखकर समीचीन कपाससूत्रसे कल्पित कर नेत्रोंमें लगाकर सोमराजीव काले तिलोंसे हवन करे स्रोतोंजन शुद्ध अंजन है, कपासादि उत्पन्न अशुद्ध अंजन है । दश सहस्र हवन करनेसे लोगोंके नेत्रोंको बंचित करता हुआ पक्षीमें विचरे । इसी प्रकार गोरोचनको लेकर सहस्र बार मन्त्रसे अभिमंत्रित कर और शिवके निर्माल्यको सहस्र बार मंत्रसे अभिमंत्रित करके धूप बनावे उससे राक्षस भूत, प्रेत, बेताल, ग्रह, विनायक डाकिनी, ज्वर, अपस्मार यह सब रोग नष्ट हो जाते हैं' यह मैं सत्यही सत्य कहता हूँ श्मशानके मध्यमें स्थित हो शव ग्रहण करे जो रोगसे मृतक होक्षत न हुआ हो उसे स्नान कराय गंध आदि जलसे प्रोक्षण कर मण्डलमें स्थापन करे फिर गंध पुष्पोंसे अलंकार करके श्वेत वस्त्रसे आच्छादन करे, कृष्णचतुर्दशीको उसपर हाथ रखकर कपिलागौके मक्खनसे आठसौ बार मल इस

प्रकारके जप करनेसे वह निर्भय बैठेगा इसमें संदेह नहीं। और यह कहेगा मैं सिद्धि दूँ ऐसा कहनेपर साधक अपने मनोरथोंको मांगता है। वह वस्तु उसको प्रदान कर वह मृतक पृथ्वीपर गिर पडेगा और क्षण मात्रमें चेष्टारहित होजायगा ॥

हरतालको करवीरके रसमें खरल करे यह कार्य कृष्णपक्षकी चतुर्दशीको करे और आठ सहस्र मन्त्र जपे। लिंगके दक्षिण ओर उसे अंगमें लगावे वह तत्काल अदृश्य होकर यथेच्छा गमन करता है। यदि देव दक्षिणामूर्तिके समीप स्थिर होकर एक लक्ष जप करे और दशांश बेलपत्रसे जो होम करे तो उसकी त्रिलोकके पदार्थ देखनेवाली दृष्टि हो जाती है और विषदृष्टि अर्थात उसकी दृष्टिमें ज्वरादि रोग नष्ट हो जाते हैं तथा कीट पतंगोंके दंश दूर हो जाते हैं। निरन्तर जप करनेसे ऐसी कोई वस्तु नहीं जिसको वह साधन न कर सके पाताल और स्वर्गके स्थानोंको इसी देहसे चला जाता है। ब्रह्मचर्ययुक्त हो पञ्चगायको भोजन करता हुआ १ महीने तक जप करनेसे सब पाप तथा ब्रह्महत्यासे छूट जाता है एक लिंगके आश्रय हो मूल फल खाता हुआ जो जप करता है और भिक्षा भोजन करता है वह छः महीनेके जपसे मेरा (शिवका) दर्शन करता है। जितने घोर पाप हैं इस मन्त्रके सौ बार जपनेसे नाश होजाते हैं इसमें सन्देह नहीं ॥

अघोर सुदर्शन मन्त्र

मुरदेको सिद्ध करनेके पहिले स्थानकी परीक्षा करे। भारत

चूडामणि ग्रंथमें इस प्रकारसे लिखा है कि, शून्यागार नदी-तीर पहाड, निर्जलस्थान, बिल्वमूल, श्मशानके पास वनभाग ये सब स्थान मुरदेके सिद्ध करनेमें अच्छे हैं। कृष्णपक्ष या शुक्लपक्षकी चौदस या अष्टमीसे इस कामका प्रारंभ करे तो तत्काल सिद्धि हो। जो मंगलवारकी अमावससे इस कार्यको करे तो बहुत ही फलदायक होवेगा। शवसाधन करनेके लिये तिल, कुशा, सरसों धूप, दीप आदि सब वस्तुओंका संग्रह कर लेवे। फिर ऊपर लिखे हुए किसी स्थानमें जाकर पूर्वकी ओर मुख करके हुँ 'फट्' इस मन्त्रका उच्चारण करके स्थानका प्रोक्षण करे पीछे पूर्वमे बृहस्पतिका पूजन करे, दक्षिणमें गणेशका पश्चिममें बटुकका और उत्तरमें योगिनीका, फिर पृथ्वीपर वीरार्दन मन्त्रको लिखकर 'ये चात्र' इत्यादि मंत्रसे पुष्पाञ्जलि देकर प्रणाम करे, फिर अघोर मन्त्रसे शिखाबंधन करके अघोर सुदर्शन मन्त्रसे आत्मरक्षा करे॥

मुरदेको सिद्ध करनेका उपाय

ॐ ह्रीं स्फुर स्फुर प्रस्फुर २ घोरा घोरतर तनुरूप चट चट प्रचट प्रचट कह कह वम वम बन्ध बन्ध घातय घातय हुं फट् सहस्राय हुं फट्॥

विधि– फिर जयदुर्गामंत्रसे सरसोंको चारों दिशामें फेंक देवे और 'तिलोऽहम' इस मन्त्रसे तिलोंको फेंक दे और मुरदेके पास जाय. मुरदा ऐसा होना चहिये जो चाण्डालके लठ अथवा शूल खण्डन, जल वज्राघात या सांपके डसनेसे

मरा होवे। जो तरुण स्वरूपवान् और रणमें विमुख न हुआ हो, स्त्री न हो, पहिले दिनका मुर्दा न हो, नपुंसक और कोढी न हो ऐसे मुर्देको लाकर पूजास्थानमें रक्खे और मुरदेके पास जाकर इस मन्त्रसे उसका स्पर्श करे॥

उदक प्रोक्षणका मन्त्र

ॐ फट्॥ विधि— इस मन्त्रसे मुरदेपर जलके छींटे मारे और इस मन्त्रसे पुष्पाञ्जली देवे।

पुष्पाञ्जलीका मन्त्र

ॐ हुं मृतकाय नमः फट्॥ विधि— इस मन्त्रसे तो पुष्पांजली देवे और नीचे मन्त्रसे प्रणाम करे।

प्रणामका मन्त्र

वारेश परमानन्द शिवानन्द कुलेश्वर।
आनन्दभैरवाकारे देवी पर्यङ्कशंकर॥
वीरोऽहं त्वां प्रपद्यामी उत्तिष्ठ चंडिकार्चने॥

विधि—इस मन्त्रसे मुरदेको प्रणाम करके ॐ हुं मृतकाय नमः इस मन्त्रसे धोकर सुगंधितजलसे स्नान करावे। धूप दीप देकर चन्दन लगावे और कमर पकडके उठाकर कुशाके आसनपर पूर्वकी ओर मुख करके शयन करावे और इलायची लौंग, कपूर, जावित्री और पान उसके मुखमें धरकर औंधा मुखकर देवे और पीठपर सुगंधित पदार्थोंका लेप करके बाहोंकी कांखसे लेकर कमरतक एक चौकोन मंडल बनावे और उस मंडलके बीचमें अष्टदल कमल खींचे और यह मन्त्र उसके बीचमें लिख देवे॥

पीठका मन्त्र

ॐह्रीं फट् ॥ विधि—इस मन्त्रको मुरदेकी पीठपर लिखकर कम्बलका आसन बिछा देवे और कमर पकडकर उठावे यदि मुरदा किसी प्रकारका दौरात्म्य प्रकट करे तो उसपर थूंक देवे और धोकर फिर जपस्थानमें ले आवे दशों दिशामें पीपलकी लकडी बारह अंगुल लम्बी गाडकर दिक्पालोंकी पूजा करे ॥

इन्द्रपूजा विधान

ॐ लां इन्द्राय सुराधिपतये ऐरावतवाहनाय वज्रहस्ताय सुशक्तिपारदाय सपरिवाराय नमः ॥ विधि-इस मन्त्रसे पूजा करे नीचे लिखे मंत्रसे बलिदान करे ॥

तन्त्रके बलिदानका मन्त्र

ॐ लां इन्द्राय सुराधिपतये इमं बलिं गृहाण गृहाणाज्ञापय २ विघ्ननिवारणं कृत्वा मम सिद्धिं प्रयच्छ २ स्वाहा ॥

अग्नि के पूजा का मन्त्र

ॐ वां अग्नये तेजोऽधिपतये मेषवाहनाय सपरिवाराय शक्तिहस्ताय सायुधाय नमः ॥

अग्नि के बलिदानका मन्त्र

ॐ वां अग्नये तेजोधिपतये इमं बलिं गृहाण २ आज्ञापय २ विघ्ननिवारणं कृत्वा ममसिद्धिं प्रयच्छ २ स्वाहा ॥

यमपूजाका मन्त्र

ॐ मां यमाय प्रेताधिपतये सदण्डहस्ताय सायुधाय महिषवाहनाय सपरिवाराय नमः ॥

यमके बलिदानका मन्त्र

ॐ यमाय प्रेताधिपतये इमं बलिं गृहाण गृहाण गृहाणाज्ञापय२विघ्ननिवारणं कृत्वा मम सिद्धिं प्रयच्छ प्रयच्छ स्वाहा ॥

नैर्ऋताधिपतिकी पूजा

ॐ क्षां नैऋतये रक्षोऽधिपतये असिहस्तायाश्ववाहनाय सपरिवाराय नमः

नैर्ऋताधिपतिके बलिदानका मन्त्र

ॐ क्षां नैऋतये रक्षोऽधिपतये इमं बलिं गृहाण गृहाण गृहाणाज्ञापय गृहाणाज्ञापय विघ्ननिवारणं कृत्वा मम सिद्धिं प्रयच्छ स्वाहा ॥

वरुणपूजा मन्त्र

ॐ वां वरुणाय जलाधिपतये पाशहस्ताय मकरवाहनाय सायुधाय सपरिवाराय नमः

वरुणबलिदानका मन्त्र

ॐ वां वरुणाय जलाधिपतये इमं बलिं गृहाण गृहाण गृहाणाज्ञापय गृहाणाज्ञापय विघ्ननिवारणं कृत्वा मम सिद्धिं प्रयच्छ प्रयच्छ स्वाहा ॥

वायुपूजा मन्त्र

ॐ वां वायवे प्राणाधिपतये हरिणवाहनाय कुशहस्ताय स्वायुधाय सपरिवाराय नमः ॥

वायुबलि मन्त्र

ॐ वां वायवे प्राणाधिपतये इमं बलिं गृहाण गृहाण गृहाणाज्ञापय गृहाणाज्ञापय विघ्ननिवारणं कृत्वा मम सिद्धिं प्रयच्छ प्रयच्छ स्वाहा ॥

कुबेरपूजा मन्त्र

ॐ सां सोमाय यक्षाधिपतये गदाहस्ताय नरवाहनाय सपरिवाराय नमः ॥

कुबेरबलि मन्त्र

ॐ सोमाय यक्षाधिपतये इमं बलिं गृहाण गृहाण गृहाणाज्ञापय गृहाणाज्ञापय विघ्ननिवारणं कृत्वा मम सिद्धिं प्रयच्छ प्रयच्छ स्वाहा ॥

ईशानपूजा मन्त्र

ॐ हां ईशानाय भूताधिपतये शूलहस्ताय वृषवाहनाय सपरिवाराय नमः

ईशानबलि मन्त्र

ॐ हां ईशानाय भूताधिपतये इमं बलिं गृहाण गृहाण गृहाणाज्ञापय गृहाणाज्ञापय विघ्ननिवारणं कृत्वा मम सिद्धिं प्रयच्छ प्रयच्छ स्वाहा ॥

ब्रह्मपूजा मन्त्र

ॐ आं ब्रह्मणे प्रजाधिपतये हंसवाहनाय पद्महस्ताय सपरिवाराय नमः ॥

ब्रह्मबलि मन्त्र

ॐ आं ब्रह्मणे प्रजाधिपतये इमं बलिं गृहाण गृहाण गृहाणाज्ञापय गृहाणाज्ञापय विघ्ननिवारणं कृत्वा मम सिद्धिं प्रयच्छ प्रयच्छ स्वाहा ॥

अनंतपूजा मन्त्र

ॐ ह्रीं अनन्ताय नागाधिपतये चक्रहस्ताय रथवाहनाय सपरिवाराय नमः ॥

अनंतबलि मन्त्र

ॐ ह्रीं अनन्ताय नागाधिपतये इमं बलिं समर्पयामि गृहाणाज्ञापय गृहाणाज्ञापय विघ्ननिवारणं कृत्वामम सिद्धिं प्रयच्छ प्रयच्छ स्वाहा ॥

विधि–ये सब बलिदान आमिषान्नसे करे फिर सर्वभूतबलि देवे, फिर अधिष्ठातृदेवता चौंसठ योगिनी और डाकिनीको बलिदान देवे, फिर कुछ दूरपर बैठकर "ह्रीं फट् शिवाय नमः" इस मन्त्रसे मुर्देका पूजन करे फिर मूल मन्त्रके पीछे 'ह्रीं फट्' बोलकर मुर्देपर घोडेकी तरह बैठजाय और अपने पांवोंके नीचे कुशा दाब लेवे अनन्तर गुरु, गणेश और देवीको नमस्कार करके प्राणायाम षडंगन्यास करके वीरार्दन मंत्र द्वारा दशों दिशामें लोष्ठ फेंक देवे और संकल्प करे–"अद्येत्यादि अमुक–देवतायाः सन्दर्शनकामोऽमुकमन्त्रस्यामुकसंख्याजपमहं करिष्ये॥" फिर "ह्रीं आधारशक्तिकमलासनाय नमः" इस मन्त्र से आसनकी पूजा करके अपने बाईं ओर मुर्देके समीप अर्घ्यपात्रादिकको रखकर पीठपूजा करे। फिर यथाशक्ति षोडशोपचार दशोपचारसे अथवा पञ्चोपचारसे देवीका पूजन करके अभिमंत्रित जलको मुर्देके मुखमें डाल देवे और ऊपरसे उठकर सामने जाकर यह मंत्र पढे ॥

मन्त्र

ॐ वशो मे भव देवेश मम वीर सिद्धिं देहि महाभाग कृताश्रय परायण॥ विधि–फिर मुर्देके दोनों पैरोंको रेशमके डोरेसे बांध देवे और यह मन्त्र पढे ॥

ॐमद्दृशो भव देवेश वीरसिद्धिकृतास्पद ।
भीमभीरुमाया भव भवमोचन भावुकं
त्राहि मां देवदेवेश सुराणामधिपाधिप ॥

विधि-इस मन्त्रसे मुर्देके चरणमें त्रिकोण यंत्र खींचे और ऊपर बैठकर उसके दोनों हाथोंको लम्बा करके उनपर कुश बिछा देवे और साधक कुशाओं पर अपने चरण जमाकर तीन वार प्राणायाम करे और शिरपर गुरुकी भावना करे। हृदयमें देवीका ध्यान और ओष्ठ मूंदकर मौन धारण करके मंत्र जपना प्रारंभ करे, इस तरह आधी राततक जप करनेसे यदि कुछ दिखाई न दे तो वहांसे सात पेड हटकर फिर जपना प्रारंभ करे, जब कोई अदृश्य होकर पूछने लगे कि, क्या चाहता है ? तब उससे शपथ दिवाकर वर मांगे यदि प्रतिज्ञा न करे तो फिर जप करनेमें प्रवृत्त हो जाय, जब वर देनेकी प्रतिज्ञा कर लेवे तब जपको त्यागकर मुर्देको स्नान करावे उसके बन्धनोंको छोड देवे और पूजाकी सब सामग्रीको जलमें फेंककर मुर्देको भी बहा देवे और स्वयं स्नान करे फिर अपने घर जाकर बलिदान देवे 'अग्निमरात्रौ येषां यजमानोऽहं ते गृह्णन्त्विमम्' इस मंत्रसे बलि देवे और पञ्चगव्य लेकर २५ ब्राह्मणोंको भोजन दे, नव दिनतक मंत्र सिद्धि करनेकी चर्चा किसीसे न करे, पंद्रह दिनतक विषय भोगोंको त्याग दे क्योंकि, १५ दिनतक देवी देहमें रहती है ॥

इति अघोरकल्प समाप्त

आंखकी फूली मांडा झारेका मन्त्र

पानीके छींटे निम्नलिखित मन्त्र सात बार पढके मारे तो आंखकी फूली तथा मांडा जाय ॥

मन्त्र

शर्यातिं च सुकन्यां च च्यवनं शक्रमश्विनौ ।
एतेषां स्मरणान्नृणां नेत्ररोगः प्रणश्यति ॥

आंखका फूला काटनेका मन्त्र

उत्तरकाल काछ सुत योग का बाछ इस्माइल योगीकी दो बेटी एक माथे चूल्हा एक काटे फूला दुहाई लोना चमारीकी शब्द सांचा पिंडकाचा फुरो मन्त्र ईश्वरोवाच। विधि—लोहेकी कील इक्कीस बार पृथ्वीमें इस मन्त्रसे ठोंके तो फूला कटे ॥

उठी आंखि झारेका का मन्त्र

ॐ वने विआई बानरी जहां २ हनुमन्त आंखि पीडा कषाबारी गिहिया थैनैलाइ चारिउ जाइ भस्मन्त गुरुकी शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरोवाच। विधि—आंखनपर हाथ फेरे सात बार मन्त्र पढकर फूंके तो व्यथा और पीडा न रहे ॥

नेत्रपीडाहारक मंत्र

सातों रीदा सातों भाई सातों मिलके आंख बराई दुहाई सातों देवकी इन आंखिन पीडा करे तो धोबीको नाद चमारके चूल्हे परे मेरी भक्ति गुरुकी शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरोवाच सत्य नाम आदेश गुरुकी। विधि—प्रथम बीडा पान इक्कीस लोंग, सिन्दूर, धूप नैवेद्य करके इक्कीस दिनमें सिद्ध करे। प्रतिदिन १०८ जपे फिर आंखपर इक्कीस बार पढै आराम होजाय होली दिवालीमें १०८ जप करता रहे ॥

रतौंधीझारनेका मन्त्र

मंत्र पढि २ के फूके । भाट भाटिन निसरि चली कहां जाइब जाइब जावेऊँ समुद्रपर भाटिन कहा मैं बिआ बेउँ उसकी छाली बिआबेउँ उपसमाछी कर मुडा अण्डा घोसोहिलतारा सोहिलतारा राजा अजैपाल ऊतरत रहे राजा अजैपाल कर कंदार पानी भरत रहे उन्हें देखे पावाबालाउ गोडिया मेला उजाड तैकै मैं अधोमुखी ईश्वर महादेवके दुहाई येही घरी उतर जाय ॥

शूलरोगके नाश करनेका मन्त्र

ॐ मीढुष्टम शिवतमः शिवो नः सुमना भव परमे वृक्ष आयुधन्निधाय कृत्तिं वसान आचर पिनाकं बिभ्रदागहि ।

विधि-त्र्यम्बक विधानसे शिवजीका पूजन करके संकल्प करे फिर इस मन्त्रको एक लक्ष अथवा एक सहस्र जपे तो शूलकी पीडा निश्चय जाय ॥

रस्सा झारने का मन्त्र

७ बार पढकर पानी पीनेको देवे करनी करे सो तुरंत छूट, ॐ अगस्त्य खनमानः खनित्रै प्रजामपत्यं बलमीक्ष्यमाणः उभौ बाणवृष्टिरुग्र पुपोष सत्यादेवेष्वाजिषो जगाम ॥ आतापी भक्षितो येन वातापी च महाबलः । समुद्रः शोषितो येन स मेऽगस्त्यः प्रसीदतु ॥ अगस्त्यं कुम्भकर्णं च शनिं च वडवानलम् । आहारपरिपाकार्थं स्मरचैव वृकोदरम् ॥

डमरू पसलीवायुका मन्त्र

सत्य नाम आदेश गुरुका ॐ खंबारी खंबारा कहां गया

सवा लाख पर्वतों गया सवालाख पर्वतों जाय कहा करेगा सवा भार कोयला करेगा सवा भार कोयला कर कहा करेगा हनुमत बीर नवचंद्रहास खड्ग गढेगा कहा नवचंद्रहास खड्ग गढ कहा करेगा जानवा डोरू पसली बाय काट कूट खारी समुद्र नाखेगा जगद्गुरुकी शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरोवाच ।

विधि–पहले विधिपूर्वक सिद्ध करे फिर तिलका तेल सिन्दूर तीसरे झारै ॥

दांतकी व्यथा झारनेका मन्त्र

सात बार पढिके फूँके तुरंत व्यथा जाय । अग्नि बांधों अग्नीश्वर बांधों सौ लाल विकराल बांधों सो लोहा लोहार बांधो वज्रके निहाय वज्रवन दांत बिहाय तो महादेवकी आन नारा उखरा होई तो हाथकी तर्जनी अँगुरीसे झारे ॥

सम्पूर्ण शिरोव्यथा का मन्त्र

मालाकंडाके बेर २१ तब फूंके शिरोव्यथा छूटे । निसुनहि रोई बदकर मेघ गरजहि निसु नदीक हलुधर फुफु निबेरि फूनि डमरु न बजे निसुनहि कलह निन्नपुटु काच भई ॥

हूक झारनेका मन्त्र

ॐ सुमेरु पर्वतपर लोना चमारी सोनेकी रांपी सोनेकी सुतारी हूक चक बांह बिलारी धरणी नाली काटि कूटी समुद्र खारी बहावो लोना चमारीकी दुहाई फुरो मंत्र ईश्वरोवाच । ईक्कीस बार पढे शरीर हूक न रहे ॥

दूसरा मन्त्र

ॐनमो सारकी छुरी धारका बान हूक न चलेरे मुहम्मदा

ज्वानकी आन शब्दसांचा पिंड कांचा फुरो मन्त्र ईश्वरोवाच।

विधि– एकपैनी छुरी लेकर इस मन्त्रको २१ बार पढता जाय और पृथ्वीपर छुरीसे लकीर खींचता जाय तो हूक बंद हो जायगी

कर्णमूल मन्त्र

राखसे पढिके झारे, कर्णमूल न रहे । बनाह गठि बनरी तो डाटे हनुमान कंटा बिलारी बाघी थनैली कर्णमूल सब जाय रामचन्द्रका वचन पानीपथ होजाय ॥

घिनहीका मन्त्र

एहर चालो मेहर चालो लंका छोडि बिभीषण चालो बेगि चल मन्त्र सही ॥

थनैली झारनेका मन्त्र

कंप विलारी वघ थनेला पांच बान मेहि भरा दैल कंप विलारी बघ थनेला डावा·पलटी जाहु घर अपने राजा मनेरीकी दुहाई जोडा वार है गुरुकी दोहाई है ॥

मृगीका मन्त्र

हाल हल सरगत मंडिका पुडिआ श्रीराम फूँक मृगी वायु सूखे ॐ ठः ठः स्वाहा । यह मन्त्र लिखिके कंठमें बांधे जब मृगी आवे ॥

खेतमें बहुत उपजने और रक्षा करनेका मन्त्र

उलटथिनरसिंह पलटधि काया रक्षा करथि नरसिंह राया ॥

फूका वागीका मन्त्र

बने विहाई अञ्जनि जायो हनुमन्त नहरुवा जारि

होई भस्मंत गुरुकी शक्ति। विधि-मन्त्र पढ सात बेर सीकटी एक वा तीन वा सात लेई झारना फूका वागी नीका होई ॥

अन्यच्च-भांमनसेती योगी भया जनेउ तोरी नहरुवा किया न पाके न फूटे न व्यथा करे विरूपाक्षकी आज्ञा भीतरहीसर॥

विधि-२१ बार पढकर पानीका छींटा मारे नहरुवा-वालेको पियावे तो नहरुवा न रहे ॥

ममरखी झारनेका मंत्र

पढि २ के फूँके। राजा अजैपाल सागर सतवारा बट बांधा घाट उतर ममरषी पानी पिड सातराती मोही पीपर पात गुंगी बारा डोमिनी चंडालनी तू है नीकी ममरषी तिल एक रथ ठाठि कंठ झारी ममरषी क्रोधकर ॥

अण्ड वृद्धिका मन्त्र

पढि २ मल अंडवृद्धि छूटे। ॐ नमो आदेश गुरुको जैसे कैलेहु रामचन्द्रके बूत ओईसह कर राध विनि कबूत पवन पूत हनुमन्त वाड हर हर रावन कूट मिरावन श्रवई अण्डसे ताहि श्रवई अण्ड अण्ड विहण्ड खेतहि श्रवई वा जंगर्भहि श्रवई स्त्री पीलहि श्रवई शापहर हर जंबीर हरजंबीर हर हर हर॥ यह मन्त्र महा अनुभविक है चारि वस्तुपर चलता है जो स्त्रीको पानी पढिके पियावे तो दो तीन महीनेका गर्भ स्रवे पुरुषको पियावे तो अण्डवृद्धि छूटे नीक होय। एक ढेला पढिके सांपके विवरपर धरे तो सांप निकलजाय। तीन ढेला पढिके तीन कोने फेंकदे तो खेत सूखिजाय उपजे नहीं। दिन तीन चारका बोया होय तिसपर चले। तीन बार मन्त्र पढिके फूँके ॥

पोतरहंडी व हूक और घेंट और झारेकामंत्र

मेघडम्बर पोतरहंडी ताती शरीर गरीगै जाती दुहाई अजैपालके जो न जाय व्याधि ॥

दाद झारने का मन्त्र

नीका होय पानीपर पढिके पियावे । ॐगुरुभ्यो नमः देव देव पूरी दिशा मेरुनाथ दलक्षना भरे विशाहतो राजावैरघिन आज्ञा राजा वासुकीके आन हाथ वेगे चलाव ॥

अन्यच्च–हाथ वेगे चलाई आदिनाथ पवनपूत हनुमन्त कर मोरकत मेरु चाल मन्दिरचाल नतग्रह चाल दोष चाल दिनाइ चाल डोरी चाल इन्द्रहि चाल चाल चाल हनुमन्त विना सहकाल उठि विषि तरुवर चाल हम हनुमन्ते मुगरे लिंगडा परोरे वर्ध छले तरुपारि धानपारि हि यब अष्टोत्तरशत व्याधि लावरे विशालाव अहरो विष आह । दादवालेको मन्त्र पाढि पानी पिलावे ॥

अन्यच्च–विषकै पापारि विषकै पानि।विषै करिय भादि जानि।एक मजाइ दाहु करिअ अपुका अन्तेकस कण्डु दादु दिनाइके छेद । करि सिद्धि गुरुकी पाव शरण ॥

कूकुर काटे तो झारनेका मंत्र

कुम्हारचाकपरके माटी डंकपर फेरि फेरि झारे रोवां निकसे नीका होय ॥

मन्त्र–कारीकुत्ती विविलारीघौना कुत्ता कलोर फलाला काटा कूकुरवारा धयल्यायु ॥

अन्यच्च–ॐ कुलकु स्वाहा । सात चिरुवा पानी मन्त्र पाढिके देवे ॥

शींगी मौरी मेवताशी मोरे मोरे दुर्गादाशी जैथाल सना ता पोखरा गोरा पैठि नहाहि महादेव पाढि फूंकहि विष निर्विष हो जाय ॥

कठवेंगुचीका मन्त्र

सोनेके सिंधोरा रूपे लाग वान छव मासके मुअलि मेगुची लागसिन जिस धरु वरुआ केकान धरु वरुआ मन्त्र तुहहि जगावे नोता योगिनी श्रीपार्वती जाशु जाशु उपरवैशहोइत ॥

बोछी झारनेका मन्त्र

सुरही कारी गाय गाईकी चमरी पूछी तेकरे गोवरे बिछा बिअतीइ बिंछी तोरके जाती गौरा वर्ण अठारह जाती छः कारो छः पीअरी छः भूमाधारी छः रत्नपवारी छः क्षः कुँड़ँ कुँटुँ छारि उतारी बिच्छी हाड २ पोर २ कस मारे लील कंठ गर मोर महादेवकी दोहाई गौरा पार्वतीकी दुहाई अनी-तवे हारि शडार मन छाइ उतरहि बीछी हनुमन्त आज्ञा दुहाई हनुमन्तकी ॥

अन्यच्च-पर्वत ऊपर सुरही गाइते करे गोवरे बिछी बिआई छः कारी छः गोरी छः का जोता उतारिकै बिधा बिछिठा वहि आ आठ गाढि नव पारे बीछी करे अजोइ बलि-चलु चलाई कर वाइ ईश्वर महादेवकी दुहाई जहां गुरुके पांव सरके तहँहि गुरुके कुश कजुरी तहाहिं विष्णु पुरी निर्माजाइके दुहाई महादेव गुरुके ठावहिं ठाव बीछी पार्वती ॥

अन्यच्च-बीछी २ तोरेके जाति छः कारी छः पीयरी छः परवारी बोधा पपाना पस स्वपाउ तोरी विपि तइमें ना हि ठाउ ऊपरजा तिगधै पाऊ शिव वचन शिव नारि हनुमानके

आन्न महादेवके आन् गौरा पार्वतीके आन् नोना चमारिनके उतरि आउ उतरि आउ ॥

अन्यच्च-अब हाठि मुठि बैगन भावि उतरु बीछी मति करु वानि ॥

अन्यच्च-जे सन्देह लेइ आवे तेहि पानी परोरि पिआई देव ॥ कायो पापे शिर मानिक रामुप मोडो मरि जासि अन षांधनो पानी पीवे बांधि उतरि जासि ॥

अन्यच्च-ॐ नमो समुद्र समुद्रमें कमल कमलमें विषहर बिछू उपजावे कहूँ तेरी जाति गरुडकहे मेरी अठारह जाति छः कारी छः क़ाबरी छ कूंकूं बान । उतर रे उतर नहीं तो गरुड पंख हकारूं आन । सर्वत्र विष न मिलई उतर रे बिछू उतर गुरुकी शक्ति भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरोवाच ॥

विधि- इस मन्त्रको पढकर बीछूसे कटी हुई जगह सात बार हाथ फेरे तो तुरन्तही अच्छा हो जाय ॥

बीछीका विष चढानेका मन्त्र

टूटे खाट पुराने बान चढजा बीछू शिरके तान।जहां बिछूने काटा होय उस स्थानमें इस मंत्रको फूंके तो विष चढजायगा॥

सांप झारनेका मन्त्र

उत्तर दिशि कारी बादरि तेहि मध्य ठाढ काल पुरुष एक हाथ चक्र एक हाथ गदा चक्र मारी शतखंड जाई गदा मारे सातों पाताल जाइ ॐ हर हर निर्विष शिवाज्ञा ॥

अन्यच्च-थिरु एवन जिरि विषनाशे तेहि देखि विषधरहू कापे सत्पर्जा आप विषमें सन्दीत्येष्टयै नहिं विषइ मेत्रे कुशल वाल गाले जावत्काल निर्विष होइ ॥

स्वरबन्धन झारनेका मन्त्र

जटा ऊपर कारा गरे ॐ नमः शिवाय शिवकी आज्ञा पुनः कागा चरे भीट पनिनि आपरे पीठे सवाभार पीठे सवा-भार विष निज बढे अपने डीढे ओं नमः शिवकी आज्ञा ॥

अनावृष्टि नाशक मन्त्र

ॐ हुं श्रीं हुं । विधि—इस मन्त्रको जलमें घुसकर जपे तो अनावृष्टि दूर हो ॥

तिल्ली दूर करनेका मन्त्र

ॐ नमो हुताश परवत जहां सुरहगाय, सुरहगायके पेटमें तिल्ली दवा २ तिल्ली कटे सरकण्डा वडे फीया कटे हरो फुरो०।

विधि—आठ रेखा करके छुरीके फलसों काट दीजे सर-कण्डा बढे छुरीको लोह कटे ॥

लहरी जगानेका मन्त्र

छवमासकी परी डंककयाकी करार गराने न तेरी मछिदी काग आवत कागा चरद भीटे पानी आपरइ पीठे सवाभर विष निजवड अपने उडीठे ॐ नमः शिव विआज्ञा २ गिद्ध उड़ें ऊपर ईश्वर बाहन भयठांवहिं षब नोना परि हाथ षंडानके रिडंक उठि ठाढि गई जाय २ ईश्वर हुहुरे डंकहाडं कंडा डिगै जरहू लागि काई दे हांक देत आके योगिनी डंक उठे विह-साई ते सात समुद्रे माझे षंडी कवीर बवाठे जीव धरवरो आमंत्रि रहहि जगावे नो योगिनी पार्वती जागु परमई शत हरे डंक ॥

अन्यच्च—वोह परोस रात सुनु २ काल डंक २ मरे तो मैं नारो सात गद सुरल मांजरएखु एकका काल महेश समन्त्र

यहां आप कह काटे तो हाथसे ॐ चहुकार अर्धकार कनु-विषनार पर छिछी विपनाहि। आप कहँ काटे भा आन-कहँ काटे तो पढि डंक पोंछि देई ॥

पाषाण बरानेका मन्त्र

समुद्र समुद्रमें द्वीप द्वीपमें कूप कूपमें कुइ जहांते चले हरि हर परे चारों तरफ बरावत चला हनुमन्त बरावत चला भीम ईश्वर भांजि मठमें जाइ गौरा बैठी द्वारे न्हाईं ठवकनै उदपरै न बोला राजा इन्द्रकी दुहाई मेरी भक्ति गुरुकी शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरोवाच ॥

सर्प बरानेका मंत्र तालत्रयेण

सर्पापसर भद्रं ते दूरं गच्छ महाविष ।
जनमेजयस्य यज्ञान्ते आस्तिकयवचनं स्मर ॥ १॥
आस्तिकयवचनं स्मृत्वा यः सर्पो न निवर्तते ।
सप्तधा भिद्यते मुर्ध्नि शिंशवृक्षफलं यथा ॥ २

रात्रौ पठित्वा तालत्रयं शयनसमये कुर्यात् तदा सर्पभयं न भवेत ॥

सर्पोंके भागनेका मन्त्र

ॐ पुः सर्पकुलाय स्वाहा अशेष कुलसर्पकुलाय स्वाहा ।

विधि—इस मन्त्रसे सात बार मृत्तिकाको अभिमंत्रित करके घरमें गेरदे तो सर्प भाग जाय ॥

सूकर मूस बरानेका मन्त्र

नहाइके पांच गांठि हलदी और अक्षतसे पढिके बरावे दुष्ट सूकर मूसके घर और खेतसे। इहांसे जे उन्दुर आवति वहांसे हनिवत धावति उंदुरहि ल्याये बांधि अब खेत खाय सूअर

औ घरमा रहे मुसखेत घर छांडि बाहर भूमि जाई दुहाई हनूमानकी जो अब खेत मँह सुवर वरमँह मूस जाई ॥

अन्यच्च—हलदीकी गांठ अक्षतसे पढिके वरावे दुष्टके खेत घर मँह। पीत पीताम्बर मूसगांधी। लेजाइहु ए हनुमंत तू बांधि। हनुमंत लंकाके एउ। यहि कोने पैसहु यहि कोने जाऊ ॥

केवल मूसा वरनेका मन्त्र

मूसा चूहा कुम्भ कराई। जबही पठवी तबही जाई। मूसाके ऊपर मूशके फेट। तू जाइ काटहु आनेके खेत। गौरी पार्वतीकी दुहाई महादेवकी आज्ञा ॥

शस्त्रास्त्र वरनेका मन्त्र

बांधो तूपक अवनिवार न धरे। चोट न परे घाउ रक्षा करे। श्रीगोरक्षराउ। सात बार पढ सब अंगोंको स्पर्श करे ॥

शस्त्रस्तम्भन मन्त्र

ॐ अहो कुम्भकर्ण महाराक्षस निकषागर्भसम्भूत परसैन्यस्तंभन भगवन् रुद्र आज्ञापयति स्वाहा ॥

विधि—केतकीको मस्तक और नेत्रमें, तालकी जडको मुखमें, खजूरको हाथ और पैरमें बांध देवे तो शत्रुका खड्ग न चले इस मंत्रका पाठ करता रहे ॥

अग्निस्तम्भन मंत्र

अज्ञान बांधों विज्ञान बांधों बांधों घोर घाट। आठ कोटि वैसंदर बांधों अस्त हमारा भाई। आने देखे झझके मोहिं देखि बुझाई हनुमन्त बांधों पानी होइजाय। अग्नि भवेतके भवे जस मची हाथी होई वैसन्दर बांधों नारायण साखि मेरी भक्ति गुरुकी शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरोवाच ॥

अन्यश्च-ॐ अहो कुम्भकर्ण महाराक्षस कैकशीगर्भसम्भूत परसैन्यभंजन महारुद्रो भगवान् रुद्र आज्ञा अग्निं स्तम्भय ठःठः।

विधि-इस मन्त्रको दो लक्ष जपकर सिद्धि करके फिर जहां काम पडे, इसका प्रयोग करे अग्नि बाधा न करेगी ॥

अन्यच्च-अग्नि बांधो वाहन बांधो कुल्पहा बांधो बांधो बीचकी आयु चाहिहु खुंटे वैसन्दर बांधो आतस मेरा भाव अधर देखे उमगे हमहि देखे शीतल होई जाई अग्नि मलिगणे लकडी बांधो बहिनी बांधो शाल हाथ जरे न जिह्वा और अविनेत वीरकी आज्ञा फुरे देखि वायुवीर हनुमन्त तेरी शक्ति गुरुकी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरोवाच ॥

अन्यच्च-ॐमत्तकटीटे छयगने सेकटीय मूलीयसी आलिम्यमावमुदीयते शनकरीजे मंदी ह्रीं फट् ॥ ॐ ह्रीं महिषवाहिनी स्तम्भय मोहय भेदय अग्नि स्तम्भय ठः ठः। विधि-इन दोनों मंत्रोंको एक लाख जपकर सिद्धि करले फिर ग्वारपाठेके रसको हाथ पर लगाकर अग्नि उठा लेवे अग्नि बाधा न करेगी ॥

अग्नि शीतल करनेका मंत्र

ॐनमो कोरा करुआ जलसों भरिया ले गौराके शिरपर धरिया ईश्वर ढोले गौरा न्हाय जलती आग शीतल हो जाय शब्द सांचा पिंड काचा फुरो मन्त्र ईश्वरोवाच सत्यनाम आदेश गुरुको। विधि-इस मंत्रको प्रथम एक लक्ष जपकर सिद्ध करे फिर काम पडनेपर एक मिट्टीका कोरा कलश जलसे भर कर मँगवावे और स्नान करके २१ मंत्र पढकर जलके छींटे मारे जहां जहां छीटे लगेंगे आग बुझजायगी। अग्निके शांत होने,

पर २१ ब्राह्मणोंको भोजन करावे और अग्निको १०८ आहुति देवे ॥

अग्निभयनिवारणमंत्र

उत्तरस्यां दिग्विभागे मारीचो नाम राक्षसः । तस्य मूत्रपुरीषाभ्यां हुतावह्निः स्तम्भः स्वाहा । विधि-इस मन्त्रको पढ पढकर गरम जलकी अञ्जली अग्नि के बीचमें छोड़दे तो अग्निका स्तम्भन होजाय ॥

टोना झारनेका मन्त्र

लोनां सलोना योगिनी बांधे टोना आवहु राखि मिलि जादू कवनु देशु फिर आदि अफुल फुलवाई ज्यों ज्यों आवे वास त्यों त्यों अमुक आवे हमरे पास कवरू देवीकी शक्ति फुरो मेरी भक्तिमोहनी ईश्वरोवाच ॥

अन्यच्च-सोम शनिश्चर भौम अगारी। कहा चललि देई अंधारी। चारि जटा वज्र कँवार। दीनहि बांधो सोम दुवार। उत्तर बांधों कोईला दानव दक्षिण बांधो क्षेत्रपाल चारि विधा बांधिक देव विशेष भवर दिधिल भवर गण चलु उत्तरापथ योगिनी चलु पातालसे वासुकी चलु रामचन्द्रके पायक अञ्जनीके चीर लागे ईश्वर महादेव गौरा पार्वतीकी दुहाई। जो टोना रहे एदी पिंड मन्त्र पढि फूंके टोना कइल बरावल न रहे ॥

टोना दूर करनेका मन्त्र

ॐ बज्रमें कोठा बज्रमें ताला बज्रमें बन्ध्या दस्तेद्वारा तहां वज्रका लग्या किवाडा। बज्जरमें चौखट बज्जरमें कील जहांसूँ आया तहांही जाय जाने भेजा जाकूं खाय हमकूं फेर

न सरत दिखाय हाथकूं, नाककूं, कानकूं, सिरकूं, पीठकूं, कमरकूं छातीकूं जो जोखों पहुँचावे तो श्रीगोरखनाथकी आज्ञा फुरे मेरी भक्ति गुरुकी शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरोवाच।

विधि-सात कुएँका जल लाकर इस मन्त्रको पढता जाय और स्नान करावे तो सब रोग मिट जायँ ॥

टोना झारने के प्रत्यक्ष करनेका मन्त्र

लोहेके कोठिला वज्रके किंवार। तेहि पर नावो बारंबार तेते नहिं पहनहि एकहु बार एक पण्ठा अनण्डा बांधों डीठा मूठि बांधो तीरा बांधो स्वर्ग इन्द्र बांधो पाताले बासुकी नाग बांधो सैयदके पाव शरण पादकी भक्ति नरसिंह बादिकार खेलु २ शंकिनी डंकिनी सात सेतरके संकरी बारह मनके पहार तेही ऊपर बैठु अब देवी चौताराकय आनजंभाई जंभाई गोरखकी दुहाई लोना चमारीकी दुहाई तेतीस कोटी देवताओंकी दुहाई हनुमानकी दुहाई काशीकोतवाल भैरोंकी दुहाई अपने नहीं कटारी मार देवता खेल सभ आप लेइ काशी आदि काशीपर पाप तेरी देवताके कन्ध चढाइ काट जो मनमहँ क्षोभ राख ॥

ज्वर झारनेका मन्त्र

ॐ नमो अजैपालकी दुहाई जो ज्वर रहे तो महादेवकी दुहाई फुरो मन्त्र ईश्वरोवाच । विधि-इस मन्त्रको सात बार पढके कुशसे झारे तो ज्वर न रहे ॥

अन्यच्च-समुद्रस्योत्तरे कूले कुमुदो नाम वानरः ।
तस्य स्मरणमात्रेण ज्वरो याति दिशो दश ॥

विधि-इस मंत्रको पढ पढके कुशसे झारे तो ज्वर न रहे ॥

ज्वर हरण मन्त्र

ह्रीं क्लां ठः ठः भो भो ज्वर शृणु शृणु गर्ज गर्ज ऐका-हिकं द्व्याहिकं त्र्याहिकं चतुराहिकं साप्ताहिकं मासिकं अर्ध-मासिकं वार्षिकं द्वैवार्षिकं मौहूर्तिकं नैमिषिकं अट अट भट भट हुं फट् अमुकस्य ज्वरं हन हन मुञ्च मुञ्च भूम्यां गच्छ स्वाहा ।

विधि—जिस मनुष्यको ज्वर आ गया हो उसके नामसे नौ मुट्ठी चावलके पिसामें नमक डालकर पुतली बनावे उसके ऊपर हलदी पोतकर पाले कपडेकी चार ध्वजा उसमें गाड देवे, इस तरह तीन दिनतक रोगीका नाम ले लेकर उत्तर दिशामें पुतलीका विसर्जन करे ॥

दूसरा ज्वरका मन्त्र

ॐनमश्चण्डवज्रपाणये महासुषेणाधिपतये ॐ ज्वर शृणु शृणु छर्द्द छर्द्द शिरो मुञ्च मुञ्च हृदयं मुञ्च मुञ्च उदरं मुञ्च मुञ्च कटिं मुञ्च मुञ्च ऊरुं मुञ्च मुञ्च हस्ता मुञ्च मुञ्च गात्राणि मुञ्च मुञ्च ॐ हुं हुं हुं फट् अमुकस्य सर्वज्वरं नाशय स्वाहा ।

विधि—इस मन्त्रको एक हजार आठ बार जपकर सिद्ध करले । फिर भोजपत्रपर लिखकर कुमारी कन्याके काते हुए सूतमें लपेटकर रोगीके शिरमें बांध देवे ॥

तिजारी झारनेका मन्त्र

कारी कुकरी सात पिल्ला व्यांई सातों दूध पिआई जिआई वाग थनइलोकांश्वलायेके मन्त्रें तीनों जाई मन्त्र पढि २ दाहिने हाथसे आंचर मींजत फूँके रोगीके रोग छुवाइ ।

अथ वामदेव कल्प

मन्त्र–वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमो रुद्राय नमः कालाय। नमः कलविकरणाय नमो बलविकरणाय नमः ॥

शिवजी बोले हे सुव्रते! अब वामदेव कल्पकी विधि कहता हूँ सुनो–दक्षिणामूर्ति लिंगके निकट आठ सहस्र मन्त्रको जपे पञ्चगव्यसे स्नान कर दश सहस्र आहुति दे श्वेत, पीत, लाल फूलोंसे आहुति दे पुरश्चरण करनेसे अवश्य सिद्ध हो जाता है इसमें सन्देह नहीं। फिर तीन रात्रि व्रत कर भासपक्षीकी अस्थिको अभिमन्त्रित कर भुजामें बांधनेसे अदृश्य हो जाता है और भूत प्रेत राक्षसोंको अपनेवशीभूत करता है मनुष्य कन्या-दादिवशीभूत हो जाते हैं इसमें सन्देह नहीं। कपिलाके गोबरसे एक पुतली बनावे इसी मंत्रसे स्थापन कर घृतकी आहुतिसे हवन करे आठ सहस्र मंत्रसे हवन करनेसे यक्षिणी राक्षसी अनेक प्रकारकी लक्ष्मी उसके निकट ले आती हैं इसमें सन्देह नहीं। आठ सहस्र सुगंधित सुरभि पुष्प लावे वह देवके ऊपर समन्त्र चढानेसे सब कामनाकी प्राप्ति होती है। यह व्रीहिके हवनसे धनपति होता है। एक लक्ष जप कर शिवलींगके ऊपर आगे कहे फूल चढानेसे लक्ष्मी स्वयं आकर सब कामनाओंको देती है ॥

नागपुष्प, पुन्नाग, अशोकपाटल, कर्णिकारादि फूल चढावे और सृष्टिबीज सहित वामदेव मंत्रसे घृत मधु मिलाकर सहस्र

आहुति देनेसे अर्थलाभ होवे। मन्त्र पढकर जो सूत बांधता है और सरसों पढकर चारों ओर बखेरता है तो सब ग्रहादिक बाधा नष्ट होती है। राजसरसोंसे दिशाबंधन करता है और मन्त्र पढे जलसे वशीभूत करता है । सब पुष्पोंसे अभिषेककर अपने शरीरका प्रोक्षण करनेसे अलक्ष्मी (दरिद्रता) का नाश होता है । तगर, चमेली, कुंद, अशोकसौगंधिक (कल्हार पुष्करमूल वा उसीरके अभिषेकसे लक्ष्मी होती है । गये हुये राज्यकी प्राप्ति होती है । प्रतिपदासे लेकर पूर्णमासीतक प्रतिदिन आठ सहस्र श्वेत पुष्पोंका हवन करनेसे भवानी शंकरके समान हो जाता है । संग्राममें हथियार बांधे पुरुषको इस मन्त्रसे अभिमंत्रित करे तो वह कहीं नहीं हारता है, भगवान्‌के ऊपर सुगंध गंधिका विलेपन कर सुगंधित पुष्पोंसे अर्चना करके आठसौ आहुति देनेसे इस कर्मका करनेवाला लक्ष्मीवान् होता है ॥

इति वामदेवकल्प समाप्त

अथ सद्यो जातकल्प

मन्त्र–ॐसद्यो जातं प्रपद्यामि सद्योजाताय व नमो नमः।
भवे भवे नातिभवे भवस्व मां भवोद्भवाय नमः ॥

ईश्वर बोले–कृष्णयजुर्वेदमें कहे 'सद्योजातं भवेभवे' इत्यादि सद्योजातके किसी एक एक मन्त्रको तीन रात व्रत करके आठ सहस्र जप करे अपने निमित्त हवन करनेसे जिस वस्तुकी इच्छा करे वह वस्तु मिलती है। आठ सहस्र पुष्प मधुघृतके सहित हवन करनेसे यक्ष, राक्षस, अप्सरा स्त्रियें आती हैं रस रसायन सिद्धिका

प्रदान करती हैं । शिवकी बडी पूजा कर काम क्रोध मोहसे रहित हो भिक्षा भोजी मौनी शुक्लवस्त्र पहर जितेंद्रिय हो गुग्गुलकी गुटिकासे आठ सहस्र हवन करनेसे आठ लक्षणयुक्त अणिमादिऐश्वर्य होता है। दक्षिणामूर्ति देवके निकट शत्रुका नाम लेकर जप करनेसे शत्रु नहीं रहता नष्ट हो जाता है मधु और दूधसे आठ सहस्र आहुति देनेसे राज्यसे भ्रष्ट हुआ राज्यको प्राप्त होता है । बेल आक उदुम्बर (गूलर) पीपलको आठ सहस्र समिधाओंसे हवन करनेसे पृथ्वीके राज्यको प्राप्त होता है सहस्र मन्त्रसे अपनेको अभिमंत्रित करनेसे आरोग्य हो जाता है। वस्त्र माला आभरणादिको अभिमंत्रित कर धारण करनेसे सौभाग्य होता है वटके नीचे स्थित हो एक लक्ष जपनेसे यक्षिणी सिद्ध होती है । जलमें स्थित हो पांच सहस्र जपनेसे ब्रह्महत्या दूर होती है महापातक उपपातक लक्ष अर्धलक्ष वा पचीस सहस्र जप करनेसे सम्पूर्ण नष्ट हो जाते हैं। सैकडों पाप नष्ट हो जाते हैं लिंगके निकट एक लक्ष जप करनेसे ईश्वर प्रत्यक्ष होता है। निष्काम जपनेसे ज्ञानी हो जाता है ॥

इति सद्योजातकल्प समाप्त

अथ प्रयोग–ॐ भगवति भगभागदायिनी अमुकीं मम वश्यां कुरु कुरु स्वाहा। **विधि**–इस मन्त्रसे गुरुवारको लवण अभिमंत्रित करके जिसको खानपानमें दे वह अवश्य वशमें हो ॥

अथ प्रयोग मन्त्र–ॐ ह्रीं महामातंगीश्वरी चांडालिनि अमुकीं पच पच दह दह मथ मथ स्वाहा ॥

विधि–रविवारके दिन जिसका नाम लेकर दूध और शर्करासे होम करे वह वशमें हो । उपरोक्त दोनों मंत्रोंको पुरश्चरण करते समय १०००० जप करनेसे सिद्धि होती है॥

अन्य मन्त्र–ॐ कामिनी रंजिनी स्वाहा ॥

विधि-इस मन्त्रको लाखकी स्याहीसे जिसके हाथमें लिखे वह वश्य हो ॥

अन्य प्रयोग–ॐकुम्भनी स्वाहा ॥

विधि–इस मन्त्रसे १०८ बार पुष्पको अभिमंत्रित करके जिसको सुंघावे सो वशमें हो ॥

अन्यच्च–ॐनमो नमः विशानी रूप त्रिशूलं खड्गहस्ते सिंहारूढे अमुकीं मे वशमागच्छ २ कुरु २ स्वाहा ॥

विधि–इस मन्त्रको भोजपत्रके ऊपर लिखकर जिसका नाम लेके धूप दे वह वशमें हो परंतु इस मन्त्रको ७ अथवा २१ दिन सिद्ध करना चाहिये ।

अन्यच्च–ॐ नमः भवाय नमःशर्वाण्यै च अमुकी मे वश मानय स्वाहा । विधि–जिह्वामल, दंतमल, नाकका मल, कान का मल इनको मद्यमें मिलाकर जिसे पान करावे वह वश होय॥

अन्यच्च–ॐमूलि मूलि महामूलि रक्ष रक्षसर्वासांक्षेत्रपेभ्यः परेभ्यः परेभ्यःस्वाहा।विधि–नागकेशर, चिरौंजी, तगर कमलकेशर, वच, जटामांसी इन सबको लेकर चूर्ण करले फिर इस मन्त्रसे अपने अंगको धूप देवे।जिसके पास जाय सो वश होय॥

त्र्यम्बकप्रयोगः

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात् ॥

विधि—शनैश्चरके दिन पीपलके पेडके वृक्षको हाथसे स्पर्श करके इस मन्त्रसे जपनेका संकल्प करे जैसे अद्येत्यादि अत्राश्वत्थमूले अमुकगोत्रस्य श्री अमुकदेवशर्मणो झटित्युत्पन्नरोगप्रशमनपूर्वकं दीर्घजीवित्वकामोऽहममुकसंख्याकं जपं करिष्ये ॥ इस रीतिसे संकल्प करकेपीपलके पास आसनपर शिवलिंगकोस्थापन करके और अर्घ्यपात्रको रखकर अञ्जली बांधकर न्यास करे॥

न्यास विधि

ॐ त्र्यम्बकमंत्रस्य वसिष्ठऋषिरनुष्टुप्छन्दस्त्र्यम्बको देवता अमुकस्योत्पन्नरोगप्रशमने विनियोगः । शिरशि वसिष्ठऋषये नमः। मुखेअनुष्टुप् छन्दसे नमः। हृदि त्र्यंबकाय देवतायै नमः॥ अथ कराङ्गन्यासौ । त्र्यम्बकम् अंगुष्ठाभ्यां नमः । यजामहे तर्जनीभ्यां स्वाहा ।सुगंधिं पुष्टिवर्धनं मध्यमाभ्यां वषट्।उर्वारुकमिव बन्धनात् अनामिकाभ्यां हुं मृत्योर्मुक्षीय कनिष्ठिकाभ्यां वौषट् । मामृतात् करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् । एवं हृदयादिषु । त्र्यम्बकम् हृदयाय नमः । यजामहे शिरसे स्वाहा । सुगन्धिम्पुष्टिवर्द्धनं शिखायै वषट्।उर्वारुकमिव बन्धनात कवचाय हुं । मृत्योर्मुक्षीय नेत्रत्रयाय वौषट् । मामृतात अस्त्राय फडित्यूर्ध्वोर्ध्वतालत्रयं दत्त्वा चुटिकाभिर्दशदिशो बध्नीयात ॥

अथमन्त्रवर्णन्यास

त्र्यं पूर्वमुखे । वं पश्चिममुखे । कं याम्यमुखे । यं उत्तरमुखे । जां वक्षसि । मं गले । हें ऊर्ध्वमुखे । सुं नाभायं

हृदि । धिं पृष्ठे पुं कुक्षौ । ष्टिं लिंगे । वं पादयोः । र्द्धं दक्षोरु-मूले । नं वामोरुमूले । उं दक्षोरुप्रान्ते । र्वां वामोरुप्रान्ते । रुं दक्षजानुनि । कं वामजानुनि । मिं दक्षगुल्फे । वं वामगुल्फे। बं दक्षस्तने । धं वामस्तने।नां दक्षिणपार्श्वे । मृं वामपार्श्वे। त्यों दक्षपादे। र्मुं वामपादे । क्षीं दक्षहस्ते । यं वामहस्ते । मां दक्षि-णनासायाम् मृं वामनासायाम् । तां शीर्षे। त्र्यंबकं शिरसि यजामहे भ्रूयुगलेसुगंधिं अक्षियुगले । पुष्टिं वक्रे । वर्धनं गण्ड-युगले । उर्वारुकं हृदये । इव जठरे । बन्धनात् गुह्ये ।मृत्योः ऊरुद्वये । मुक्षीय जानुद्वये । मामृतात् पादयोः ॥

अथ ध्यानम्

हस्ताभ्यांकलशद्वयामृतरसैराप्लावयन्तंशिरो द्वाभ्यां तौ दधतं मृगाक्षवलये द्वाभ्यां वहन्तं परम् ॥ अंकन्यस्तकरद्वयामृतघटं कैलासकान्तं शिवं स्वच्छांभोजगतं नवेन्दुमुकुटंदेवं त्रिनेत्रं भजे १

विधि—ऐसे ध्यान करके शिवलिंगको स्थापन करे और षोडशोपचारसे आराधना करके अंगोंका पूजन करे ॐ अर्क-मूर्तये नमः।ॐइंदुमूर्तये नमः। ॐवसुधामूर्तये नमः।ॐतोयमूर्तये नमः । ॐवह्निमूर्तये नमः । ॐ वायुमूर्तये नमः । ॐ आका-शमूर्तये नमः । ॐ यजमानमूर्तये नमः ॐ रमायै नमः ॐ एकायै नमः । ॐ प्रभायै नमः ॐ ज्योत्स्नायै नमः । ॐ पूर्णायै नमः । ॐ उमायै नमः । ॐ पूषायै नमः ॐस्वधायै नमः । ॐ विश्वायै नमः । ॐविद्यायै नमः । ॐ सितायै नमः ॐ श्रद्धायै नमः । ॐ सारायै नमः । ॐसन्ध्यायै नमः।ॐ शिवायै नमः । ॐ निशायै नमः ।ॐआर्यायै नमः। ॐप्रज्ञायै

नमः ॐ मेधायै नमः ।ॐ कांत्यै नमः । ॐ काल्यै नमः । ॐ धृत्यै नमः ॐ मत्यै नमः ॐ उमायै नमः ॐ पार्वत्यै नमः ।ॐ शान्तायै नमः ॐ मेधायै नमः । ॐ जयायै नमः । ॐ अमलायै नमः। इत्यादि मन्त्रोंसे पूजन करे ॥ इसी तरह ॐ इंद्राय वज्रहस्ताय नमः ॐ अग्नये शक्तिहस्ताय नमः । ॐ यमाय दण्डहस्ताय नमः ।ॐ निर्ऋतये खड्गहस्ताय नमः।ॐ वरुणाय पाशहस्ताय नमः ।ॐ वायवे ध्वजहस्ताय नमः।ॐ सोमाय गदाहस्ताय नमः । ॐ ईशानाय शूलहस्ताय नमः । ऊर्ध्वे ॐ ब्रह्मणे पद्महस्ताय नमः।अथ ॐ अनन्ताय चक्रहस्ताय नमः । इस प्रकार पूजन करके समाप्त करे ।

मृतसञ्जीवनी

ॐ हौं जूं सः भूर्भवः स्वः त्र्यम्बकं यजामहे सुगंधिं पुष्टिवर्धनम । उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात हौं ॐ जूं सः ॥

दूसरी-विधि-ॐभूर्भुवः स्वः ॐ हौं जूं सः त्र्यम्बकं यजामहे सुगंधिं पुष्टिवर्धनम्।उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् भूर्भुवःस्वरो जूं सः हौं ॐ॥विधि-ऊपर कही हुई रीतिसे सम्पुट लगाकर एक लक्ष मन्त्रका जप करे दशांश से हवन करे मृत्यु दूर हो जायगी ॥

शुक्रोपासित मृतसञ्जीवनी विद्यामन्त्र

ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं त्र्यम्बकं यजामहे भर्गो देवस्य धीमहि सुगंधिं पुष्टिवर्द्धनं धियो यो नः प्रचोदयात् । उर्वारुकमिव बन्धनामृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥

अन्य मन्त्र-ॐ जूं सः मां जीवय पालय ।

मृतसंजीवनी मन्त्रका ध्यान

स्वच्छं स्वच्छारविन्दस्थितमुभयकरे संस्थितौ पूर्णकुम्भौ
द्वाभ्यामेणाक्षमाले निजकरकमले द्वौ घटौ नित्यपूर्णौ ।
द्वाभ्यां तौ च स्रवन्तौ शिरसि शशिकला चामृतैः प्लावयन्तं
देहं देवो दधानो विदिशतु विशदां कल्पजालं श्रियं नः ॥

विधि-इस ध्यान करके कल्पित मूर्तिमें आवाहन करके ॐ त्र्यम्बकाय महारुद्राय नमः इस उपचारसे पूजन करे ॥

अथ मृत्युञ्जयप्रयोग

ॐ जूं सः ॐ । विधि-प्रथम स्वस्तिवाचनपूर्वक संकल्प करे जैसे "अद्येत्यादि अमुकगोत्रस्य श्रीअमुकदेवशर्मणो जीवच्छरीराविरोधेन झटिति उत्पन्नरोगशमनकामनया त्र्यक्षरमृत्युञ्जयमंत्राणां लक्षजपमहं करिष्ये "ऐसे संकल्प करके फिर न्यास करे । यथा-शिरसि कहोलऋषये नमः ।मुखे गायत्रीछन्दसे नमः । हृदि मृत्युञ्जयाय देवाय नमः ।ततः करांगन्यासौ। सां अंगुष्ठाभ्यां नमः।इत्यादि । एवं सां हृदयाय नमः।इत्यादि॥

अथ ध्यानम्

चन्द्रार्काग्निविलोचनं स्मितमुखं पद्मद्वयान्तःस्थितं
मुद्रापाशमृगाक्षसूत्रविलसत्पाणिं हिमांशुप्रभाम् ।
इन्दोः कोटिलसत्सुधाप्लुततनुं हारादिभूषोज्ज्वलं
कान्त्या विश्वविमोहनं पशुपतिं मृत्युञ्जयं भावये ॥

विधि-इस मन्त्रसे ध्यानकरके अपने मस्तकपर फूल धारण करे और मानसिक पूजा करे । इसका पुरश्चरण एक लक्षमं-

त्रका है फिर इसके दशांशके क्रमसे होमादिक करना चाहिये हवनकी सामग्री यह है-दूध घी और गिलोयके टूक इन तीनोंको मिलाकर हवन करे ॥

अथ गौ भैंसी दुग्धवर्धन मन्त्र

ॐ नमो हुंकारिणी प्रसव ॐ शीतलम् । अनेन मन्त्रेण तृणादीन्यभिमन्त्र्य भोक्तुं दद्यात्पशुभ्यस्तदा बहुलं दुग्धं भवति

गर्भरक्षा गण्डा बन्धन मन्त्र

गण्डा कटिमहँ वांधे । हिमवदुत्तरे कूले कीदृशी नाम राक्षसी । तस्यः स्मरणमात्रेण गर्भो भवति अक्षयः । आथो मोथो मेरा कहा कीजिये फलानीका गर्भ जाते राखि लिजिये गुरुकी शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरोवाच ॥

सर्वशूल निवारण मन्त्र

निम्नलिखित मन्त्रसे पानी पढकर पिलावे। कालीमहा-काली नमोस्तु ते हन हन दह दह शूल त्रिशूलेन हुं फट् स्वाहा ॥

अथ विषमज्वर हरण मन्त्र

ॐ ह्राँ ह्रीं क्लीं सुग्रीवाय महाबलपराक्रमाय सूर्यपुत्राय अमिततेजसे ऐकाहिकं द्व्याहिकं त्र्याहिकं चातुर्थिकं महाज्वर भूतज्वर प्रेतज्वर भयज्वर क्रोधज्वर वेलाज्वर प्रभृतिज्वरान् दह दह पच पच अवतु अवतु महावीर वानरराज ज्वरान् बन्ध बन्ध ह्राँ ह्रीं ह्रूं फट् स्वाहा । नास्ति ज्वरः । ज्वराय गमनसमर्थज्वरस्त्रास्यते । इस मन्त्रसे इक्कीसबार झाडा देनेसे विषमज्वर इत्यादि दूर होते हैं ॥

गर्भस्तम्भन मन्त्र

ॐ नमो गंगा डकारे गोरख बहा घोर धीपार गोरख बेटा

जाय जयद्रुत पूत ईश्वरकी माया । इस मंत्रसे अभिमंत्रितक-रकेक्वांरी कन्याके काते हुए सूतका गण्डा बनाके पहारा देनेसे गिरता हुआ रुधिर बन्द हो जायगा ॥

शिरका दर्द झारनेका मंत्र

सुरागायके गर्भमें उपजा बच्छा बच्छके पेटमें कच्छा कच्छ के पेटमें उपजा कालजा कटे मेरी भक्ति गुरुकी शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरोवाच महादेवकी आज्ञा फुरो । इस मन्त्रसे २१ बार शिरमें झाडा देनेसे शिरकी पीडा दूर हो ॥

भूत नाशक मंत्र

ॐनमः काली कपाली दहि २ स्वाहा ।इस मंत्रसे १०८ बार पढ तेलको लगानेसे भूत चिल्लावेगा ॥

प्रसूतिका मंत्र

ॐश्रावणो वश्च गर्भो च सुखमेव प्रसूयते इति मंत्रेण जलं देयं सुखेन बालको जायते ॥ इस मंत्रसे पानी पढकर दे तो सुखसों पुत्र हो ॥

सुखसे बालक होनेका मंत्र

ॐ मुक्ताः पाशा विपाशाश्च मुक्ताः सूर्येण रश्मयः।मुक्तः सर्वभयाद्गर्भ एह्येहि मारीच मारीच स्वाहा। विधि-इस मंत्रसे आठवार जल पढ गर्भिणी स्त्रीको प्यावे तो सुखसे बालक हो॥

मन्मथ २ वाहि वाहि लम्बोदरं मुंच स्वाहा ।

विधि-इस मंत्रके जपनेसे बालक सुखपूर्वक होता है ॥

ॐ ऐं ह्रीं भगवति भगमालिनी चल चल भ्रामय पुष्पं विकाशय विकाशय स्वाहा ॥

नमो भगवते मकरकेतवे पुष्पधन्विने प्रतिचालितसकलसुरा-सुरचित्ताय युवतिभगवासिने ह्रीं गर्भं चालय चालय स्वहा॥

विधि–ऊपरके दोनों मंत्रोंसे किसी एकसे दूधको पढकर प्रसूता स्त्रीको पिलावे तो बालकका जन्म सुखपूर्वक हो जाता है।

ऐं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रीं ह्रः विधि– इस मंत्रको भोजपत्रपर लिखकर मूढगर्भवाली स्त्रीको दिखावे फिर उसकी शय्याके नीचे रख देवे तो बालक सुखपूर्वक होता है।

ग्रहदोषपीडानिवारण मंत्र

ॐनमो भास्कराय अमुकस्य सर्वग्रहाणां पीडानाशनं कुरु कुरु स्वाहा ॥ विधि–आककी जड, ओंगेकी जड, दूर्वाकी जड, वड, और पीपलकी जड, शमीपत्र, आमपत्र, गूलरके पत्ते ये सब मिट्टीके पात्रमें रखकर घी और दूध डाल देवे।चावल,चना , मूंग, गेहूँ तिल, गोमूत्र सफेद सरसों, कुश, चन्दन, शहत ये सब वस्तु भी मिला देवे इन सबको शनिवारके दिन सायंकालके समय पीपलकी जडमें गाड देवे तो घोर दरिद्रका नाश, महापातकका नाश होता है। आयु दीर्घ होती है। ग्रहकी पीडा भी पास नहीं आती। १०८ मंत्र जपनेसे सिद्धि हो जाती है॥

भूतग्रहनिवारण मंत्र

ॐनमः श्मशानवासिने भूतादिपलायनं कुरु कुरु स्वाहा॥

विधि–रविवारके दिन सिरसके पत्ते और फूल ले आवे उसमें घुग्घू कुत्ता और बिल्लीकी विष्ठा डाल देवे, ऊँटके रोम गोबर और गंधक भी डाल देवे तथा सफेद चिरमिटी और कडुवा

तेल भी डाल देवे और धूप देकर इस मंत्रको जपे तो भूतबाधा, राक्षस, भूत, वेताल देव, मानव, खेचर, डाकिनी, प्रेतनी ये सब धूप देखकर ही भाग जाते हैं। १०८ मंत्र जपनेसे इसकी सिद्धि होती है ॥

मृतवत्साके पुत्र जिलानेका मंत्र

ॐ परमंब्रह्म परमात्मने अमुकी गर्भे दीर्घजीवीसुतं कुरु कुरु स्वाहा ॥

विधि—मंगसिर अथवा जेठकी पूर्णमासीको घर लिपवाकर तोरण बन्दनवार आदि मंगल कार्योंको करके, देवीका पूजन और इस मंत्रका १००८ जप करे, ब्राह्मण भोजन करावे दक्षिणा देवे ऐसा करनेसे जो पुत्र होगा जीता रहेगा ॥

मित्रोंमें लड़ाई करानेका मंत्र

बारह सरसों तेरह राई पाटकी माटी, मसानराकी छाई पढकर मारूं करतलवार, अमुका कुटै न देखे अमुकीका द्वार मेरी भक्ति गुरुकी शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरोवाच सत्यनाम आदेश गुरुका ॥ विधि—बारह सरसों तेरह राई, चाककी माटी और मसानकी राख तथा खरकी लकडी इन सबको मिलाकर घी डालके हवन करे ठण्ढा होनेपर उस राखको लेकर दो मित्रोंके बीचमें डाल देवे तत्काल वैर हो जाय ॥

व्याघ्रनिवारण मन्त्र

ह्रीं ह्रीं ह्रीं श्रों श्रों स्वाहा ॥ विधि—इस अष्टाक्षर मंत्रको पढकर लोहेको व्याघ्रकी ओर फेक देवे उसका मुख न चले और चलने में भी असमर्थ होय ॥

दूसरा मन्त्र–क्रीं ह्रीं ॐ ह्रीं ह्रीं ॥ विधि–इस मंत्रसे एक लोहेके टुकडेको आठ बार पढकर व्याघ्रकी तरफ फेंकदे तो व्याघ्र मुख बंद होजाय तथा उसमें चलनेकी शक्ति नहीं रहे

चौपाई

नगर बदरिका जिहिं विख्याता। अवस्थी सु उपनाम गिनाता॥
देवचरन गुनि विदित विचच्छन। गद्य पद्य कृति भेद सुतलच्छन॥
ताहि ग्रंथ यह संग्रह कीन्हों। कीन्ह अनुग्रह मोको दीन्हों॥
मंत्र तंत्र अरु यंत्र भंडारा। जान ग्रंथ यह सब उपकारा॥
शास्त्रिनसों शुधवाय बहोरी। मुद्रित किया विनय इमि मोरी॥
ग्रंथ ग्रहण करि उपकृति ठानहु। शाबर मंत्र तंत्र सति मानहु॥
अरु औषधि औषधिके जागू। यामें अहै सिद्धजन यागू॥
खेल तमासेहु रंजक यामें। तासो बाल वृद्ध भयो कामें॥

दोहा–काह कहूँ या ग्रंथको, सेवत जानैं भेव।
सेवत वृक्षन सो लहै, उत्तम फल ज्यों मेव॥ १॥

इति श्रीपंडित देवचरणजी अवस्थी द्वारा संगृहीत बृहत् इंद्रजाल॥
कौतुकरत्न भांडागार समाप्त

हमारे प्रकाशनों की अधिक जानकारी व खरीद के लिये हमारे निजी स्थान :

खेमराज श्रीकृष्णदास
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
९१/१०९, खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
७ वी खेतवाडी बॅक रोड कार्नर,
मुंबई - ४०० ००४.
दूरभाष/फैक्स-०२२-२३८५७४५६.

खेमराज श्रीकृष्णदास
६६, हडपसर इण्डस्ट्रियल इस्टेट,
पुणे - ४११ ०१३.
दूरभाष-०२०-२६८७१०२५,
फैक्स -०२०-२६८७४९०७.

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस व बुक डिपो
श्रीलक्ष्मीवेंकटेश्वर प्रेस बिल्डींग,
जूना छापाखाना गली, अहिल्याबाई चौक,
कल्याण, जि. ठाणे, महाराष्ट्र - ४२१ ३०१.
दूरभाष/फैक्स- ०२५१-२२०९०६१.

खेमराज श्रीकृष्णदास
चौक, वाराणसी (उ.प्र.) २२१ ००१.
दूरभाष - ०५४२-४२००७८.

KHEMRAJ SHRIKRISHNADASS

